



मणिमाला

रत्नविचान-ग्रन्थः।

न्त्रीगौरीन्द्रमोद्दन ठाकुरेण मिठनिक् डाकार,

माइट कमाण्डार खादि खडीर खा ्विओपोव्ड खा वेव्जियम्, नारट कमारहार चत्र दि फार्ट कार्स चत्र दि चडीर चत्र वानतार चत्र साक्ति, सिमे लियार चार्दि इ.स्पिरियेल चार्डार चार् मे डिजिडि का टारिक,

य्यामदेशीय नाइट ख्य दि चडीर च्या दस्त्रमाला,

स्थानद्वाल गाइण चार प्रवास कार्याता वा स्थानद्वाल स्याल स्थानद्वाल स्याल स्थानद्वाल स्थानद्वाल स्थानद्वाल स्य

वद्भ सद्भीत-विद्याचय प्रतिष्ठाहरूमापति ,

क्रविकाता महानगरीयानरेरि माजिष्ट्रेट, जिंदस् व्यर्दि पिसं, इजिनमारिसिटिफेलों र घेट हटनायर्लेख्डीय रवेल व्यासियाटिक सोसाइटि मे स्वर. साहित्य रवेल सोसाइटि फेलो.

सुद्रहेनु राजधानी प्रकृष्टतम् नगरीय सद्गीत विद्येकाडेभि खनरेरि में स्वर, भाग्स राजधानी पारिस् नगरीयाफिसर डिलाइनपृक्त्नु प्विलक् एकाडीस व्यामिकारः वेन जियम्राज्यस्य मिल्स साहित्य विज्ञान रवेन एकाडेमिएसोसिएट से स्वर.

व्यामणाडीमनगरीय सङ्गीतिवद्यासीसाद्दृटिकरेस्राय्ड मे स्वर, निदारसण्डस्य हेगनगरीय रवेत मार्जनिका एयनायामिकेन भारतकीय

निटिटिएसन् फरेन् में स्वर जेनिमानगरीय विश्व-विद्यालय करे स्पिश्ड में स्वर, रोम राज्यस सेण्डिंसिलिया नगरीय रवेल एकाहेमि सोसिको खनरेरिको,

दूटाली राज्यस्य सोसाद्रटा डिडासकालिका सोसियो व्यनरेरिको, फोरेन्स नगरीय रवेल मिडजिनेल् इनिटिटिउट एकाहेमिएकाहेमिको

करेसाएड एट, व्यरिएयान एकाडेमिवर्डिनारि में स्वर, र्यानीस विभीनगरस राफेनी रवेन एकाडेमि सीसियी करेसवडे विट, शारमा रवेस विश्व विद्यालय देनिमे रिटो,

नेपल्स राज्यस्य पिटागीरिका नगरीयैकाङ्मि सीसिकी कीयापरिटर, बोलोगना नगरीय फिल्हारमणिक एकाडेमि सोसिको जनरेरिको, दीस राज्यस्येधनुसनगरीयारचित्रीतिकतेन सीसार्टिमेध्वर.

सिमिजिद्दीपस्य पालारमानगरीय रवेड एकाडेमि सोसिको अनरेरियो. सार्डिनिया द्वीपस्य सेसेरि विश्व विद्यालय पेइन्, बारे विवासमें नवीरन नगरीय फिन्हारमणिक सीसाइटिबनरेरि मेम्बर,

द्रत्याद्यपाधिकेन प्रचीता ।

किश्वातायां धन्यकारेच प्रकाशिता ।

मणिमाचा

रत्नके विज्ञानका ग्रन्थ। श्रीग्रीरीन्द्रमोद्दन ठाकुर मिअजिक डाक्सर,

नाइट कमारहार खन् दि खडार खन् चित्रोपोलह खन नेलिजयम, नाइट कमारहार खन् दि साट क्षांच खन दि खडार खन खालनार्ट बन साक्सनि, सिमे नियर खन् दि समिरियेन खडीर खन् में हिजिंड खन् शार्कि,

स्ताम देशका नाइट अब दि अहीर अब विश्वनाता, नेपालका नाइट अब दि गुरुखा अहीर अब्सरस्ती, सङ्गीत नायक, सङ्गीत सागर,

बङ्ग सङ्कीत विद्यानयका प्रतिवायक और सभाषति, सनुसत्ताका द्रशनिभार्र विदिक्षा फेसी, क्यनेरि साजिन्द्रेट, जायस् व्यादि पिस, पोट ब्रिटन और क्यान्तवाको एवन जासियाटिक, सोसारिका से स्वर, साजिकको एवन सोसारिका फेसी.

श्वद्रहेनका राजधानी एक्डलम्बा मङ्गीत विद्यांके एकाडामिका खनरेरि में स्वर, सुतम्बा राजधानी गारिसके खामिसार डिका इनल क्सन्

प्रश्निक और एकाशामिका व्यक्तिसार, वेल्जियमका शिल्प साझ्लि और विचानके राख एकाशामिका एकोसियट में स्वर, व्यासप्टार हामका सङ्गीत विद्याका सोसाइटिका करेसुपविक् में स्वर,

निदारचल्डम्य हैग नगरका रण्ड फाद्रखर्जिकेल स्थ्नायामिकेल भारतवर्गीय द्रिमिष्टिट्सिन्हा फरेन सेश्वर

जिनिभा नगरका विश्व विद्यावयका करे स्परितः' मे स्वर, रोम राज्यस्थ नेपर्यक्षित्वाका रण्य एकावामिका वोषियो जनरेरिको, इटालो राज्यस्थ मोबाइटा विवादकाला गोषियो जनरेरिको, फोरेनृव नगरका रएवं भिवोजने सनिष्टिटट एकावामि एकावामिकाका करेन्स्य एकावामि एकावामिकाका करेन्स्य एकावामि एकावामिकाका करेन्स्य एकावामिकाका करेन्स्य एकावामिकाका करेन्स्य एकावामिकाका करेन्स्य एकावामिकाका करेन्स्य एकावामिका प्रकार प्रदेशिक एक्टोकर एक्टोका रण्य एकावामिका वोष्टिको करेन्स्य एक्टिएट.

पारकाश रखन विश्व-विद्यानयका बेनिमेरिटी, नेपल राज्यमा पिटामीरिकाका एकाशामिका ग्रेमियो कोगार्पारटर, योगोन्नाका फिनमोर स्पेक्ट स्वाकामिका श्रीमयो व्यवरियो, प्रोक्का प्रदेन्त्र नगरका जारियोजिकनेट ग्रोमार्टीटका सेवर,

हिशिति द्वीवस्य धानार्यो का राज पकार्यामका योजियो जनरेरियो, शार्यहितिया दीयस्य वेसेरिया वित्र विद्यालका देश्तु, अपूर्तियाण सेकारेराज्या किन प्रार्ट्याक सेकार्याका जनरेरिय सेवार स्थादि उसाधक नर्मुक मधीत और प्रकारित ।

वसकतामे यत्पकारणे प्रकाणित ।

MA<u>N</u>I-MÁLÁ,

A TREATISE ON GEMS.

SOURINDRO MOHUN TAGORE, Mus. Doc,

KNIGHT COMMANDER OF THE GROER OF LEOPOLD OF BELGIUM,

RNIGHT COMMANDER OF THE 1ST CLASS OF THE ORDER OF ALBERT OF SAXOYY,

CHIVALIER OF THE IMPERIAL ORDER OF MEDIJIDE OF TURKEY,

KNIGHT OF THE SIAMES ORDER OF RUSARA MALL:

KNIGHT OF THE GURRHA ORDER OF BARASWATI, SANGITA NATAKA AND BANGITA SAGARA OF NEPAUL,

FOUNDER A'D PRESIDENT OF THE BENGAL MUSIC SCHOOL, HONDRARY MAGISTRATE, JUSTICE OF THE FEACE AND FELLOW OF THE WINTERSITT OF CALCUTA, MEMBER OF THE ROTAL SALITIC SOCIETY, AND FELLOW OF THE ROTAL SOCIETY OF LIFERITHEE GREAT RETRAIN AND TRAILAND.

HONORARY MEMBER OF THE ROYAL SWEDISH MUSICAL ACADEMY, STOCKHOLM,
OFFICIER DE LINSTRUCTION FUBLIQUE AND OFFICIER D ACADEMIE,
PARIS; ASSOCIATE NEMBER OF THE ROYAL ACADEMY OF SCIENCES,

PARIS; ASSOCIATE MEMBER OF THE ROTAL ACADEMY OF SCIENCES,
LETTERS AND FIVE ARTS OF BELGIUM,
CORRESPONDING HEMBER OF THE MUSICAL SOCIETY OF AMSTERDAM,
FOREIGN MEMBER OF THE ROTAL PHILOLOGICAL AND ETHNOGRAPHICAL

FOREIGN MEMBER OF THE ROYAL PHILOLOGICAL AND ETHNOGRAPHI

CORRESPONDING MEMBER OF THE UNIVERSITY OF GEVENA,

SOCIO ONORABIO OF THE ROYAL ACADEMY OF ST CECILIA, BOME,

SOCIO ONORIRIO SOCIETA DIDASCALICA ITALIANA, ACCADENICO CORRISONDENTE OF THE ACADEMY OF THE ROYAL MUSICAL INSTITUTE AND ORDINARY MEMBER OF THE OBIENTAL ACADEMY OF FLORENCE,

SOCIO CORRISPO.DENTE OF THE ROTAL ACADEAT OF RAFFAELIO, URRINO, ITALY, ENTEMENTO OF THE BOYAL INVERSITY OF PAINA SOCIO CO-OPERATORE OF THE ACADEAY OF FITHAGORICA, NATIES, SOCIO CONDANIO OF THE PHILHARDOYICA ACADEAY OF DOLOGNA, HOYORARY MEMBER OF THE ARCHEDIOGICAL SOCIETY OF ATHENS, GRETCE, SOCIO CONDANIO OF THE BOYAL ACADEAY OF PALERNO, SIGITY.

PATROY OF THE ATHE ECH OF THE ROYAL UNITERSITY OF GASSARI,
SARDIVIL , AND HONORARY MEMBER OF THE

PHILHARMONIC BOCIETY OF MELBOURNE, AUSTRALIA, &C., &C., &C

PART I.

CALCUTTA

PRINTED BY I C. BOSE & CO. STANHOPE PRESS 219, ROW BARAR STREET, AND PUBLISHED BY THE AUTHOR.

1879

[All rights reserred.]

ম্পিম্পূল্

অৰ্থাৎ

রত্ববিজ্ঞান-গ্রন্থ।

অংশীর প্রিয়েশাহন ঠাকুর, মিউজিক্ ডাজার, নাইট নমাণ্ডার অব দি অঙার অব দিওপোল্ড অব বেব্রিলম, নাইট নমাণ্ডার অব্ দি কাঙা রাগ অব দি অঙার অব আনবার্ট অব নাক্সনি, নিডেনিয়র অব্ দি ইম্পিরিয়েল অঙার অব মেড্রিভি অব টার্কি, গ্যামেশের নাইট, অব্ দি অঙার অব্বনবাদা,

নেপালের নাইট অব দি গুর্ধা অভার অব সরখতী, সঙ্গীত নারক, সঙ্গীত সাগর;

বন্ধ নত্নীত বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাতা ও সতাপতি, কনিকাতার ইউনিভার্নিটির কেনো, অনরেরি মাজিন্টেট, জুঠিস অব দি পিন, এটি রিউন ও আরব্যুগতের রএল অনিয়াটিক নোমাটিটির মেহর, সামিত্যের রএল নোমাটিটির কেনো।

স্ইতেনের রাজধানী ইক্ষলমের সন্ধীত বিদারি একাডেমির অনরেরি মেখর, মাুলের রাজধানী পারিনের আকিলার তিলা ইনট্রক্সন্

পবলিক্ ও একাডাদির আফিসার, বেল্জিরমের শিশ লাহিত্য বিজ্ঞানের রএল একাডেমির এলোসিরেট মেধর, আমহারতাবের সম্মীত বিলার নোসাইটির করেম্পণ্ডিং মেরর,

নিদার্শণ্ড ছেগ নগরের রএল ফাইললজিকেন এখনাঞাজিকেল ভারতবর্ষীর ইন্টিউউননের ফরেন মেইর, জিনিভানগরের বিশ্ববিদ্যালয়ের করেম্পণ্ডিং মেইর,

ালান্ত্ৰনাৱের বিশ্ববিদ্যালয়ের করে পারে দেবর, রোম রাজ্যন্থ সেও দিসিলিয়ার রএল একাডেমির সোদিও অনরেরিও, ইটালী রাজ্যন্থ সোদাইটা ডিভাস্কাদিকার সোদিও অনরেরিও,

জোরেদ নগরের রএদ মিউলিকৈন ইনিষ্টিটেউট একার্ডেমি একার্ডেমিকোর করেম্পণ্ডেন্টি, ও ওরিরেন্টান একার্ডেমির অভিনরি মেগর,

ইটালীস্থ উর্বিনোর রাকেলোর রয়েল একাডেমির লোলিও করিস্পতেণ্টি, পার্মার রয়েল বিশ্ববিদ্যালয়ের বেনিমেরিটো,

নেপন্স রাম্মের পিটাগোরিকার একাডেমির সোসিও কোরাপরিটর, বোলোগ্নার কিন্দার্যণিক একাডেমির সোসিও অনরেরিও, গীনের এথেশ নগরের

আর্ডিওসন্ধিকেন সোন্থিটির কনরেরি বেষর, নিনিনি দ্বীপন্থ পানার্মার রয়ের এডাডেমির মোনিও কনরেরিও, নাডিনীয়া দ্বীপদ্ধ সেনেরির বিশ্ব বিদ্যালয়ের পেটুবুন, অট্রেলিয়ান্থ মেল্বোরপের কিল্পাইন্সনিক নোনাইণ্টির কনরেরি দেয়র, ইডাডাগানিককর্তক এশীত।

কলিকাত'র প্রস্কার কর্তৃক প্রকাশিত।

भूमिका।

चार्य्यावां पुरावादिशास्त्राकरेग्यो रत्नान्याङ्ग्येवं "मविमाजा" डिन्दों-

राजी-संखृत-वद्गीयभाषाचतुष्टयसूत्रेग्रंथिता । प्रतिराजिवयरणान्ते ,
रचनाया दृष्वतासम्पादनार्थे ग्रन्थिकरूप्रमिउरोधीयरज्ञतत्त्वविदां मतं
सिन्विधितं। ग्रन्थाये माचार्याधतराज्ञविषयकवर्षेनपरिश्रोभितमध्यमिकरूपपरिशिष्टकं योजितम्।

ग्रन्यकार: ।



खार्यन्जातिका पुराय, खीर यन्य यन्य शास्त्रस्वरूप याकरसे रत्न
सव सङ्ग्रह करके यह "मिसमावा" यांरेजी, हिन्दी, बाङ्गावा खीर
संख्नृत यह चारी भाषा सरूप चारी मूच करके बनाया। प्रत्येक
रत्नके वर्णनाके श्रेषभागमे रचनाका हकता करनेवेदासी इउरोपका
रत्नतत्त्वच पर्यक्षत चोगके मत ग्रान्य सरूप कांच्यत भये। यह माधामे
नाना रत्नके विवयका वर्णन करके परिशोभित मध्यमिक सरूप एक
परिश्रिष्ट सञ्चक्ष भया।

ग्रन्थकार।

PREFACE.

HIS "Mani-malá" (Chain of Gems) has been strung on the four-fold thread of English, Bengali, Hindi and Sanskrit languages, with the gems obtained from the precious mines of the Puránas and other classic works of the Hindus. At the end of the description of each class of gems have been inserted the views of the European authorities thereon as a knot in order to compactness. To the whole has been attached a Pendant forming the supplement, replenished with miscellaneous information on diverse kinds of gems.

S. M TAGORE.

ভূমিকা ৷

আর্থান্তাতির প্রাণ ও অন্যান্য প্রাতন গ্রহণমূহরূপ আকর হইতে
বন্ধ সমুদার আহবণপূর্ক্ত এই "মণিমানা" ইংরাজী, বাঙ্গানা, হিন্দী ও
নংস্কৃত এই চারি ভাষারূপ চারি গাছি প্রহারা প্রথিত হইয়ছে।
প্রত্যেক রব্লের বর্ণনাব শেষভাগে রচনার চূচতা সম্পাদনের নিমিত
ইউরোপীয় বন্ধতবন্দিশের মত প্রস্কিরণে ক্ষিত হইয়ছে। এই
মানাতে নানা বন্ধবিদ্ধিশী বর্ণনা হারা পরিশোভিত মধ্যমণিবরূপ
একটী পরিপিট সংযুক্ত হইয়ছে।

গুন্তকার ৷

J.

THE HON'BLE SIR ASHLEY EDEN, K.C.S.I.,



MANI-MÁLÁ

Most Respectfully Dedicated

HIS MOST GRATEFUL

OBLIGED SERVANT

THE AUTHOR.

सूचीपतम्।

		→+			
विषयः ।					प्रसा
			•••		8
रत्नजातिः	•••	•••	•••		-
स्यमन्तको पाखान	म्	***	•••	•••	৩২
नवरत्नानि	•••		•••	•••	٥٤
वजम्		•••	•••	•••	१ १8
वजदोषाः		•••	•••	•••	
वर्जुमारगविधिः		•••	•••		१३६
माणिकम्	•••		•••	•••	१८६
माणिकास्य काया	दय:	•••	•••	•••	र॰र
वैदूर्णम्	•••	•	***	•••	रप्र
वेद्रयोग्णाः		***	•••	•••	रप्€
akmint.			•••	•••	र्पूट
वे <u>द</u> ूर्म्यदोषाः	•••	,	•••	•••	२७२
मुक्ता	•••		•••	•••	₹१०
मुक्तागुगाः	•••			•••	₽१ ६
मुक्तादीषाः	•••			•••	इप्ष
जोमेदः	•••	•••		•	₽ĘĘ
विद्रुमम्	•••	•••		•••	8-4
मरकतम्	•••	•••		•••	१८२
मरकतदोषाः	•••	•••			हट ह
मस्कतग्रा	•••	•••	•••		RC 4
मरकतच्छाया	•••	•••	•••	***	१२०
पुष्परागः	***	***	•••		858
इन्द्रनीसः	•••	•••	•••		83.
इन्द्रनीलगुषाः	•••	•••	•••	•••	833
इन्द्रनीखदीयाः	•••	•••	•••		840
. कर्कतनम्	***	•••	•••	•••	8 (-
पुलकम्	•••	•••	•••	•••	8=0
द्धिराखम्	•••	•••	•••		8==
स्फटिकम् '	•••	•••	•••		865
भीग्रम्	•••	•••	•••	•••	
1					

सूचीपत।

विषय |

रत्नका जात	•••	•••	•••		. 8
स्यमन्तव,मश्चिका	वयान	•••	•••	•••	~
नौर्ज्ञा वयान	•••	•••	•••		৩২
चौर्यं वयान	•••	***	***	•••	ەع
क्षीरेका खयेव	•••		•••	•••	228
द्वीरेका मारनेका	उपाय	***	•••		रहद
माखिकका वयान		•••	•••		2 -6
माखिकका काया	वारेरच	•••	•••	•••	२०२
समुनियेका वयान	***	***	•••		रपूर
लयुनियेका गुरा		•••			रप्र
चयुनियेका च्येव			•••		र्५ू⊂
मोतिका वयान		•••			२७२
मोतिका ग्रंब	•••		•••	•••	₹१०
मोतिका ध्ययेव					३१५
गोमेदका वयान	••	•••			इप् ह
मुंगुका वयान	•••		•••	•••	३६६
पात्रका वयान	•••	•••	•••	•••	हर्ष
पाद्मेकाच्ययेव	•••	•••	•••	•••	१८र
मानेका गुग	•••	•••	***	•••	ब्रह
मानेका दाया	•••	•••	•••	•••	8C.E
मुखराजका वयान	ſ	•••	***	•••	४२ ०
नीशम्का वयान	•••	•••	***	•••	848
नीसाका गुग्	***		•••	***	880
नीलाका व्यव	•••	***	•••	•••	83२
क्षकेतकका वदान	•••	***	•••	•••	84.
पुषक्का वयान		•••	•	•••	8€ ←
दिश्वरात्यका वदा		•••	***	***	8⊄0
स्फटिकका बवान भीग्रका बदान	***	•	•••	•••	800
भासका बलाब	•••		•	•••	8ረ €
		_			

CONTENTS.

				-age
Invocation	,	•••	•••	3
History of Syamantaka		•••	•••	9
General Remarks on Gems	•••	•••	•••	73
· DIAMOND, page	9778	τ .		
, Dikmond, page	5 01-10	•		
Defects of Diamond	•••	•••	•••	115
Process of Refining a Diamond	•••	•••	•••	137
Diamond : Its Properties	***	***	•••	142
Diamonds—where found		•••	•••	144
Colored Diamond		•••		151
Mode of Cutting-Indian and I	Intonean		***	153
Engraving on Diamond	p	•••	100	157
Price of Diamond, its Flaws	and Defe			
Testing	and Dore			159
Supernatural and Medicinal P	rnnerties	attribu		
the Diamond	10PC11100			163
Celebrated Diamonds, Kohi-no	or	***	•••	165
Great Mogul	***		•••	168
Pitt or Regent Diamond	•••	•••	•••	170
Orloff or Amsterdam Diamond	•••	***		171
Nassuck Diamond	•••	***		173
Nizam	•		***	
Shah of Persia	•••	•••	•••	"
Pacha of Egypt	***	***	•••	174
		***	•••	1/2
Sancy Diamond	***	••	***	-22-
Charles the Bold's Diamond	•••	***	•••	175
Florentine Brilliant	***	••	***	176
	•••	***	•••	177
Braganza Pigott Diamond	•••	***	***	178
	•••	•••	***	179
Hope Dismond Eugénie Brilliant	***	•••	***	2)
	***	•••	***	,,,
Con of the Court	***	***	•••	180
T. 1 C1	***	•••	•••	**
Other large Diamonds	•••	•••	***	"
Other me Diamonds ***	***	***	***	181

	P	age
RURY, page 187-200		
Shades and other Qualities of Rubies		203
Ruby Its Properties		230
Rubies—where found		233
Mode of Cutting		236
Ruby, as known to the Ancients		237
Engage an Publica		238
Price of the Ruby, its Flaws and Defects, mode	οf	
		249
Marvellous and Medicinal Powers attributed to	the	
Ruby		243
Celebrated Rubies		245
Cat's eye page 253-270		
		257
Qualifies of the Cats-eye Defects of the Cats eye		209
Defects of the Cat's eye Cat's-eye Its Properties		266
Cats eyes—where found		267
Mode of Cutting		201
Its price, Flaws and Defects, mode of Testing		".
Its Marvellous Powers		269
Celebrated Cats eyes		200
Pearl, page 273-352	-	**
		311
Properties of Pearls		311
Defects of Pearls		317
Pearl: Its Properties Original Formation of Pearls		326
Pearls—where found Pearl Fisheries	•	331
Mode of Boring and Polishing		339
Pearls, as known to the Ancients		340
Price of Pearls Imitations		344
Marvellous and Medicinal Virtues of the Pearl		348
Celebrated Pearls		349
Gomeda on Zirtov, &c page 305-36	5	
Zircon Hyacinth or Jacinth Its Properties		360
Zircon, &c -where found		361
Mode of Cutting and Polishing		362
Zircon Jacinth or Hyacinth as known to the Anc	25232	
¿ Engravings		363
Price of the Z roon, its Flaws and Defects, mo	de ot	
Marvellous Properties attributed to the Zircon		365
tos		200
0.6r		
,	-	
· ·		

CONTENTS.)

•		Pag
CORAL, page 267-285.		
Coral Its Properties	•••	37
Corals-where found Coral Fisheries	***	37
Cutting and Boring of Coral ,		38
Engraving on Corals		,,
Coral as known to the Ancients Its Uses	***	38
Price of Coral Its Imitations		388
Marvellous and Medicinal Powers attributed to (Coral	38:
EMERALD, page 387-418.	-	
Defects of the Emerald		393
Good Properties of the Emerald	410	39
Shades of the Emerald r'		397
Emerald Its Properties	***	403
Emeralds—where found:	***	404
Emerald, as known to the Angients	٠.	407
Engravings on Emerald		411
Cutting of Emerald .		415
Price of the Emerald, its Flavs and Defects: J	mıta-	n
tions .	•••	413
Marvellous and Medicinal Properties	•••	415
Celebrated Emeralds .	***	417
TOPAZ, page 421-433.		
Topaz Its Properties		426
Topazes - where found Varieties of the Topaz	***	427
Topaz, as known to the Ancients	•••	428
Cutting and Engraving	٠.	**
Its price Imitations		430
Marvellous and Medicinal Properties attributed to	o the	
Topaz	•••	431
Celebrated Topazes	• •	432
Sapphipe, page 435-459.		~
Qualities of the Sapplure	•••	441
Defects of the Sapphire	***	413
Sapplire Its Properties	***	450
Sapphires-where found	***	451
Supplure, as knowli to the Ancients	***	**
Engraving and Cutting Its price, Flaws and Defects Imitations		452
Marvellous and Medicinal Properties attributed to	45.	453
Supplies		
Celebrated Sapphires		456
Dr.1901	••	138

সূচীপত্ৰ ৷

		•				
	_		. —			পৃষ্ঠা
	दिदम् ।					¢
র	<u>রুলাতি</u>	•••	•••	•••	•••	۵
Ę	সম্ভ কোপা খ্য	i-i	•••	•••	•••	40
•	বৈরত্ব	•••	•••	•••	•••	دد
7	ছে বা হীরক			•••	•••	226
7		•••	•	***	•••	১৩৭
	বজ্ঞমারণবিধি	•••	•••	***		359
	মাণিক	•••	•••	•••	•••	২•৩
	মাণিকের ছায়	तंपि	•••	***		રદળ
	বৈদৰ্য্য	•••	•••	•••	***	રંદ૧
	বৈদর্য্যের শুর্ণ		•••	***	•••	369
	देवमूर्यात्र स	ta 💮	•••	•••	•••	২৭৩
	মুক্তা	•••	•••	***	•••	933
	মুকার গুণ	***	***	***	•••	929
	মুক্তার দোষ	•••	•••	•••	•••	ott
	लाएमन	***	•••	•••	•••	৩৬৭
	বিহুম	•••	•••	***	•••	অ৮৭
	মর্ক্ড	•••	•••	•••		020
	মুরুক্তের টে	নাৰ	***	•••		ಶಾಕ
	মুরুক্তের খ	39 ···	•••	***	•••	925
	মর্কতছার	1	•••	***		835
	পুপরাগ	***	•••	***	***	802
	रे स नीन	•••	•••	•••	***	885
į	देखनीरनद	প্রথ	•••	•••	•••	889
١	देखनीरगद		•••	***	•••	865
١	दर्दछन	•••	•••	***	•••	845
١	পুরহ	•••	•••	•••	•••	873
l	इंदियाचा	•••	•••	•••	•••	875
1	450	***	•••	•••		523
1	ভীয	•••	•••	***	•••	,
1						



PART I.

मिश्यमाला।

मङ्गलाचरणम्।

यज्ञानध्यान्त प्रस्ति विधिष्ठारिमिर्ग कृष्यमाना प्रसान्ता योतास्मी ने वसन्ती ष्टिमकरस्वि योतमूपाटता वा । योणाद्रस्त्रं द्याना कमु दृदममनं सुम्नकं विभूती ता वन्दे वाणी प्रमुद्धा परिषदित वयाज्ञातता स दृद्दित ॥

जो चन्नानरूप चाँधरेको नाम करित है, बझा, विष्णु जीर महेग गयदा जाहा स्तृति कर्ते रहते है, जिस्की मूरत कित मान्त है, जो चकेद कमलकुक वनमे वास कर्ति है, विस्के खड़की किरण चन्द्रमान समान गुला गर्फ, जिस्का समांड किद गहनों में भूमित है, चौर जिस्के कमति वीण चौर कभी उन्द्रा प्रकाक योगा दिति है, वह प्रसन्न होकर महुष्की मुख्ताको नाम चीर कस्याण करे, वह प्रसन्न होकर महुष्की सुर्वताको नाम चीर कस्याण करे, वह प्रसन्न होकर महुष्की सुर्वताको नाम चीर कस्याण करे, वह वान्वादिनी सरस्तती देवीको वन्दमा कर्ता हो।

MANI-MÁLÁ,

A Theatise on Gems.

THE INVOCATION.

ness of ignorance! Her, who is ceaselessly adored by the Holy Triad, whose form is gentleness, who dwells constantly in the lotus forest, whose lustre resembles that of the moon, whose person is decked all over with milk-white ornaments, whose hand sometimes holds the hard handle of the Viná, at others, the neat volume, whose favor reclams people from ignorance and brings about their good,—hail to the word-presiding goddess, Saraswati!

যিনি অজ্ঞানতারূপ অদ্ধকার বিনাশ করেন, জন্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্ব সর্বান বাঁহার তব করিবা থাকেন, বাঁহার মূর্তি অতি প্রশান্ত, যিনি শেতক্ষল-কাননে নিবতর বাদ করেন, বাঁহার অদের আভা নিশাক্রসদৃশ, বাঁহার দর্বাদ্ধ খেত অলঙ্কারে ভূবিত, বাঁহার কর কমলে কথন কঠিন বাণা দণ্ড,কথন বা পরিছন্ত পুত্তক শোভা পায়,যিনি প্রশন্ত হাল্ মানবগণের মূর্বতা নাশ ও কল্যাণ বিধান করেন, সেই বাণ্ বাদিনী সরস্বতীদেরীকে বন্দনা করি ॥

मूचम् ।

रक्ष' निधारयेत् क्षेये सुई समुणमञ्जयं । सद्रवानामतो जाति गुणै तेषा परीचयेत्॥१॥ सखदा भणय' सुद्धा द खदा दोषणाजिन:। भती मणीना बद्धामि खचणादीनि तस्वत'। १ ॥

तचारी रत्नजातयः।

यज्ञस्तागोनेद्मपपरामा समरकता प्रोक्ता ।
चिपिन्द्रनीसमध्यपर्येदृष्यांय सुप्परामाय ॥ ३॥
कर्कतनं सपुतकं रुधिराख्यसम्बितं नथा स्कटिकं।
विद्रुममध्य यज्ञादुदिष्टं समस्रे तक्क्षे ॥ ॥

तर्जमा।

समस राज सात चीर ग्रुण पश्चित परीचा कर्क की विग्रह चीर ग्रुणयुक्त बीध कीए, वक्षी पन खालाने मे राज्नेक योग की १।

दे चवेष रत्न जिस्पकार मसुद्यके नानाप्रकारके गुपका निदान है, उसी प्रकारसे दोयदुक रत्न नाना-प्रकारके दु,सका चेतु है; चतल्ब रत्नका यदार्थ सद्य-यादि निपा जाता है। २।

रवया जात।

रत्न परीचा-प्रायन वहते हैं, वे हीरा, मित, गोमेद्यू भाषकः पाद्या, नीयम् या सीयाः अमुनियाः, पीपराजः, कर्वेतम्, ताम्दाः नरम्, पटिकः, चीरमुंगा पटार्थवी रत्नमे गर्यत्र हैं, चीर दत्नपूर्वक सन्तम चीर तद्वाम कर्ते हैं। शह ।

TRANSLATION.

- 1. Of the various kinds of gems, those only that, on examination, turn out to be sterling, should be treasured up.
- 2. As a pure jewel is a source of manifold blessing to man, so a flawy one is the cause of diverse troubles. I shall therefore expose the real properties of precious stones.
- 3—4. According to authorities in the science of precious stones, the following classification well nigh exhausts the more important ones: diamond, pearl, zurcon, ruby, emerald, sapphire, cat's eye, topaz, cymophane, garnet, spinel or balas ruby, quartz and coral.

অনুধাদ।

প্রথমে রত্ন সমূনাযের জ্বাতি এবং গুণ পরীক্ষা কবিযা যে গুলিকে বিশুদ্ধ ও গুণযুক্ত বলিয়া বোধ হইবে, তৎসমূদায কেই ধনাগানে স্থাপন কবা বিধেয়॥ ১॥

বিশুদ্ধ বত্ন যেমন মানবগণের অশের হথের নিদান, দোষায়িত বত্নও তক্ষপ নানা হুংথের হেতু; অতএব রত্ন-সমূহের যথার্থ লক্ষণাদি বলা যাইতেছে॥ ২॥

রত্ন পরীক্ষক পণ্ডিতেবা হীবক, মুক্তা, গোমেদ, মাণিক বা চুণি, পানা, নীলম্ বা নীলমণি, লন্ধনে বা বিড়ালচন্দু, পোধ-রাজ, কর্বেতন, তাম্ডা, নরম্চুণি, স্ফটিক ও পলা প্রভৃতিকে রত্নমধ্যে পবিগণিত কবেন, এবং অতি যত্ত্বসহকাবে এই সকল বত্ত্বেব অনুসদ্ধান ও সংগ্রহ কবিতে বিধি দেন ॥ ০ ॥ ৪ ॥ मृचम्।

शास्तिवर्णी प्रयमं ग्रुणद्वेषे तत् फलं परीचा च ।
मूच्य रक्षज्ञ यहेषे द्वाय स्वयं तत्वाना । पू ।
कुलानं पूपजायन्ते यानि चापष्ठते उद्दिन ।
दोषे सान्युप्युच्यन्ते ष्टीयन्ते गुणसम्पद्दा । ६ ।
यरीचा परिमुद्धाना रक्षाना एविवीमुजा ।
धारणं संप्रष्ठो वापि कार्यः त्रियमभीप्षता ॥ ७ ।
शास्त्रज्ञाः कुयलाचापि रक्षभाजः परीचकाः ।
त एव मूल्यमाषायान्वे नारः परिकस्तिताः । ८ ।

सर्जमा।

रत्नपार्ची पिएडत पहिले रत्नका करें, रक्न. इत्तर, यथेव भौर नका, नोकशान परीचा करके बाद उसके किसत करेंद्रे। पू।

जो रब्र कुद्ति भीर कुलानमें पबदा होता है, सोई. रब्र गुणहीन भीर दोगी होते हैं। हा

को राजा थप्ने मद्भवको कामना कर्ते हैं, उनको उपित है, पडिने रक्षकी परीचा कर्क उद्युपे जो निर्देश कोए, उसीको संग्रह भीर धारण करेट्टे। ७।

जो मनुष्य स्वयास्त्रमे निषुष, सर्वटा स्वका व्यवहार कर्ते हैं, किस् स्वका क्षेया दाम उपित है, उस्टे विशेष जाननेवाले, भीर स्वक्षेट्नमे परिपक है, यही सोग स्वयार्सी हैं। हा

TRANSLATION.

- 5. The worth of gems is ascertained by persons skilled in the knowledge of them, after examination of their figure, color, flawlessness or otherwise, and the effects deducible therefrom.
- 6. Stones originating on inauspicious days and at unlucky moments are not only void of any beneficial quality, but are positively harmful.
- 7. Those princes that are desirous of securing good fortune, should procure and wear jewels of spotless chastity.
- 8. Only such persons as have mastered the knowledge of gems, use them habitually, can judge their value with precision, and are skilled in the lapidary art, should be reckoned as connoisseurs of precious stones.

षप्रदोम ।

রত্ববিৎ পণ্ডিতেরা প্রথমে রত্বেব আর্ক্তি, বর্ণ, গুণ, নোষ এবং গুণদোষের ফলাফল পরীকা করিয়া পশ্চাৎ মূল্য নিরূপণ করিবেন ॥ ৫ ॥

যে সকল রত্ন কুদিনে কুলগ্রে উৎপন্ন হয়, সেই সকল রত্নই গুণহীন অথচ দোষান্বিত ॥ ৬ ॥

যে রাজা নিজ মঙ্গল কামনা করেন, তাঁহাব কর্তব্য, অথ্যে রত্ত্বের পরীকা করিয়া তমধ্যে যে ওলিকে বিশুদ্ধ বলিয়া বোধ হইবে, সেই গুলিই সংগ্রহ বা ধারণ করেন মণ্ম

বে সকল ব্যক্তি রহশান্ত্রনিপুণ, সর্ববদা নানারহের ব্যক্ হাব করেন, কোনু রহের কিরুপ মূল্য হওয়া উচিত, ইহার বিশেষভা, রহ-ছেদন-পরিপক তাঁহারাই রহ-পরীক্ত ব্লিয়া প্রিগণিত ইইতে পারেন ৪৮৪ रतानां सुषदोधप्रभावतो जनानासिटानिटे भवितुमक्त इति प्रकटीकर्तुं स्रोते स्थानकोपास्थानस्कृतम् ।

सूचम्।

स्वमन्तकोपाख्यानम् ।

चनमिचान्निप्तः निप्नस्य प्रचेनसचाजितौ । तस्य च सवा-जितस्य भगवानादित्यः चखा चमवत् । ६ ।

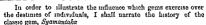
एकदातु सम्मोधेक्तीरसंत्रयः सूर्ये समाजितस्रष्टाव । तन्त्रनस्त्रतया समास्यानिमपूर्यमानोद्यातस्यस्य सस्यो । सस्यष्ट-मूर्तिभरं चैनमालोका ममाजितः सूर्यमास्य ययेव व्योक्ति त्वा बिद्धिरपद्योपनमसम्पद्यं तयेवाद्याग्रतो गतमध्यम न किश्विद्यगवता पसादीकृतं विशेषसुपत्तस्यामि । १० ।

रहोते सबदोधके प्रभावने जादमीओं के ग्रुम और ध्यग्तम होने सके, यह नात प्रकास करखेतेवाले यह जनहोंने समानकते न्यान योग किया है।

तर्जमा ।

यानमित्रका लेखका निम्न, और निम्नके दो लेखि । वर्षका नाम समाजित, और कोटेका नाम प्रमेन । भगवान् सूर्यदेव समाजितके वरम मिच हे। ८।

एक वमये सवाजित ससुद्रके किनारे बयेट कर सूर्यमें आराधना करते हो। एकदिल घोकर सूर्यमक्ता स्तीय पाठ करते हो, उस समये सूर्यम् उनके पाय आहि। सवा- जितने सूर्यमकी मूर्त सहमाने ना देखकर कहा, "भगवन! में आकाममें आपको जिवतरहथे आगके पिराइके समान देखता हा, आज आप हमारे सामने भीजूद हैं, जेंकेन उस परभी में आपको हसी तरहथे देखता हैं। आपके स्तामक की हिस्सा हैं। आपके स्तामक की हसी हुन हैंने नहिं देखा।" १०।



TRANSLATION.

The History of Syamantaka.

- Nighna, the son of Anamitra, had two sons, Satrájita and his younger brother Prasena A. great intimacy is said to have subsisted between Satrájita and the divine sun.
- 10 Once Satrájita took up his abode in the scacoast for the purpose of spending his time in worshipping the sun. After he had prayed long and intently, the 'king of day' appeared before him. Satrájita, not perceiving the god distinctly, said,— "Lord, why, notwithstanding your personal appearance before me, do I see in you the same globe of fire that crests the welkin? I see no signs of your favor."

রত্তমমূহের গুণনোধ প্রভাবে মানবগণের গুভাগুভ ঘটনা হইতে পারে, তাহাই প্রকাশ করিবার জন্য অন্থনে নাম্ভকোপাখ্যান যোজিত হইন।

অনুবাদ।

স্যমন্তকোপাখ্যান।

অনমিত্রেব পুত্র নিম্ন, নিম্নের ছুই পুত্র, জ্যেষ্ঠের নাম সত্রাজিত ও কনিষ্ঠেব নাম প্রসেন। ভগবান সূর্যদেব সত্রা-জিতের পরম মিত্র ছিলেন। ১।

এক সময়ে সত্রাজিত সমুদ্রকুলে অবস্থান কবিয়া সূর্য্যের উপাসনা করেন। একাগ্রচিতে স্ততিপাঠ কবাতে দিবাকব উহার সমিহিত হইলেন। সত্রাজিত দিবাকবেব মূর্ত্ত স্পষ্ট-ভাবে দেখিতে না পাইষা বলিলেন, ভগবন। আমি নভো-মণ্ডলে আপনাকে যে প্রকাশ আমিপিতস্কুপ দেখিতে পাই, আজ আপনি আমার কামুবে উপপিত ইইয়াছেন, কিন্তু তথাপি আপনাকে সেইজপই দেখিতেছি। আপনাব প্রসদ্ধাব কোন চিহুই দেখিতে পাইতেছি মা।১০।

मूषम् ।

द्रखेवसुक्ते (भगवता) सूर्येण निजकष्टादुन्मुच्य स्वभनाक-नामा मणिरवताये एकान्ते न्यसः । ततसमातास्रोज्ज्वल-इस्खवपुपं ईपदाविङ्गलनयनमादित्यमद्राचीत्। इतमणि-पातसवादिकञ्च चवाजितमाङ भगवान् वरमस्त्रनोऽभिमतं दृष्णीपृति। स च तदेव मणिरतमयाचत । स चापि तस्त्री तत् दन्ता विवति सं थिष्णात्रमास्रोड । ११ ।

चचाजितीऽपि श्वमतमणिरत्यस्ताधकाष्ट्रतया स्क्ये दव तेजोभिरशेपदिगन्तराष्ट्रद्रभासधन् हारका विवेशः। १२। तर्जमा।

स्वाजित चस् वेकीमत मिलरतुको चपने गलेमे पररतेची मूर्वेपके समान तेजस्ती घोकर चपने तेजको चारों चोर प्रकाम कर्ते छवे दरका नगरीमे हाखिल छवे। १२।

TRANSLATION

- 11. On being thus accosted, the divine sun took out the gem Syamantaka from his neck, and laid it out. Satrajita could now see his real form. His complexion was reddish like copper, and lustrous; his body was under the middle stature; his eyes were slightly tawny. After Satrajita had worshipped him duly, the divinity said,—"Satrajita, do you ask for some recompense for your merit." Satrajita thereupon asked for the gem. The sun accordingly gave it him and went away.
- 12. On wearing the jewel over his neck, he appeared refulgent like the sun, and entered Dváraká

অভ্ৰাদ।

সত্রাজিত এই কথা বলিবানাত্র সূর্য্যদেব আপনাব কণ্ঠ হইতে অমন্তক মণি উদ্যোচন কবিয়া এক পার্মে বাথিলেন। তদনতাব সত্রাজিত সূর্য্যদেবকে প্রত্যক্ষ দর্শন কবিলেন। তাঁহাব বর্ণ তাত্রেব ভাব ইবং লোহিত, উত্মন, শবীর থর্ব্ব, চক্ষু ইবং পিঙ্গলবর্ণ। অনতব সত্রাজিত প্রদিপাতপূর্ব্বক স্তবাদি কবিলে সূর্য্যদেব তাঁহাকে বদিনেন, সত্রাজিত। তুমি আমান নিকট অভিলয়িত বব প্রার্থনা কব। সত্রাজিত সূর্য্যদেবর এই বান্য প্রবণ কবিয়া সেই মণিবত্ব প্রার্থনা কবি লেন। অর্থনাও তদসুনাবে সেই মণিবত্ব সত্রাজিতকে প্রবান করিয়া ব্যানাক প্রবান করিয়াবান বিহান করিয়াবান। ১১।

সত্রাজিত সেই অনশ মণিরত্ব হঠে ধারণ করিবামাত্র মূর্বোন তাম তেজন্বী হইনা স্বতেন্দে দশদিব্ উল্মন করিয়া দ্বারকানগরীতে প্রবেশ করিলেন। ১২।





मूचम् ।

दारकावाधिकनपदस्तु नमायान्तमवेच्य भगवन्तमनादि-पुत्रपं पुरुषोत्तमं अवनिभारावतारणायांशेन सानुपद्धप-धारिणं प्रणिपलाङ्ग भगवन् ! भगवन्तमयं नूनं द्रष्टुमाया-त्यादिल्य:। दृत्याक्तप्य प्रचस्य च तानाङ मगवान् नायमादित्यः सवाजितोऽयमादित्यद्त्तं स्यमन्तकार्यं महामणि विश्व-द्वोपायाति। तदेनं विज्ञाः प्रस्तत दृत्युकास्ते ययुः ।१३।

स च तं स्वमन्तकार्खं महामणिमात्मनिवेगने चते।१८। प्रतिद्निञ्च तन्नणिर्तृप्रवरमधौ कणकभारान् सुवति।१५।

तर्जभा।

बरकानिवामी धादमी सवाजितको धाते देखकर पृथुकि भारके नाम करनेवाले घंशक्य मनुष्यक्य धनादि प्रयोत्तमके पास जाकर प्रणाम कर्क वीले, भगवन्! धापके देखनेकेवाची सूर्यप्रदेव धाते हैं। श्रीक्षण दन्की वष वात मुनकर षास्ते धात्ते वीले, तुम् लोग जिस्को सूर्यम खेबाल कर्ने छो, वष्ट सूर्यप्रविचित्त पर्णा । अध्यानिक राजा सवाजित हैं। उद्भने सूर्यप्रविचे देखा समनाक-नामे महामण्डिको पष्टकर वाष्ट्रां धागमन किया है, इस्-लिये तुम लोग निर्मये उनको देखो। श्रीकण्यकी दुम् यातको मुनकर सव दरकानिवासी च्वेगये। १३।

सवाजितने यही स्वमन्तकनामे महामणिको अपने मकानमे रख्या। १८।

वडी श्रेष्ठ मणिरतृ हर रोज श्राट भार सीणा देता १९५१

TRANSLATION.

13. When the inhabitants saw him coming, they hastened to that Incarnation of the Deity and Bearer of our sins—Krishna, and, howing themselves down before him, said,—"Lord! the divine sur is coming hither to see you." On hearing this, Krishna replied, with a smile, "He whom you take for the sun, is king Satrájita. He is coming hither, decked in the great gem obtained by him from the sun. You may therefore see him without fear." Thus enlightened, they went their way.

14. Satrájita kept Syamantala in his palace.

 This matchless gem every day produced eight loads* of gold.

অসুবাদ।

ষারকানিবাসী জনগণ সত্রাজিতকে আগমন করিতে দেখিযা পৃথিবীর ভার অবতরণের জক্ত অংশে মহুষ্যরূপী আনাদি পুরুষ পুরুষোভনের সমিধানে গমন করত প্রণিপাত-পূর্বক বলিল, ভগবন্! আপনাকে দর্শন করিবাব আশবে সূর্যাদেব আবিতেছেন। শুরুষ তাহাদিগের এই কথা শুনিয়া ফিতনুথে বলিলেন, তোনরা ঘাঁহাকে সূর্য্য নলিয়া বিবেচনা করিতেছ, তিনি সূর্য্য নহেন, রাজা সত্রাজিত। ইনি সূর্য্যদত্ত অমতকানে মহামণি ধারণ করত এথানে আবিতেছেন, অতএব তোনবা অশক্ষ মনে ইইাকে দেখ। শুরুকের এই কথা শুনিয়া তাহারা প্রস্থান কবিল ॥ ১০॥

সত্রাজিতও সেই জ্মন্তহনামক মহামণি আপনার নিকেতনে রকা করিলেন । ১৪।

শেই শ্রেষ্ঠ মণিরত্ন প্রত্যহ ঘাট ভার হবর্ণ প্রদব করিত। ১৫।

^{*} Sandrits, rice = 2) Tolk = 2,000 Pales of gold - Williams.

सूचम् ।

तत्प्रभावाच्च चकलस्त्रैव राष्ट्रस्य उपसर्गा धनाष्टरि व्यालामिचीरदुमिचादिमयं न मवति । १६ ।

षज्तोऽपि तद्रनुषप्रभेनस्य भूपतेर्योग्यमेतदिति लिपसा स्वके गोचभेदभयाञ्च प्रकोऽपि न जद्दार । १७ । स्वाजितोऽष्यज्युतो सामेतत् याचिष्यतीत्यवगतरतृतीम सम्बाने प्रसेनाय तद्रत्रै दत्तवान् । १८ ।

तरजमा ।

स्यमनाकर्माणके प्रभावसे राजमे पाणि ना वर्षनाः सापः, चागः,घोर चौर दुर्मिच इस सवका सय ना घा । १६ !

उस् महारतको राजा उग्रयेनके लायेक सममकर त्रीकष्णने उस्के लेनेके श्रमिलागी होकरमी जातको भगडके भयसे बावजुद यक्ति श्रीर ताकतके उस्को कोरसे न लिया। १७।

इस् मणि पर क्षत्याको खोम पयदा ऊत्या है, समफेत हैं, के पीके हमारे पाम यह प्रार्थना करेंगे। दूस् सयसे समाजितने अपने भाद्र प्रसेनको वह मणि दे दिया। १८८।

3

TRANSLATION.

- 16. Through its magical influence, the kingdom became free from draught, serpents, conflagration, thieves and famines.
- 17. The gem having been deemed worthy of Ugrasena in the opinion of Krishna, he was anxious to have it, but the fear of family feud restrained him from taking possession of it by force.
 - 18. "I understand that Krishna covets this jewel." Lest he asked for it of him, Satrájita transferred it to his brother, Prasena.

অভ্ৰাদ।

স্তমন্তক-মণি-প্রভাবে রাজ্যমধ্যে অনার্ন্তি, দর্প, অগ্নি, চোব ও ছর্ভিকাদির ভ্য থাকে না। ১৬।

নেই মহারত্ব মহারাজ উপ্রদোনের উপযুক্ত বিবেচনাব শ্রীকৃষ্ণ তাহা প্রহণাভিলাযুক হইযাও জ্ঞাতিবিরোধ আশ-স্কায় সামর্থ্যসত্ত্বেও বলপ্রকাশ কবিবা তাহা গ্রহণ করি-লেন না। ১৭।

এই মণিব প্রতি রুফের লোভ জমিনাছে, বৃঞ্চিতে পাবিতেছি, পাছে আমাব নিকট ইহা প্রার্থনা করেন, এই ভয়ে সত্রাজিত নিজসোদৰ প্রদেনকে তাহা সমর্পণ কবিলেন ।১৮।

मूचम् 1

तच्च गुषिना धियमाणमभेषसवर्षभावादिकं गुणसत्-पादयति चन्यवा य एव धारयति तमेव चन्तीति । चमा-विष प्रवेन' स्थमन्तकेन कष्टासकेनाम्बमाकच्चाटव्या चगया-मगच्छत । तच च सिंचात् वधमाप । साम्रञ्ज तं निचल्य विषोग्यमनमणिरत्नास्याग्रेणादाय गन्तुसदात' खन्नाधि-पतिना जाम्बवता इटी घातितस्य । जाम्बवानयमन् तम्मणि-रतुमादाय स्वविनं प्रविवेग स्कुमारकसंभाय च वानकाय कौदनमकरोत्। १८।

तर्जमा।

पित्र होकर पहरने वह मणि सोणा देगी, उसके विपरीत होने से अर्थात् अगृद्ध रहने से नियम उसके नामका कारण होगी। विशी समयमे प्रसेन वही मणि अपने गले में पहरकर घोड़े पर मयार होकर जिकार खेलने को बनसे गये थे। बनसे याते ही एक सेरने उसकी और उसकी घोड़े के मारा, चौर उस साथको सुहमें लेकर चला, जमी समयमें भाजुकके राजा जानुबन्तने उसको मारकर उस निर्माल मणिको से विवा, और अपने घरमें चला गया। और सुतुनारकनामें अपने जहकेको खेलने के विवे सवयाने किया। १८।

TRANSLATION.

19. When worn by a clean man, it produces gold, but to an unclean person it indubitably proves fatal. On one occasion, Prasena, decked in this gem, rode a-hunting into the forest. There a lion slew both the horse and the horseman, and was about to depart holding the gem in his mouth, when Jámbabán, king of bears, slew him in turn, took the spoil home to his cell and gave it to his son as a gewgaw.

অহ্বাদ।

পবিত্র হইয়া ধারণ করিলে সেই মণিবত্ব স্থবর্ণপ্রদ্রবাদি করে, তদক্তথায় অর্থাৎ অপবিত্র শবীরে ধাবণ কবিলে অবশাই তাহাব বিমাশেব নিদান হয়। কোন সময়ে প্রদেন
সেই অমন্তক মণি নিজকঠে পবিধান করিয়া অন্থারোহণে
ত্বগাতিলামে বনমধ্যে গমন কবেন। বনমধ্যে প্রবেশমাত্র এক সিংহ তাঁহাকে ও তাঁহাব অন্থকে বিনাশ কবিয়া
সেই মহামণি অমন্তক মুখে ধারণপূর্বক গমন করিতে উদ্যত
হইলে অক্ষাধিপতি আঘবান্ তাহাকে বিনাশ কবত সেই
অমল মণিবত্ব গ্রহণ করিয়া নিজ আবাদগর্তে প্রবেশ
কবিন এবং স্থব্নারকনামে আয়জকে জাঁড়নার্থ প্রদান
কবিন। ১৯।

TRANSLATION

20 When the Jadavas saw that the hour for Prasena's return had gone by, they concluded that, without doubt, Krishna had murdered him and ap propriated the gem, he having been before known to covet it

21 When intelligence of this false accusation came to the knowledge of Krishna, he assembled the Jadu host and entering the forest by tracing the hoof marks of Prasena s horse, discovered the dead body of Prasena and his steed. By showing the prints of the hons paws, he exculpated himself from the blame laid at his doors and then began to search for the hon guided by the paw-marks.

অহ্বাদ।

প্রত্যাগমনকাল অতিজ্ঞান্ত হইলেও বখন প্রদেন প্রত্যা গত হইলেন না, তখন যাবতীয় যত্ত্বংশীয় ব্যক্তি প্রকল্পব বলাবলি কবিতে লাগিল মে, শ্রীকৃষ্ণ অমন্তকের প্রতি অভিলাষ প্রকাশ কবিষাছিলেন, কিন্তু তাহা প্রাপ্ত হন মাই, অতএব আমাদিগের বিবেচনায় কৃষ্ণই প্রদেনকে বিনাশ কবিয়া মণি গ্রহণ করিয়াছেন, অভ্য কোন ব্যক্তি প্রদেনকে বিনাশ কবে নাই। ২০।

প্রীকৃষ্ণ এই মিথাপবাদেব কথা কর্ণপ্রশাবার প্রবণ কবিষা যন্ত্রিস্থাসমবেত হইষা প্রদেনের প্রশেব পদচিছ্ অমুগাবে বনমধ্যে প্রবেশ কবিষা দেখিলেন, প্রদেন অপ্রেব গহিত শিংহকর্তৃক নিহত ইইমা ছ্মিতে পতিত বহিষাছেন। প্রীকৃষ্ণ বসমভিন্যাহারী ব্যক্তিবর্গকে প্রদেনের মৃতদেহ ও নিংহেব পদচিছ্ দেখাইয়া নিজকলম্বাপন্যন ক্রিতেন, পদচাৎ শিংহেব পদচিহ্নামুগাবে তাহাব অমুসবণ ক্রিতে লাগিলেন। ২১।

22. After proceeding some way, he lighted upon the carcass of the lion. Having regard to the rarity of such a gem as syamantaka, he then proceeded to search for the bear in the direction pointed out by the traces of his paws. After having advanced awhile, he stationed his army in a valley; and himself entered the den of the bear. When he had advanced only half way, he heard the following sootling-speech addressed to Sukumára by his nurse:—

23. "Hush, child! Don't you know that the gem of which the prince of bears, your father, forcibly possessed himself by slaying the lion, has been given to you, and that now it is your own?"

षञ्दाम ।

প্রীকৃষ্ণ নিংহেব পদচিক্ ধরিদা কির্দ্ধুর গনন করিবা দেবিলেন, নিংহও কোন ঝাক্কর্ত্ক নিহত হইনা ভূমিতে পতিত রহিবাছে। পরে নেই দ্যাঘতকের কুর্লভন্থ জানের ধাকের পদচিক্লাসুনারে গনন করিলেন। কির্দ্ধুর গাননের পর এক পর্বতসমিহিত ভূতাগে দমুদার যতুনৈত ক্রাপন করিয়া ঝাকের পদচিক্লাসুনারী হইয়া ঝাকের পিবলমধ্যে প্রবেশ করিবাই ক্র্মারকের প্রতি ধাত্রীর নিম্নলিখিত সাক্নাবাদ শুনিতে পাইলেন। ২২।

স্থকুমাবক! ছুমি রোদন করিও না, এক দিংহ প্রদেনকে বিনাশ করিষা বে মণিরত্ব গ্রহণ করে, তোনার পিতা গুজরাজ সেই সিংহকে বিনাশ করিয়া সেই মণি আন্যন করিয়া তোনাকে দিয়াছেন, একণে এই মণিরত্ব তোনারই হইল।২৩। मृचम्।

इत्याकर्षा वस्यसमनाकोदन्तोऽन्त'प्रविष्टः कुमारक-कोदनकीवतन्त्र धाचीवक्ते तेजोमिर्झाज्यसानं स्वमनार्थं दर्दमः। ५८।

तश्च स्वमन्तकाभिनापचनुषमपूर्वे गुरुपमार्गतमवेन्य धानी चाहि चाहीति व्याजहार। २५ ।

तदार्भनादश्रवणानन्तरञ्जामपैपूर्णेच्चदयः स जास्ववनाज-गाम तयोद्य परस्तरं बुध्यतोर्द्वयोर्युद्वमेकावंत्रातिदिनान्यभवत् ।

तर्जमा ।

थील प्याने यह बात गुनते ही स्वमन्तक मणिका हाल मालुम करके गुहाने प्रवेश किया। देखा, वही स्वमन्तक मणि लेडको के खेलने के लिये दाई के हाथ में है, श्रीर उसके तेलसे पोरा तरक प्रकाशमान है। २९।

राईने देखा के एक चादमीने जिसको निष्ट कभी देखा या, फनत उस् मणिको देखता है, हमको नचाचो, हमको वचाचो ऐसा सोरकर उठी। २५।

शासुवना दाईका येशा शोर मुनकर क्रोधातुर घोकर विभीदम उन्हें जगद भा भीजद ऊषा; भीर बीछष्णसे बन्दू युद्ध करने लगा। भीर वह सदाई यकिम दिनतक ऊद्र।

- 24 On learning this, Krishna came forward, and found syamantaka lying in the hand of the nurse and illumining the spot.
- 25. When the eyes of the nurse fell upon a person whom she had never seen before, and who eyed cagerly the prize in her hand, she cried out, "help, help! O."
- 26. Alarmed by her cries, Jámbabán immediately appeared on the spot, filled with wrath, and entered into a fierce combat with Krishna. Thislasted for twenty-one days.

অহ্বাদ।

শ্রীকৃষ্ণ এই কথা শুনিবামাত্র গুমন্তকেব সংবাদ অবগত হুইয়া বিলমধ্যে প্রবেশ করিলেন, দেবিলেন, সেই গুমন্তক বালকের ক্রীড়াব নিমিত ধাত্রীহন্তে গুল্ত রহিষাছে, এবং ভাহাব তেলে চতুর্দিক আলোকিত হুইয়াছে। ২৪।

ধাত্তী সেই অদৃষ্টপূর্ব্ব অবচ জনন্তকের উপর সত্যন্তি পুক্ষকে দেখিয়া আনাকে রকা কব, রকা কব, বলিবা চীৎকার কবিবা উঠিল। ২৫।

চাঘনান ধাত্রীন এই প্রকান সভীতি চীংকার প্রবাণ ক্রোধে পরিপূর্ণ ইইয়া তংক্ষাং দেই স্থানে উপস্থিত ইইয়াই এইকোর সহিত ঘোরতর হন্দর্যক্র ঘারস্ত ক্রিন। সেই মুক্তে একবিংশতি দিন গত হইন।

હિંહ

मसम्।

ते च यदुरीनिकासाच सप्ताष्ट दिनानि तनिम्कृान्ति-मुदीस्त्रमाणासास्य । चनिव्यसमाणे च मधुरिवी चनावनस्य-मच विलेऽत्यन्तनाशमाप्तो भविष्यत्यन्यया तस्य कथमेता-षनि दिनानि प्रचुलये व्याचिपो भवतीति कताध्यवसाया दारकामागता इत: क्रच्य द्रति क्ययामासः । ५६ ।

तदान्धवाञ्च तत्कालोचितमखिलसुपरतिकयाकलापं चक्ः। ५७।

तच वास्य युष्यमानस्यातित्रहाद्त्तविश्चिटपाचीपयुक्तान्न-तोयादिना कष्णस्य वलप्राणपुष्टिरभूत्। २८ ।

तरजमा। श्रीर इधर यहुवंशीयांकी सेनाने श्रीक्रव्याकी ग्रुष्टासे बाधार चीने के इनतिजारमें सात भाट दिनतक काटा ; जब देखा, के त्रीकृष्ण सात चाट दिनतक्षमी फिरकर निर्ध भावे, तब उनलोगाने तजबीज किया, के श्रीकृष्ण ने जन्द गुष्टामे अपना प्राण कोड़ दिया, जीते रहने से दुसमनके मारने में दूबी देर नी होति, यही निचय करके उन-लोगोंने दरकामे फिर चाकर यह बात समूरकी, के त्रीक्षणाने पाण कोड दिया है। ५६।

श्रीकृष्णके भाद्रक्युने यह वात गुनकर उसीवक क्रिया-करण चर्चात् त्राह्वकर्मा करडाला । २७।

भारवरूने बजत् यहाये चन्न पानि त्रीक्रप्णके हेन दान किया। चीर वही चन्न पानि सद्दाह करने ज्रवे त्रीरुपाने बलका मलबुत करने वाला छया। २००।

TRANSPARTON

When the Jadu army found that he did not return after a week had passed they concluded him dead, for had he hved, (thought they) he would certainly have returned by this time. Under this conviction, they returned to Dwaraká, and gave out that Krishna had given up the ghost.

27. On receiving this tidings, the friends of Krishna performed his funeral ceremonies

28. The various articles of food offered to his manes contributed but to impart a fresh accession of strength, while engaged in the combat.

অনুবাদ।

এখানে যতু দৈনিকেবা শ্রীরুঞ্চেব গর্ভ হইতে নিজুমণ অপেক্ষায় সাত আট দিন অতিবাহিত কবিল। যথন দেখিল,
শ্রীকৃষ্ণ সাত আট দিনের পবেও প্রত্যাগত হইলেন না, তথন
তাহাবা হিব কবিল যে, অবশ্যই শ্রীকৃষ্ণ গর্ভমধ্যে লীলা
দ্যবন কবিষাছেন, জীবিত থাকিলে কথনই শ্রুজ্ব কবিতে
তাহাব এত বিলম্ম হইত না। এইবল্পে কৃতনিশ্চম হইমা
তাহাবা ছাবকায় প্রত্যাগমনপূর্বক এই কথা রটাইয়া দিল
যে, শ্রীকৃষ্ণ প্রাণ পবিত্যাগ কবিষাছেন। ২৬।

ত্রীকৃষ্ণের বন্ধুবাদ্ধবেবা এই কথা প্রবণ করিয়া তৎ-কালোচিত প্রেতকার্য্য সমুদায় সম্পন্ন কবিল। ২৭।

বদুগণ অতি শ্রন্ধাপূর্বক অরপানাদি শ্রীরুফেব উদ্দেশে দান কবাতে তত্বারা যুদ্ধে ব্যাপৃত শ্রীরুফেব বলাদির পুর্ন্থি-, সাধন হইল। ২৮।

मूचम् ।

इतरस्थानुदिनमतिगुरपुरुषिद्यमानस्यातिनियुरप्रहार-पीदिताखिलावयवस्य निराहारतया वलहानिः। निर्जितस्य भगवता जास्ववान् प्रणिपत्याष्ट्रसमुरुपद्यन्यसम्बद्धराद्यमा-दिनिरप्यचिनैभैगवान् न जेतुं यक्यः किमुतावनिगोपरैरस्य-वीर्येनैरावयवभूतैच तिर्व्यग्योन्यनुष्टतिभिः कि पुनरस्मिदिधै-रवस्यं भगवतीः स्मत्यसामिनी नारायणस्य सकलजगत्यरा-यणस्यायेन भगवता भवितव्यम्स्युकः। २८।

तर्जमा ।

भुषे ऊर्य थीर प्रयत्तवस्थान त्रीहाणाक बदे भारी यक्त मार्ग तामाम बदन पूर प्रश्नेजान के जाल्युयन बस्त प्राचित्र निष्या। त्रीहाणाने प्रनायाय उमकी परा- जित किया। जाल्युयन इस्त तरहर्षे भारतर त्रीहाणाको प्रणाम करके थोमा, भगवन। जिस् ममय यव गुर, प्रमुद, यद्य थीर गश्चे वगवरह प्राचीमाच एककट्टे शोकर क्षमी चाप्को पराज्यकर निष्यक्ते, तथ एट्टीके रहने याचे कमतावत मनुष्य-चालति तिल्या श्रीत-ष्रनुमारी हम ए से जाटमी घाषको भारते, यह कभी ध्यालसे निष्य प्रका। हमको मस यकोन उद्या है, के लो मस जगत्ना एकमाच चाथार हमारा प्रभू वही नारायगढ़ चेन्नई था सकतार हैं। 22।

29 What through privation, and what owing to the many and deep wounds inflicted by his powerful adversary, Jámbaban at length succumbed Being thus defeated, he bowed humbly to Krishna, and said, "Lord! when all the Gods and Asuras,* Jakshas† and Gundharvas‡ could not defeat thee, what is the chance of a weak beast like me, although in a human form? On my life, thou partakest of the nature of that Universal God who is the author of my life as of all else that breathe"

অমুবাদ।

নিবাহারে এবং প্রবল পর্বাক্তান্ত জ্রীক্লফের গুরুতব নির্চুর প্রহারে দর্ব্বাঙ্গ কতবিক্তত হওবাতে জাম্বরান্ এক বাবে নিস্তেজ হইমা পডিল, গ্রুতবা জ্রীক্লফ জনামানেই তাহাকে পরাজিত কবিলেন। জাম্বরান্ এইরূপে পরাজিত হইমা জ্রীক্লফের প্রণিপাতপূর্বক কহিল, ভগবন্! বথন সমূদায় হব, অহ্বব, বহু ও গর্কর্ম প্রসূতি প্রাণিচ্য একক্র হইমাও কথনই আপনাকে পরাজ্য কবিতে সমর্থ হয় না, তথন যে, পৃথিবীস্ব, অল্লমন্ব, নবাকার, বিত্যগ্রোক্তির অন্লু সামী অত্মবিব ব্যক্তি আপনাকে পরাজ্য কবিরে, ইহা কথনই সম্ভবপর নহে। আনাব নিশ্চব রোধ ইইতেছে, বিনি সমুদ্যি জগতেব একমাত্র আধার, আমার প্রস্তু সেই নারায়ণের অংশ আপনি আবির্ভুত হইমা থানিবেন। ২৯।

¹ Celestial mus cians who form the orchestra at the banquets of the gods and who belong to Indras heaven—(ibid)



^{*} Adversaries of the Gods.

Dem gods who are attendants on Luvers the Cod of wealth and employed on the care of his garden and treasures.—(Williams.)

मूचम्।

तस्में भगवानिष्ठतम्बनिभारावतारमाचच । ३०। प्रीत्याष्ट्रितकरतलस्पर्यने न चैनमपगतयुद्ध खेदं चकार ।३१। स च प्रणिपत्येन सुनर्पि प्रवाद्य लाखवतीं नाम कन्या

ग्रहागमनाघेरभूता ग्राह्यामास । ३२ । स्वमन्तकमणिमध्यसौ प्रणिपत्य तस्मै प्रद्दी । श्रज्ती-

अगराजनायमध्यसः प्राचयक्षं तसा प्रदर्शः । अच्यता-ऽप्यतिप्रयतात् तसाद्याद्यमपि तन्त्रणिरत्नमात्रशोधनाय अग्राडः । ३३।

तर्जमा।

श्रीरुप्पाने आख्वनत्तकी यह बात मुनकर कहा, के पृष्टीके बीमेंके उतारनेकेवाले हम संग्र खबतार ऊर्ये हैं। ३०।

जाम्बन्तः श्रीक्षयाकी वातसे सन्तृष्ट क्षोकर बदनपर क्षाय फेरकर युद्धकाकष्ट दूर किया | ३० |

उस्के बाद जास्त्रबन्त पृथीपर माधा रखकर प्रणाम करके त्रीकृष्णको प्रमन्न करके उस्के मकानपर त्रीकृष्ण स्रावेष, इन्कारण प्रणाके स्वरूप चपनो खेडकी जास्त्र-वतीको दिया। ३५।

ज्ञाम् यन्तने फेर प्रणाम करके स्त्रमन्तक मणिभी त्रीक्षणाको प्रवाने किया। चगर के त्रीक्षणाने चपने भक्तोंकी चिज सेना, गयेर मनागिक समक्रो, त्रीकृत नाचार प्रोकर चपना कलक दूर करनेक्षेत्रस्ते यक्त मणि लेना पदा। ३३।

30. At this, Krishna frankly confessed to his incarnation for bearing the sins of this world.

31. Highly satisfied at this frank avowal, Jámbabán began to shampoo Krishna's body, with a view to relieving the pain incident to the late combat.

32. Jámbabán again reverentially bowed, and, by way of paying suitable respect to Krishna for having condescended to come to his dwelling, bestowed on him the hand of his daughter, Jámbabat.

33 He also presented his divine guest with the gem Syamantala. Although fully alive to the impropriety of depriving his friendly host of the jewel, Krishna was obliged to accept it, in order to wipe out the stigma that had attached to his name.

অञ্বাদ।

এক্লি জাম্বানের এই কথা শুনিয়া তিনি যে, পৃথিবীব ভারাপনোদনের জন্ম অংশবিতাবৰূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন, এ কথা তাহাকে বলিলেন । ৩০ ।

জাম্ববান্ শ্রীকৃষ্ণেব বাক্যে প্রীত হইযা অঙ্গে হস্তামর্ঘণ দ্বাবা তাঁহার সংগ্রামজনিত রেশ অপনীত করিল। ৩১।

তৎপবে জাষবান্ প্রণিপাতপূর্বক পুনবায জীরুষ্ণকে প্রদান কবিয়া তাহাব ভবনে যে, রুষ্ণ আগমন কবিয়াছেন, তাহাব অর্ধ্যযক্ষপ জাষবতী নামী নিজতন্যাকে তাঁহাকে সম্প্রদান করিল। ৩২।

জাখবান পুনবাৰ ফুতপ্ৰণান হইবা ফ্ৰান্তক মণিও জ্ৰীক্লফকে প্ৰদান করিল। একপ অমুগত ব্যক্তিব নিকট হইতে সেই মণি গ্ৰহণ অতিষক্তব্য বিবেচনা কবিয়াও জ্ৰীক্ষক শুক্ত আত্মকলম্বাপনোদনের জন্ম আ্যত্যা তাহা গ্ৰহণ কবিলেন। ৩০।

मृचम्।

षष्ट जास्ववत्या दारकामाजगाम । भगवदागमनोज्ञूतषर्भौत्कपस्य दारकायासिजनस्य कृष्णावलोकनानुव्यक्षेवातिपरिणतवयसोऽपि नववौवनिभवाभवत्। चानकदुन्द्भिद्य
दिष्टत्रादिष्टेप्रति च सक्लुयादवाः स्त्रियस्य सभाजयामाग्रः। १४।

भगवानिष यद्यानुभूतमश्रेषवाद्वसमाजे यद्यावद्राचचन्ने स्थमन्तकः वचानिताय दत्त्वा मिद्याभिश्वाचित्राद्विमवाप जास्ववतीज्ञान्तः प्रदेशितिकार्यामास । यचाजितोःपि मवास्यां-भूतमितिकारोपितिनिति जातसन्त्वासः स्वमृता मह्यभामा भगवते भावा ददी । १५ ।

तर्जमा ।

उस्के बाद त्रीकृष्ण जामवती सिंहत हरकामे किर आये। त्रीकृष्णके केर धानेसे हरकानिवासी लोगके रीसे धानन्द उत्ये, के बूदे धादमी जवानके रीसे ताकतदार भोगसे चौर तमाम यदुवंशी मुद्री पुरुष वस्तुदेवके पाम जाकर मञ्जत धानन्द जाहेर करने लगे। ३८।

इस् मणिके मध्ये जो जो ज्याचा, त्रीक्रणाने सबसे सहा ! भीर समाजितको वधी मणि देकर भपने मुठ कल हुई । एटे। उस्के बाद जाध्यवतीको भन्तः प्रत्मे भेजवा दिया। समाजितन जो त्रीक्रणाको मुठा कन हु चगायाया, उस्के सम्बद्ध बज्जत भयभीत दोकर भपनी खेद्भी सल्यभामाको द्याने कर दिया। ३५।

- 34. Then Krishna returned to Dwaraka with Jambabati. His unexpected return infused such joy into the people, as made even the old young. All the men and women of the Jadu race flocked to Vasudeva and expressed their heart-felt congratulations.
- 85. Krishna now related all that had befallen the gem; and finally bestowing it on Satrájita, wiped out the 'damned spot' on his fair fame. He then sent Jámbabatí to the inner apartments. Satrájita now became a prey to fear for having groundlessly blamed Krishna, and married his daughter Satyabhámá to him, by way of conciliation.

षञ्चाम ।

অনন্তর শ্রীকৃষ্ণ জাখবতীর সহিত দারকায প্রতিগমন করিলেন। শ্রীকৃষ্ণের পুনরাগমনে দারকানিবাদী জনসমৃ-হের এরূপ আনন্দোদয় হইল যে, শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া বৃদ্ধ ব্যক্তিরাও নব-মুবকের ভাষ বলশালী হইল, এবং যতু-বংশীয় সমুদাষ স্ত্রী পুরুষ বস্তুদেবের নিকট গিয়া মহা আনন্দ প্রকাশ করিতে লাগিল। ৩৪।

এই মণিদদ্ধে বাহা বাহা ঘটিয়াছিল, ঐক্য সর্বাদ্দিদ্ধে তাহা ব্যক্ত করিলেন, এবং সন্তাজিতকে সেই অমতক দি প্রদান করিরা নিজ নিবাপবাদ হইতে মুক্ত হইলেন। পবে কাববভীকে অন্তঃপুরে প্রেরণ করিলেন। সন্তাজিতও ঐক্ত ক্ষের প্রতি অকারণ করারোপ করিয়াছিলেন বিল্যা অত্যন্ত ভীতান্তঃকরণ ইইবা তাঁহাকে নিজ তনমা সত্যভাবাকে প্রদান করিলেন। ৩৫।

म्लम् ।

ताद्यामूरक्षतवर्षेयतथन्त्रमुखा यादवाः पूर्वं वरयामासः। ततस्त्रमुद्धानादवज्ञातमात्मानं मन्यमानाः सचाजिते वैरानुः वसं चक्षः। चक्र्यक्षत्रमुखाय यतथन्त्रानमूद्यः ययभितद्वरात्मा सचाजिते योऽस्माभिभवता चास्ययितोऽप्यात्मजान् सम्मान् भवन्तं चाविगणय्य क्षप्याय दत्तवान्। तद्वमतेन जीवताः चातिविने तन्मचारतं त्यया किं न गृद्धते। ययमयस्युपपत्स्यामः यदाय्युतस्वापि वैरानुवस्यं करिः प्यतीति। ३६।

तर्जमा ।

चक्र, कतवर्मा चौर गतधन्ता यदुवंशीयोने पिंच सलामामके सादिकरनेके जिये सवाजित के कहाया! अब सल्यामामके बीक्रयाके हायाले करनेने उन समेनि व्यापान के देखाने करनेने उन समेनि व्यापान के देखाने करनेने उन समेनि व्यापान के देखाने करने के तैयार ज्ञये। चक्र्य चौर कतवर्मा वगयर यदुवंशी गतधन्ताले कोने, के देख, सवाजित बदा इराज्या है। इमने चौर तुमने मवाजितमे मत्यामामकी दरखान कियी, विका असने इस दोनोमेसे किमीको न दिया, चौर चवाम करके चीक्रयाकी दिया; इस्विये हमारे तुमारे सलामे हमको जीता रखना मनाविक निष्टा वुव हो, जो उसकी मारकर वह मणि जेनेवी। चार क्रया इस वावमे तुमसे इसननी करेंगे, नो हम साम कहते हैं, के जबर इमनोग तुझारी मदद करेंगे। हैं।

36. Akrura, Kritabarmá, Satadhanyá and other jádavas had before this sought the hand of Satyabhámá. Now sceing that Satrájita gave her away to Krishna, they felt insulted and plotted against the father. Akrura, Kritabarmá, &c., said to Satadhanyá—"Lo! Satrájita is a villain: see, he has given away Satyabhámá to Krishna, slighting us. Down with him! Why do you not slay him and possess yourselves of the matchless jewel held by him? If Krishna prove hostile to you, depend upon it, we shall be at your back."

অনুবাদ।

অকুব, কৃতবর্মা ও শতধ্যা প্রভৃতি যাদবর্গণ পূর্বের সেই
সত্যভামাকে বিবাহার্থ সন্ত্রাজিতের নিকট প্রার্থনা করিয়াছিলেন। এক্ষণে সেই কল্লা জীকুঞ্চকে সমর্পণ করাতে
ভাঁহারা সকলে আপনাদিগকে অবমানিত বোধ করিয়া
সন্ত্রাজিতের প্রতি বৈরাম্প্রচানে বত ইইলেন। অকুর ও
কৃতবর্মা প্রভৃতি যত্ত্বংশীবেরা শতধ্যাকে কহিলেন; কের্
কৃতবর্মা প্রভৃতি যত্ত্বংশীবেরা শতধ্যাকে কহিলেন; দেব,
সন্ত্রাজিত অতি তুরাল্লা, কারণ, ভূমি এবং আমবা ইহাব
নিকট সত্যভামাকে যাচ্প্রা করিয়াছিলাম, কিন্তু সে
তোমাকে ও আমাদিগকে অবজ্ঞা কবিয়া এথন কি না
কৃষ্ণকে দেই কল্লা দান করিল; অতএব আমাদিগের
বিবেচনায় ইহাকে জীবিত রাথা কর্তব্য নহে। তবে
ভূমি রে, কেন ইহাকে বিনাশ করিবা সেই মহামণি এহণ
করিতেছ না, বলিতে পারি না। যদি শ্রীকৃষ্ণ এ বিষয়ে
তোমার সহিত বৈরতা করেন, আমরা মুক্তকণ্ঠে বলিতেছি,
অবগ্রুই তোমার সাহায্য কবিব। ৩৬।

म्सम्!

एवसुकस्रवेत्यमावयाच । जतुगृचद्यानाम्य पायडु-नन्दनानां विद्तिपरमार्थोऽपि भगवान् दुर्वेराधनप्रयतः मैथित्यार्थे कुल्पकरणाय वारणावतं गतः । ३७ ।

गते च तिस्तन् सुप्तभेव सवाजितं शतधन्वा जधान
मणिरत्नशाद्दे। पित्वधामप्रपूर्णां च सत्यभामा श्रीष्ट्रं स्टनमारूदा वारणावतं गत्ना सगवते द्रष्टं प्रतिपादितेति चचान्तिमता शतधन्वना चसात्पिता व्यापादितः तच्च स्टमन्तजमणिरत्नमपद्धतं। तदियमस्यायहामना। तदाबोच्य यदच
सुकं नत् क्रियतामिति हुण्णमाह। हेष्र।

तर्जमा ।

मतधन्याने चम् रक्षी यह बात मुनकर कबुल किया।
याद उपके श्रीकृष्णाने यह बात मुनके पायुडवगण जार्घाएडमे ज्यनकर मरनाये हैं। उद्योधिन जिससे फेर पायुडकी
तलास नाकरे, इस चनिम्रायसे इन्द्रमुख्ये श्राह करानेयासे चने गये। ३७।

श्रीकृष्ण के इन्द्रप्रस्के आनेके बाद स्रतधन्याने सवा-जितको सोते उद्ये मारकर स्वमन्तक मणिको चोराय निया। सत्यभामा बापके मरेजानेके दुःखसे क्रोधातुर कोकर उसी समये रयपर सवार को इन्द्रपस्थको पज्जं च गर्रे, चौर श्रीकृष्णम कहा, क्यारे बापको तुक्कारे साथ क्यारे सारि होनेके सबस्के सत्यन्याने मारहाला, श्रव पाय इस बादमे जो मनासिक हो, सो क्याये। १८।

37. Satadhanvá consented. In the meanwhile, Krishna with a view to confirming Durjyodhana in his belief that the Pándavas had been burnt to death in the house of lac, went to Báranábata in order to perform their funeral obsequies.

38. Taking advantage of his absence, Satadhanvá murdered Satrájita while asleep and took possession of Syamantaka. Satyabhámá, all grief for the death of her father, immediately went to Báranábata and said to Krishna, "Satadhanvá has murdered my father and stolen the gem Syamantaka, because he gave away my hand to you; now, I leave it to you to do the needful."

অভ্যাদ।

শতধ্যা অক্রুরাদির কথার সন্মত ইইলেন। পরে এক্রিফ পাওবেরা জতুগৃহে দশ্ধ ইইবাছেন, এই সম্বাদ প্রবণে ছর্য্যোধন যাহাতে তাঁহাদিগের অবেবণে আর অধিক যন্ত্র না করেন, এই অভিপ্রায়ে পাঞ্নলনদিগের প্রেত-কার্য্য করিবার জন্ম বারণাবতে গমন করিলেন। ৩৭।

প্রীকৃষ্ণ বারণাবতে গমন করিলে পর, শতধরা সন্ত্রাজিতকে হুপ্তাবন্ধার সংহার করিয়া অমন্তকমণি অপহরণ করিলেন। মতাভামা পিতৃবধামর্যপূর্ণ ইইনা তৎকণাৎ রথারোহণে বারণাবতে উপস্থিত ইইলেন, এবং প্রীকৃষ্ণকে কহিলেন যে, আমার পিতা আপনাকে আমায দান করাতে শতধরা ভাঁহার প্রাণ বিনাশ করিয়া অমন্তক মনি অপহবণ করিয়াছে। একণে এ বিষয়ে আপনার যাহা কর্তব্য ইয়, করুন। ৩৮।

मूचम्।

तया चैवसकः परितृष्टान्तः करणोऽपि क्रय्याः सत्यभामाः ममपतास्रतोचनः प्राह सत्ये। ममेपावहासना नाहभेता तस्य इराक्षनः सहिष्ये। नम्रानृब्बद्धाः वरपादपं तत्क्षतनीडाः यिषो विहदा वस्रवे। ३६।

तद्वमत्यर्थमसुनास्मत्युरतः शोकप्रेरितवाक्यपरिकरेण इत्युक्ता दारवामग्येत्य ववदेवमेकान्ते वासुदेवः प्राप्त स्वगयाः गतं प्रसेनमटत्या स्वगतिर्केद्यान । सवाजितोऽप्यश्चना यतप्यन्यना निधनं प्रापितः । तद्भयविनायात् तत्राणिरतः मावास्या सामान्यं भविष्यति । ४०।

तर्जमा ।

सत्यभामाको यह बात गुनकर सनधी सनसे बद्धत सन्तुष्ट छोकर बनावटकी सुख खाखे करके सत्यभामासे योने, हे सत्ये! यह तुझारे बायका मारना निष्ट है, बलके हमारि बेह्जुरी है। हम कभी एँ ने दुरात्माका अपमान यह ना महेंगे। गाळको पहिन्ने न कटनेसे उनकी रहनेवाने परीको मारना सुमकी न है। ३८।

तुम चव घमवे दू सकी बात मत कहो। श्रीकृष्णा हमतर्हिं सत्यमामाको शाना करके दरका फेराकर यन रामको एकान्तमे नेजाकर वोले, के प्रमेन सिन्दे डायमे वनमे मरागवा, चर मधाजित शतयन्याक हायसे वध ऊवा। इस बारण उम्हे मरेजानेंसे स्वमनाक हमारे तुझारे टो घारमोका होता। 80।

39. Although this intelligence filled Krishna with delight, (the cause whereof will appear in the sequel), he feigned wrath and with blood-shot eyes, said, "O Satye! This proceeding of Satadhanvá has not disgraced your sire but me, and woe unto the wretch for it. Unless you ascend the tree where the bird has taken shelter, you can not kill it."

40. "Pray, fobear to bewail the loss of your father" Thus having soothed Satyabhámá, Vásudeva returned to Dwáraká and taking Baladeva aside, said, "Prasena, as you know, was slain in the forest by a hon, now Satrájita also has been killed by Satadhanvá. These two having died, Syamantaka will be ours."

অञ্বাদ।

সত্যভামা এই কথা বলিলে, এক্স মনে মনে অতিশ্য সন্তুউ হইষাও কৃত্রিম ক্রোধভবে চক্ষুর্থ লোহিতবর্ণ কবিষা সত্যভামাকে কহিলেন, সত্যো ইহা ত তোমার পিতার অবমান নহে, আমারই অপমান কবা হইষাছে। আমি কদাপি সেই ভ্রান্ত্রকত এই অবমাননা সহু কবিব না। আন্ত্রাত্তককে অগ্রে উন্নন্তন না কর্মলে তদান্ত্রিত পক্ষীকে কথনই বিনাশ কবিতে পাবা যাব না। ৩৯।

তুমি আমাব নিকট আব শোকব্যঞ্জকবাক্য প্রযোগ ববিও না। বাহদেব সত্যভামাকে এইপ্রকাব সান্ত্নাবাক্য বলিষা ঘাবকায প্রত্যাগমনপূর্বক বলদেবকে নির্জনে ডাকিয়া বলিলেন; দেখুন, প্রসেন ত বনমধ্যে সিংহকর্তৃক নিধনপ্রাপ্ত হুইযাছে, অধুনা স্ত্রাজিতও শতধ্যাকর্ত্ক নিহত হুইয়া-ছেন। অত্যবে এই উভ্য ব্যক্তিব বিনাশ হওয়াতে অমন্তক আমাদিগেব হুই জনেব হুইবে। ৪০।



मृजम्।

तद्दत्तिष्ठ चारकृता रयः शतध्युर्तिधनायोद्यमं कुर इत्यमिषितस्रवेति समन्वोप्(धतवान् । क्रतोद्योगौ च ताद्यभा-द्वपत्रथ्य ग्रतथन्ता क्रतवस्यांषस्रपेत्य पाण्यि पूर्णकर्मानिम्न-भचोदयत् । चाच चैनं क्रतवस्यां नाधं वत्तभद्रवाद्धदेवाश्या गष्ठ विरोधायानम् इत्युक्त साक्षूरमचोद्यत् । चाच चासाविष निष्ठ क्षियत् भगवता पाद्मचारपरिकस्यितज्ञान्तृयेण चस्रप-वरवनितावेधस्यकारिणा प्रवत्तरियुचकाप्रतिष्ठतस्वकेण चिक्रणा

तर्जमा।

भाप उठिये, और रवपर सवार होकर प्रतथन्वाके मारनेकेवासे तैयार छजीये। वर्ज्यवेन त्रीक्रपाकी यह सात प्रनक्तर कहा, ऐमाडी होगा। क्रणावलराम उन्हर्क लड़ारकेवासे तैयार छवे है, प्रतथन्वाने यह वात प्रनक्तर कत्वमांचे मदद चाही, उसने कहा, के हम क्रपावलरामधे उदाह न कर सकेंगे। तब प्रतन्वाने श्रक्तर् पास जाकर मदद चाही। सक्तर् कोचे के जिङ्गेने एक लायसे तिनी होगको कत्यायमान करिद्याया, और जिनका बदा प्रवल पराक्रम है, और अपराधी हतीयोंको जिङ्गेन विधवा कर दिया है, और अपराधी हतीयोंको जिङ्गेन विधवा कर दिया है, और अपराधी हतीयोंको जिङ्गेन विधवा कर दिया है, और अपरोधी हतीयोंको जिङ्गेन विधवा कर दिया है, हो स्ववार अपराधी सगवान त्रीकृष्णके साय,

41. "Do you therefore, Sir, get up, and prepare for slaying Satadhanva" Baladeva replied:—"Be it so." Hearing that Krishna and Balarama were preparing for battle against him, Satadhanva asked the aid of Kritabarma. "I shall not be able to compete with Krishna and Balarama," was the answer of Kritabarma Satadhanva now applied to Akrura. Akrura said, "He who by one kick shook the three worlds, who has brought about the widowhood of the wives of mighty Asuras, who by his discus subdues powerful enemies, is an overmutch

অভুবাদ।

আপনি গাত্রোখান কফন, বথানত হইবা শতধবাকে
বিনাশ কবিবাব জত্ত উদেবাগী হউন। বলদেব একুফেব
এই কথা শুনিয়া তথান্ত বলিয়া শীকৃত হইদেন। বৃষ্ণ
বলবান তাঁহাব বিক্তে সংগ্রামার্থ সঞ্জিত হইদেন। বৃষ্ণ
বলবান তাঁহাব বিক্তে সংগ্রামার্থ সঞ্জিত হইদাহেন, এই
কথা শুনিয়া শতধ্যা কুত্বর্মাব নিকট সাহায্য প্রার্থনা
কবিলেন। আনি কৃষ্ণ বলদেবেব সহিত সংগ্রাদে
সমর্থ হইব না, কুত্বর্মা শতধ্যাকে এই কথা বলিলে শত্
ধ্যা অকুবেব নিকট সাহায্য প্রার্থনা কবিনেন। অকুব
বলিলেন, ঘিনি এক পদাখাতে জগজ্র্য কম্পিত কবিয়াছিলেন, ঘিনি অতি প্রবল প্রাক্রান্ত অন্তবগণেব বনিতাবর্গেব
বৈধব্য-সম্পাদন করিয়াছেন, ঘিনি স্বীয় চক্রে প্রবল রিপুচক্র দলন কবেন, সেই চক্রী ভগবান প্রীকুষ্ণেব সহিত

मूचम्।

मदमुदितनयनावलोकितारिवलविशातनेन श्वतिगुरुवैरिवार-णाकपणाविष्कृतमधिमोरुमीरेख सीरिणा च सह सकत जगदन्द्रानाममरवराणामवि योहु समय क्रिमुताहम्।

तद्न्यत. भरणमभिखव्यताम्। ४१ ।

इत्युक्त' शतधनुराष्ट्र यदास्मत्परिचाणामम्य भवानात्मान-मक्ष्मच्छिति तद्यममान्मिक संष्टद्या रच्चताम्। द्रत्युक सोऽप्याच्च यदान्तायामप्यवस्थायां न कसीचिद्ववान् कथतिप्यति

for even the gods, not to speak of weak men like us; and who again can take the field against him whose half shut eyes (through drink)* can disperse adverse hosts by his side-glances, and who has achieved immortal fame by drawing by main force a herd of elephants which had arrayed themselves against him—namely the mighty Haláyudha? You must therefore seek for help in other quarters.

42. Hearing this, Satadhanvá replied, "If you don't think you can assist me, you will, I hope, oblige me so far as to keep this gem with you" "I can comply with your request," said Akrura, "on condition that you engage never to give this fact out—

অহ্বাদ।

এবং যিনি স্থবাপানমূদিত ন্যনকটাকৈ দকল শক্রুপৈয় সংহাব কবিতে পাবেন, অত্যন্ত প্রবল শক্তুপেপ দন্তিযুথ আকর্ষণ কবাতে বাঁহাব মহিনা প্রচাবিত হইযাছে, দেই হলামুদ্রেব দহিত যুক্ত কবিতে লোকপুজিত দুেবগণ্ড যথন সমর্থ হন না, তথন আমবা কোধায় আছি। অত্যব তুমি অয় কোন ব্যক্তিব শ্বণাগত হইতে চেকী কব। ৪১।

শতধ্যা অকুবের এই কথা শুনিধা বলিলেন, বদি
আপনি আমাকে বকা কবিতে পাবিবেন না, এরপ
বোধ কবেন, তাহা হইলে এই মণিটা গ্রহণ কবিবা
আপনাব নিকট বাগুন। অকুব শতধ্যাব উক্ত বাক্য
শুনিধা কহিলেন, দেখ, যদি তুমি আপনাব চব্য
দশাতেও একথা কাহাবও নিকট প্রকাশ না কর,

Baladera as a staunch votary of Bacchus as also Krishna although
in a lesser degree The former is always 'tottering' and 'reeling' '> 1de
Horscanza, a chapter of Mahdbharata, and a lingilly interesting and
entertaining paper by Dr Rijendra Lala Mittra in 'No CLYXX. of th
Assatic journals.

मूचम्।

तद्धमेनं यधीयामि । तयेतुरके धकूरसन्मिषरतं जग्राह। ४२।

यतधतुरप्यतुलवेगां यतयोजनवाहिनीं वदवामारुद्याप-कानाः । येव्यमुप्रीवमेषमुप्पवलाहकाम्बन्तस्यसुक्तरयाः

विक्तिती वलदेववासुदेवी तमनुप्रयाती । ४६ ।
सा च यडवा यतयोजनप्रमाणं मार्गमतीत्व युनर्पि
बाध्यमाना मिधिनावनोहेशे प्राणानुत्ममर्का। यतधन्रिप तो परित्यच्य पदातिरेवाद्रयत्। ४८ ।

तर्जमा।

हों इस इस मणियों कपुत्र कर सके हैं। शतधनाने यदी मानाकाः मणि चाक्रूरके दायाने की, चाक्रूरनेभी वड मणि ग्रहण किया। ४५।

सनधन्याने चतुरको मिन देकर रोज चार श्री कोस जानेवान घोदेपर छवार कोकर भागा। एक्पायनदामने सतधन्याके भागनेका काल सुनकर श्रीत्य, सृत्यीय, भेगपुष्य चीर कनाकक नामे चार घोदेंको रुवसे सुना छवार कोकर सनधन्याके विके विकेटी है। १४।

सत्यम्याचे घोदी एवटिनसे चार श्री कोश लावर घेर चनमेने निवित्तारेसचे करिन लड्डलमे पुनवर सरगयी। स्तथन्या छम् सरा घोदीको कोद्वर पायटन सागा। १८॥

nay, not even in your death-bed." Satadhanya, agreeing to this, Akrura accepted the gem.

43. Having given the jewel to Akrura, Satadhanvá mounted a mare which could go a hundred jojanas* a day, and departed. On hearing of his escape. Krishna and Balarama yoked to a car the four horses named Saivya, Sugriva, Meghapushpa and Balahaka and hastened in pursuit of the fugitive.

44. After having gone a hundred jojanas in one day, the mare of Satadbanvá died of fatigue in a woodland tract close to Mithila + So he was obliged

to continue his journey on foot.

অভুবাদ।

তাহা হইলে আমি তোমার বাক্যৈ সমত হইতে পারি। শতধনা তাহাই দ্বীকার করিয়া মণিটা অক্রুরকে প্রদান করাতে অক্রবও গ্রহণ করিলেন। ৪২।

শতবন্ধা অক্রুরকে মণিরত্ব প্রদান কবিষা দিবসে শত-যোজন বাহিনী, অত্যন্ত বেগশালিনী ঘোটকীতে আরোহণ-পূর্বক তথা হইতে নিজ্রান্ত হইলেন। কৃষ্ণ বলরাম শতধরার পলায়নসমাচার প্রাপ্তে শৈব্য, স্থত্তীব, মেঘপুষ্প ও বলাহক নামে অশ্বচতুষ্ট্যযোজিত রথে আবোহণ করিয়া শতধ্যার পশ্চাৎ ধাবমান ইইলেন। ৪৩।

শতধরার বডবা এক দিবদের মধ্যে শত যোজন পথ গমন করিয়া পুনরায চালিত হওয়াতে মিথিলাব সমিহিত বনপ্রদেশে প্রাণত্যাগ করিল। শতধন্বা মৃত বড়বাকে ত্যাগ করিয়া পদত্রজেই গমন করিতে লাগিলেন। ৪৪।

^{*} A particular measure of distance, sometimes regarded as about equal to an European league, (as four or five English miles, but more correctly =4 krosds or about mine miles; according to other calculations=2; English miles, and according to some=8 t-rota) (WILLIAMS) and also Mr. Bacontar's interesting paper on Buddutic Remains of Behar, page 211, No. CLXXX, of the Journal of the Acastic Society + The Modern Oade.

म्लम् ।

रुप्पोऽपि वलभद्रमाष्ठ तावद्वैव ख्रन्दने भवता खेयम्। षष्टमेनमधमाषारं पदातिरेत्र पदातिमनुगम्य वावद् धातः वामि। षत्र षि भूभागे हष्टदोपा घया नैतेऽस्वा भवतेर्गं भूभिभागसुक्षक्वः नेवाः। ४५।

तथेत्युका वनम्हो रय एव तस्त्री। क्रत्योऽिष दिकोयमार्च भूमिभागमनुस्त्य दूरस्यस्थेव चर्क विद्वा स्तवनुषः
स्रिट्यिच्हेद। तच्करीराम्बरादिषु च वज्जप्रकारमन्त्रिष्यद्विष्
स्यमनाकं मिर्ण नावाप यदा तदोपगस्य वन्तभद्रमाच एथै-वास्त्राभिः घातितः सत्यमुनं प्राप्तं च्यविन्त्रगत्त्वारभूतं तन्त्राणिरकं। दृत्याकच्यं उद्भृतकोपो वन्तदेवो वास्तदेवमाच

तर्जमा।

जीरुष्ण वलरामचे बोले, चाप इस जगड इस रथपर
रिहेंथे; इस रकेलेडो पायदल उस चाधम-चाचार यत-धन्ताको मारकर चाते हैं। इसारे घोड़ोंने इस जगड चिनट देखा है, इस कारण इन घोड़ोंको इहांचे आगे लेजाना मनाधिक नहि हैं। 84 ।

वनराम इम वातको मानकर उस रवपर वयठ रहे।
श्रीतिष्याने दो कोशवे चन्न फेककर स्वत्यच्याका श्रिर काठ
उत्तरा। चीर उसके कपदोमे मिणको तलास किया,
मगर न प्या। तव बलरामसे चाकर कहा, के इमने
भेषयरा स्वत्यचाको मारा। को मिण तमाम इनियाको दौलतका मूल है, यह न मिलि। बलमद्र श्रीतिष्याको यह बात सुनकर यहन, क्रोध करके बोले

45. When Krishna came to the spot, he said to Balarama! "Please stay here, while I go to have the life of this slave. Our horses has come upon this unsightly spectacle here. They should not

therefore go forward."

46. Baladeva accordingly remained in the car. After having proceeded only two miles or more, Krishna sent his discus from a distance and cut off the head of the fugitive. Next he examined Satadhanva's body and searched his clothes for Syamantaka, but in vain. He returned to Baladeva and communicated his disappoinment. "We have slain Satadhanva to no purpose, because that pink of perfection, Syamantaka was not with him." At this Balarama flew into a towering rage—

অভুবাদ ৷

কৃষ্ণ বলরামকে কহিলেন, আপনি এই স্থানেই জন্দনে অবস্থিতি করুন; আমি একাকীই পদত্রজে সেই অধনাচার পদাতি শতধবার অনুগ্যনপূর্বক তাহার প্রাণ সংহার করিয়া আদিতেছি। আমাদিতের অপ্রথণ এই ভূতাগে অনিই ঘটনা দর্শন করিয়াছে, অতএব ইহালিগকে এ স্থান অতিক্রম করিয়া স্থানাত্তরে বইষা বাওৱা আপনার উচিত নহে। ৪৫।

বলদেব তাহাতে সন্মত ইইণা রথেই অবস্থান করিতে লাগিলেন। শ্রীকৃষ্ণ ক্রোশব্যমাত্র গন্দন করিবাই দুর হইতেই চক্র নিক্ষেপ করত শতধহার শিরশ্ছেদন করিবেন। পরে তাহার অবস্বজাদি বিশেষরূপে অনুসন্ধান করিরাও যথন অন্তর্জক মণি প্রাপ্ত লা ইইলেন, তথন বলদেবের নিকট আসিয়া বলিলেন, আনরা অকারণ শতধহাকে বিনাশ করিবান, বেহেতু স্নত জগতের সারহত সেই মণিরত্ব পাইলান না। বলভত্র শ্রীহন্ধের এই কথা প্রবণ করিবা অত্যন্ত কোপপ্রকাশপূর্বক করিবা

मृसम्।

धिक् तां यस्त्रमर्थेलिप्सः । एतम् ते आह्यतास्त्रपये तर्यं पत्रां स्वेच्छ्या गस्यता न भे दारक्या न त्वया न यस्तुभिः कार्यम् । यस्त्रभिममाग्रतोऽसीकश्रपयैः । इत्याचिष्य तं तथा प्रधाद्यमानोऽपि न तस्त्री विदेचपुरीं प्रविवेश । 8 ई ।

जनकराषापूर्वकारेवेनं सर्षं प्रवेशयामासः। स तर्वे व च तस्यो । वास्त्रेवोऽपि दारकामाजगाम। यावञ्च जनकराजगृषे

नर्जमा। क्षेकष्णः! तुमको धिकार है, तुम एसे दुनियाके लोमी

हो! हमने तुमको भाद सममक्तर खमा किया; अगर कोई इसरा होता, कभी भेरे हायसे न बाबता। यही किया रासा है, जिधार चाये चले जाओ। हमको हरकाले प्रयोजन नहिं, और न तुम्नारे एसे भाइकी जहरत है, और न भाइक्युकी दरकार है। तुम विकयरा को हमारे पात्र मुठ कसम खाते हो? बल-देने इस प्रकारके हम्याको तिरस्कार करके रासा जिया। हम्याने बज्ज तरह विनय किया, परन्तु जरा-सभी न टहरकर विदेह नगरको चले। हहै।

िरेड नगरका राजा जनक बचरामके पार्थाको धोकर चयने सकानपर चे गया, चौर वह वही रहे, चौर क्रया हरकामे बीट चावे। बचराम जिस समय जनकके सकानपर

"O fie! Krishna," exclaimed he, "Your cupidity has struck me dumb. I forgive you in this matter, as you are my brother, but had it been any body else, by Heaven, he would never have raised his head more. The path lies before you, go wherever you like. As for me, I have no further need of Dwaraka, no further need of such a brother as you, no further need of friends and relatives. A truce to your false protestations." After having thus vented his rage, Baladeva left the scene, notwithstanding the reiterated attempts of Krishna to dissuade him; and went to Videha.

47. The king of that place lavished costly presents upon him and conducted him to his palace. Balarama became domiciled there. Krishna returned to Dwaraka. While Baladeva was staying under the roof

অমূবাদ।

কৃষ্ণ তোমাকে ধিক্। তুমি এমন অর্থনোভী। আমি তোমাকে আতা বলিযাই এ বিষয়ে কমা করিলাম, অন্য কেহ হুইলে কথনই তাহাকে কমা করিলাম না। এই সোজা পথ রহিন্যাছে, তোমার মথায় ইছা চলিয়া যাও, আমাব আর ছারকায় প্রযোজন নাই। তোমার মত ভ্রাতায় প্রয়োজন নাই। বন্ধু বাদ্ধবেও প্রযোজন নাই। ছমি আর অকারণ কেন আমার নিকট অলীক শপথ করিতেছ? বলদেব এই প্রকারে প্রকারক তিরস্কার করিরা প্রস্থান করিলেন। কৃষ্ণ বহুবিধ অমুন্য করিলেও বলদেব ক্ষিকাত তথায় অবস্থান না করিয়া বিদেহনগরীতে গমন করিলেন। ৪৬।

विराह द्रांब जनक घर्षा थानान किंद्रया वनामस्तर्क निकासरा नहेंगा श्रीतनम, जिनि त्राहे थानाहे थाकि तन । थानितक इसके बादकानशर्द्रीति थाजाशमन कविराम । वनद्राम यश्मीति क्रात्कृत धानास्य

मूचम्।

वलभट्रोऽवसस्ये तावत् धार्त्तराष्ट्रो दुर्खोधनस्तत्मकायाद्-गदाशिचामशिचत । ४७ ।

वर्षवयानो च बम्बूयसेनप्रस्तिमिर्वाद्दैने तद्रव्रं कर्णो॰ नापद्वतिमिति कतावगितिभिर्वदेष्ट्युरीं मत्या बलदेवः संप्रत्याया दारकामानीतः। ४८०।

चक्रुरोऽपि उत्तममणिससुद्भृतसुवर्णध्यानपरः ततो यज्ञानीजे। ४८।

स्वनमतौ हि चवियवैश्वौ निघुन् ब्रह्महा भवतीत्वतो दीचाकवर्च प्रविष्ट एव तस्त्रौ हिपिट वर्षाणि। पू॰।

तर्जमा।

ये, उस समय धतराष्ट्रका लेड्का दुर्योधन गदासुद्ध वर्षा शिखता या। ८७।

निन वरस गुजरे बाद वस्तु और उग्रसेन आदि यादव-लोग विदेष्पुरीमे जाकर वलरामसे यक्त वात वोले, के कष्णाने यक्त मणि घोरीकर न लिया। इन तरक्ता विखास देलाकर वलदेवको केर दरकामे ले आए। 85-1

चक्रुर उस मधामणिके सोणे पयदा छयेसे बछत् तरक्षके यागयज्ञमे समय काटने लगे। 8६ ।

यभ्रति होने हे चित्र चौर बैक्षभी खार मारा जाय, तो उसके मारने हैं हता महाहत्याके पापवे समान है। मानून होता है, के खकूर इन उपायके खपनी जान वाचा-नेवेबाके मामूट बरसतक दीचाल्प कवचरे खपना बहन कपाय राजा था। पूर।

٠.

TRANSLATION.

of king Janaka, Duryodhana, son of Dhritarashtra, learnt from him the principles of mace-warfare.

48. After three years had elapsed, Babhru, Ugrasena and other Jadavas, visited the palace of the king of Videha and creating in Baladeva the belief that Krishna had not appropriated Syamantaka, prevailed upon him to return to Dwaraka.

49. Furnished with immense gold through Syamantala, Akrúra spent his time in celebrating vari-

ous jajnas.*

50. A man who slays a Kshetriya or a Vais'ya engaged in a jajna, is guilty of killing a Bráhmin t It was perhaps this which shielded him for no less than sixty-two years from any hostile manifestations on the part of Krishna.

অনুবাদ।

অবস্থিতি কবেন, দেই দ্মযেই ধৃতরাষ্ট্রাত্মজ ছুর্ব্যোধন তাঁহার নিকট গদাযুদ্ধ শিক্ষা কবেন। ৪৭।

তিন বংশর অতীত হইলে বহুৰ ও উগ্রসেনাদি যাদবগণ বিদেহপুরীতে গমন করত কৃষ্ণ সেই সামন্তক মণি অপহরণ ক্রেন নাই, এইরূপ বিখাস জন্মাই্যা দিয়া বলদেবকে পুন-রায় দ্বারকায় আনয়ন করিলেন। ৪৮।

অফ্ররও সেই মহামণিপ্রসূত স্থবর্ণরাশিবারা বিবিধ यक्तानूकीन क्वल कानपालन क्वित्ल नाशितन । १० ।

যুক্তে ত্রতী ক্ষত্রিয় এবং বৈশ্যেব প্রাণ বধ করিলে ত্রন্ধ-হত্যাৰ পাপগ্ৰস্ত হইতে হ্য ; ৰোধ হয় অফুর এই উপায়ে रकार नाम्यक रूरक रूप, क्यार रच नमूल चर कथात्व बाग्नरकात्र निमिछरे विविष्टि दश्मत्र काल बनदत्रक मीकात्रल হ্বচন্বারা আরত থাহিতেন। ৫০।

[·] A general name for certain ceremonies presided over by priests, in which ollations are presented and sometimes sacrifices made, t According to Maxu tie slaying of a Brahmin is one of the five capital ann, manipitalas, (ride the Institutes by Sir W. Joxes.)

मुलम्।

एवं तन्मणिरत्नप्रभावात् तच उपसर्गेडुर्भिच्चमरकादिकं नामूत्। पुरा

चयाक्र्रपचीयेभोंजै: शचुन्ने सालतस्य प्रवीचे व्यापा-दिते भोजी: महाक्र्रो हारकामपहाय चपकाना: । ५२।

तद्पकान्तिहिनादारस्य तचोपसर्गव्याचानाष्टिप्रस्का-द्युपद्रवा वमूद्यः। षय याद्ववलभद्गोग्रवेनसम्बेतोऽमन्त्रयत् भगवात्तरगारिकेतनः कियदिदमेकदैव प्रचुरोपद्रवागमन-भेतदाखोखताम्। पृह

तर्जमा ।

उसी समय उस मणिके प्रभावसे हरकानगरीने कोई उपद्रव, दुर्भिच, मरिका भय न था। पुर।

इ.स प्रकारसे कुच दिन व्यतीत क्षेत्रे पर चक्रूरके दीम्न भोलगण नामेने सास्ततके परपोते प्रवृक्षको मारडाला ! इ.म भयसे चक्रूर भोजगणके साथ दरका क्षोदकर माग गया। ५२।

जिस दिन आकूर मागा, उसी दिनसे दरकामे नाना-प्रकारका उपद्रव, संपद्धा भय, अनाष्टिष्ट और महामारी शोने लगी। उसके बाद बीकष्ण, बलराम, उम्रसेन और बादवलीग वगवरह एककट्टे शोकर मुला करने लगे। के किस कारण यह सब देवी विपन्त शोने लगी, इसका निचय करना खबख है। एई।

51. During all this time, through the influence of this gem, Dwáraká enjoyed perfect freedom from wars, rebellions, famines, pestilences, &c.

52. Afterwards, the bhojas of Akrúra slew Satrughna, the grandson of Sátvata. Alarmed at

this Akrúra fled from Dwáraká with them.

53. His departure was the signal for the prevalence of snake-bites, droughts, pestilences and other calamities. Krishna, Baladera, Ugrasena and others met together and seriously addressed themselves to the ascertaining of the causes of the miseries which the people were groaning under.

षञ्ञाम ।

তংকালে দেই মণির প্রভাবে দ্বারকানগরীতে কোন উপদ্রব, দুর্ভিক ও মরকাদির ভয় ছিল না।৫১।

এইরপে কিছু দিন গতে অকুরের পক ভোলগণ সায়তের প্রপোত্ত শক্রমতে বিনাশ করে। তাহাতে অকুর ভীত ইইয়া ভোলগণের সহিত দারকা পরিত্যাগপ্রক পলাঘন করিলেন। ৫২।

বে দিবদ অক্রুর পলায়ন করেন, দেই দিবদ হইতেই
ঘারহাতে নানা উপদর্গ, দর্পাদিভীতি, অনার্থি ও নরহাদির উপদ্রব হইতে লাগিল। তাহার পর এইফ, বলদেব ও উএদেন প্রভৃতি যাদবণণ একত্ত সনবেত হইয়া
মন্ত্রণা করিতে আরম্ভ করিবেন। কি কারণে অক্ত্রাহ
ধেকেরারে এই সমন্ত দেবভিড্বনা উপদ্বিত হইতে লাগিল,
তাহা নির্মণ করা অব্য কর্তবা। ৫০।

म्लम्।

इ.स्युके खन्धकनामा यद्रष्टद्वः प्राष्ट श्रस्थाक्षू रस्य पिता खफल्को नाम यच यचामून् तच तच दुर्भिचमरकानारष्ट्या-दिकं च नामृत्। पुठ।

काशिराजस्य विषयेऽत्यन्तानाष्ट्याः युक्त्कोऽनीयत्। ततकत्त्वणदेव देवो ववषे । काश्चिराजस्य पत्नग्रस्य गर्मे कन्या पूर्वभाषीत्। पूर्षः

चापि पूर्केऽपि प्रमृतिकाले नैव निस्त्रकाम। एवस्र तस्य गर्भस्य द्वाद्य वर्षाणानिष्कामतो ययुः। काशिराजस्य ता-मामानां गर्भस्यामाच प्रचि ! कस्मान्न जायसे निष्कृत्यताम् आस्यं

तर्जमा ।

सबने जब यह बात कही, तब श्रन्थक नामे एक ब्ट्डा श्रद्मी यदुर्बशैवानेसे बोला, देख, हमने देखा है, के श्रक्तका बाप श्रकम्क जिस जिस जगह रहा, वहां कभी दिनेष्ठ, मरी, धौर धनाष्टि बगवरहका मय नहिं होता था। ५८।

एव समय काशिराजके राजमें भारतमा भ्रनाष्ट्रिष्ट कोनेसे खक्ष्म्बको उस जगक्ष लेगवे। यक्ष्म्कके राजमे जानेकी देवराज इन्द्रने वर्षण प्रारम्भ कर दिया। उस समय काशिराजकी स्त्रीके गर्भमे एक कन्या थी। पूपू।

नेड्का पवदा डोनेके समयके व्यतीत हो जाने वादभी लेड्की पवदा न ऊर्द। इस प्रकारि बारह वर्ष व्यतीत ऊए। तक्सी कव्या पवदा न ऊर्द। एक रोन कारिया गर्भस्य कवासे बोने, हे प्रवि! तुम किसवासे गर्भस्य कवासे होने, वाहर आहो, हम तुद्धारे सुख

54. An old Jádava, Andhaka by name, said, "I have remarked that wherever Saphalka, the father of Akrúra, resides, the natural calamities cannot approach

55. "Once the provinces of Kásiráj were suffering terribly from drought; but no sooner Saphalka entered the kingdom than the Thunderer* began to send down heavy showers A daughter was then

residing in the womb of the royal spouse.

56. She was not delivered of her burden even when the proper time had gone by. Twelve weary years passed in this manner. Once the king addressed his embryonic daughter thus: "O daughter, why are you yet delaying to come out? Do, I beseech you, come out. How my soul longs to see your dear face!

অহ্বাদ।

সকলে এই কথা বলিলে অন্ধকনামক এক জন বছুবৃদ্ধ কহিলেন, দেখ, আনি দেখিতেছি অক্তুবেব পিতাখ্যনক যে যে খানে অব্যাহিত করেন, সেই সেই খানে কথনই ছার্ভিফ, মবক ও অনার্ম্বি প্রভৃতি উপদ্রব সংঘটিত হয় না। ৪৪।

এক সময়ে কাশিবাজেব বাজ্যমধ্যে অত্যন্ত অনার্চ্চি উপস্থিত হওয়াতে খফল্ককে তথায় লইয়া যায়। খফল্ক বাজ্যমধ্যে প্রবিষ্ট হইবামাত্র দেববাজ ইন্দ্র প্রচুব বর্ধণ আরম্ভ করিলেন। তংকালে কাশিবাজেব পত্নীর গর্কে এক কল্যা অবস্থান কবিতেছিল। ৫৫।

প্রস্বৰ সময় উত্তীৰ্ণ ইইনেও দেই কথা গৰ্ভ হইতে নিঃস্থত হইন না। এইনপে ছাদশ বৰ্ব গত হইন,তথাপি কন্যা ভূমিঠ হইন না। একদা কাশিবাজ দেই গৰ্ভস্ব কন্যাকে সম্বোধন কবিষা কহিলেন, পুত্রি! ভূমি কি নিমিত ভূমিঠ ক্ইতেছ না। গর্ভ ইইতে নিগতি হও, আমি তোমার মুখচন্দ্র

· In its, the supreme god in the Vedic hierarchy, the Hudu Zeus.

मचम

ते ह्रपुनिच्छामि। स्वकाश्च मातरं किमिति विरं क्षेत्रविक इत्युक्ता सा गर्भस्यैव व्याजहार तात। यद्येकैका गा दिने दिने वाह्यस्थ्यः प्रयच्छिस तदाहमस्येक्षिभवर्षे रसाद्गर्भात् तावदवर्खं निव्कृषिव्याभीति। एतच तद्दचनमाकच्छे राजा वाह्यस्थाय दिने दिने गा प्रादात्। सािप तावता कालेन जाता। ततस्वस्थाः पिता गान्दिनीति नाम चकार। तास्य पान्दिनी कन्या मुफल्कायोपकारिषे प्रहागतायाध्यभूता प्रादात्। सा च गान्दिनी प्रतिदिनं यावच्जीव बाह्यस्था पादात्। तस्यामयमक्रूरः मुफल्कात् कन्ने। तस्यैवं प्रपनिवृत्त्वत्तिः। पृह्व।

तरजमा।

देखनेको वज्जत् व्याकुल है, और एतने दिन किसवाले अपनी माको गर्भभार धारण करनेका कुँग देती हो। काग्रि राजका इस प्रवारका वचन ग्रुनकर कच्या गर्भमें वे बोली, पिता। आप यागर आजसे हर रोज एक एक ब्राह्मणको एक एक गौ दान करें, तो उसके तिन वरम बाद में गर्भसे वाहर आजंगी। काग्रिराजने गर्भीखित कायांके कडनेके अतुवार प्रतिदिन ब्राह्मणको एक एक गौ दान करने वर्ग प्रदास प्रतिदिन ब्राह्मणको एक एक गौ दान करने वर्ग प्रदास तिन वरस व्यतीत होने कच्या उत्पन्न छई। दिन दिन गौ दान करनेले कच्या उत्पन्न छई। दिन दिन गौ दान करनेले कच्या उत्पन्न छई। इस कारण उनका नाम गादिनी रक्या गया। जिस समय व्यवक्षेत्र प्रानेसे प्रनाहिंद इर छई, उस समय उसको गादिनी वन्या दान किया। यह गादिनीभी प्रतिदिन बाम्रुलको क्षेत्र करा वादान देती यै। यकन्यक बीजसे प्रान्तिको कम्में प्रकृतका जन्म है। एसे गुणसम्बद्ध सीप्रवर्ष प्रकृत अभी क्षेत्र करा है। एसे गुणसम्बद्ध सीप्रवर्ष प्रकृत अभी क्षेत्र करा है। एसे गुणसम्बद्ध सीप्रवर्ष प्रकृत अभी हो।

Why are you, again, inflicting so much hardship upon your mother?" "If you, dear father," replied the daughter, "henceforth daily offer a cow to a Bráhmin, I shall be born only after three years" Kasıraj complied with this After three years had thus passed, the daughter saw the light. Having regard to the unique circumstances that preceded her birth, her father called her Gándini * By way of rewarding Saphalka, the king bestowed Gandini on him She also daily bestowed a cow on a Bráhmin. This lady bore her husband Akrúra. Sprung from such parents, Akrúra should naturally partake of their wonderful virtues.

অহ্বাদ।

দর্শনেব জন্য অতি উৎস্থক হ'ইয়াছি। এবং এত দিন ধবিষ। স্বজননীকে কি কাবণে এই গৰ্ভভাব-বহন ক্লেশ দিতেছ গ কাশিবাজ এইপ্ৰকাব বাক্য বলিলে দেই কন্যা গৰ্ভ হইতে বলিল, পিতঃ। আপনি যদি অন্যাবধি প্রতিদিন ভ্রাহ্মণদিগকে এক একটা গো দান কবেন, তাহা হইলে আব তিন বংসব পবেই আমি ভূমিষ্ঠ হইব। কাশিবাজ গর্ভস্থ কন্যাব কথাসু-সাবে প্রতিদিন ব্রাহ্মণদিগকে এক একটা গো দান করিতে লাগিলেন। এইকপে তিন বৎসব অতিক্রান্ত ইইলে কন্যা ভূমিষ্ঠ হইল। দিন দিন গো দান কবাতে কন্যা প্রসূত হইয়াছিল বলিয়া কন্যার নাম গান্দিনী বাখিলেন। যৎকালে শুফলুকের আগমনে বাজ্যমধ্যে অনার্নষ্টি নিবাবিত হয়, সেই সুমুয় তাঁকে গান্দিনী কন্যা সম্প্রদান কবেন। সেই গান্দিনীও প্রতি দিন ব্রাহ্মণদিগকে এক এক গো দান করিতেন। খফল-কের ঔবদে এবং দেই গান্দিনীব ণর্ভে অক্রুরেব জন্ম হয়। এই প্রকাব গুণসম্পন্ন দম্পতী হইতে অক্রবৈব জন্ম। ৫৬।

^{*} The word, through the particle 47, alludes to the singular circum stance of the offering of kine





मुलम्।

तत् कयमस्मिन्नपक्षानोऽच मरकदुर्भिचाद्यपद्रवा न सवि-ष्यन्ति । तद्यमानीयतामिति ष्यलमचातिग्रुणवत्यपराधान्वे-पर्यन इति । ५७ ।

यदृष्टद्वसान्यकस्य एतदवचनमाकस्य केशवीय्रधेन-मनभद्रशरोगभैर्यद्वेम छतापराधितितिचाभवमभव दन्ता यूष्पब्तिः स्वर्धरमानीत । तच चागत एव तत्स्रस्यमन्तक भणे चनुभावादनाष्टिमरकदुर्भिचळालासुपृद्व, श्रशम । छप्पद्य चिन्तयामाम स्वस्यमेतत् कारणे यद्यं गान्दिन्या यूष्पब्तिनाकृरो जनित' सम्बाद्यायमनाष्टिहर्भिचमरका-दुप्यमनकारी प्रभाव,। प्रमा

तरजमा।

जब के ऐसे अजूर इरका के कोड़ कर गये, तन व्यं उस जगह मरी, और दुमिंच निर्ह होगा। हमारी सलाहमें अजूरको केर इस लगह लाना मनासिफ है। यगर अजूरने महा खपराधमी किया है, परना जिसका ऐसा खिक गुण है, उसका खपराध पकड़ना उचित निर्ह। पुछ।

कपा उग्रसेन और बन्दिव चादि यादवाण धन्यककी यह बात मुनकर व्यक्तक-मुन चन्नू रका पिछना चपराधं चमा करके चमय देकर केर दरकामे लाए। चन्नू रके नगरसे प्रदेश करते हो उस स्वमन्तक मण्डिके प्रभावसे चना- हिए, मरी, दुर्भिच चौर सापका भय सब निवारण हो गया। त्रीकृष्ण चम्नूरकी यह बढाइ देखकर चाद्य होकर चिक्ता करने नगे, के चन्नू र गान्दिनोंके गर्भमें चक्तक के के के प्यवदा छए है, यह बडात योदा कारण है, बलके चनाहिए, दुर्भिच चौर मरीका दूर होना बडात सारी है। पूट।

TRANSLATION. 57. "What wonder, then, that natural calamities should befall the land on which he has turned his back? My voice is for bringing him back. Although I grant that he has committed wrong, yet what may not be forgiven to such as he?"

Agreeably to this sage advice, Kes'ava.

Ugrasena, Baladeva and other Jadavas, brought the son of Saphalka over to Dwaraka, condoning his past transgressions. Anon the drought, plague, famine, snake-bites, &c. ceased to rage by virtue of Syamantaka, which was with him. The sudden change led Krishna to reflect :- "Akrúra's having sprung from the loins of Saphalka and the womb of Gandini," thought he, "is no sufficient reason. To a certainty, this extraordinary phenomenon must owe its origin to a far more potent cause.

অভ্বাদ।

যখন সেই অফুর এই দারকা পরিত্যাগ করিয়া গিয়া-ছেন, তথন কেনই বা এখানে মরক ছডিক্ষাদি না হইবে ? আমার বিবেচনায় অক্রুরকে পুনরায় এখানে আনয়ন করা কর্ত্তব্য। যদি চ অফুর মহা অপবাধ করিরাছেন বটে, কিন্ত যাহার এত অধিক গুণী, তাহার অপরাধ ধর্তব্যই নহে। ৫৭।

কেশব, উগ্রমেন, বলদেব প্রভৃতি যাদবগণ যহুরুত্ব অন্ধ-কের এই যুক্তিযুক্ত বাক্য এবণ করিয়া শ্বদন্কস্তত অক্তুরের পূর্ব্বকৃত অপবাধ কমা করিয়া অভয় দিয়া পুনরায় তাঁহাকে দ্বারকায় আন্যন করিলেন। অফুর নগরে প্রবেশ করিবামাত্র তাহার নিকটন্বিত অমতকপ্রভাবে অনার্চি, মরক, ছর্ভিক ও সর্পাদির উপদ্রব প্রশ্মিত হইয়া গেল। এইক অফুরের এই অসাধারণ ক্ষমতা দর্শনে বিশ্মিত হইয়া চিতা করিতে লাগিলেন। অফুর গালিনীর গর্ভে এবং খুফল্কের উরুসে छित्रप्रोरहन, देश चिंठ गामाना कादन, किंख धरे चनावृष्टि, ছুর্ভিক ও মরকাদি মিরাকরণপ্রভাব অতান্ত ভক্রতর। ৫৮।

मूसम्।

तज्ञूनमस्य सकाशे य सहामणि स्वमन्तकाख्यांस्तर्छात ।
तस्य द्वेवंविधा प्रभावा श्रूवन्ते। श्रवमाय वज्ञादनन्तरं
श्रव्यत् क्रत्वन्तरं तस्वात् यज्ञान्तरं यज्ञतीत । श्रद्धोपारागद्वास्य । श्रवंश्यमचासौ वरमणिस्तरुतीति क्रताध्यवसायोऽन्यत् प्रयोजनस्ट्विस्य सक्वयाद्वसमाजमालगेषे
एवाचीकरत्। तम चोपविधेपुष्टितेषु याद्वेषु पूर्वप्रयोजन
सुपन्यस्य पर्याचिते च तस्मिन् प्रवद्गागतपरिहासकयामक्रूरेण सह क्रत्वा जनाइनस्तमक्रूरमाह । पूरः ।

तर्जमा।

इसको निरुष मानुम छोता है, के खकूरके पास वह स्थमनाक महारल है। इसने मुना है, उसके प्रभावसे यह पव उपम्ल महारल है। इसने मुना है, उसके प्रभावसे यह पव उपम्ल बात हो। खकूर एक यज्ञके बाद उसरा यम्र, तिसरा यम्र, इसीतराह इसेना करता रहता है। इसकी दौजतभी ऐ नी नहिं है, जिसके हारा एतने यज्ञ हो सकें। इससे यही निरुष मानुम होता है, वह स्थमनाक मणि इसीके पास है। बील्य्य मानुम होता है, वह स्थमनाक मणि इसीके पास है। बील्य्य मानुम होता है, वह स्थमनाक मणि इसीके पास है। बील्य्य मानुम काम उह तिस्य करके एकदिन अपने मकानपर एक काम उहराकर सब यादवगणको एकच किया, और उस कामके खासेर हो जानेके बाद बील्य्य खक्ते यात तरह तरहकी दिल लागि करके बोसे। पूर्व वा

TRANSPATION

50 "It is odds he has got the magical Syaman taka with him I have heard people attribute wonderful properties to the gem, whereby natural cala mities can be removed. What, again, enabled Akrura to celebrate jajuas* without number, if he were not furnished with heaps of gold by Syaman taka? Having come to this conclusion, Krishna brought together the whole body of the Jádavas on some occasion. The avowed purpose of the meeting having been accomplished, Krishna began to talk with Akrura in a light vein. The conversation having been brought to the intended pass, the former said.—

षञ्दाम ।

আমান নিশ্চম বোধ হইতেছে অকুবেৰ নিকট সেই

স্যায়ক মহারহ আছে, আনি গুনিবাছি তাহাবই প্রভাবে

এই দক্ত উপদ্রব প্রশমিত হয়। অনুত্র এক যজের পর

অপর যজ, তাহার পর অন্য যজ, এইরপে অনববতই

যজারুষ্ঠান করে, ইহার বিভব ত এত অবিক নহে, যাহা

ছাবা এতাধিক যজ সম্পন্ন হয়। ইহা ছাবাও নিশ্চম বোধ

হইতেছে বে, সেই স্যাযতক ইহাবই নিকট আছে। এইক মনে ননে এইরপ নিশ্চম করিয়া কোন অন্য একটা উপশক্তে নিজালত্রে সমুরায় বাদবহে সমবেত করিলেন। বাদবাণ উপবিভ হইলে সে উপলম্পে তাহাদিশকে আহ্বান করা

হইয়াছিল, তাহা শেষ হইলে এইক প্রসম্জন্ম অনুরের

সহিত নানাপ্রকার পরিহান করিয়া তাহাকে বিলনে। ১৯।

म्चम्।

दानपते। जानीम एव वयं यया शतधन्त्रना अखिल-जगत्मारभूतं स्वमन्तकरत्नं भवतः सकाशे समर्पितं। तदेत-द्राष्ट्रीपकारकं भवतः सकारे तिष्ठतीति तिष्ठत सर्वे एव वयं तत्रप्रभावषत्रभुजः किन्तेष् वत्रभद्रोऽस्मानागङ्कितवान्। तदसात्पीतये दशेय इत्यभिहतः सरतः सोऽचिनायत्। किमचातुष्ठेयम्। अन्यया चेत् ववीस्य इंतत्वेवलास्वर-तिरोधानमन्त्रियन्तो रत्नमेते द्रस्यनीति श्रतोऽन्वेषणं न चेममिति सचिन्ता तमखिलजगलारणमूतं नारायणंगाचा करः भगवन्। समैतत् स्थमन्तकमण्डलः शतधनुपा मगपितम् । ६०।

तर्जमा। है दानपते! यतधम्बाने जो चापके पास सब जगत्या सार स्वनलक मणि रक्षा था, सो इस जानते हैं, वह मणिरत राजका बज्जत् उपकारी है, अगर यह आपके पास है, रहे, धम सबही उनका फलभोग करते हैं, मगर यलदेव धमारे ची पर चमेगा मन्देच करते हैं। दूसीवासी इमारे सन्तोपके लिये वड मणि एकवार देखला दी। भी कष्णकी यह बात गुनकर चकुर मनदी मनमे दिन्ता करने लगे, के मिंग तो हमादे पासही है, दूम समय केवा कहे। चगर मूठ कहें, तो वह पता लगाकर हमारे कापड़ें।मे-से नेवाल मेंगे, चीर सब देखेंगे। यह चगर तलाम करें, तो प्रमारा चाच्छान को गा। चक्र दने यक गय मात विचार कर सकत जगतक कारणसहस् नारायणसे बोले, भगवन्! प्रतथन्त्राने प्रमको स्वमन्तक मणि दि घी। ६०।

TRANSLATION

60 "O Lord of Danavas," that Satadhanva has kept with you the incomparable Syamantaka is well-known to us That gem is a blessing to the land, and we don't grudge you the possession of it enough that it is with one of us But Baladeva suspects me of having appropriated it—in order to disvibuse him of this false notion, please show it me once before this assembly "In this dilemma, Akrūra thought, "The gem is with me now, what shall I say? If I deny, they will search my body, and will surely find it out Nor will this be a happy circumstance for me O Lord," he then said to the Great Cause of this Universe, "Sata dhanva did lodge the jewel with me

षञ्जाम ।

मानशरा माजस्या रा, व्यानमान निक्छे राहे प्रमास क्षाराज मानक्ष्य मामस्य मानि विश्व मानक्ष्य मामस्य मिनि विश्व मानि क्षारा व्यानमा क्ष्याना निक्छे व्यानमा क्ष्याना निक्छे व्यानमा क्ष्याना निक्छे व्यानमा क्ष्याना निक्छे व्यानमा क्ष्याना मिन्द्र व्यानमा क्ष्याना मिन्द्र व्यानमा क्ष्याना मानि क्ष्याना मानि क्ष्याना क्ष्याना क्ष्याना मिन्द्र विश्व क्ष्याना मानि क्ष्याना क्ष्यान क्ष्यान क्ष्याना क्ष्यान क्ष्यान क्ष्याना क्ष्यान क्

[.] If a in 'Titans who warred on the Suras (rods)

मूचम्।

चपगते च तस्मिन् चद्य घड पराबो वा भगवान् मा याचियतीति छतमतिरतिछच्छेषेतावनां कालमधारयम् चस्य च धारणक्षोरेनाचमरेपोपभोगेषुचिद्गमानको न वेद्रि सस्यक्षकतामपि। ६१।

एतावन्माचमशेपराष्ट्रीपकारि धार्यातुं न शक्तोतीति मा भगवान् मंखात इत्याक्षना न चोहितम्। ६२।

तिद्दं स्थमनावरत्न राञ्चताम् द्रच्ह्या यस्याभिमत तस्य ममध्यताम्। ततः भोऽधरवस्त्रनिगोपितातिलघु कण्यन् समुद्रक्ष प्रकटीकृतवान् । ६५ ।

तर्जमा।

यतधन्याके सरने बाद घाल, या काल, या परणा जक्र घाप इससे यह साण साझते, यह विचार करने मैने यज्ञत् कप्टचे एतने दिन रत्ना किया। इसके रखनेणे इसको यदा क्रंय ज्ञा ज्ञ्या है। में सब उपभोगसे बिह्नत होकर सब सुख छोड़ दिया। ११।

पार्थं भाष मनमें कड़े में के सकूर स्वोग्य है, के समु-दाय राजका अग्रेष मद्गल करनेवाली मणिको रखन सका। इस भवसे एतने दिनतक मैंने भाषके विनासार्गे दियानही। ६५।

द्रम समय श्वाप यह स्वभन्तक मिं सुत्ते लेकर जिसको मनासिक हो, उसको दिजीए। श्रक्तूरने कृत्याके वह बात कहकर श्वरने कायडे से एक कोटीमी सोनेकी डिविया बाहर नेकाली। हुई।

TRANSLATION.

61. "I have kept it in my possession so long, in the hope of bestowing it on you after the death of Satadhanvá. Alas! sir, it has been a thorn in my side.

62. "I did not give it to you so long, lest you should think me incapable of bearing about a gem of such mighty virtues.

63. "Now accept it, sir, and bestow it on whomsoever you please." Having delivered himself thus, Akrúra took out a small golden box from his dress.

অভ্ৰাদ।

শতধ্যার মৃত্যুর পব আজ হউক, কাল হউক, বা প্রশ্বই হউক, অবগ্রাই আপনি এক দিন আমান নিকট চাহিবেন, এই ভাবিয়া আমি অভি কতে এতকাল ইহা রক্ষা কবিয়াছিলান, ইহার ধারণে আমান এত রেশ হই-য়াছে বে, আমি মৃদুনায় উপভোগে বঙ্কিত হইবা কাল-যাপন করিতেছি, হবের লেশনাত্রও অনুত্র কবিতে পারি নাই। ১১।

পাছে আপনি মনে করেন, অফুর এমনই অফন বে, সমুদায় বাজ্যেব অশেষ উপকারক মণিরত্বও ধারণ কবিতে পারিল না, এই জয়ে এতদিন আমি বয়ং উপযাচক হইয়া আপনাকে ইহা সমর্পণ করি নাই। ৬২।

এফরে দেই ফনন্তক রত্ন গ্রহণ করিয়া খাঁহাকে জভিন্ত হয়, ডাহাকেই সমর্পণ করুন। অজুর র্ফকে এই কথা ব্রিয়া নিজ পরিধেয় বন্তমধ্য হইতে একটা জুন্ত হ্বর্ণ কোটা বাহির করিলেন। ৬০।

मुलम्।

ततय निष्कृाम्य स्यमन्तकमणि तच यदुसमाञे सुमोच । सुक्षमाचे च तेनातिकान्त्या तदिखलमास्थानसुद्द्रोतितम् । ६४।

धवाषाक्रूरः स एप मणियः शतधन्वनास्माकं समर्पितः यस्यायं स एनं ग्रङ्कात्विति । तन्त्रणिरत्नमानोक्य सब्धन्याद्याना माधु साध्विति विस्तितननसा वाचोऽत्र्यन्तः। तमालोक्य मनायमचुतेनैव सामान्यः समन्वीप्सितः इति वलसङ्गः सस्पृषोऽभवत्। ६५।

तर्जमा ।

उपके बाद चक्रूरने उस मोनेकी डिवियासे वह स्थम-नाक मणि नेकाल कर उपस्थित याद्वगणको देखजाया। वाहर नेकसतेशी उपके दमक समक्ते तामाम सभामगढल प्रकाशमान को गया। ६८।

बाद उमके चक्र बोले, के यावध्याने हमारे पास जो मणि रक्षी यो, वह मणि यही है। यह जिमकी चित्र हो, वह लेवे। यादवाण उम मणिके दर्गन करते ही बज्जत चायखँगे चारी तरफ्से बाहवाका ग्रन्थ उच्चारण करने लगे, वलदेव देखकर उस् मणिकेशको बज्जत चानक-चित्र होकर मनही मनमें कहने लगे, के ल्राब्याने पहिले ही कहा है, के वह मणिरस्र हम दोनो चादमीकी होगी। द्रि।

TRANSLATION.

64. And laid Syamantaka before the assembled Jádavas. The gem sent a gleam far into the bosom of the apartment.

65. "Listen, princes," said Akrúra, "this is the gem which Satadhanvá lodged with me. Let him who is its rightful owner claim it." The Júdavas were struck with surprise at the sight, and were lavish in their praises. Baladova secretly pined for possessing it, and thought within himself, "Krishna promised formerly that this gem should be our common property."

অমূব্য ।

পরে অকুর দেই কোটা হইতে অমন্তক বাহির কবিয়া উপস্থিত যাদবগণকে প্রদর্শন করিলেন। বাহিব করিবামাত্র তাহাব প্রভায় সমুদায় সভামণ্ডপ আলোকিত হইয়া উঠিল। ৩৪।

খনতর অকুর কহিলেন, শতধ্যা আমার নিকট যে মণি রানিয়াছিলেন, সেই মণি এই; ইহা বাঁহার বয়, তিনি এহণ করন। বাদবগণ সেই মণি দর্শনমাত্র শত্যন্ত বিশ্বয়ের সহিত চতুর্দ্ধিক হইতে সাধ্বাদ প্রদান করিতে লাগিলেন। বলদেব দেখিয়া তাহার প্রতি খত্যন্ত আমক্তচিত ইইয়া মনে মৃনে কহিতে লাগিলেন, এইয় পূর্ব্ধে অসীকার করিয়াছেন যে, এই মণিরত্র আমাদিগেব উভয়ের সম্পত্তি হইবে। ৩৫ ।

म् चम् ।

ममैवेद पिट्टधनमित्यतीव च चत्यभामापि स्पृष्ट्या-खकार। वलसत्याननावजोकनात् क्षच्योऽप्यात्मानं चका-नारावस्थितमिव मेने। ६६।

सक्तवयादवसमद्याकूरमाच एतद्वि मिषरलमाल-शोधनावेषां बद्दना दक्तितम्। एतञ्च मम यत्तमद्रस्य च सामान्यं पिट्टधनञ्चेतत् सत्यभामाया नान्यस्य। ६७।

रतञ्च सर्वेकालं मुचिना बद्धाचर्थगुणवता धिवमाण-मग्रेपराष्ट्रस्रोपकारकम् अमुचिना धिवमाणमाधारमेव धन्ता । ६८ ।

तर्जमा ।

सत्यभागा मनमे कहने लगी, के यह इसारे वापको चिज है, यह इसको ही मिलना चाहिये। रूप्या वलदेव चौर नत्यभागाके सखका साव देखकर अकुएकी तरफ हो गये। हह।

वाद उप्के चीठाण समुदाय याद्वगणके सामने वोले के देख, मैंने केवल चप्ने सलझके दूर करणेकेवाको सवकी यह मणिरत देखलाया। पश्चि मैंने कबुन किया या, के यह मणिरत बलदेवकी चीर हमारे सामेकी विज होगी, लेकिन यह सल्यमामाके वापके धन है, इस कारण सल्यमामाकेवी मिलना उपित है, इसरेको लोम करणा मनास्कि नहिं। ३७।

यह मणि पविच चीर ब्रह्मचर्ये बती होकर धारण करणे वे राजका मद्भव करणेवाचा है, लेकिन चपविच चरमोके धारण करणे वे लस्का नाम करणेवाचा है। ६००।

TRANSLATION.

66. Satyabhámá thought that since Syamantaka was the property of her father, it should now be hers. Seeing the countenances of Baladeva and Satvabhámá, Krishna became embarrassed.

67. Then addressing Akrúra, he said, must know, Sir, that I have shown this gem, only to remove the stain which had attached itself to my reputation. Formerly I promised that it should be the joint property of Baladeva and myself. But, it is Satyabhámá's paternal possession, and now ought to be hers. None else should covet it.

68. "When a man who is clean and who is engaged in Brahmacharjya,* wears it, it conduces to his good; but it is destructive to an unclean person.

অভুবাদ ৷

সত্যভাষা মনে করিতে লাগিলেন ইহা যথন আমার পিতৃসম্পত্তি, তথন আমারই হওয়া উচিত। কৃষ্ণ বলদেব ও সত্যভামার মুখভঙ্গি দর্শনে আপনাকে: চক্রান্তপতিত ব্যক্তির ন্যায় বিবেচনা করিতে লাগিলেন। ৬৬।

পরে শ্রীকৃষ্ণ সমূদায় যাদবের সমক্ষে অক্ররকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন, দেখুন, আমি কেবল নিজ কলঙ্কাপ-নোদনের জন্মই এই মণিরত্ব সকলকে দেখাইলাম। পূর্ব্বে আমি স্বীকার করিয়াছিলাম যে, এই মণিরত্ন বলদেব ও আমার সাধারণ সম্পত্তি হইবে, কিন্তু ইহা সত্যভামার পিতৃধন, অতএব সত্যভাষারই হওয়া উচিত; অন্সের ইহাতে লোভ করা বিধেয় নয়। ৬৭।

এই মণি পবিত্র ও ভ্রহ্মচর্য্যভ্রতী হইয়া ধারণ করিলেই রাজ্যের নম্বল-জনক হয়, কিন্তু অপবিত্র ব্যক্তিকর্তৃক ধত হইলেই তাহার মৃত্যুর কারণ হইবে। ৬৮।

The condition of a young Brahmin or student in the first period of his life, involving much rigorous prayer and fasting Vide The Commentaries.

मृजम् ।

चत' चर्ड'चस पोड्यस्तीमदस्परिग्रहात् चममर्थो धारले। इट।

कथक्षेतत् सत्यभामा स्वीकरोतु । चार्येश्व वत्तभद्रेणापि मिद्रापानाद्यग्रेपोपभोगपित्वागः कथं कार्थः । तद्यं यदनोकोश्यं वत्तभद्रोऽष्टं सत्या च त्वा दानपते प्रार्थेयामः एतद्भवानेव धारिवतुं समयः । वत्त्वत्वस्थ राष्ट्रस्रोपकारकं तद्भवानेव धारिवतुं समयः । वत्त्वत्वस्थ राष्ट्रस्रोपकारकं तद्भवानेव धारिवतुं । व्यान्यत्वा न वक्तव्यमित्वके दानपति तथेत्वक्तूं जग्राह ।

तर्जमा ।

दूप घालतमे किस तरइसे उसके धारण करणेके में योग्य ऊं। केसेबासे के मेरी पोल घालार स्त्री हैं। हुट !

चत्यभामाभी इसको किम तरक चारण करेगी। वर्ष केया इन मणिकेशको मझन्य मित धारण करेगी। चीर बलदेवभी इस मणि धारण करणेकेशको सरापान चार्दि सब भोगको त्याग करणेको नामय होगे? हे दाता चक्तूर। चौर किसीको देनेको में तजविज्ञ नहिं कर्ता। यही यादवगण, बलदेव, सत्यभामा चौर में सवनोग कक्ते हैं, के चाप स्वराजह मज्जववेशको यह स्थननत्तक मणि धारण करें। यह चापके पास रहने राजका मज्जल होगा। इस कारण चाप धारण करें। इसके सेवाय चौर इसरी बात खेयात न करें। जीकण्याकी यह बात मुनक स्वराज के स्वराज करें। इसका स्वराज चार मुनक कर चक्तूर बोने बज्जत् चाल्का। इसारेही पास रहे, यह कहेकर यह सणि चाप छन्नते से लिया।

TRANSLATION.

69. "How then can'I wear it, considering that I have no less than sixteen thousand queens?

70. "How again can Satyabhámá use it? Shall she engage in Brahmacharjya for the sake of the jewel? Shall the respected Baladeva renounce the convival cup and other pleasures in order that he could grace his person with Syamantaka? O Lord of Dánavas, no use of my endeavours. Here are these Jádavas, here is Baladeva, here is Satyabhámá, and here am I. We all beseech you, do you wear the gem for the good of this kingdom. "Pray, do not disregard this advice." "Be it so"

षञ्दोन ।

একপ অবস্থায় আমি কিরূপে ইহা ধারণ করিতে দক্ষম হই ? যেহেতু আমাব ষোড়শসহস্র মহিষী। ৬৯।

সত্যভামাই বা কি প্রকারে ইহা ধারণ করিবেন ? তিনি কি মণির অমুবোধে ভ্রেচর্যা-ভ্রতাবলঘন করিবেন ? এবং আর্য্য বলদেব কি এই মণি ধারণের উদ্দেশে স্থরাপানাদি সমস্ত উপভোগ পরিত্যাগ করিতে সমর্থ ইইবেন ? দান-পতে! অপব চেকীয় প্রযোজন করে না, এবং যাদবগণ,এই বলদেব, এই ক্তাভামা এবং আরি, আরম্বার কল্যাণার জন্য এই মণিরক্র আপনি ধারণ কক্ন। ইহা আপনার নিকট থাকিলেই রাজ্যের মঙ্গলকর হইবে। অতএব আপনিই বাবল করুন, ইহার অভথা করিবেন না। প্রীকৃষ্ণ এই ক্থা বলিলে অফুর তথান্ত বলিয়া সেই মণিরক্র তথান্ত করিলেন।

मृषम् ।

तन्प्रचामणिरलं ततः प्रमृति चाक्रूर: प्रकटेनैवातीय तेजसा जाज्ज्यमानेनाक्रकर्ष्टायकेनादित्य द्रवागुमावी चचार।७०।

ছম্মিনা भगवतो मिध्याभिश्वतिचालनां यः स्तरित न तस्य कदाचिद्स्यापि मिथ्याभिश्वतिभवति खब्याङतेन्द्रिय-स्वाखिलपापमोचमवाप्रोति। ৩१।

इति स्यमन्तकीपास्थानम्।

तर्जमा।

उसीदिनसे अकूर वह महारत्न मणि अपने गलेमे पहरकर आत्मन तेज:पुष्त्र बलेवर दुस्रे सूर्योके समान फिरने लगे।७०। को भदमी भगवान त्रीकृष्णका यह भुट कलडू दूर होनेकी कथा पुनेगा, भयवा मनसे लावेगा, कसी योदासी सलडू दुस्को न कसे गा की नार्यो

क्षेत्रेकी कथा मुनेगा, अध्यक्ष सनसे खादेगा, कभी घोडासी अति छ उसको न कुबेगा, और उसकी सब द्रान्द्रियमी ठिक रहेंगी, और घेषसे यक्ष अपदसी सब पापसे सुक्त कोकर बैकुएड बास करेगा। ७१।

स्यमनाकका वशन स्थालेर।

TRANSLATION.

said Akrúra, who continued to wear Syamantaka, and ranged Dwáraká like a second sun."

71. When a man remembers the false accusation of Krishna mentioned above, he can bear with equanimity lesser false charges against him, and is finally absolved from all sin.

End of the History of Syamantaka

অনুবাদ।

সেই অবধি অক্রুর সেই মহারত্ন নিজকণ্ঠে ধারণ করিয়া অত্যন্ত তেজঃপুঞ্জকলেবব দ্বিতীয সূর্য্যের ন্যায় বিচরণ করিতে লাগিলেন। ৭০।

যে ব্যক্তি ভগবান ঐক্তিকের এই নিধ্যা কলঙ্কাপনোদনরতাত পারণ করে, কথনই তাহাকে সামাত নিধ্যাপবাদ
স্পর্শন্ত করিতে সমর্থ হয় না, তাহার ইন্দ্রিয় সমুদায়
অবিকৃত থাকে এবং পরিশেষে সে ব্যক্তি সমুদায় পাপ
হইতে নিম্নতি লাভ করে। ৭১।

ইতি ভমগ্ৰহোপাখ্যান।

नवरत्नानि ।

मूचम्

वजामाणिकावेद्यं सुकागोभेद्विद्रमं। मरकतं पुष्परागञ्च नीलञ्चेति ययाक्रमं।

तर्जमा ।

हीरा, मार्थिक, चत्रनिश, मीति, ग्रीमेरक, मुङ्का, पाद्रा, ग्रीखराज, चौर नीचम् वा नीचा यही नी मकास्का स्त्रके नवस्त्र कहते हैं!

TRANSLATION.

The Diamond, Ruby, Catseye, Pearl, Zircon, Coral, Emerald, Topaz and Sapphire are called the nine precious gems.

षश्वाम ।

হীরক, মাণিক্য, বৈদ্র্য্য অর্ধাৎ লগুনিদ্বা, মুক্তা, গোনেদ, বিক্রম অর্থাৎ প্রবাল, নরকত অর্ধাৎ পাদ্ধা, পুস্পরাগ অর্ধাৎ পুথ্রান্ত এবং ইক্রমীল অর্ধাৎ নীলম্ এই নম্ন প্রকার রম্ব নবরমুমধ্যে পরিগণিত। ৭২।

WITCH TO

GENERAL REMARKS.

HE taste for gems and precious stones can be traced to the most remote ages, and though it is now a hopeless task to point out the country where they were first discovered, or the nations by whom they were first worn, there are many circumstances which materially help us in concluding that India was their birth-place. For every luxury and comfort that man enjoys, for everything rare and beautiful in nature, for every delight that charms his senses and gratifies his vanity, for perfection in plants, flowers, perfumes, animals, birds, insects. music,* gems, pearls, &c., we are indebted to the East.

Mention is made of gems and jewels in the earliest writings of the Hindus. The Vedas speak of a place illuminated by rubies and diamonds which gave out a light as refulgent as that of the planets. Precious stones play a prominent part in the mythologics of the Hindus; in their traditions, poems and legends. In the two great epics of Hindustan, the Ramayana and the Mahabharata, frequent

r. J Frms.

[•] The country which affords us the most ancient memorials of a perfect language of an advanced civilization, of a philosophy where all directions of human thought find their expression, of a posty insulative theoretical content of the content to bow instruments to Europe. F J Fring above to come parts of Asia, and afterwards to Europe. F J Fring.
There is nothing in the West which has not come from the East.—

mention is made of stones and pearls with which the kings and the people of the period used to decorate their persons Amongst the other anc ent nations of the East, the Persians had a great taste for gems The Phænicians are known to have brought from the East precious stones and jewels to Egypt and Greece The Egyptians are noted to The belles of have been very fond of them ancient Egypt used to adorn their brows with dia dems of Pearls and their throats with necklaces of four rows of precious stones The fingers of the men were loaded with rings Tive or six cen turies before Christ the Grecian Lings and rulers of the neighbouring countries used ornamental and signet rings made with cut stones Onomacritus a priest and founder of Hellenic mysteries, is said to have treated of precious stones and their super natural powers (500 B C) Heredotus mentions, (besides the Emerald in Polycrates ring) signet rings such as that of Darius and also speaks of the so called Emerald column in the temple of Hercules in Tyre, which emitted a splendid light at night Plato makes mention of the Sard Jasper and Emerald Aristotle had a better knowledge of stones than those authors that preceded him His scholar Theophrastus has left a work on the sub ject Alexander the Great had his breast plate set with stones and his mantle embroidered with gold and gems When the Romans conquered Egypt and Greece, they took away, as the spoils of their successful invasions, all the luxuries of the subjugated countries, and thus imbibed, among others. a taste for gems and stones Cæsar and Cleopatra are said to have met in a hall of tortoise-shell. studded with Emeralds and Topaz Caligula adorned his horse with a collar of Pearls; the shoes of Heliogabalus were studded with gems, and the statues of the gods had eyes of precious stones,-a custom borrowed evidently from the East. Even now, the horses of the Oriental Princes are brought out, on festive processions, studded all over with Pearls and other gems In the time of the Ptolemies, jewels were used in profusion for ornamenting arms, drinking cups, and even the altars of the gods. and were also set in the frames in which the sacred pictures were put. Constantine is said to have entered Rome in a chariot of gold, adorned with dazzling gems, and in his time the Royal Crown was first set about with precious stones custom still prevails throughout the civilized world. Pliny and Strabo make prominent mention of gems and jewels in their works. The Bible gives descriptions of various kinds of stones known to the Hebrews. The twelve stones which were in the breast-plate of the High Priest were-the Sard, the Topaz, the Carbuncle (or Ruby), the Emerald, the Sapphire, the Diamond, the Ligure, the Agate, the Amethyst, the Beryl, the Onyx and the Jasper. The twelve Apostles were also represented by gems, called the Apostle stones :-

- 1 —The hard and solid Jasper, representing the rock of the Church, was the emblem of Peter
- 2 —The bright blue Sapphire was emblematic of the heavenly faith of Andrew
- 3 -The Emerald, of the pure and gentle John
- 4 -The white Chalcedony, of the loving James
- 5 -The friendly Saidonyx, of Philip 6 -The red Cornelian, of the martyr, Bartho
 - lomew
 - 7 —The Chrysolite, pure as sunlight, of Mathias
 - 8 —The indefinite Beryl, of the doubting Thomas
- 9 -The Topaz, of the delicate James the younger
- 10 The Chrysophrase, of the serene and trustful Thaddeus
- 11 —The Amethyst, of Mathew the Apostle
- 12.—The pink Myacinth of the sweet-tempered Simeon, of Cana

Sidorus, the Bishop of Seville, is said to have written a work on stones (630 A C). The number of properties attributed to precious stones at this time was wonderful, they were said to have the power of conferring health, wealth, beauty, honor, good fortune, and influence. Men and women used to carry them about their persons and called them amulets. These were also thought to have some connection with the stars and seasons. A particular stone was supposed to be sacred to each month. The following are what were known as the Zodiac stones.

Jacinth (Hyacinth), or Garnet. January Amethyst.

February

Bloodstone, or Jasper. March

Sapphire. April

Agate. May

Emerald. June

Onvx. July Cornelian.

August ... Chrysolite. September

Aquamarine, or Beryl. October

Topaz. November ·Rubv. December

Supernatural influences have been attributed to particular stones, which are still believed in by the superstitious. The Ruby is known to be a sovereign remedy for pestilence and poison; it also drives away evil spirits and bad dreams. Jacinth, if worn on the finger, procures sleep, and brings riches, honor, and wisdom. The Amethyst dispels drunkenness and sharpens the wit. The Balas Ruby restrains passion and fiery wrath, and is a preservative from lightning. The Emerald discovers false witnesses by suffering alteration when it comes in contact with such persons; the Sapphire procures royal favor, and frees men from enchantment. The Chrysolite was said to cool boiling water, and soften wrath, and if placed in contact with poison, it lost its brilliancy until re-Opinions, of course, differ as to these moved. attributes, according to the fancy of the writers. The superstitions attriched to these stones were not confined to the ancients only. The Empress Eugenie of France, it is said, would not wear a precious Opal, because it was known to have brought ill luck to the wearer. But our Most Gracious Majesty the Queen Victoria, Empress of India, having no superstition on the point, has presented each of her daughters, on their marriage, with a parture of Opals and Diamonds.

It has now become a fashion to have finger rings set with certain stones, so arranged that the initials of their names would give a desired name. The following alphabetical list of precious and half precious stones will be of great use in forming the names —

	Transparent	Opaque
Λ	Ametl yst	Agate
В	Beryl	Basalt
C	Cl rysoberyl	Cacholong
D	• Diamond	Diaspore
\mathbf{E}	Emerald	Egyptian pebble
F	Felspar	Fire stone
G	Garnet	Granite
H	Hyacınth	Heliotrope
I	Idocrase	
J		Jasper
k	Lyanite	Krok dolite
r	Lynx Supplier	Lapis-Lazuli
м	Milk Opal	Malachite
N	- Natrolite	Nephrite.
0	Opal	Onyx

	Transparent.		Opaque.
P	. Pyrope		Porphyry
Q	Quartz .	•••	Quartz Agate
R	Ruby		Rose Quartz.
S	Sapphire	٠.	Sardonyx.
T	. Topaz		Turquoise.
U	Uranite "	••	Ultra-marine
V	Visuvianite		Verd-antique.
W	Water-Sapphire	•••	Wood-Opal
X	Xantbite		Xylotile
Y			•

Thus, the name "Charles" may be represented by Chrysoberyl, Hyacinth, Amethyst, Ruby, Lapis-Lazuli, Emerald and Sapphire. The Prince of Wales, on his marriage with the Princess Alexandra, gave her a ring which represented his own name "Bertie." It was set with stones in the following order—Beryl, Emerald, Ruby, Turquoise, Jacinth and Emerald.

Zurhte

Zircon

Z

The following account of precious stones, as supposed to be found on reptiles and animals, is taken from "All the Year Round" of the 1st June, 1876:—

"Among the Arabians, serpents were supposed to possess precious stones of inestimable virtue. This belief was current through many ages Mathew Paris relates the story of a miserly Venetian, named Vitalis, who was rescued from a terrible death—having fallen into a pit in which were a lion and a serpent—by a wood-cutter, to whom he

promised half his property for this deliverance The hon and the serpent, who take advantage of the ladder by which Vitalis is brought to the surface, also testify their gratitude to the woodcutter, by crouching at his feet While the poor man is having his humble repast in his little hut, the hon enters with a dead goat as a present serpent also enters, bringing in his mouth a precious stone, which he lays in the country mans He next goes to Venice, and finds Vitalis in his palace, feasting with his neighbours in joy for his deliverance On being reminded of his promise, the rich man denies having seen the wood cutter, and orders his servants to cast him into prison, but before this could be effected, the rustic escapes and tells his story to the judges of the city At first they are incredulous, but on showing the jewel, and proving further the truth, by conducting them to the dens of the hon and the serpent, where the animals again fawn on their benefactor, Vitalis is compelled to perform his promise This story, adds Mathew Paris, was told by King Richard, to expose the conduct of ungrateful men

"In Timberlakes discourse of the Travels of two English Pilgrims to Jerusalem, Gaza, &c, (1611), we find an account of a great jewel which was taken from a serpent's head, and used in conjuring In Alphonso's Clericalis Disciplina, a serpent is mentioned with eyes of real Jacinth. In the romantic history of Alexander, he is said to have found serpents in the Vale of Jordan with collars of huge Emeralds growing on their backs Milton gives his serpent eyes of Carbunele. A marvellous stone was said to be found in the serpent's brain, but in order to secure its lustre and potent influences, it was to be extracted from the hving animal.

"The Draconius, described by Albertus Magnus as of a black-color and pyramidical form, was also taken out of the heads of dragons, while they lay panting. To the snake-stone a popular superstition is still attached in the East. In the narrative of a voyage in Her Majesty's slip Samarang, Captain Sir Edward Belcher says -" At my last interview with the Sultan of Guning Taboor, he conveyed into my hand-suddenly closing it with great mystery-what they term here as the snake-This is a polished globe of Quartz, about the size of a musket-ball, which he described as of infinite value, an heir-loom, and reported to have been extorted from the head of an enchanted snake" Allusions to serpent-stone are frequent in the early writers. We read in the Gesta Romanorum that the Emperor Theodosius the Blind ordained that the cause of any injured person should be heard on his ringing a bell, which was placed in a public part of his palace A serpent had a nest near the spot where the bell-rope hung In the absence of the serpent, a toad took possession of her nest; the serpent, twisting itself round

the rope, rung the bell for justice, and at the Emperor's special command the toad was killed. A few days afterwards, as the Emperor was reposing on his couch, the scripent entered the chamber, bearing a precious stone in its mouth, and, crawling up to the Emperors free, lud it on his eyes, and glided out of the apartment, the monaich was immediately restored to sight

"Apropos of the burglarious tord, the philoso phers taught that though ugly and venomous, "it wears yet a piecious jowel in its head." Lupton, in his Book of Notable Things, instructs his reader how to procuie it, "you shall know whether the tode stone be the ryghte or perfect stone, or not Hold the stone before a tode, so that he may see it, and if it be a ryghte and true stone, the tode will leap towarde it, and make as though he would snatch it. He ensieth so much that none should have that stone. If swallowed, it was a certain untidote against poison, and it was usual to take it as a precautionary pill—rather a hard one—before eating.

"In the Philosophical Transactions, vol vi, p 21, we find that the toad stone was supposed, in the Highlands, to prevent the burning of houses and the sinking of boats, and if the Commander in the field had one about him, he would either be sure to win the day, or all his men would die on the spot!

"The bezoar was a stone procured from the cervicebra, a wild animal of Arabia, and was supposed to have been formed of the poison of serpents which had bitten the creature, combined with the counteracting matter with which Nature had furnished it. There was a belief in the Middle Ages that the bezoar was a potent charm against the plague and poison.

"The wonderful effects of stones found in various animals are too numerous to mention The brain of a tortoise contained one that had the effect of a fire-annihilator in extinguishing flames; moreover, whoever did at a proper time-having first washed his mouth-carry it under his tongue, felt a divine inspiration to foretell future events. Birds were particularly distinguished for the possession of talismanic stones. The hyœna was very properly hunted; not, however, for its ferocious propensities, but for a precious stone in one of its eyes, full of mystic virtues. One of the most curious superstitions, and one which has been a favorite theme with writers of all ages, is connected with the Carbuncle, or Ruby. Ælian has a singular story on this subject, how a certain widow. Herculia, had tended a young stork which had broken its leg, and how the grateful bird, returning from its annual migration, dropped into her lap a precious stone, which on her awaking

at night, lighted up her chamber like a blazing torch

"The fabulous animal called the carbunculo, said to have been seen in some parts of Peru, is re presented to be about the size of a fox,* with long black hair, and is only visible at night, when it slinks slowly through the thickets. If followed, it is said to open a flap, or valve, in the forehead, from which an extraordinary and brilliant light issues. The natives behave that the light proceeds from a precious stone, and that any person who may venture to grasp at it rashly is blinded, then the flap is let down, and the animal disappears in the darkness."

The following lines from the journal of Sir Jerome Horsay, who was employed as a special messenger between Ivan the Terrible of Russia and Queen Elizabeth, sufficiently prove the superstitions that existed with respect to precious stones at that period (1584).

"The old emperor was carried every day in his chair to the treasury One day he beckened me to follow I stood venturously and heard him call for some precious stones and jewels He told the princes and nobles present before and about him the virtue of such and such, which I observed, and do pray I may a little digress to declare for my

A variety of the for known as the oolka-mookhee (Sans. Dw pta jevra) enists 11 Bengal, from the mouth of which a blush light is known to issue. This is called by the ignorant natives, the will o the wisp."

memory's sake : 5the loadstone, you all know, hath great and hidden virtue, without which the seas that encompass the world are not navigable, nor the bounds nor circles of the earth cannot be known Mahomet, the Persian's Prophet, his tomb of steel hangs on their Rapetta at Dorbent most miraculously' He caused the waiters to bring a chair of needles touched by this loadstone, and hanged all one by the other. 'This fair coral and this fair turcas, you see. Take it in your hand. Of his nature and orient colors put them on my hand and arm I am poisoned with disease. You see they show their virtue by the change of their pure colour into pale-declares my death. Reach out my staff royal, an unicorn's horn, garnished with very fair diamonds, rubies, sapphires, emeralds, and other precious stones that are rich in valuecost seventy thousand marks sterling of David Gower from the fowlkers of Ausborghe. Seek out for some spiders.' He caused his physician, Johannes Lloff, to scrape a circle thereof on the table, but within it one spider, and so one other that died, and some other alive, then run apace from it. 'It is too late, it will not preserve me. Behold these precious stones, the diamond is the orient's richest and most precious of all others. I never affected it. It restrains fury and luxury, gives abstinence and chastity. The least parcel of it in powder will poison a horse, given in drink. much more a man.' Points at the ruby, 'ah, this

is most comfortable to the heart, brain, vigour, and memory of man, clarifies congealed and corrupt blood.' Then at the emerald: 'The nature of the rainbow, this precious stone is an enemy to uncleanness. The sapphire I greatly delight in; it preserves and increaseth courage, joys the heart, pleasing to all the vital senses, precious and very sovereign for the eyes, cheers the sight, takes away blood shot, and strengthens the muscles and sinews thereof? Then takes the onyx in hand. 'All these are God's wonderful gifts, secrets in nature and yet reveals them to man's use and contemplation as friends to grace and virtue, and enemies to vice. I faint, carry me away till another time'"

The following lines about the supernatural properties attributed to precious stones are also taken from "All the Year Round" of the same date:—

"Innumerable were the effects produced by certain precious stones; among others the Heliotrope had special virtues. It was called by neeromancers the "Babylonian gem," and if rubbed over into the juice of the herb of its own name, it rendered the wearer invisible. In the Middle Ages, the Heliotrope which contained many red spots, were highly valued from a belief that the blood of Christ was diffused through the stone. The Moonstone was, as its name implies, venerated from its supposed lunar attractions. It is one of the prettuest, though most common of precious stones in Ceylon Pliny describes it as containing an image of the moon,

"which, if the story be true," he observes, "daily waxes, or wanes, according to the state of that luminary" Chalcedony hung about the neck, dispersed sadness, and if a person carried one perforated with the hairs of an ass run through it, he would overcome all disasters. Crystal dispelled witch-cuaft The Chrysophrasus gladdened the heart, the Chrysolite expelled phantoms, and what was more servicable rid people of their follies. 'The Onyx, in the Middle Ages, was believed to prevent ugly dreams by night, and law suits by day. The Jasper was a charmer of scorpions and spiders, and was worn as a talisman by the Roman athlete. Burton, in the Anatomy of Melancholy, tells us that, "if hung about the neck, or taken in drink. it much resisteth sorrow and recreates the heart." The same qualities were attributed to the Hyacinth and Topaz. The Crystal has been the most popular of all oracular stones; a favorite stone was the Beryl, "which," says Aubrey in his Miscellanies, "18 a kind of Crystal that has a weak tine ture of 1ed; in this magicians see visions." The custom was to consecrate, or "charge" them, as the modern term is, for which purpose set forms were used, which are described in Reginald Scotts' Discovery of Witch-crafts. The famous Crystal of that prince of quackery, Dr. Dee, is preserved in the Ashmolean Museum at Oxford.

"The properties of the Ruby were endless; brused in water it was a panacea for all com-

plaints; it had the peculiarity, wherever worn, of discovering its presence by its lustre, which would shine through the thickest clothes. Powdered Agate was an infallible remedy for "all the ills that life is heir to." Pliny quotes the Magii, as teach ing in Persia that storms could be averted by burning Agates. The Amethyst would prove a boon to modern tipplers, if, as the ancients asserted, it prevented intoxication. The Sapphire and the Emerald strengthened the sight, a property said to have been also possessed by the Turquoise; but it could confer a still more wonderful gift on its wearer; "whoever," says Van Helmont, "wears a Turquoise, so that it, or its gold setting, touches the skin, may fall from any height and the stone attracts to itself the whole force of the blow, so that it cracks and the person is safe." The Romans regarded the Diamond with superstitious reverence and Pliny tells us that it baffles poison, keeps off insanity, and dispels vain fears."

insanity, and dispels vain fears."

According to ancient authorities, all composite substances consist of the four elements—fire, air, earth and water: the difference between gems and common pebbles being caused by the predominance of water in the former, and of earth in the latter. The water condensed and congealed by the dryness of the earthy particles was supposed to give to precious stones their brilliance and transparency. Aristotle asserted that the first cause of stones was riscous mind, a sap that shrinks and is congealed by

cold, in which water predominates over earth . to these he adds stony fragments and particles of stone. and another special sap, which he calls lanidefic Theophrastus taught that "stones were made of pure, equal and compact substance, after its perlocation, the which substance, being certain places become petrified by flowing, or in some other manner." Avecenna only says mud or foul, stagnant water composes stones. Talopius thinks stones to be the produce of a very pure juice. Cardan says that "they are engendered between the rocks by means of a sap, which is distilled through their concavity even as the babe in the maternal blood." This last assertion gave rise to a new theory, the object of which was to establish that the engendering of precious stones was not to be attributed to the same causes as that of inert nature, but that it proceeded from causes absolutely similar to those of animated living being Beetius de Root, a physician of the 17th century, attributes the formation of the stones to the almost direct intervention of the Deity.

The precious stones and pearls are mostly obtained from Ceylon, India, Brazil, Australia, California.

Siberia and South Africa.

In the widest interpretation of the term, a gem or a precious stone is nothing but a mineral—hard, of a heautiful color, or absolutely colorless; usually transparent, of great rarity and value. Minerals possessed of these properties have been generally divided into two classes—(1) jewels or gems, perfectly pure; (2) half-pure precious stones, colored or tinted. The first class includes in its province those rare minerals which are distinguished by colors at once bright and dazzling, soft and tender; also by transparency, high lustre, great density and capability of polish. The so called precious stones which have these characteristics, but in a much less degree, come under the category of the 2nd class.

म्राय वज्न^{*} । मुखस्।

मचाप्रभावं विवृधेदेशादचमुदाच्छत । वञ्जपूर्वे परीचेयं ततीऽसाभि प्रकीर्चेतते । ७३ । हेममातद्वभीराष्ट्राः पौष्डकालिद्वकोशलाः ।

वेणातटीयमीवीरी वज्रस्याटविधाकराः ॥ ७४ ॥

ष्टीरेके वयान I

तर्जमा। दियताचीने समस्त रहोसे कीरको श्रेष्ठ कडा ^{है}।

तदनुसार पहिले होरेका विषय लिखा जाता है। ७३। हैम (हिमालय प्रदेश), मातद्र (टालिणात्यके पना

गेत चायमुख पर्वतके निकट पन्या नहीके किनारेका देश), बीराष्ट्र (खराट), पीख (रद्भपुर, हिनाजपुर, राजसारी, बीरमुन, मुरानदाबाद, नबहीय, बर्द्धमान, चीर मेहिनीपुर

वनयर प्रदेश), विनद्ध (प्राविद् चीर शिटाशिक मध्य-वर्ती प्रदेश), कोशम (च्योधा), महाराष्ट्र द्विषे गोदावरी नदीकी उपनदी वेषू च्यवा वेषगद्वाके तीर, भौबीर (श्वतद्व चर्णात् श्वतक चीर स्थित नदके मध्यदेश), रिक्र चाट जगरों में होरेकी सान है 1681

THE DIAMOND.

TRANSLATION.

73. The Gods have considered the diamond as the best of gems. I shall accordingly describe it first.

74. The diamond is produced in the following

eight places :--

Haima,* Mátanga,† Sauráshtra,‡ Paunda. & Kalinga, Kosala, Venwa, ** or the shores of the Vena-Gangá, and Saubíra. ††

হীরক ১

ष्पञ्चाम ।

দেবতারা সমুদায রত্নের মধ্যে হীরককেই দর্ব্ব-রত্ন-শ্রেষ্ঠ বলিয়া কল্পনা করিয়াছেন, স্বতরাং তদসুদারে প্রথনেই হীরকের বিষয় বলা যাইতেছে। ৭৩।

হৈম (হিমানয় প্রদেশ), মাতঙ্গ (দাক্ষিণাত্যের অন্তর্গত খাষ্যমুখ পর্ব্বতের নিকটন্ত পম্পা নদীর তীরবর্নী প্রদেশ). সৌরাষ্ট্র (স্থরাট), পোণ্ড (রঙ্গপুর, দিনাজপুর, রাজসাহী, বীরভূম, মুরনিদাবাদ, বর্দ্ধমান ও মেদিনীপুর প্রভৃতি স্থান). কলিন্ন (দ্রাবিড় ও উড়িয়ার মধ্যগত প্রদেশ), কোশল (অমোধ্যা), বেণা বা বেণ-গলার তীর (মহারাষ্ট্রের অন্তর্গত গোদাবরীর উপনদীর কূল), সোবীর (পাশ্চাত্যে শতক্র ও দিন্ধ নদের মধাবর্তী অদেশ), এই আট স্থানে হীরক উৎপন্ন হয়। ৭৪।

^{*} The country of the Himalayas.

t The lands adjacent to the shores of the river Pampa near the

Hrisbyanusha mountains in the Deccan.

I Surat.

§ Rungpore, Dinagepore, Rajshabye, Beerbhoom, Moorshedabad, Burdyan, Midnapore, &c.

nowan, attouspore, ac.

1 The modern Ajodhyá

A tributary of the River Godávari in the Maharatta country. tt The tract lying between the Satadra and the Indus.

मसम्।

याताम् । हिमरैल्जाः प्रशितिभा वेणातटीयाः गुभाः भीवीराम् पितालमेषमध्यातामास्य भीराष्ट्र जाः । सालिङ्गाः सनसावदातर्राचरा पीतप्रभाः कीयसाः स्थामाः प्रग्रुभवा मतङ्गविषये नात्यन्तपीतप्रभाः ॥ ७५ ॥ एविद्यापौ वियमेजो मरुच्चैति पञ्चभिः । वक्षमुत्पद्यते ब्रह्मन् सचितं वज्जक्षीवदिः ॥ ७६ ॥

त्र्जमा ।

हिमालय प्रदेश, चर्चात हिमालय पर्वतक निकटके खानों में जो छीरा पयदा छोता है; उसके रद्ध में तांवापन मत्तकता है; वेण यद्धा कि तिहारे जो छीरा पयदा छोता है; वह चन्द्रमाके समान उज्जूल चमकता है; सेवीर देशमें जो छीरा पयदा छोता है, उस्का रद्ध के कमलके समान च्यवा सादे वादलके समान छोता है; सराट प्रदेशमें जो छीरा पयदा छोता है, उस्का रद्ध तांकि समान छोता है, स्विद्ध प्रदेशमें जो छीरा पयदा छोता है, उस्का रद्ध तांकि समान छोता है; स्वाध्यामें जो छीरा पयदा छोता है, उस्का रद्ध सोनके समान छोता है; स्वाध्यामें जो छीरा पयदा छोता है; उस्का रद्ध पीला छोता है; उस्का रद्ध पीला छोता है; उस्का रद्ध यामक छोता है; स्वीर मातक प्रदेशमें जो छीरा पयदा छोता है, उस्का रद्ध यामक छोता है; स्वीर मातक प्रदेशमें जो छीरा पयदा छोता है, उस्का रद्ध यामक छोता है; स्वीर मातक प्रदेशमें जो छीरा पयदा छोता है, उस्का स्व

वज-विद्याके कुमल परिष्ठत कक्षते की, के कीरोंने प्रयी-जल, धाकाम, तेज धीर वायु यकी पद्म महाभूत गामान्य विशेष कर्क की। ७६।

75. The diamonds of the Himalayas are slightly copper colored, those found on the shores of the Venwa are lustrous like the moon, those of Saubira resemble in hue the white lotus or the silvery cloud, those of Surat are copper-colored, those of Kälinga dart golden rays, those of Kosala are yellow, those of Paunda, sable, and those of Matanga, yellowish.

76. According to persons versed in the knowledge of jewels, diamonds vary in the preponderance of one or other of the five primal elements earth, water, the sky, energy and the air.

অনুধাদ।

হিমালয় পর্ববেড ঈষৎ তাত্রবর্ণ, বেণাতীবে চন্দ্রের ন্যায় শুদ্রবর্ণ, দৌবীবে শেতপন্ম অথবা শুদ্র মেঘদদৃশ, দৌবাষ্ট্র প্রদেশে তাত্রবর্ণ, কলিন্ন প্রদেশে স্থবর্ণবর্ণ, কোশলে গীত-বর্ণ, পৌণ্ড-প্রদেশে শ্যামবর্ণ, মাতন্ত্র-প্রদেশে ঈষৎ গীতবর্ণ হীবক উৎপন্ন হয়। ৭৫।

বক্তপরীকা-কুশন পণ্ডিতেবা কহেন, হীরকবিশেষে কিতি, অপ, আকান, তেজ ও বায়ু এই পঞ্ মহাভূতের প্রাধান্য লক্ষিত হব। ৭৬।

मूषम्।

महाप्रभावं सद्वं स्थोभं पायिव विदुः । सिन्धं चटु धन खच्छनाच्यनाञ्च पर वृधाः॥ ७७॥ विमवं गुपि तीचाग्रं वैयतं बज्जस्चते। पद्मभूतात्मकं बज्जं तैजनं ग्रावणो भवेत्।

बघु तीन् ं खरस्यंश्वायस्य परिकल्पाते॥ ७८ ॥ समसां प्रथिनीं पाति पाधिवस्य विधारणात्। व्यक्तिंपोर्वेश कीर्त्तिराष्ट्रवस्य धारणात्॥ ७८॥

वर्जमा।

जिस् धीरेने प्रवीका खंग ज्यादा ही, वह हीरा गाट्टा होता ही, जिस्मे जलका खग ज्यादा ही, वह हीरा घन, समान, खर्वात् सेन, चमकदार खीर खब्फ होता ही। ७७।

जिस्मे चाकायका चंत्र स्थिक है, वह हीरा निर्मात, पविच और तीचुाग्र होता है, जिस्में तेजका चंत्र स्थिक है, वह हीरा रक्षक होता है, चौर जिस्में वागुका चंत्र क्यारा है, वह हीरा हालका, तीचुाग्र चौर खुर्धरा होता है। ७८।

जिल् घोरेने प्रयोका घंग घिक है, उसको को धारण करे, यह राजा है, जिल् घोरेने जलका घंग घिक है, यह घोरा धारण करनेने सनका टक्षि, सप्पी, यग चौर कोर्त्ति साम घोए। ७८।

77. The diamonds in which earthy matter forms the base are thick, while those in which water preponderates are dense, smooth, cool and transparent.

78. Diamonds mainly composed of the sky, are exceedingly flawless, clean, and sharp-ridged; those having for their base, energy, are almost always blood-red; and those preponderated by the air are exceedingly light, sharp-pointed and rough.

79. The wearing of earthy diamonds leads to universal dominion; and the watery kind brings contentment, riches, fame and renown.

অহ্বাদ।

বে দকল হীরকে পার্থিবাংশের আধিক্য থাকে, দেই দকল হীরক দলে পুরু; যাহাতে জলীয়াংশের প্রাধান্য থাকে, তাহা অতি ঘন, মহণ, মিত্র এবং স্বছ। ৭৭।

আকাশাংশেব প্রাধান্যে হীরক অতি নির্মান, পবিত্র ও তীক্ষাগ্র হইরা থাকে; তেজঃপ্রধান হীরক প্রায়ই রক্তবর্ণ হয় এবং যাহাতে বায়ুর প্রাধান্য থাকে, সেই হীরক অতি লমু, তীক্ষাগ্র ও ধরস্পর্শ হয়। ৭৮।

পার্ধিবাংশপ্রধান হীরনধাবণে সমস্ত পৃথিবীর আধিপত্য লাভ হয ; জনীয় হীরনধারণে মানসিক ভৃত্তি, লক্ষ্মী, যশ ও কীর্তি লাভ হয়। ৭৯।

म्सम्।

उसारिप्रवर्धिनं वाययस्य विधारणात्।
तथा सम्पन्तयः सन्त्री वैयतस्य विधारणात्।
प्रतापः श्रीर्यमुत्वाषम्त्रीणमस्य विधारणात्।
प्रतापः श्रीर्यमुत्वाषम्त्रीणमस्य विधारणात्। प्र०॥
विमकुन्देन्दुधवनं यद्बीणाधदनं तथा।
तीचुं वारिभवं वयां धनमङ्काशकान्तिमन्।
श्रम्भवारे प दीयेत तज्ञीयं वसस्तमं। प्र्रा
गुणादंर तीचुभारं यसपैद्यनिवारणं।
तस्य धारणमानेण विपरोग' प्रशास्यति॥ प्रद ॥

तर्जमा।

जिस् हीरेमें वासुका संग्र श्रीक है, वह हीरा धारण कर्नेसे जलाश्की एहि, श्रीर लोगोंने प्रिय होए; जिस् हीरेमें शाकायका श्रीय श्रीधक है, उस्हीरेको धारण कर्नेसे सम्मत्ति जाम, होए; जिस् हीरेमें तेजका संग्र श्रीयक है, वह हीरा धारण कर्नेसे प्रताप, बीरत्न, सौर उत्साह एहि होए। ८०।

को घोरा वरफ, कुन्दफुल, सबेद वादन, और चन्द्रमारे समान सुकुवर्ण घोता घे, और क्षकोल स्ववता साटकोल सक, तोव्धार, जनमें उत्पन्न घोता घे; और स्वधिरेने प्रकाय पाता घे, यह घोरा चित सत्तम घो। पर्।

ग्रुणपुक्त चौर तीच्छार कीरा धारण करनेने सर्पका विष चौर चन्यान्य विषधर जन्तुका विष नए कीरा की प्रश

80. The airy sort give heart and gracefulness; and the skyey diamonds bring about the possession of all kinds of wealth The use of energy-preponderated diamonds adds to puissance, heroism and hope.

81 Those diamonds that are white like hallstones, the Kunda flower,* white clouds or the moon, possessed of six or eight corners and sharp-ridged, that have originated from water, and that shine even in darkness, are the acme of excellency.

82. The wearing of a genuine and sharp diamond leads to instant cure from snake-bite, and proves efficacious in neutralizing the effects of other poisons.

অভ্ৰাদ।

বায়বীযাংশপ্রধান হীবকুধাবণে উৎসাহ ও প্রিয়দর্শনত্ব জন্ম; আকাশপ্রধান হীবকধারণে সর্ব্ব প্রকার সম্পত্তি লাভ হয। তৈজস হীবকধাবণে প্রতাপ, শৌর্য্য, ও উৎসাহ বর্দ্ধিত হয। ৮০।

যে বন্ধ কবকা, কৃন্দপুষ্প, শুক্ল মেঘ অথবা চন্দ্রসদৃশ ধবল বর্ণ; যট্ বা অউকোণবিশিক্ট; তীক্লধার; জলোৎপন্ন এবং অন্ধকাবেও দীপ্তি পায়, সেই হীরকই উৎকৃক্ট। ৮১।

ওণমুক্ত অথচ তীক্ষধাৰ হীরক ধাৰণ করিবামাত্র সর্প-দফ্ট ব্যক্তি আবোণ্য লাভ কৰে, এবং তদ্বাৰা অপবাপর জন্তুব বিষও শমতা প্রাপ্ত হয়। ৮২।

^{*} Jasaminum Multiflorum or Pubescens,

मूचम्।

कोटिस्क्षेप्रतीकार कोटिसन्द्रस्त्रीतलं।
श्रन्धकारहर वर्ज विज्ञे यं महदुनमं।
तस्य धारणमाचे ण सर्व्यराग प्रशस्यति॥ ८५॥
तप्ते इस्ये जले तेले हते चिप्तीर्द्धा यः पविः।
श्रीतता नाययेस्यद्ध स ज्ञेय सरदुर्जभा ८४॥
वस्राविवविद् स्ट्रिमेदासस्य चतुर्विधाः।
क्रमयो लव्यं तेपासुच्यते दिनसन्तृम ॥ ८५॥

तर्जमा।

को हीरा कोट सूर्य के समान प्रकाशमान, चीर कोट चन्द्रमार्के समान शीतन, चीर चाधेरें मे प्रकाश पाता है, वह हीरा सबसे बेठ हैं, चीर उस्के पहेरनेंसे सब विमारी नष्ट होते हैं। टूं।

जो घोरा गरम जल, गरम दुध, शरम छत चौर गरम तिलमे फेंक दिया जाय, चौर उसी समय उन् बसुकी गरमि ट्र घो जाय, ऐसा चौरा देवतांको दुर्लभ कै। प्रश्री

मनुष्यमणमें जिम् प्रकारके बाह्मण, ह्यसि, वैद्य, भौर गूड़ यही चार वर्ष है, उसी प्रकार हीरामेशी बाह्मण, ह्यान, वेद्य चौर गूड़ यही चार वर्ष है, प्रवक्ष प्रवक् कर्क उस्का स्वाय सिखता ऊं। ८५।

- 83. A diamond which is refulgent like myriads of suns, while deliciously cool as numberless moons, which illumines even palpable darkness, is excellent, and proves a panacea as soon as worn.
- 84. The diamond which, on being thrown into hot water, milk, oil, or clarified butter, extinguishes the heat, is coveted by the gods.
- 85. Like men, diamonds are divided into Brahmins, Kshetriyas, Vaisyas and Sudras. The distinctive features of each caste I will now set forth-

অন্তবাদ ৷

যে হীরা কোটি সূর্যোর নাায় ভাষর, অথচ কোটি চন্দ্রের নাায হুশীতল, এবং অন্ধকাবেও দীপ্তি পায, সেই হীরক দর্ববিদ্রোষ্ঠ; তাহা ধারণ করিবামাত্র দর্ব্ব প্রকার রোগের শান্তি হয়। ৮০।

যে হীরা উচ্চ জল, ছঞ্চ, তৈল বা ছতের মধ্যে নিদিও ছইদা তৎক্ষণাৎ উক্ত পদার্থনিচয়ের উচ্চতা বিদাশ করে, দেই হীরক দেবতাদিগের ছর্লত। ৮৪।

মনুষ্যগণের নাথ হীরকেরও ভ্রাহ্মণ, কজির, বৈশ্য ও শুদ্র এই চারি প্রকার জাতিতেদ আছে। ক্রমশঃ তাহা-দিগের লকণাদি নির্দেশ করা যাইতেছে।৮৫। मुचम् ।

विषय शङ्घकुमुद्स्फटिकावदातः

स्यात् चिचयय ग्रगवकविलोचनामः।

वैश्वय कान्तकद्लीद्लसदिकाशः

मृद्रय धौतकरवालनमानदीति: । ८६ ।

विषद्यविष्याना गूद्रजातेययाक्रमं। खेता रक्षा तथा पीता कष्णा च्हायाञ्चतुर्विधाः । ८७ ।

यद्भी दीनी सपोभिष यदाप्रीति तदाप्र्यात्।

गुणयुक्तस्य वज्रस्य विमजातेश्व धारणात् । ८८ ।

तर्जमा।

जो हीरा प्रहु, कुमुद्रफ्ल, चौर स्फ्राटिकके समान मुकुवर्ण, वह दीरा बाह्मणवर्ष ही, जो दीरा खरगरके श्रायके समान रक्तवर्ण, वह हीरा चविवर्ण ही, जो हीरा नये केलेके पातके समान सनुजवर्ण, वह हीरा वैग्रवर्ण है, श्रीर जो शीरा परिष्कार खद्मके समान, वह शीरा गूद्र-

वर्ष हैं। ८६। बाह्मणवर्ण घीरेका काया सफेद, चचिवर्ण घीरेका काया रक्तवर्ष, वैद्यवर्ष हीरेका काया पीलावर्ष और

गूद्रवर्ण शीरेका काया कप्णवर्ण शोगा। ८०। यज्ञ, दान, श्रीर कठिन तपस्याके दारा मन्ष्य जो फल

लाभ करता है, गुणयुक बाह्मणवर्ष हीरा धारण करने से बडी फल पाता है। ८८।

86. Diamonds white like the conch, waterlily, or crystal, are Vipras (Brahmins); 'those which are red like the eyes of the hare, are Kshetriyas; those which are verdant like the cool plantain-leaf, are Vnisyas; and those which resemble in color the cleaned sword, are known as Sudras.

87. The Brahmin, the Kshetriya, the Vaisya and the Sudra, cast around white, red, yellow and black gleams respectively.

88. The fruit which is reaped through the celebration of various sacrifices, munificence, and the austerest devotion, is also gained by wearing superior Brahman diamonds.

অভুবাদ।

বে হীরক শঝ, কুমূন-পূষ্প, বা স্ফটিকের ভায় শুরুবর্ণ,
তাহা বিপ্রজাতি; যাহা শশকের চন্দুর ভায় রক্তবর্ণ,
তাহা ক্ষত্রিয় জাতি; যাহা প্রিপ্প কদলীদলের ভায় হরিদ্বর্ণ,
তাহা বিশ্রজাতি এবং যাহা পরিষ্কৃত করবালসদৃশ খ্যামবর্ণ,
তাহা শুক্রজাতি বলিয়া পরিচিত হয়। ৮৬।

বাকণ, কন্দ্রিন, বৈগ্য ও শুদ্র এই চারি জাতীয় হীবক ইইতে জনায়মে খেত, রক্ত, পীত ও কৃষ্ণর্যপূর্বায় নির্গত হয়।৮৭।

মানবগণ বিবিধ যক্ত, অসামান্ত দান, ও অতি কঠোর তপদ্যা ঘারা যে ফল লাভ করেন, গুণযুক্ত আক্ষাবর্ণ-হারক ধারণ করিলেও দেই ফল প্রাপ্ত হইতে পারেন। ৮৮।

मचम् ।

जयः पराक्रमस्तस्य ग्रचनाग्रच जायते । गुणवत चचकातीयं वर्जं वनति यद्गृहे ॥ प्रदे ॥ कलाकुर्यंतता तस्य प्रचा चेमं यशो महत । ग्रणिनः पविरक्षस्य वैद्यजातेस्र धावणात । ८० ॥ परोपकारिता चेनं धनधान्यसमहयः । गुवयुक्तस्य वनुस्य भृद्रजातेच धारवात् । ८१ ॥ यन सुमण्यक देवानामपि परिग्रहः प्रोकः। वर्णेभ्यस विभागः कार्यो वर्णाश्रयदिव ॥ ८२ ॥

सर्जमा ।

रुणयुक्त चित्रवर्ष हीरा जिस्के घरमे रहता है, उसके सव नायामे जयलाम, पराक्रमदृद्धि श्रीर ग्रम का नाग श्रीता श्री (⊏८।

जो मन्त्र ग्रणसक वैश्ववर्ष होरेको धारण करे, वह मनुष्य कनाकुशन, यक्तदर्शी, चरोगी भीर यमसी धोता है। १०।

जो मनुष्य ग्रुणयुक्त मूद्रवर्ण हीरेके धारण करे, वह मनुष्य चायन्त परोपकारी, चारोगी, चीर धनधान्य चाहिते यमृहियाली घोए। ८१।

योनेमे जडा इया धीरा देवता खोगभी पश्च कर्ते है, चौर वणके सम्नावेडी दीरेकी मिल्लता तुमाद देति है। ८५।

- 89. The better sort of the Kshetriya class bring about uniform success, accession of power, and destruction of foes.
- 90. First rate diamonds belonging to the Vaisya caste are productive to their wearers of wisdom, cure, fame and skill in the elegant arts.
- 91. The higher order of the Sudra class induce benevolence in their master, and make him hale and wealthy.
- 92. Diamonds set on gold are an acceptable offering to the gods. They are classified according to color.

অহ্বাদ।

গুণাথিত ক্ষজ্রিযবর্ণহীরক যাহার গৃহে থাকে, তাহাব সকল বিষয়ে জয়লাভ, পরাক্রময়ন্ধি ও শক্রবিনাশ হয়।৮৯।

গুণশালী বৈশ্যবৰ্ণহীরকবারী মানবগণ কলাকুশলতা, বিজ্ঞতা, আরোগ্য ও যশ লাভ করিয়া থাকেন। ৯০।

যে ব্যক্তি 'গুণমুক্ত শুত্রবর্ণহীরক ধারণ করে, দে হ্যক্তি অত্যন্ত পরোপকারী, অরোগী এবং ধনধাতাদি দছিলানী হয়। ১১।

স্থবৰ্ণপ্ৰতিবন্ধ হীরক দেবতাদিগেরও আছ। হীরক বৰ্ণামুদারেই বিভাগার্হ। ৯২। म्लम्।

हरितसितपीतिपद्भवतामृष्यामाः समावतो क्विराः ।
हरिवक्षयक्रज्ञतवहपिद्धपितमक्तां स्वका वर्णाः ॥ ६३ ॥
ही वज्वर्णा प्रधिवीपतीना सङ्गः प्रदिष्टी नतु वार्ष्यजन्यं ।
या स्याव्यविद्धमभद्भयोणी यो वा हरिद्रारसस्विकाम ॥६॥
ईम्मतात् पर्यवणाना ग्रुणवन् सार्व्यवर्णिकं ।
कामतो धारवेद्राजा न तन्योज्य क्षयक्षन ॥ ८५॥

तर्जमा ।

मञ्ज, सफेद, पीला, पिज्जल (नीला चौर पीला मिश्रित) तांवेके समान चौर खाम यशी कप्रकारका रज शैरिमे शोता है। नारायण, वरुण, इन्द्र, चान, यम चौर वाय इस्करज्ञ मज्जुरेवालेके क देवता है। है। बसो कप्रकार वर्षयुक्त शैरिके मध्ये कनेल फुल, च्यावा

वर्षा कप्रकार वर्षयुक्त भीरेक सध्य करेन फुन, श्रायन। सुद्रेके समान रक्तवर्ष, श्रयना भ्रत्यिक समान पीलार्ष्य यभी दो वर्षानिष्य भीरा राजा लोगोंको गुमदायक भी १८४।

भगर किसी एक घोरेंभे क्ष प्रकारका रच्न पाया आवे, तो उस् घोरेको राजा धारण कर सक्ता है, लेकिन क प्रकार रज्जका क घोरा एकदफे कभी धारण निर् करेगा। ८५।

93. Diamonds are generally green, white, yellow, brown, copper-colored or black; and the classes are presided over by Narayana, Varuna, Indra, Agni, Yama and Vayu respectively.

94. Of the six classes, those that are red like the China rose or coral, or yellow like turmeric, are productive of good fortune to princes

95 They can wear a diamond whose hue is a medley of all the colors enumerated above, but never diamonds of diverse colors at one and the same time.

ञञ्चाम ।

হীরকে হরিত, শুরু, পীত, পিরুল, তাত্রবং ইবং লোহিত ও শ্রাম, এই ছ্য প্রকার বর্ণই স্বভাবতঃ হইমা থাকে, এবং নাবায়ণ, বরুণ, ইন্দ্র, অমি, যম ও বায়ু এই ছ্য দেবতা উক্ত ছ্যবর্ণেব এবং তদমুদাবে উক্ত ছ্যবর্ণ-বিশিক্ত হীবকেবও অধিঠাত্রীদেবতা। ১০।

উদ্লিখিত ছ্য প্রকাব বর্ণবিশিন্ট হীবকের মধ্যে জবা-কুহম বা প্রবাদের ন্যায় বক্তবর্ণ, অথবা হরিদ্রাবদেব ন্যায় শীতবর্ণ বিশিন্ট হীরকই রাজাদিগের শুভদ্ধনক। ৯৪ ।

যদি একথানি হীরকে উক্ত সর্ব্বপ্রকাব বর্ণ থাকে, তাহা হইলে বাজারা সে হীবক ধাবণ করিতে পারেন, কিন্তু একদা বিভিন্ন বর্ণের ভিন্ন ভিন্ন হীরক কথনই ধারণ করি বেন না। ৯৫। मूचम् ।

चधरोत्तरष्टत्तारा ि यादक् स्याद्वर्षेषद्वरः । ततः कष्टकरो वज्रवर्षांनां सद्भरो मतः । ८६ ॥ कोद्यः पार्क्षांनि घारास्य पद्धौ दादयेति च । उत्तुद्वसमतोषुगद्राः वज्रसाकरता ग्रणाः ॥ ८७ ॥ ग्रणाः पद्य समाखाता दोपाः पद्य प्रकोत्तिताः । कागा विज्ञेयासलारो वज्राणां रत्नकोविदैः ॥ ८० ॥

पर्कोणतं चघुत्वच समाप्टरनता तथा। नीच्याप्रता निर्भवत्वमिमे पश्च ग्रयाः सताः । ८८ ॥

सर्जमा ।

जिस् प्रकार मनुष्यमे बास्त्रण, चित्रव, केश और गुष्ट्रके परस्पर संयोग डोनेसे सक्षरवर्णका छत्यांच छोती डी उसी किसिम्से डोरेके विभिन्नवर्ण संयोग डोनेसे सक्षरवर्ण छोरा डोता है; यही सङ्करवर्ण डोरा मनुष्यके कष्टदायक है। ८६।

ककोण, चष्टपार्वता (चाटो चांनघाट) बार धार (गेरदा घाट) गद्धा, चमान, चौर तीवाग्रता वशी गव गुण श्रीरेमे समादिक पयदा शोता है। 20।

रत्रभासके परिदत कीरके पांच ग्रुण, पांच दीव कोर चार कावा तज्विक विद्या है। ८००।

इकोण, हान्या, चाठी चांग घाट, तीतुग्रता, चीर निर्मातता यही पांच ग्रण हीरेने होता हैं। हुर ।



96. As the promiscuous intercourse of one caste with another gives rise to mixed castes among mankind, so it is with diamonds, the mixed classes of which are fraught with great troubles to man.

97. The qualities of being six-cornered, eightsided, twelve-edged, high, smooth and sharp, dia-

monds bring from their quarries.

98. Persons skilled in the knowledge of jewels enumerate five good, and as many bad qualities of diamonds; and have also mentioned four kinds of shades as proper to them.

99. The qualities of being six-cornered, light, sharp-edged, and pure, as well as the state of having eight equal sides are the five good properties of diamonds.

অভ্ৰাদ।

ব্রাহ্মণাদি বিভিন্ন বর্ণের সংযোগে মনুষ্যগণের মধ্যে বেমন সম্ববর্ণের উৎপত্তি হয়, হীরকেও সেইরূপ ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের প্রক্ষাব সহযোগে সম্ববর্ণ হইয়া থাকে, হীবকের সম্ববর্ণ মনুষ্যগণের পক্ষে অতি কউদাযক। ৯৬।

যট্কোণতা, অউপার্যতা, ঘাদশধার, উত্তুস্তা সমান অথচ তীক্ষাগ্রতা এই ক্যপ্রকার গুণ হীবকের স্বভাবসিদ্ধ, অর্থাৎ আকর হইতেই এই গুণসমূহ উৎপন্ন হয়। ৯৭।

রছবিং পণ্ডিতেরা হীবকের পাঁচ প্রকাব গুণ, পাঁচ-প্রকাব দোয ও চারি প্রকার ছাযা নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ৯৮।

ষট্কোণস্ব, লমুত্ব, সমান অউদলন্ব, তীক্ষাগ্রন্থ ও নির্মালন্থ এই পাঁচটা হীরকের গুণ। ৯৯। मदिमारा !

6 y 103

गुचस्।

पर्कोषग्रहममनं ग्रुषि तीच्छधारं यणांस्वितं लघ् ग्रुवासं मधेतदोवं।

यणीन्तितः समृद्यवायां मयेतदीयः इन्द्रायुधागुविष्टतिष्ट्रहितान्तरीच -

मेर्यविधं मुबि भवेत् मुलभं न वक्ष'। १००।

चार्यां सघु वर्णतय श्रुणवत् पार्क्य प्रस्यक् सम

रेसाविन्दक्षमङ्कषाकपद्कषावादिभिविक्तित'। कोकेऽस्मिन,परमाणुमाचमपि यदण्' क्रविहृम्धते

तिमान् देवसमात्रयो प्रावितयसीचामधारं यदि । १०१।

सर्जमा ।

को घीरा विश्वद्व, ककोण युक्त, भायना निर्माव भाषीत् यञ्जत साफ. नीचू पार, उत्तम वर्ण विशिष्ट घाटका आप्छा घाटदार, वेश्ववेव, श्रीर जिस्से इन्द्रभत्तकके समान आमा निष्ने, ऐसा घीरा पृत्वी पर बञ्जत नावाव है। १००।

बज्जत घाल्का, उत्तम वर्ष युक्त, ग्रुषयुक्त, बरायर घाट, तीचणात्र, ष्यर्गत् षुटीदार, षिर, क्रिटा, दाग, काकपर, गरुषा, यथी सब चायेबवर्ज्जित, शीरेके क्रीटे तारिके समान जिस जगडके रहे, छती जगडके जहर देवताका

वान क्षोगा। १०१।

100. The diamond which is free from defect, six-cornered, pure, sharp, possessed of an agreeable color, light, beautifully shaped, flawless and irisgleaming is a rarity in the world.

101. The place where there is even a particle of such a diamond as is sharp, equal-sided, exceedingly light, possessed of an excellent color and of other good properties, and free from Rekhá, Vindu, Kalanka,* Kákapada, Trása, &c, is certainly frequented by the gods.

षष्ट्रवाम । 🖺

যে হীরক বিশ্বন্ধ, ষট্কোণবিশিন্ধ, অতি নির্মান, তীপ্ন-ধান, উত্তমবর্ণপূষিত, লমু, ম্নপার্থ, নির্দোধ এবং নাহা হইতে শত্রুধমুব প্রভা নিঃসতে হয়, সেপ্রকার হীরক পৃধি-বীতে অতি মুর্লভ। ১০০।

খত্যন্ত নঘু, উৎকৃত বর্ণাদ্বিত, মণ্ডণ, সমপার্খ, তীক্ষাব্র এবং বেথা, বিন্দু, কলফ, কাকপদ ও জ্রাসাদি দোষবিবর্দ্দিত হীবক পরনাগুপরিমাণে যে খানে থাকে, সে থানে ঘবস্টই দেবতাদিগের সমাগম হইয়া থাকে। ১০১।

मुचम्।

तीचाग्र विमलमपेतमध्दीप

. धत्ते यः प्रयततनः सदीव वर्ज्।

ष्टतिस्त प्रतिदिनमेति यावदायः

श्रीसम्पतस्त्रतधनधान्यगोपश्रनाः ॥ १०५ । यत्त सर्व्वगृष्येयकं वज् तरित वारिणि।

चमासर्ति यदनमभेद्यं विमलस्य यत्। तया मंग्रह्मपद्कीण' लघ भागमनन्दन । १०४ । प्रभा च प्रकचापामा यस्याकां भिमसी भवेत । तदलुंधारयन् राजा मर्व्यान् जयित शामवान् । १०५ 1

रवर्गे ममस्तेरि तस्य धारणमियाते ॥ १०३ ।

TRANSPARTION.

102. The man who carefully keeps about him a sharp-pointed, spotless and genuine diamond, is blessed with the life-long possession of riches, good fortune, sons, corn, kine and other beasts.

103. The diamond which crowned with every good property, floats on water, is the very pink of perfection; and the use of such a gem is attended with greater good.

104-105. The possession of such a diamond as is exceedingly flawless, impervious, six-cornered and light to a degree, as forms the rainbow on being exposed to the sun, and as does not sink in water, renders a prince victorious over every enemy.

অভ্রাদ।

যে ব্যক্তি ভীক্ষাগ্র, নির্মান এবং নির্দোষ হীবক অতি
যক্তমহারে ধাবণ করে, দে ব্যক্তি যাবজ্জীবন নামনী,
সম্পদ, পুত্র, ধন, ধান্য, গো ও পশুর আধিপত্য লাভ
করিয়া কান যাপন করিতে পারে 1>০২।

যে হানক সর্ববেণালয়ত হইয়া জনে ভাসমান হয়, সমন্ত রহমধ্যে সেই হারকই উৎকৃষ্ট, এবং তাহা ধারণেও অধিক ফল লাভ হয়। ১০০।

त्य शैतरु थिंज निर्मान, पालमा, महेत्नांपितिभेजे, चिल् भग नगू, बत्न जाममान, मुर्गाजिम्स ४ इंड हरेल रेल्यपूत्र क्षज्ञ निर्मात क्रात, क्ष्यकात रीतर बादन क्रित्न द्वाकान मर्कत्वरे मक्न गक्तर क्रा क्रित्त मर्न्य रुन। ১०८। ১०८।

मलम्।

यत्तु वारिभयं नाम दृखांपचलस्कृति । सवर्षमाचं तुलया तदज् कोटिमाजनं । १०६ । यद्यपि विशेषकोटिः सिवन्द् रेखान्तितो विवर्षो वा । सोऽपि च धनधान्यस्तान् करोति सेन्द्रायुधो यज्ः । १००। सौदामिनीयिष्कृरितामिरामं राजा ययोक्त कुलियं द्धानः । पराक्रमाकान्तपरप्रतापः समसासामन्तमृयं भुनिक्त । १०००॥

तर्जमा।

को होरा पाधिसे पयदा होता है, चौर जिसका रहा सबुज घासके पाधिके यूंद्के समान, चौर चोजनमे एक तोखा भारी हो, उस हीरेके दाम क्रोर रूपेया होता है। १०६।

टुटाकोषा, किटा, चिर, चीर बहरकु रही सब भयेवहार होरासे भगर इन्द्रसमुक्के गमान सामा प्रकाम पाये, तभी पहेरनेसे धन, दीखत भीर भावोलातकी तर-किक होये। १०७।

को राजा पहिले बयान किये गये वेश्वयेव श्रीर विजन्धे वीके समान श्रामा प्रकाशित श्रीरा पहेरे, वह बदा एक वावमन्द शोकर तामास जनीनका राज लाम करे। १०००।

106. The diamond which has originated from water, which weighs one told, and which is transparent as the dew-drop on a blade of grass, is worth ten millions.

107. Even a diamond which is cracked, spotted, striped, discoloured, or otherwise defective, leads to wealth and increase of children, if it possesses the power of forming the iris

108. The sovereign who wears a diamond possessed of the good qualities mentioned above, and laughing like the lightning's flash, attains to universal dominion.

यश्रदोर ।

নে হীবক অন হইতে উংপদ, যাহার বর্ণ দুর্বাদিনো-পরি পতিত জন-বিন্দুর ন্যায় বছর, এবং ওসনে এক ভোলাপরিনিত, ভাহার নৃত্য কোট নুদ্রা । ১০৬।

ভাষোণ এবং বিন্দু, রেগা ও বৈবর্ণা ইত্যাদি দোন দ্বিত হারক হইতে যদি ইল্লধনুর প্রভা প্রকাশ পার, ভাষাও ধৃত হইবে ধন, ধাত, ও সন্ততি হৃত্তি করে। ১০৭।

যে রাজা প্রেক্টাক্ত ওণদর্হে ভূষিত একং সৌদানিনীর চার প্রতাপ্রকাশক হারক ধারণ করেন, তিনি বাভিশন্ত পরাক্রনশামী ইইয়া সমস্ত পুনিবীর আধিপতা লাভ করেন। ১৮৮।

A we fit of full or after, calculated at 12 metrics, leveliers
We git a said expectated to pearly 210 game a test arising it is of the
same we git as the sacce or 1724 games—it for the

च्यय बज्जदोषा: I ·

मूलम् ।

मलो विन्दुस्तवा रेखा चार काकपरसवा।

यते दोषाः समाखाताः पञ्च बज्जेषु कोविदैः ॥ १०६ ॥

मले मिलनता खाता विन्दी सर्वावैनायनं ।

रेखावा दृष्टिणो भीतिः चासे चारः चव पदे। ११० ॥

रोषेषु विन्दुरावर्त्तः परिवर्त्तो ववास्तिः।

चतुर्विधाः समाखाता विन्दवे बजुर्सविताः ॥ ११९ ॥

हीरेका ग्रयेव।

तर्जमा।

रत्नशास्त्रके परिटन मयला, किटा, चिर, गब्रुका श्रीर काकपद यक्षी पाच प्रकारको श्रीरेके श्रयेव कक्षे गर्ये हैं। १०८।

मित कीरे पे परेर ने से भन मयना कोता के, किटेदार कीरे के पहेरने से मध्यनाय कोता के, विरदार कीरें पहेरने से सापका भय कोता के, मह कादार कीरा परेरने कमेसा मनके दुःख रकता के, कीर काकपदिक्षम्य क कीरा पहेरने के सदमी बजत जल्द नामको प्राप्त कीरा कै। ११०।

है। १९०। होरेमे को किटा है, यह प्रकारभेट्से बिन्दु, जावर्स, परिवर्त्त कीर बवालति यही चार प्रकार होता है। १११।

DEFECTS OF DIAMOND.

TRANSLATION.

109. Authorities in matters of precious stones mention five bad qualities of diamonds; namely, mala,* vindu,† rekhå,‡ trāsa§ and kākapada.

110. The first defect causes impurity, the second brings down destruction on the wearer, the third renders him apprehensive of sunke-bite, the next infuses constant fear into the mind, and the last leads to ruin.

111. Diamond spots are divided (according to the respective character of each) into four classes, namely; vindu (or the spot proper), dvarta, parivarta, and jabalriti.

হীরকের দোষ।

प्यकृतीत ।

রহতবৃদ্ধ পভিতের। মল, বিন্দু, দেখা, আম, ও কাক-পদ এই পাঁচ প্রকারকে হীরকেরদোয বলিমা উল্লেখ করিমা গিমাছেন । ১০৯।

মনিন হারকে মনেব মানিত জন্মে; বিন্দুর্ক হারক সর্বনাশের নিশান; রেখাবিশিত হারক সর্পানি শান্তি ত্যোধ-পাদক; আসমুক্ত হারক সর্পানা আন্তনক এবং কাকপদ-ভিহ্নিত হারক মন্ত্যের অসকারক ব্যামা ক্ষিত আছে। ১১•।

होतदस्ति दिन् श्रदाहरहर दिन्, पार्रह, श्रदिर्व ४ स्वाहिड वहे हर्हेर्वर हरेश शास्त्र । >>> ।

^{*} Impurity | † Frd. | † F.r., * | 1 lear | † Cornlect. * Loren's, that which is adopted the a barby corn.

मूलम्।

रक्षोऽच बर्मुखो बिन्दुरावर्त्तो मध्यवर्मुखः । रक्षच परिवर्त्तेस्र रक्ष यब बबाळतिः । ११२ ॥

विन्दुराञ्चर्घनं इन्यादावक्तों भयमाद्यित्। परिवर्क्ते भवेद्व्याधिर्ववे तत्पनसुखाते ! १९५ ॥ रक्तवर्षे ववे खातं गजाखस्य विनायनं।

यवे पीते कुलस्थान्तं धनमायु:चर्य भवेत्। एवं दोषाः समास्थाता यवविन्होरप्रेयतः ॥ १९४॥

तर्जमा ।

रक्तवर्ध गोल चिद्धको बिन्दु धर्यात् स्थिटा क्रवते हैं, मध्यगोलाकार चिद्धको घावर्म क्रवते हैं, सामान्य रक्तवर्ष चिद्धको परिवर्म क्रवते हैं, सीर रक्तवर्ष जब चिद्धको जवाछित क्रवते हैं। १९२।

जो घीरा बिटेदार है, वह उत्तर घीर दीवतको नाम करता है, चावर्नका चवेबदार घोनेसे बज्जत प्रकारका खीक पवदा करता है, परिवर्त्त ध्रवेबदार घोनेसे विमारी करता है, चौर जवाज्ञति खरेबदार घोनेसे वही खरेब घोता है। १९६।

किसी पिएउनके मतातुनार जबके समान नियान स्नुध धोनेने काती भीर घोड़ाको नाय करे, भीर पीला कीनेने कुन, धन भीर लगर नाय करे। जब विष्कृते यही सब भवेब कोता की १९९४।

3.

TRANSPARTON.

112 A blood-red, circular spot is a vindu, a circular spot situated in the middle is called an ávarta, a simple red speck is entitled a parivarta, while a Jabákriti is a blood-red mark shaped like a barley corn.

113. A vindu-marked diamond is inimical to life and property; an ávarla spotted one gives rise to various fears; a parwarla-specked and a jabákriti-spotted one are fraught with disease.

114. According to some, if the barley corn-shaped speck is red, it is destructive to horses and elephants; and when it is yellow, loss of family dignity and of wealth and curtailment of life are the consequences,

व्यव्यार ।

বক্তবর্ণ বর্ত্ত্বনাহার চিহ্নকে বিন্দু, মধ্যবর্ত্ত্বনাহার চিহ্নকে আবর্ত্ত, নামান্ত বক্তবর্ণ চিহ্নকে পবিবর্ত্ত ও বক্তবর্ণ যবচিহ্নকে যবাঙ্গতি কহে। ১১২।

বিনুত্রক্ত হীরক আয়ু ও ধন নাশ কবে, আবর্ত্ত-দোধা-দ্বিত হীবক নানা ভয়েব উৎপাদক, পবিবর্ত্ত ও যবাক্ততি-দোমদূবিত হীবক নানাব্যাধিজনক হয়। ১১৩।

কাহাৰও মতে বক্তবৰ্ণ যৰচিক্ত হত্তী ও অশ্বেৰ বিনাশক এবং পীতবৰ্ণ যৰচিক্ত কুলনাশক এবং ধনায়ুঃক্যকাৰক হয়। যৰচিক্তেৰ এই সকল দোৰ উক্ত হুইয়াছে। ১১৪।

मूलम्।

सव्यवका भूमा रेखा वामवका मयह री।
केदमुनिककरी च्छेदा रेखा सक्तमवप्रदा । १९५ ।
पचडयप्रदृश्या या केदा सा परिकीर्त्तेता।
रेखा वस्तुविनाशाय जायते वजुर्ययया । १९६ ॥
सव्या चैवापसव्या च केदा रेखोद्धेगामिनी।
पव्या पात्मिदा चेया स्वपस्या धनिक्दा।
उर्ज्ञा वासंप्रहाराय केदा केदाय वस्तिः। १९७ ॥

तर्जमा।

चिर अगर ट्रांडिने तरफ टेडा छोए. तो यह उनम फल देने, बांगे तरफ टेडा छोए तो यझत तरहेका खीफ पयदा करे, चौर जिस्चिरते छीरा फाटा मानुम घोए, यह चिर घोनेसे तलबारका खोफ छोए। १९५।

धीरेमे जो विर पत्तीके परके समान द्वीए, उसे केंट्रा कफते हैं, चौर केंट्रा नियान भाद्र वन्युके विनायका कारण धोता थे। १९६।

छेदा नियान पगर वाने तरफ टेट्टा घोए, तो धारने कुल्वेके साधमे कनफ पगदा करे, दिल्ला तरफ टेडा घोर, तो दीलतका नाम करे चीर सिधा घोए, तो दोस्तीमें ऽष्फुनि करावे। ११७।

115. If the above-mentioned stripe appears in a bent form on the right side, it is productive of good consequences; but the same appearance on the left occasions various fears; again, the streak which looks like a cleft renders one liable to blows from weapon.

116. That stripe in a diamond which resembles a bird's wing is termed chheda. This mark brings about loss of friends.

117. When the chhedé mark is visible in a crooked form on the left, it leads to dissension with kindred; a like mark on the right side entails loss of wealth, and if pointing upwards, brings on difference with friends.

অহবাদ।

রেখাচিহ্ন দক্ষিণে বক্ত হইলে শুভ ফল প্রদান করে, বামদিকে বক্ত হইলে নানা ভবের কারণ হয়, এবং যে রেখা দারা হীরককে কাটা বলিয়া বোধ হয়, সেই রেখা হইতে শক্রাঘাতের ভীতি উৎপন্ন হয়। ১১৫।

হীরক্ষিত যে রেখা দেখিতে পক্ষীর পক্ষের ভার, তাহাকে ছেদা কহে, ছেদা চিহ্দ বন্ধুবিনাশের নিদান। ১১৬।

ছেদা চিহ্ন বানবক্রা হইলে আন্ত্রীয় জনেব সহিত কলহ সজ্ঞাটন, দক্ষিণবক্রা হইলে ধনহানি এবং উর্ভ্নগামিনী হইলে বন্ধু বিচ্ছেদ করে। ১১৭।

मुखम् ।

षञ्जः काकपदाकारो दृख्यते यो मलात्रितः । स मृत्युमादिशत्याग्र धनं वासप्टष्टं घरेत् ॥ ११८० ॥ भग्नाग्रं भग्नधारञ्ज दृल्डोनञ्ज वर्त्तुलं । कान्तिष्टोनञ्ज यदन् दोषाय न ग्रणाय तत्॥ ११६०॥ भिन्नश्चान्तिकरः चासः स चासं जनयेट् सुवं।

एवं दोषा गुषा: मोक्ता वजाणा सोमभूभजा ॥ १२० ॥

सर्जमा ।

भी दाग कौएके पाश्चोक नमान छोए, श्रीर वधी दाग मिलन घोए, उसे काकपद श्रायेव कप्टते हैं, जो धादमी ऐसा घोरा पधेरे, उस्का मर्ळनाग घोए, श्रीर मीह घोए। १९८८।

जिस् घोरेका चामेका चिस्मा, सदावा कोडी किनाय युटा घोर, भौर जो चीरा द्वचोन सर्वात् पन्वा, तेजधीन भीर देखनेसे गोलाकार, यही घीरा वहा सर्वेवी, भीर तर तरके स्रवेबका पददा करनेवाला है। १९८।

तर तरक अध्ययका पददा कर्नवाला है। ११८। भिग् सब्बें घीरेको टटा समजकर सक् पद्यदा होए. उसको घास कहते हैं, और घासतुक होरा हमेना सब सामोमे घाम पद्यात् भद देवे, सोसराल परिष्टतोते द्वी तरहसे होरेका सिफत चौर चवेबको लिखा है। १२०।

118. The spot which is like the claw of a crow as well as dirty, is called kákapada. Death and ruin are near the man who wears a diamond marked with kákapada, and a stranger shall lord it over his home.

119. That diamond, the top or any side of which has been rifted, which does not show a leaf-like arrangement of parts, which is devoid of lustre and which is globular, is not only void of any good property, but is positively productive of a variety of evis.

120. The mark the existence of which in any diamond imparts to it an air of apparent brokenness, is denominated trasa. Such a diamond always gives rise to fear. These good and bad qualities of diamonds have been described by Raja Soma.

অহ্বাদ।

হীবকস্থিত যে দাগ কাকের পাদের চিছের অমুরূপ, অথচ মলিন, তাহাকে কাকপদ দোষ করে। যে ব্যক্তি কাকপদ দোষ-তুঞ্চ হীরক ধারণ করে, তাহার সর্ব্বনাশ, বাসগৃহ পরিত্যাপ, এমন কি মৃত্যু পর্যান্ত আসর। ১১৮।

যে হীরকের অগ্রভাগ বা কোন একধার ভগ্ন, যাহা দলশূন্য অথচ কান্তিহীন, দেখিতে গোলাকার, সে হীরক অতি নিপ্ত'ণ এবং নানা দৌষের আকর। ১২৯।

বে চিহুদ্বারা হীরককে ভগ্ন বলিয়া ভ্রান্তি জন্মে,
তাহাকে ত্রাস কহে, ত্রাসদোষায়িত হীরক সর্বাদা সর্ব্ব বিষয়ে ত্রাস উৎপাদন কবে। সোমবাজকর্তৃক হীরকের এই সকলপ্রকার গুণদোষেব বিষয উলিখিত হই-য়াছে। ১২০।

मूचम्। एकमपि यस्य भृद्धं विद्वितमवनोक्तते विभीषस्मा ।

गुणवद्षि तस्र भार्थ्यं वस्र 'सेबोऽविभिभवने । १२९ । स्कुटिताग्रविशोषुद्धदेशं मसवर्षे' पृपते स्पेतमर्था । निष्ठ वन्नस्तोऽपि बनुमाग् सिदमन्यास्यवनाशं विधत्ते ॥१२९। यस्केदरेशे सतनावभासो यदा भवेह्वोहितवर्षेचिनं । न तस्र कुर्याद्षि बनुमाग्र सम्बस्य मृत्योर्गय जीवतानां ॥१२३।

तर्जमा ।

जिस् होरेका चागा हुटा, या विशोध होए, वह वज्जत् ग्रणयुक्त चयति, सब तारिकोसे भरा होए, तभी वही हीरा चप्ना माला चाहनेवालिको कभी चप्ने पाग रखना मनासिक नहि। १२१।

जिस् धीरेका आगेका हिस्सा फाटा, गृह दुटा श्रीर बीचका हिस्सा मलिन डोए ऐसा धीरा इन्द्रके समान दीवतको नष्ट करनेवाला है। १२२।

जिस् हीरेका कोई हिस्सा चडके छिटके समान नियान रखता होए, या कुत हिस्सा चडके छिटके समान भरा होए, यह हीरा चाक्टे माले चदमीका जल्द् मीतका स्वय है। १२३।

121. The diamond, the peak of which shews breaches, or which is decayed, no man who seeks his welfare should keep in his house, although it should be otherwise furnished with every perfection.

122. A diamond, the face of which is cracked, whose top is rent, and whose centre is full of dirt, can deprive even Indra of His highest Heaven.

123. If any diamond is marked with a blood-red spot, or if it is throughout red-spotted, it brings a speedy death to the most halo man,

षञ्चान।

যে হীবকেব শৃদ্ধ ভাগ বা বিশীর্ণ, তাহা অশেষ গুণযুক্ত হুইলেও নিজহিতাভিলাধী ব্যক্তি কদাচ গৃহে বাথিবে না। ২২১।

যে হীবকেব অগ্রভাগ ফাটা, শৃদ্ধ বিশীর্ণ, এবং মধ্য-ভাগ মলপূর্ণ, সেই হীরক ইন্দ্রেব ইন্দ্রন্থ পর্যন্ত অন্য ব্যক্তির কবতনগত কবিতে দক্ষম। ১২২।

যে হীবকেব কোন অংশ বক্তবর্ণ চিচ্ছে চিহ্নিত অথবা সন্মুবাৰ অংশ লোহিতবর্ণে চিত্রিত, সেই হীরক অতি ফ্লন্থ ব্যক্তিবও আন্ত মৃত্যুব কাবণ হয়। ১২০।

म्लम्।

प्रथमं ग्रुणसम्पद्राभ्युपेतं प्रतिवह ससुपैति वस्तुरोपं । अलमाभरणेन तस्य राज्ञो ग्रुणधीनोऽिष मणिन भूषणाव १९२८। यस्य चते मवेच्छोयो दाखो वा ज्वर एव वा । तव विभिचिमायेत तद्द्रज्ञं दुष्टसुच्यते । कर्कशं ग्रुक् यद्वज्ञं न तहारयते नृष ॥ १५५ ॥ विकोणं क्लदाय स्वाञ्चतुष्कोण भयावदं । पञ्चकोणं भवेग्मृत्युः पद्कोणं ग्रुभमादिशेत् ॥ १५६ ॥

तरजमा।

जो हीरा पहिले ग्रण्युक समभा जाय, श्रीर फेर सोनेमे जड्बामेसे उस हीरेमे श्रायेव प्रवदा होए, श्रायात् वह पाषि श्रीर वह समक नाको ना रहे, तो ऐसा हीरा गहनेमें जड्बानेके लायेक नहि, किस्तियेके श्रायेवी वस्तु कभी भूषणके योग नहिं। १२४।

जिंग होरे के जखन पर हो याने से जखन में भोत्र पयदा होए, वुखार में दाधकी हाई और सङ्घ चिम चिम करे, यह होरा ने घाएत खाराफ होए, दूम कारण उम्बो मकान में रखना मनामिक निर्दे , और जो हीरा खोजन में भारी, ने हाएत हान्यार, यञ्जत कक्ष्य, यह हीरा का जाने किया तरह से पहेरना उचित नहिं। १२५।

तिनकीणा घोरा स्माटेका, चोकोणा घोरा बङ्गत् नरण्के खौदका, पाचकोणा घोरा मीतका कारण घोणः श्रीर ककोणा घोरा मद्रव करनेवाचा है। १२६।

124. The diamond which at first appears possessed of good qualities, but which on being set on gold, &c., betrays defects, should never be selected for ornamentation; since a thing devoid of good properties should never be used for such a purpose.

125. A diamond the touch of which causes swelling in a wound and an increased sensation of burning in a fever and which brings on a sensation of fainting, is a bad gem and must not be treasured. The diamond which is rough is not acceptable to kings, although it may be weighty.

126. A three-cornered diamond gives rise to quarrel, a four-cornered one occasions various fears, a five-cornered one brings death, but a six-cornered diamond is productive of good.

अञ्योग।

যে হীরককে প্রথমে ওণ্যুক্ত বলিয়া প্রতীয়মান হয়, কিন্ত স্বর্ণাদি দারা জড়িত হইলে দোষাপ্রিত হইয়া পড়ে, একপ হীরক দারা কদাচ অলঙ্কার নির্মাণ করাণ কর্ত্তন্য নহে, মেহেডু গুণহীন বন্ত কথনই ভূষণের উপযুক্ত নহে। ১২৪।

যে হীরকের স্পর্শে কতে শোণ, তরে দাহর্দ্ধি হয এবং অদ চিমচিন করে, সে হীরক অতি ছুক্ট, স্তুতরাং তাহা গুছে রাথা কর্তব্য নহে। এবং বে হীরক পরিমাণে শুক্ত, কিন্তু অতিশ্য কর্বশ, সে হীরক নৃপতিদিগের অগ্রাহা। ১২৫।

ত্রিকোণ হীরক কলহের, চতুকোণ হীরক নানা ভয়ের, পঞ্চকোণ হীরক মৃত্যুর এবং বট্কোণ হীরক মৃদ্ধনের নিধান। ১২৬। मचम्।

हिद्दे कलको नित्यं चिद्वे स्वनायन । चतुर्देवे स्वानाप्ति योकस्य पद्यमे द्वे ॥ १२७॥ पद्देवे राजतो मीतिमृत्यु चप्तद्वे तथा । स्पष्टद्वं भवेस्कृद्वं वजुमित्याच पावक ॥ १२८॥ विस्ताय विपद्द्वरोति मजिनं धन्ते मुचं कर्कशं

द ख से इविक्षिप्तमनक्षरणं खावच्छवि क्षेत्रयक्त्। रेखाकाकपदाद्वविन्दुसंघित स्यामृत्यवे देघिना वजु वजुविचचणस्य विभ्वयात्तस्यादिसार्थ्यस्य ॥१२८॥

तर्जमा।

श्वनिष्ठराणके मतये दोदलका श्वेरा भागदेका कारण, तिनदलका श्वेरा खलका नाग्र करनेवाला चौदलका श्वेरा खल देनेवाले, पाचदलका श्वेरा ग्रोक पयदा करने-वाला। १२७।

करलका घीरा राजभय करनेवाला, सातटलका घीरा भौतका कारण श्रीर घष्टटलका घीरा बद्धत् श्रान्छ। है। १६८०।

चमक होन होरा चाप दका सबय, मिलन होरा गम देनेवाला, नाहास्त्रर खर्यांत उचा नीचा होरा दुख देनेवाला, कम पाणि होरा खफकान होनेका कारण, खामवर्ण होरा चडत दुख देनेवाला, खीर चिर, काकपर और किटादार होरा मौनका कारण है, दुर्स्विय पिले खुव चाक्छि तरहे परख करके बाद उसको धारण करना मनासिक है। १२८।

127. A two-layered diamond, (says the Agni Purána,) brings about quarrel, a three-layered one is destructive of happiness, a four-layered diamond is productive of it, and a five-layered diamond occasions grief.

128. A six-layered diamond causes fear to kings, a seven-layered diamond is mortal,* while an eight-layered one is surpassingly pure.

129. Since a shadeless diamond is fraught with danger, a dirty diamond with grief, a rough diamond with unhappiness, an unfeeling diamond with intoxication, a black diamond with various troubles and a rekha-marked, a vindu-marked, or a kåka-pada-spotted diamond, with death, it behoves a man to wear diamonds after minute examination.

অহ্বাদ।

অনিপুরাণের মতে দ্বিদল হীরক কলহের কারণ, ত্রিদল হীরক স্থবনাশক, চতুর্দল হীরক স্থবদায়ক, পঞ্চদল হীরক শোকজনক। ১২৭।

ষড়্দল হীরক রাজভবের নিদান, সপ্তদল হীরক মৃত্যুর হেতু এবং অউদল হীরক অতি বিশুত্ত। ১২৮।

ছাযাহীন হীরক বিপদের হেছ, মলিন হীরক শোকজনক, কর্বশ হীরক ছঃখদাযক, দ্রেহহীন হীরক মভতার
কারণ, ভানবর্গ হীরক নানারেশকর এবং রেপা কাকপদ ও
বিল্যুক্ত হীরক হত্যুর নিবান; অতএব অথ্যে বিশিকরপে
বজের পরীকা করিয়া পশ্চাৎ তাহা ধারণাদি করা
কর্তব্য। ১২৯।

[·] Used literally ; L. morfu, death ; Sanikrita, mri, to d.c.

मसमा

षणुनािष च दोषेण वच्यावच्येण दृषितं ।
तम्ब्लाह्वेषमं भागं वचं छमते वा न वा ॥ १३० ॥
प्रकटानेकदोपस्य खत्यस्य महतोऽिष वा ।
समूत्याच्हतयो भागा वज्रस्य न विधीयते॥ १३१ ॥
समूत्याच्हतयो भागा वज्रस्य न विधीयते॥ १३१ ॥
समूत्याच्हतयो भागा वज्रस्य न विधीयते॥ १३१ ॥
सम्बर्धा मत्वाचा विकासीं स्त्यानास्य भवेष्ठसु ॥ १३२ ॥
स्त्रिष्टोपिन धर्मेच्यो सुवनीिमर्यं मणिः ।
कठरे वज्रमम्बद्धं समेसाासा विन्ह्यति॥ १३३ ॥

तर्जमा ।

जो शीरा योदे अर्थेवसे अर्थेवी है, और वह अर्थेव देखनेंभे आर्थे जा ना आर्थे, लेकिन उन् शीरेका दाम वे अर्थेव शीरेके आधे दामने बरावर भी निष्ठ शे सका। १३०। जो शीरा वज्जत् अर्थेवसे अर्थेवी है, और वह गव अर्थेव वज्जत् योदा शोए, या ज्यादा शोए, उस शीरेका दाम वेश्यदेव शीरेके मोकाबेनमे शतभागके वरावर नष्ठिं है। १३१।

जिस् गर्डनेमें श्रवेवी शीरा जहा शोए, वह सब गहेना श्रगर देखनेमें बळत भाला शोए, मगर उसका दाम बळत कम शोगा। १३२।

खाराव घोरा गर्भिणी स्रोके त्रिये कछत् द खरायी है, इस कारण खयेबी घोरेके पास रखनेके सभी निर जानेका खीक है। १३३।

TRANSPATION.

130. It is doubtful whether those diamonds that are slightly defective, are even half as valuable as flawless ones, although their defects should escane the eve.

131. The worth of those diamonds that possess many bad qualities, although all of them of a trifling nature, is not even a hundredth part of the value of a sterling diamond

132. The value of such ornaments as are set with impure diamonds is small, although the ornaments themselves may otherwise be very fine.

133. Defective diamonds are very dangerous to youthful women under conception: the contact of such gems may lead to abortion.

ष्य्यान ।

বে হীবক অতি সামান্য দোবদূষিত, এবং সেই দোব লক্ষ্যই হউক বা অলক্ষ্যই থাকুক, তাহাব মূল্য নির্দেশ হীরকের অর্দ্ধপবিমিত হয় কি না হব সন্দেহ। ১০০।

যে হীরক অনেক দোঘাখ্রিত, এবং সেই দকল দোঘ অতি সামান্তই হউক বা অধিক হউক, তাহাব মূল্য নির্দোব হীবকের শতভাগেব এক ভাগ মাত্রও হইতে পাবে না। ১৩১।

যে অনস্কারে দোষাপ্রিত হাবক সংমুক্ত থাকে, দেই অনস্কার অতি উৎক্লউ ইইনেও তাহাব মূল্য অতি সামাত হইয়া থাকে। ১০২।

ছুই হীরত গর্ভিণ দ্রীলোকদিশের প্রের্মি বহার দোনা বহু, ব্যেহেডু তাদৃশ হীরকসংশর্গে তাহাদিশের পর্ভপাতের মধিক সম্ভাবনা। ১০০।

मूचम् ।

चयमा पद्मरागेष तथा गोमेर्केन च।
वैद्र्यक्तिंटकाम्याञ्च कार्षेसाप एवग्विधेः॥ १३४॥
प्रतिक्पाणिंकुर्वान्त बज्रस्य कुणला नराः।
परीचा तेषु कर्मच्या विदङ्गिः सपरीचकेः॥ १३५॥
चारोक्षेषनगाणेसु कार्यं तेषां परीचणं।
चयते गाणसंघपात चूणतां याति चूणतां॥ १३६॥
चाराम्यं लेपयत्वा गुरीन्ने चैव परिचिपेत्।
क्षिमं याति वैवर्णय सक्ष्यमातिरोष्यते॥ १३७॥

तर्जभा।

वोडा, माणिक, गोमेद, वधुनिया, स्क्रिटक श्रीर हर तरहका काप, इस गव पीजोक जरियेस श्राच्छे कारितर लोक फरेबी शीरा बानाते हैं, इसलिये हीरा खरिदनेके गमे श्राच्छे जहरीश्रेके दारा हीरेका परीचा कर्ना मना-'चिफ हैं। १३८। १३५।

पूषा चादि चारसे, धिमनेसे खौर प्राणसे इन् तिन चीजों में शैरेकी परीचा होति है, फरेंसी होरा होनेसे चूणा चादि चारके स्वयोगसे चूर हो जायेगा, चौर धिमनेसे चौर प्राथसे जबद धिम् जायेगा, लेकिन चामल होरा होनेसे सभी घटे, बाढ़ेगा नहिं, चर्यात् समान रहेगा। १इ६।

चार चौर चिम दोनको मिलाकर चीरेयर लेप करके भूपमे मुसाकर पाणिसे घोडाले तो भुठा चीरा मयला को जायेगा, लेकिन चामल घीरा इस् ममालेके देनसे चौर भी चमकदार को लायेगा। १३७।

TRANSLATION.

134—135. Skilful lapidaries make use of iron, the ruby, the gomeda (agate?), the lapis lazuli, crystal, and glass of various colors, in fabricating false diamonds; therefore, before buying diamonds, they should be first tested by a skilful judge of precious stones.

136. There are three ways of testing a diamond; 1st, by mixing it with ashes; 2ndly, by rubbing; and, 3rdly, by whetting a weapon over it. A false diamond is reduced to powder by the first test, and wears away by the second and the third,—changes which can never be produced in real diamonds.

. 137. Again, smear a diamond with a mixture of ashes and acid, and dry tin the sun; and if it is a false diamond, it will show loss of lustre on being washed, but a real one will receive additional bril-

liancy.

অহ্বাদ।

দোষ, পদ্মরাগ, গোমেন, বৈদুর্য, ক্ষটিক এবং বিভিন্ন বর্ণের কাচ, এই দক্ল বস্তবারা স্থনিপুণ শিল্পী ব্যক্তিরা, প্র হীরকের প্রতিরূপ অর্ধাৎ কৃত্তিম হীরক প্রস্তুত করিয়া থাকে, প্র অতএব হীরক ক্রয় করিতে হইলে বক্তকুশল স্থপরীক্ষক্ষারা অগ্রে পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ ক্রয় কর্ত্ব্য। ১৩৪।১৩৫।

ক্ষারদংযোগ, ঘর্ষণ ও শাণ এই ত্রিবিধ উপায়ে হীরকের পরীকা হইয়া থাকে, হীরক কুত্রিম হইলে চূর্ণাদি কার-দায়েরোগে চূর্ণ হইয়া যায়, এবং ঘর্ষণ ও শাণ দারা কয়প্রাপ্ত হয়, কিন্ত প্রকৃত হীরক কদাচ উক্ত পরীকায় বিকৃতভাব ধাবণ তরে না ১ ১৬ ।

ফারযুক্ত: আম হীরকে লেপন করিয়া রোচ্ছে উক করত ধৌত করিলে কৃত্রিন হীরক বিবর্ণতা প্রাপ্ত হয়, কিন্ত জরু-ত্রিন হীরক পূর্ব্বাপেকা অধিকতর দীপ্রিশালী হইয়া উঠে। ১৩৭। मूचम्। ष्टिंघ्या यानि रह्मान् वे चान्ये चौचधातवः। सर्व्योणि विविधेदजं वजं तैने विविख्यते॥ ३३८॥

ग्रस्ता सर्वेरलानां गौरवाधानकारणं। वर्जे त तहैपरीत्य श्ररिभि: परिचन्तते । १३८ ।

जातिरजातिं विविद्यति जातिं विविद्यन्ति वज्रकुर्ववन्दाः । वजुं वेजुं विविद्यति नाम्येन विविद्यते वजुं । १८०॥

तर्जमा ।

जमीनपर जित्ने किसिमके रह्न चौर लोका वक्षीर खक चीज के उन तामाम चीज कीरसे कटति के, लेकिन कीरा किसी चीजसे कट नहिसका । १३८०।

घोरा कियों चील से कट निष्ठ सका । १३०० ।

रत्नपर्दी पण्डितों के सतके चतुसार भारीयन, स^त

रत्नोका उमदाका कारण की, लेकिन घीरा इसके खेलाप तारिकका सबस की, चर्चात् घीरा कट्से बढ़ा और चोजनसे कस कीना तारिकका सबस की १३२०।

चोजनमें कम होना तारिफका सबस है। १३६।

चलिम चर्चात् मांचे हीरेके जरियेमे लिनम चर्चात्
भुटा होरा कट जाता है, चीर चामल हीरा कुरुविन्र
चयवा चामल हीरों के जरियेमें कट जाता है, लेकिन चीर

किसी चीकर्से निह कटेगा। १८०। २४.

TRANSLATION.

138. The diamond can make scratches on every other hard substance, but itself is not susceptible of such impression by ever so hard a thing.

139. Ancient authorities in the science lay down heaviness as the most valuable quality of all gems, but this does not apply to diamonds; i. e., the less the weight of a diamond in proportion to its bulk, the greater is its value.

140. An unreal diamond can be scratched by a real one, as also the latter by a *Luruvinda*,* or by a real diamond, but not by anything else.

অনুবান।

পৃথিবীতে যতপ্রকার রত্ন বা লোহাদি কঠিন পদার্থ আছে, সকল বস্তুই হীরকদারা অঙ্কিত হইতে পারে, কিন্তু অন্ত কোন পদার্থ দাবাই হীরককে অঙ্কিত করিতে পারা বার না 1 ১০৮ 1

রহুতত্ত্বিৎ পণ্ডিতদিগের মতে গুরুতাই সকল রত্নের গোববের কাবণ, কিন্ত হারকে তদ্বৈপরীত্যই অধিক প্রশং-সনীয অর্থাৎ হারক আকারে রহৎ হইয়া পরিমাণে যত লমু হইবে, ততই তাহার গোরব রৃদ্ধি হইবে। ১১১।

অকৃত্রিম হীরকষারা ইত্রিম হীবক অন্ধিত হয়, এবং প্রকৃত হীরক কুরুবিন্দ বা অর্ব্রিম হীবকদাবাই অন্ধিত হইয়া থাকে, তদ্ভিম অন্ত কোন বস্তবারাই অন্ধিত হইতে পারে না। ১৪০।

^{*} A kind of ruby.

म्चम्।

वजाणि स्कामणयो येच केचन जातय।
न तिपा प्रतिवद्वाना भा भवत्यू ज्वेगामिनी। १८९॥
वन्यू त्यं ब्राह्मणे प्रोकं पादैनानेन वाज ने।
चनेनेव क्रमेणैव मणिमूच्यं विधीयते। १८५॥
चतुर्विधिमदं वज् यहकं जातिभेदत।
चतुर्विधिनृपतिभिधार्यमाणमनुक्रमात्।
चतुर्विधिनृपतिभिधार्यमाणमनुक्रमात्।
चतुर्विधीनृपतिभिधार्यमाणमनुक्रमात्।

सरजमा ।

शीरा, मोति, माणिक वहनीरह स्वार बन्द ज डासी शोर, तो उस्की किरण उपरको ना आवेगो। १८१। बाह्मण शीरेको जो दाम शोगा, स्विवर्ण शीरेका सारभाना दाम घट आवेगा, वैस्ववर्ण शीरेका स्वाधा दाम स्वीर ऋद्वर्ण शीरेका चीवाइ दाम शोगा। १८४।

रान आर उद्गरेश कारका चावाद दाम काना १००१ माञ्चाणवर्ण कीरा नाञ्चणको, चित्रवर्ण कीरा छिनको वैस्थनर्ण कीरा वैस्थको कीर अन्द्रवर्ण कीरा अन्द्रको पहेरना चाकिए, उसके खेलाप निमारी, रुद्धा, ग्रम, खीस्का

सवस की १४३।

TRANSLATION.

- 141. When a diamond, a pearl, &c, set on gold or any other precious metal, look downward, their rays do not radiate upwards
- 142. The price of a Kshetriya diamond is onefourth, that of a Vaisya diamond one half, and that of a Sudra diamond three-fourth less than the price of a diamond of the Brahmin class.
- 143. If a king wearing a diamond belongs to the same caste that it belongs to, the circumstance is productive of good; the reverse brings about disease and grief

অমুবাদ।

হীরক, মূক্তা এবং অপবাপব যে কোন মণি স্থবর্ণাদি-দ্বাবা প্রতিবদ্ধ হইলে অর্থাৎ তাহাদেব নিম্নবদ্ধ করিলে তাহাদিগের কিরণ কথনই উর্জ্জগামী হয় না। ১৪১।

ল্লন্নৰ্থ হীবকের যে মূল্য হইতে পারে, ক্ষত্রিয়ৰণ হীরকেব তাহাব একপাদ নূন, বৈশ্ববৰ্ণ হীরকেব ৰিপাদ নূন এবং শুদ্রবৰ্ণ হীবকে ত্রিপাদ নূন মূল্য হইষা থাকে। ১৪২।

ভ্রাহ্মণাদি চাবি স্থাতীয় হীবক ভ্রাহ্মণাদি চাবি স্থাতীয় মূপভিকর্তৃক ধৃত ইইলে শুভ ফল প্রসব করে, ত্রিপবীতো বোগ, শোকাদি ভ্যেব নিদান হয়। ১৪৩।

ग्रथ वज्जमार्णविधिः।

मृषम्।

धगुडं कुरते वज्ञं कुष्टं पार्व व्यवां तथा। पार्खुता पदुरत्वञ्च तसात् चंगोध मारवेत्। १८८॥ गृषीलाज्ञि गुमे वज्ञं व्याघ्रीकन्दोदरे चिपेत्। माषिपीविष्ठया विष्ठा कारिपामनी विपाचयेत्॥ १८५॥

विवामाया चतुर्यामं यासिन्यन्तेऽश्वमूचके। येचयेत्पाचयेदेवं सप्तराचेण गुध्यते॥१८६॥

हीरेका सारनेका उपाय।

तर्जभा।

अगुद घीरा श्रीषधमे व्यवहार करनेचे कुछ, पार्वका वेदना, पाय्डुरोग श्रीर खञ्चता घोए, इसविये पहिले घोरेको संगोधन करके पीक्ष श्रीषधमे व्यवहार करना

चाहिए'। १४८। युम दिनमें कीरेको करहीकारीरसमें मिलाकर भहसका विष्ठा सेव देवर सुंटेका चामसे दस्य करना मनासिक

है। १८५। नामाम रात यही प्रकारसे द्रस्थकर फ्रजोरसे घोर्ड का मूनमें भिजाकर काममें द्रस्थ करा चिंचत ही, यही प्रकारणे सात दिन द्रस्थ करनेने होरा सशोधित हो लागा। १८६।

THE PROCESS OF REFINING A DIAMOND.

TRANSLATION.

144 Impure diamonds when used in medicine lead to leprosy, pleurisy, jaundice and lameness. It is therefore highly advisable to refine a diamond before using it medicinally.

145. The process is on some auspicious day to dip a diamond in the juice of kantakári* and then to burn it in a fire made by dried pieces of the dung

of cow and buffalo

146. The burning should be carried on for a whole night; in the morning the diamond should be put under horse's urine, and again burnt By this process of burning being continued for seven days togother, the diamond will be refined.

হীরকমারণবিধি।

षञ्दोष ।

অশুদ্ধ হীবক ঔষধে ব্যবহাব কবিলে ভদ্ধাবা কূষ্ঠ,পার্য-বেদনা, পাণ্ডুবোগ ও পঙ্গুতা জন্মে, অতএব অগ্রে হীরক সংশোধন করিয়া পশ্চাৎ ঔষধে ব্যবহাব কবা কর্ত্ব্য'।>৪৪।

শুভ দিনে হীবককে কণ্টীকাবীরসে ডুবাইয়া মহিষের বিষ্ঠালিগু কবিয়া ঘুঁটেব ছাওণে পুডাইবে। ১৪৫।

সমন্ত বাত্তি উক্তপ্রকাবে দগ্ধ কবিবা প্রাতঃকালে অর্থ মূত্রে ভিন্নাইয়া পুনরায় অগ্নিতে দগ্ধ কবিবে, এই ভাবে সাত দিন দগ্ধ করিলে হীরক শুদ্ধ হইবে। ১৪৬।

[·] Solanum Jaquira.

मुचम्।

ष्टिद्रुसैन्धवसंद्रके चिपेत् काये कुलत्यजे। तप्तं तप्तं पुनवेषाभवेद्वसा चिपप्तथा ॥ १८७ ॥ बाद्य प्रिच्या वर्जं वीच्यं वर्षं मीखं करोति च। मेवितं सर्व्यरोगप्तं मृतं वर्ज्ञं न संगयः॥ १८८ ॥ व्याघीकन्द्रपे चित्रुग सप्तथा सुटिते पचेत्। सर्वद्रुकं कास्रजे पाचे निरुद्धा स्वापयेत् सुधी ॥१८८॥

तर्जमा ।

हिल और सैन्धन नेमकसंयुक्त मायकलाइका कायमे भिजाकर एकिय बार तप्त करनेसे हीरा भस्स हीर जागा। १४७।

भंगोधित घीरा घट्मीका चायु, बदनका पुष्टि, बतन भोष्ये, रज्ञ चौर सुख पुङ्कि ससुदायका द्विह चौर वर्ळे-प्रकार विमारीका शान्ति करेगा। १४८८।

पश्चित शिरेको कण्डीकारी गाइक रसमे दुवाकर सात वार प्रठ पाकमे (एक महिके कटोरिसे को चील भस्त करता शो, यह रखकर दुसेरे महिके कटोरिसे वन्द करके माहि चीर गोवर मिलाकर सुम तेप करके चागमे ज्वलानेकी प्रटपाक कहते हैं) पाक करना चाहिए, बाद उस्के एक कामेके वर्णनेने एक मेडक रखना चाहिए। १४८।

TRANSLATION.

147. Then immerse it in a gruel made of kaldua.* into which assafeetida and saindhava saltt also enter as ingredients, and lastly heat it repeatedly twenty and one times. By this means, the diamond will be reduced to ashes.

148. The imbibition of a purified diamond conduces to longivity, general development of the body. strength, energy, beauty of complexion and happi-

ness, and effects cure from every distemper.

149-150. The process of burning a diamond is as follows:—Put the diamond in the juice of kantakári, place it in an earthen-pot, placing another over it, smear the two with hard clay and cow-dung, then burn the whole; this should be repeated seven times. Then steep the

অহ্বাদ।

হিন্ন ও সৈদ্ধবলবণসংযুক্ত কলাযের কাথে ভিজাইযা একবিংশতিবার পুনঃ পুনঃ তপ্ত করিলে হীরক ভস্মবৎ হইয়া বাইবে। ১৪৭।

সংশোধিত হীরকদেবনে আয়ু, শবীবের পুষ্টি, বল, वीतक, दर्भ ७ इथ ७३ ममूनारपत दिन्न अदः मर्द्यकार

রোগের শান্তি হয়। ১৪৮।

প্রথমতঃ হীরক্তে কণ্টীকারীরসে ডুবাইয়া সাতবার পুট-পাকে (এক খানি খুৱী বা তদাকার কোন মূৎপাত্তে কোন বস্তু রাধিয়া অপর একথানি তাহাতে নুক্তাকারে আচ্ছাদন ক্রিয়া আঠালমাটী ও গোম্য ইত্যাদিব লেপ দিয়া সেই পাত্র অমিতে দগ্ধ করার নাম পুটপাক) পাক করিতে হয়, পৰে একখানি কাংস্থপাত্তে একটা মণ্ডুক ধবিয়া রাখিবে । ১৪৯।

Various leguminous seeds, chiefly of the order Phaseolus. Williams.
 † A kind of rock salt found in the country of the Sandku (Indus) Ibid

मुख्य ।

स भीतो भूचयेतच तन्मूचे बन्नमावपेत्। तप्तं तप्तस्य बद्धधा बन्नूसिंगं मृतिभवेत्। १५०। रसे यच भवेहन्ं रसः सीऽमृत उच्यते। भस्तीभावगतं युक्तरा बन्नुबत् कुरुते तन्ं। १५९।

तरजमा ।

वह मेटक खीक कारके उस् वर्त्तनमें मूत देगा, बाद उस्कें उसी मूतमें वह ज्वला इत्या हीरा मिगोना होगा, चौर केर चागमें ज्वलान होगा, इत तरहते वह हीरा खाक चुर्यात मुद्या हो जावेगा। १५०।

शीरके संयोगसे जो दाश्योया तैयार कि जाती है, वह धनुतके समान है, इस्विये बशी दाश्योया सानेसे बदन शीरके समान मजुत शेएगा। १५१।

प्रति इरिका वयान।

TRANSLATION

diamond in frog's urine held in a pot composed of zine and copper, and heat it over and over in fire. The diamond will then have been entirely burnt, and can be reduced to powder.

151 Those medicines into the composition of which the diamond dust enters are like ambrosia, and the imbibition of these imparts adamantine strength to the limbs.

षञ्जाम ।

মধুক ভীত হইষাদেইপাত্রে মৃত্র পবিত্যাগ কবিবে, সেই মৃত্রে পূর্ব্বপুটপাকনগ্ধ হীবক উদ্লিবিত মধুকমৃত্রে ভিন্না ইযা পুনঃ পুনঃ অগ্রিব উত্তাপ দিলেই হীবক দগ্ধ প্রস্তর বং চুর্বাকাবে পবিণত হইবে। ১৫০।

হীরকভন্মদংযোগে যে দকল ঔষধ প্রস্তুত হয়, তৎসমু দায অনুভদদৃশ, দেই ঔষধ দেবনে দেহ বজের ফায় দুঢ় হয়। ১৫১।

ইতি হীরহ।

THE DIAMOND.

Its properties.

HE Diamond might appropriately be called the king of gems. Whether, in respect to beauty, lustre, transparency, hardness or density, there is no other stone yet discovered that can surpass it. In fact it is the hardest of all substances-it resists the action of the file and can only be cut by its own dust. It is known in Sanscrit as the bajra and in the West, was called, in times of old, the Adamant, both the terms signifying hardness. The origin of this precious stone is lost in the mist of antiquity. The imagination of poets has supplied the data which history has failed to afford It is said that "Diamond was the name of a beauti ful youth of the Island of Creta, one of the attendants of the infant Jupiter, in his cradle. The God who placed, among the celestial bodies, the nymphs and goat that had reared him, could not leave this youth subject to the ills 'that flesh is heir to' Diamond was transformed into the hardest and most brilliant substance in nature"

All the opinions that have been collected as to the origin and formation of the Diamond can be placed under two heads, (a) that it is formed immediately from carbon or carbonic acid by the action of heat: (b) that it is formed from the gradual decomposition of vegetable matter. Its speS.

cific gravity is about 3.5; its cleavage, very perfect; its refraction, simple; it is transparent and translucent; infusible, and unassailable by acid. Doubts were entertained as to its combustibility, but experiments made by scientific men, on various occasions, have led to the discovery of the fact that it was only by entirely shutting out the air and therefore the oxygen with which the carbon combines, that the Diamond could be preserved from burning; whereas, by simply letting in the air of which oxygen is a constituent part, it would burn just as well as common coal. The temperature must be very high to burn a whole Diamond. Small Diamonds and Diamond-dusts can be burnt up in a much lower degree of temperature. The crystalline form of the Diamond is either octrahedron (as found in India) or rhombic dodecahedron (as found in Brazil). Its magnifying power being greater than that of glass, it is sometimes used for microscopic purposes. It possesses, in addition to its strong refracting properties, the power of reflecting the coloured rays of light. It becomes phosphorescent, on its being exposed to sunshine and remains so until it is removed or even when covered with cloth or leather or paper. It is known to be a non-conductor of electricity. but by friction, however, both in the rough and polished state, it becomes positively electric, though only for a short time.

Where found.

THE ancient authorities seemed to agree in considering India to be the place from which Diamond was first supplied to them, but none of them could point out the particular locality where it was first discovered. Pliny says very vaguely that "the gem-producing rivers are the Acesines (Jenaub) and the Ganges." Dronysius Periegetes enumerates the Diamond amongst the numerous gems picked up in the river-beds by the natives of India, as anciently understood, lying to the east of Mount Paropanisus and Ariana. All that Mahomed Ben Mansur knew of the Indian Diamond mines was the fable, that "in the eastern part of India, there is a deep valley inhabited by serpents, where the Diamond is produced, but some believe it to be gotten in the mines of the Jacut (Ruby)."

Amongst the many fables describing the mode in which Diamond could be obtained, is one which says that when Alexander visited the mountain Zulmeah (called by others, Sarandip) where the inaccessible valley of Diamonds is situated, he directed pieces of flesh to be thrown in; vultures picked these up with the precious stones attached to them and dropped them on various parts of the earth, in the course of their flight. Marco Polo, who travelled in India, in the beginning of 13th century, gives accounts of the manner in which Diamonds were then obtained—which agree materially with the tale given abore. The first auther-

146

the minds of many of the impression that Golconda produces Diamonds Golconda proper has no mines, nor any, in its immediate vicinity The stones were found at the base of the Neela mulla mountains in the neighbourhood of the Kistna and Pomar Rivers, they were then brought to Golconda in a rough state, and there cut and polished This place becoming the principal mart it was commonly supposed that the gems were found close by The Fort at Golconda was the store house of the great Diamonds in the Nawab's domi-The discovery of the mine, which has made Golconda so fimous is attributed to a poor shepherd who came across what he thought a pret ty pebble, in the course of tending his flocks This he bartered to another for a little rice After passing through several hands, it fell, at last, into those of a merchant who at once I new what it was and discovered the mine, after considerable trouble in searching. It has been mentioned before that Tavernier visited the mines of Raolconda This place comes within the province of this group Its position is towards the middle tributary of the There are other mines to the eastwart, on the lower Kistna The most celebrated amongst these, is the one called 'Coloor by the Persians, an I "Game by the natives, situated about 15 miles north west of Masulipatam. This was also visited by Tavernier and was described by him as being tl " birth place of the " Great Mogul, ' which was said to have weighed 787½ carats in its rough state and 297 after it was cut.

4th—The Sumbulpore group, north of the Godavery, on the central tributary of the Mahanuddy. This Diamond district extends to the immediate vicinity of Sumbulpore only and between the Rivers Mahanuddy and Brahmine. In the year 1818, the year in which Sumbulpore was annexed to the British territories, a Diamond was found here which weighed \$1 grains, and although of only the third quality it was said to have been sold for Rs. 5,000.

5th.—The Panna group in Bundeleund, between the Rivers Sonar and Sone. The Diamond beds in this group lie near Bengal, Behar and Allahabad on the south bank of the Ganges. The most productive Diamond mines in this group were, in 1860, at the village of Sukariah, situated about 20 miles from Panna. Four kinds of Diamonds were found here; 1st Motechal, clear and brilliant; 2nd Manik, verging in color to green; 3rd Panna, with a faint orange tunt; 1th Banspul, dark colored.

There are also Diamond mines in Siberia, Brazil, South Africa, Australia, Borneo, Sumatra, Java, and the Celebes Islands. It had been the theory of Pliny and other ancient naturalists that Diamonds were generally to be found in the gold beds, and this has most remarkably been borne out by facts. Upwards of 50 Diamonds were said to have been found in the gold mine of Adolph, (Siberia), near the Ural Mountains (1830 to 1833)

The discovery of the Diamond mines of Brazil which occured in 1730, was, like that of the Indian mines, the result of chance Some miners search ing for gold in the districts of Serro do Frio, came across certain pebbles of peculiar hue and lustre, which, when carried home, were given to children and used as counters in card play They fell soon after into the hands of an officer who had spent some years at Goa in the East Indies Struck with their symmetry and weight, he caused some of these stones to be sent to Lisbon, the Dutch Consul at which place, having examined them carefully, pronounced them to be genuine Diamonds The Diamond district of Serro do Prio is about 60 miles in length and 27 in breadth. Diamonds have also been found in the remote provinces of Goyazes and Matto Grosso At one time the pre judice against the Biazilian stones was so strong that the merchants were obliged to export them to India and thence to Europe in order that they The places might pass for Indian Diamonds which yielded the greatest quantity of Diamonds were Diamantina (in the province of Minas Geraes) Bahua (the old capital of Brazil,) and the beddings in the Paraguay and its many tributaries

In 1810, M Hericart de Thur, announced to the Academie des Sciences that Diamonds had been discovered in the River Guinel, in the Algerian pro vince of Constantine, Africa,—mingled with gold dust brought down by the stream One specimen weighing 3 carats was bought for the Ecole des Mines, Paris; another of 5 grains for the Musée de L'Histoir Naturelle, (Museum of Natural History) and the 3rd, by the Marquis de Drée. The discovery of the Cape Diamonds is connected with a story very much the same as that of Diamonds of other places Amongst the number of pebbles used as playthings by a child of one Mr Jacob (a Dutch farmer who had settled near Hope Town), was one pretty stone whose brightness attracted the attention of the farmer's wife. This was after wards shewn by Mrs. Jacob to a neighbour, named Schalk Van Nickerk, who requested Mr. J. O'Reilly, (a hunter and trader, then passing through the interior of the country,) to ascertain its nature. This pebble being sent through Mr Boyes to his friend Dr G. W. Atherstone, of Graham's Town, that excellent mineralogist boldly declared it to be a real Diamond This was in March 1867, when the Universal Exhibition in Paris was about to open The first opportunity was taken to present it at the Exhibition, where it remained for the whole period it was open and was, at its close, purchased by Sir Philip Wodehouse, then Governor of the Colony, (and afterwards the Governor of Bombay,) for the sum of Rs. 5,000. The weight of this Diamond was known to be 21-2 carats. Several other fields have since been discovered, of which some lie in the Colony of Griqualand, west, which has come under British rule since 1871.

ž 1.

Australia was generally known to be the land of gold, but now it bids fair to be the land of Dia monds too New South Wales was the only place ın Australia which had yielded a sufficient quanti ty of Diamond, such as to invite exploration In a certain report written in 1851 Mr E H Har graves and the Revd W B Clarke referred to some specimens of gold and to a number of gems including what they called rather vaguely, "a small one of the Diamond kind ' which was found in Reedy Creek near Bathurst But it was chief ly the Revd gentleman named above who first drew public attention to the Diamonds of New South Wales Four specimens were brought to him from the Macquaire River near Sutton's Bur in September 1859 and a fifth from Burrendong in October. In the mean time he had collected Diamonds from Pyramul and Calabash Creeks It was in July 1869 that a company called that of the Australian Diamond Miner's began in right earnest the work of hunting after Diamonds A few years ago a Diamond field has been opened up near Binjers in the New South Wales This town is situated on the Horton (popularly known as the Big River) and is about 100 miles north of Syd ney In 1852 some Diamonds were discovered near Lehuer, about 20 miles south east of Ade laide In 1862 the discovery of a Diamond in the Ovens district (in Victoria) was announced by Mr George Foord It was a transparent Jellow crystal, with perfect edges, weighing about 2 grains.

The first Australian Diamond ever brought to England was presented by Sir Thomas Mitchell to the Museum of Practical Geology in Jermyn Street. This small stone weighs $\frac{3}{4}$ of a carat and was found near Ophir, west of Bathurst, New South Wales.

The Diamond mines of Borneo are all on the west side of the mountains known as the Ratoos Range.

About the year 1840, some Diamond beds were discovered in the district of Dolodoulá in the Island of Sumatra.

COLORED DIAMONDS.

The Hindus divide Diamonds into four classes, according to their castes. Those that are of clear and pure water belong to the Brahmana class; those that are clear and are of the color of honey, to the Kshetriya; the cream-colored, to the Vaisya and the greyish-white, to the Sudra. Diamonds of several colors have been found, principal among which are the Blue, Red, Green, Olive, Black, Firecolored and the Yellow.

The Blue Diamond is a thing of great rarity and, consequently, of very great value. The first Blue Diamond on record was the one bought by Tavernier

in India, in 1642, and sold to Louis XIV. It weighed in the rough, 112½ carats and $67\frac{1}{8}$, when cut and kept in the French Regalia. In 1792, it was abstracted from the Garde-Meuble, where it was kept with the rest of the French Regalia, after they had been seized. All trace of this stone was lost since that period till 1830 when a Blue Brilliant was found in the possession of one Mr. Daniel Eliason, which was perfectly identical with the lost stone in quality and color. It was afterwards traced to Mr. Henry Thomas Hope and was then known as the Hope Diamond, weighing 441 carats. This difference in weight with the original stone is thought, by some conjecturers, to have been due to reduction by cleavage. The smaller part weighing 6 or 7 carats (most assuredly the cleavage of the larger one) turned up in the market in April, 1874. It was purchased in Geneva at the sale of the late Duke of Brunswick's jewels and now passes by the name of the "Blue Drop Diamond."

The only specimen of a red Diamond known to English jewellers is the one bought by Mr. Joseph Halphen of Paris, from a London firm.

A beautiful green stone of 80 grains is said to have fetched Rs. 360, at the sale of Marquis do Drée. The King of Saxony is in possession of a green Diamond which forms the button to his state hat. The finest specimen of a Diamond of this color was obtained for Rs. 2,000, about 20 years ago.

It was afterwards sold for Rs 3,000 It subsequently fell into the hands of a jeweller in Bond Street, who sold it to an American gentleman for Rs 6,000 Mr Charles Drayson is its present owner and is known to be quite unwilling to part with it

Black Diamonds of very great beauty sometimes come from Borneo They are so remarkably hard that the ordinary Diamond dust cannot make the slightest impression on them They can be cut or polished by using their own dust A coul black Diamond was exhibited at the World's Fair of 1851, by Mr Joseph Meyer It weighed 350 carats A black Diamond was seen about nine years ago, at Charles Nephews & Co., Jewellers, of Calcutta

The yellow Diamonds are the most common of

Mode of Cutting-Indian and European

The Diamond, as mentioned before, can only be cut by itself in the form of a fine powder, which is generally prepared from defective stones and from the refuse in cleaving and cutting. This being put into a mortar of hardened steel is beaten until it is fine enough for use. Reference to the fact that Diamond is made to cut itself, is made in the touching verses composed by Charles I, on the night after his condemnation.

With mine own power my majesty il ey wound, In the king's name the king himself's nucrowned, So doth the dust destroy the Diamond

The art of Diamond cutting seems to have had its origin in India and that, at a very early period Indirect evidences might be adduced to support this fact Garcias ab Horto, (writing in 1565,) remarks that the Indians preferred the Diamonds of the "old rock," particularly those in their natural state,. (which they called "Naifes,") to those that were polished by human art Tavernier in visiting the Roalconda mines in 1665, found a large number of Diamond cutters at work there Each of them was furnished with a wheel of steel about the size of a dinner plate. They worked on only one stone at a time but did so with great rapidity The principal consideration which guided the Indians in cutting Diamond was that it should lose as little of its size as possible and they would rather leave it in an irregular shape than diminish it to any great extent-a practice, in direct opposition to the system now adopted in Europe

The discovery of the art of cutting and polishing Diamond by means of its own dust, is attributed to Louis de Berquem, of Bruges, who is known to have constructed, in 1476, a polishing wheel in which Diamond dust was used instead of Corundum, which the Chinese and Hindus had hitherto employed. But there are several instances to prove that Diamond cutting was known in Europe, previous to this time. The clasp of the royal cloak of King Churlemagne was set with Diamonds. In the year 1290, a corporate body of gem polishers

and cutters was formed in Paris; and in 1373, there were Diamond-polishers in Nurnberg. 1434, Guttenberg learned gem-cutting and polishing of Andreas Drytzehen of Strasbourg. Amongst the jewels of Louis, Duke of Anjou, exhibited in the years 1360-1368, were several Diamonds, one of which was cut into the shape of a shield; another, in the form of a round mirror; a third, in that of a lozenge, &c. &c. &c Of the pupils of Louis de Berquem, some went to Antwerp, some to Amsterdam, and others to Paris. The Diamondcutting made considerable progress in this last place, under the patronage of Cardinal Mazarin. He had ordered twelve Diamonds of the French Crown to be newly cut and these were henceforward known as the "twelve Mazarins" At the present time, Diamond-cutting is a flourishing trade in Holland and is chiefly in the hands of the Jewish inhabitants Diamonds are now cut in a variety of forms, the principal among which are the Brilliant, Rose, Table, and the Lasque.

The Brilliant form is said to be the crowning invention in the art of Diamond-cutting. It is the form most esteemed, as it exhibits the peculiar lustre of the stone to the best advantage. But in this there is a larger waste of the material than in

[•] After they had disappeared after the Revolution of 1839, no one knew what became of them. At thereone betwelfal of King Alphonos with Princess Mercedes, an Amsterdam et came to Marind with eview Durmonds which he said to commissioned to sell by an owner who washed has name to be applied to the commissioned to sell by an owner who washed has name to be applied to the completed suthorities have, upon careful examination, produced them to be the long lost Manarus.

any other mode This style of cutting was introduced by Vincenzio Peruzzi (or Vincente Perggi,) of Venice, in the latter end of the 17th century "The Brilliant is formed of two truncated pyramids by a common base, the upper pyramid being much more deeply truncated than the lower, the upper side of the stone presenting a table of 32 facets inclined under different angles, and the underside, 25 facet The correspondence between the upper and lower facets is arranged so as to multiply the reflection and refraction' Some explanation is necessary to render the technical names of the several parts of a cut Diamond intelligible to the lay reader "The plane surface at the top is called the table, the bottom plane is called the culet or culette, the junction of the upper truncated pyramid with the lower is the girdle, and the lower pointed portion is called the pavilion The facets are small triangular spaces or planes" The Brilli ant is said to be single, double or old English cut (otherwise called the star single cut), according to the number of facets The English cutters make the girdle rather sharp but the Dutch make it broader Brillonéts are those stones which are cut as Brilliants on the surface but have neither culette nor girdle These are very rare

The "Rose" cut has been in use since 1520 and resembles an opening rose bud It is formed by covering the rounded surface of the stone with equilateral triangles, placed base to base, making

the figure of a rhomb. The number of facets together with their position determines the different names of the Rose. Thus 24 facets make a Dutch Rose; the same number, but less raised, a Brilliant Rose, 36 facets, a Rose Recoupée &c. The circular stones are hest suited for "Rose" cutting

The Table cut is made of those stones which, with considerable breadth, are of very trifling depth. It is produced by a series of diminishing four-sided planes below the girdle.

Losques are formed from flat or veiny Diamonds and are said to be manufactured in India. The Indian cut has according to some, an upper part, lower part, and girdle Its usual form is that of a single-cut Brilliant But as the effects produced are not of much consequence, the stones are generally re-cut

The point-cut was well known to Kentman who wrote in 1562. Some precious stones may either be cut as four-sided pyramids, or are so formed by-polishing the faces of the octahedron and making them exactly true and regular. This style is only found in old ornaments

Engraving.

According to Blum, the discovery of the art of engraving the Diamond is assigned to Ambrosius Caradosso, a Milances, and engraver to the Mint of Pope Julius II He is said, in the year 1500, to have executed upon a Diamond the figure of a Father of the church. But Paolo Morigia gives the credit of the discovery to Trezzo, the famous cameo artist of Milan and asserts that his first attempt was the Coat of Arms of the Emperor Charles V. Clement Bira go, a pupil of his, is known to have engraved upon a Diamond a portrait of Don Carlos, intended as a betrothal present to Anna, the daughter of the Emperor Maximilian II He is also said to have engraved on Diamond the Spanish Arms as a signet for the same prince One Jacobus Thronus (believed to be a Hollander) engraved on a Diamond, the Arms of Mary, Queen of Scots Among the Hope precious stones, there were several engraved Diamonds One of these had the bust of the Emperor Leopold I on a large Table Diamond Costanzi, who flourish ed at Rome in the beginning of the 18th century, is known to have executed several engravings on Diamonds, prominently amongst them, a Lega and the heads of Antonius and Nero

In the collection of Her Most Gracious Majesty, our Empress, is preserved the signet ring of Charles II, when he was the Prince of Wales, the device of which is the ostrich plumes between the letters C and P, very neatly cut upon a large yellow Diamond, a table $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8}$ inch in dimensions, quantify fashioned into a heater-shaped seven-sided shield Louis Siries, gold smith to Louis XV, is also said to have done some engravings, one of which is reported to be a very minute head of Julia, (daughter

of Titus,) executed upon the upper table of a regularly cut Brilliant,

The price of Diamond Its flaws and defects, mode of testing

THE price of Diamond, as of any other com modity, depends entirely upon the law of supply and demand It is therefore well nigh impossible to fix a price which would be a safe guide to the intending purchaser, for all times. Approximate pieces can, however, be given, when the market is supposed to be normal. In no other object of commerce, there are so many faults and imitations, of which the inexperienced should beware, as in Diamonds and other precious stones The value depends materially upon the degree of perfection in which the articles are found when offered for sale Amongst the most frequent faults are (1) feathers, re, little rents or fissures in the inside of the stone (2) clouds, ie, gray, brown, and white specks, which look very much like clouds give great deal of trouble when working the stone (3) sands, or little seed like bodies within the stone, of white, brown and red color These are also called dusts, when very fine and found in large number in a stone

A Diamond, wanted to be sold to the best advantage, must be perfectly free from the faintest tinge of color of any sort, must have no flaws, or specks or fissures in any part; must be bright and lively and free from what is technically called "milk" or "salt," which are semi-opaque imperfections in the body of the stone. To ascertain if any of the above flaws exists, the stone should be breathed on until its lustre is temporarily destroyed and then the imperfections will be apparent. The stone must also be well-proportioned and properly cut. Even to the least experienced, the lustre of a Diamond when cut is sufficient to establish its identity. Some colorless Topazes, Emeralds, Sapphires and the white Zircon have sometimes been passed off as Diamonds. If the surface of the stone be the least scratched by the action of a fine file, it is not a Diamond The rays of the sun easily pass through other gems, but in the Diamond they are refracted by the surface, which causes the superior brilliancy. According to Mr. Milburn, if the coating of a rough Diamond be smooth and bright with a little tinge of green in it, it is not bad; but if there is a tincture of yellow with the green, it is a soft, greasy stone, and will turn out bad. Though the specific weight of the Diamond is nearly the same as that of the Topaz, the one can be distinguished from the other by its electrical properties The Topaz retains its electric powers several hours after it has been developed by friction, whereas the Diamond loses it in the course of half an hour. The Diamond can, by its weight, be distinguished from colorless Corundums, whose weight exceeds that of the former in the proportion of 8 to 7.

The jewellers of old used the "tincture" test to distinguish the real Diamond from the spurious, of which so many were then current, as the white Sapphire, the Citrine Beryl, and the Crystal cut into a pyramid. This tincture was a varnish made of ivory-black and mastich applied to the back of the stone, which, if it was a real Diamond, became all the more brilliant on account of this back ground; if any other gem, it became dull and lustreless showing the black through its substance. Some used the oil exuding from a roasted grain of wheat darkened with ivory-black, others backed the stone with a bit of black silk. The "Novas Minas" white Topaz of Brazil, known there as the "Slave's Diamond," is now the only stone which has any chance of being passed off for a Diamond. Though it is very hard and brilliant, it very much lacks "the Adamantine lustre and iridescence."

The terms, first water, second water, mean only first and second quality. Perfect Diamonds should be as clear as drops of the purest water; and they are of the second and third water, according to the degree of clearness in them, until decidedly yellow or brown, when they come under the category of colored stones. These colored Diamonds, on score of their rarity, are sold at fancy price.

Diamonds are generally valued per carats and it is necessary to explain the term. The word is

probably derived from the name of a bean, the fruit of a kind of Erythina, which grows in Africa The tree which gives this fruit is termed by the natives "Kuara" or the sun. These fruits, when dried, were afterwards imported into India and here used for weighing the Diamond. They have now been universally adopted.

4 grains make 1 carat 6 carats or 24 grains ... 1 penny-weight.

151½ carats ... 1 ounce troy

But a carat is not of the same weight in all

countries; for instance, in England it is equal to 205,4090 milligrams; in France, 205,5000; in Borneo, 105,000, in Madras, 207,3533, &c &c &c The following is an approximate price list as

The following is an approximate price list as given by standard authorities

Diamonds below 2 grains

OI one carat ... £20 to £23 " "
But the valuing of rough Damonds is not to be
made according to the above standard. The form
and proportion of the crystal must first be taken into
consideration, for, on these only, the loss of weight
in cutting chiefly depends Then, care must also
be taken to distinguish the degrees of color and

the purity of the specimen. The best forms to select would be the octrahedral and the rhombododecahedral. In valuing large rough Diamonds and specially those that came from the Cape, the fact should always be remembered that tints of color may be brought out in the cutting of a stone, which do not at all appear in its rough state; perfect polish and the power of reflection natural to the stone intensify any tint of yellow existing in it.

The Supernatural and Medicinal Properties attributed to the Dramond.

THE mythology of all nations in the world attributes supernatural influence to almost every thing in nature. Trees and fields, temples and stones, mountains and rivers,-all were supposed to be the abode of good or evil spirits. Anselm Bocce De Boot, physician to the Emperor Redelph and Maximilian II, wrote in 1664, as follows: "From their burity, beauty, and brilliancy, it is most probable, tems were selected as receptacles for good spirits, even as filthy, stinking and frightful places are usually the abodes chosen for evil and unclean spirits." Diamond being of all stones, the purest, hardest and most brilliant, it was naturally considered to be the most powerful in spiritual influence. It was consecrated to all that was holy and heavenly. and was known to have been a powerful charm, and, when under the influence of the planet Mars.

productive of great success Tor many centuries past it was thought to be a most potent talisman against poison, pestilence, witchery, insanity, evil spirits and night mare It was esteemed a safe guard to virtue Though it had the power of preventing evils, as above stated, on external application, (i e if worn,) it had a quite disastrous effect, if taken internally Diamond dust had such a fa tal poisonous property that nothing could save the unfortunate who swallowed it The Diamond was also supposed to bestow victory, fortitude and strength of mind It softened wrath and strengthened wedded love, hence it was called the stone of re conciliation It was also an infallible test of con jugal fidelity A Diamond placed under the pillow of a married lady, without her knowledge, would make her reveal, during sleep, any secrets of her life, which she might have to conceal from her husband Though it was believed to be in combustible, its lustre and other properties were supposed to be affected by heat Hence, perhaps, the ancient practice of taking Diamond rings off the finger at bedtime, and putting them in a cup of cold water or on a marble, or some other cool surface To the Ancients, Diamond represented mexorable justice and immutable fate Hence the judges of the Hades were described as having hearts and bosoms of Adamant The clouds which covered Destiny were also described as being of Adamant To the moderns, it is a symbol of innocence. constancy, faith, strength, &c., &c. A gem. (supposed to have been a Diamond), worn in the girdle, by Aaron, the High Priest, had, according to a Jewish legend, marvellous properties. It would become dark and dim, if brought into contact with a man, actually guilty: if the accused was really innocent, it would shine on with increased brilliancy. If the sins of the Hebrews were to be punished with death, the stone would put on a bloody color. But the most absurd and unique virtue, attributed to Diamond-and to no other gem-was the power of multiplying its species. Bœtius De Boot makes serious mention of a lady who possessed two hereditary Diamonds, which produced several others and thus left a generation.

CELEBRATED DIAMONDS.

The Koh-i-noor.

PERHAPS there is no other jewel in the world which is so much renowned for its antiquity and for the interesting romance with which it is connected as the Koh.i.noor. It is so old that some attribute its ownership to Karna, the king of Anga, who first discovered it near Masulipatam, in the bed of the Godavery, 5000 years ago. Other traditions speak of Rajah Vikramaditya of Onjien (56 B. C.), as having been the happy possessor of it. All subsequent trace of this stone was lost till it was taken

from the king of Malwa by Ala-ooddeen, in 1304 After the defeat of the Pathans by the Moguls in 1526, it remained in possession of the latter till the invasion of Nadir Shah When Nadir Shah came to take possession of Delhi, Mahamood Shah, the then Emperor, had to give up every valuable thing in his treasury, except this jewel, which he used to keep concealed in his turban A woman in the harem betrayed this fact to Nadir, who, strongly bent upon having it, planned a grand festival in which both the conqueror and the conquered were to meet and swear friendship Nadir Shah pro posed an exchange of turbans and thus managed to get possession of the stone It was he who gave it the name Koh i noor, or the "mountain of light" From him it descended to his son, from whom Ahmed Shah, the founder of the Cabul dynasty, suc ceeded in getting it, by professing friendship in his time of distress Shah Shujah, the son and successor of Ahmed Shah, being driven out of his kingdom by his brother, Mahmood, took away the Koh-1-noor with him and made it the companion of his exile Runject Sing, the celebrated "Lord of the five rivers," contrived to get him at Lahore, where he was at once put to prison and given to understand that his release could be effected if he would part with the jewel Suffering with his wife and family, all sorts of privation and misery at the hands of Runject, Shah Shujah at last consented to make over the thing to him. This was done on

the 1st June, 1813. Struck with the brilliancy of the stone, Runjeet asked him, "at what rate do you value it;" to which he replied, " good fortune : and that is always the property of those who had vanquished their enemies" The Diamond was now set in a bracelet and was always worn by Runjeet. People attached bad luck to the possessor of this stone, for it would appear that all who had it in their hands subsequently came to grief, and an attempt was therefore made to make it over to the idol Juggernath of Puri. This was never done and it was occasionally worn by his successors. After the murder of Shu Sing, it was deposited in the Lahore treasury, until Dullip Sing, (the son of Runject), was stationed at Lahore with an English Regent. When Punjab was annexed to the British Crown, all the state-jewels of Lahore were confiscated by the East India Company. It was stipulated that the Koh-i-noor should be presented to the Queen. It reached Her Majesty on the 3rd June 1850 and then weighed 186 carats. Its original weight, when it was with Arungzebe, was 793 carate. This reduction was due to the unskilfulness of Hortensio Borgio, a Venetian Inpidiry. who had been entrusted with the cutting of it. The Emperor had been so much displeased with his work that instead of paying for all his labors, he dispossessed him of his property and was with great difficulty persuaded to leave him his head. This stone created quite a sensation in the great

Exibition of 1851, where it was valued at 14,00,000 of Rupees The recutting of this stone being thought necessary, Herr Voorsanger of Amsterdam was selected to do it The operation (conducted by steam) which commenced on the 6th July, was completed at the end of 38 days of 12 hours each, and is said to have cost 80,000 Rs The Koh i-noor has now assumed the form of a regular cut Brilliant, weighing 1061 carats and is one of the princi pal jewels in the British Crown

The Great Mogul

This stone is often confounded with the Koh :noor It is reported to have been found in or about 1650, in the Coloor mines, a place about 7 days' journey from Golconda Meer Joomla, by birth a Persian, was the Grand Vizier and General to the King of Golconda He had amassed enormous wealth, (principally by farming, under other names, the Diamond mines of the place,) and thus made himself the eye sore of his master, who had on one occasion openly threatened his life The Vizier sought and obtained the aid of Prince Aurungzebe, then Governor of the neighbouring provinces, and with his co operation, surprized the King of Golconda and was about to make him surrender when the Prince was re-called by his father the Emperor Shah Jehan Meer Joomla ingratuated himself into the favor of the great Emperor by making him magnificent presents, amongst which was the "Great Mogul." Tavernier relates that he saw this Diamond at the Court of Aurungzebe, and that it weighed at that time 787 carats. It was at this stage of its history that the stone has come to be confounded with the The same story about the cutting Koh-i-noor. by Borgio, about Nadir Shah's trick in obtaining it, &c , is repeated in connection with this Diamond. Some conjecture that Tavernier has described one large stone as having been seen by him in the Court of Aurunzebe. If there had been another of the same weight and size, it must have surely been noticed by him. Hence it is thought that the Koh-i-noor and the Great Mogul are merely convertible names. Others suppose that the Great Mogul was a personal present to the Emperor Shah Jehan and most naturally it remained in his possession when he was in prison,—at the time of Tavernier's visit, and that consequently that traveller had no opportunity of examining it. They further believe in its existence amongst the regulia of the Persian Crown and in its having been designated there as the " Deryn-noor," or "the ocean of light." But the drawings of the Shah's Diamonds which have lately been sent up to England, do not confirm this assertion. There has another theory been started which makes Borgio cut up the big stone into three; the one of which is now known as the Koh-i-noor; the other, as the Great Mogul, and the third was captured amongst the jewels of some petty Indian Chief. But the description which Tavernier gives of the character of the stone he saw, differs materially from the actual character of the Koh 1 noor. "It was circular, rose cut, very deep, of fine water, with but one little crack externally and one flaw internally and the work upon it that of an European lapidary, whereas the Koh 1-noor was in outline an irregular ellipse, facetted to no definite pattern, very flat, exhibited no more icater than a bit of rock crystal, had several flaws, besides a large deficiency or fracture at one end and rude grooves cut in the sides, whilst all the work upon it was of that peculiar character, which the least experienced eye would detect at once as that of a Hindu Diamond cutter"

There is one Diamond of the name of *Derya-noor* which is said to be in the possession of Nawab Abdool Gunny of Dacca, East Bengal, but whether it is identical with its great name sake, we are not in a position to state.

The Pitt or Regent Diamond.

If not the largest, the Pitt or Regent Diamond is generally looked upon as the most perfect and beautiful Diamond in existence, remarkable alike for its shape, proportion and fine water. It weighed 110 carats in its original state. According to the story with which its history is connected, it was found by a slave at Putcal (about 135 miles

from Golconda) and kept concealed in the calf of one of his legs which he had purposely wounded and bandaged, for its reception. An English sailor promised to find a purchaser for it, provided he was paid half the value. But bent upon having the whole of the proceeds to himself, he lured the poor slave on board his ship and pitched him over the water. This Diamond was sold by him to a celebrated Parsee merchant named Jamchand, for the sum of 10,000 Rupees. Jamchand sold it, in 1701, to Mr. Thomas Pitt (grand-father of the Earl of Chatham,) the then Governor of Fort St. George, Madras, for 1,25,000 Rupees. The operation of cutting it into a perfect Brilliant, which was finished in two years, reduced its weight to 1367 carats and cost him Rs. 50,000; 35,000 of which, however, was recovered by selling the fragments The Duke of Orleans, Regent of France, bought it of Pitt for 13,50,000 Rupees. This Diamond was stolen from the Garde-meuble in 1792, but was restored to its possessor most mysteriously. The Republic then pledged it to a Berlin merchant from whom it was again redeemed. The Emperor Napolean L used to wear it in the pommel of his sword and always considered it to be the key-stone to all his future greatness. It was shown in the French Exhibition of 1855.

The Orloff or Amsterdam Diamond.

This stone formed, according to one account, one of the eyes of a Hindu God, and was stolen away by a French Grenadier of Pondicherry, who had, with that object in view; taken refuge with the Brahmins and professed their faith for some time It was afterwards sold for Rs 20,000 to an English sea captain who resold it to a Jew for 1,20,000 Rs He, again, sold it to the Armenian merchant Shafras from whom it was purchased at Amsterdam, in or about 1772, by Prince Orloff, for presentation to Catherine II, at 9 00,000 of Rupees and a life an nuity of 40,000 Rupees and the grant of a Russsian nobility to the seller Another account says that it was one of the stones taken away by Nadır Shah from the Moguls that it had a pro minent place in his throne, and that it had, after his assassination, passed into the hands of one of his Affghan Generals and thence to the Armenian merchant Shafras This stone resembles in its outline the 'Great Mogul, as described by Tavernier, so closely, that, but for the difference in the weight, it may be taken for that long lost Diamond A third account supposes it to have been brought to Russia by Lazarus Lazareff, the head of the Armenian family of that name, and grand son of Manouk Lazareff, treasurer to Shah Abas II Hence it is called by some the "Lazareff" Diamond It is now placed in the Russian Imperial sceptre and weighs 1911 carate, and, like the Koh : noor, has the underside flat and is rose cut. Its size is about that of a pigeon's egg The water is of a rather yellowish tinge

The Nassuck Diamond.

This stone was originally found among the spoils captured from the Mahrattas at the conquest of Deccan, under the command of the Marquis of Hastings. It was then as large as a good-sized walnut and weighed 89\(^3\) carats. But when re-cut, in London, as a Brilliant, by order of its proprietor, the Marquis of Westminster, it weighed 78\(^3\) carats. It is very bright and pure but is very badly shaped. The East India Company had sold it to Messrs. Rundell and Bridge, who, on their retirement, sold it by auction to a jeweller for 72,000 Rs, though it was valued at three lacs.

The Nizam.

This stone is said to have been found at Golconda and is now almost in its primitive condition. It weighs 340 carats. It was by some ominous accident broken asunder in the year of the Indian Mutiny.

The Shah of Persia.

Cosnors, the younger son of Abass Mirza Shah, of Persia, presented this stone to Emperor Nicholas of Russia. It weighs 86 carats and is perfectly pure and brilliant. It is only partially cut; many of its natural octahedra being preserved. The interest of this stone is enhanced by the Persian

inscription it bears of its former owners, engraved

EK-BEK SHAK,
NIZIM SHAK,
FETH ALI SHAK,

Its shape is that of a long prism.

The Pacha of Egypt.

ALL that is known of this stone is that it was found in the possession of Ibrahim Pacha It weighs 40 carats; is of an octagonal form, Brilliant-cut and of very good quality.

The Mattam Diamond.

THIS stone belongs to the Rajah of Mattam, Borneo, and is at present the largest Diamond known; its weight being 367 carats. It was found at Landak, Borneo, in the year 1787. It is eggshaped; is of pure water and has a small indentation at the short end. Notwithstanding the many battles fought for it, this precious stone is still in the possession of the Rajah. The Dutch Governor of Batavia offered for it five lacs of Rupces, and two men-of war, with stores and ammunitions complete; but the owner refused to part with it on any account, considering it to be a talisman, on the possession of which depended the fortune and hapiness of his family. The Malayese believe that all kinds of disease can be cured by means of the water in which this Diamond has been steeped.

The Sancy Diamond.

THE early history of the Sancy Diamond is not minutely traceable. According to some, it came from India and, in 1479, fell into the hands of the King of Portugal, Don Antonio, who, on the occasion of his visit to England, made with the purpose of securing assistance in prosecuting his claims to the throne, which was then in the possession of the Spaniards, pledged it with Queen Elizabeth for £ 5,000 sterling. To avoid further importunities from the Portugese Pretender for more money, the Queen returned the Diamond to him, giving up all claims to the sum she had advanced. This stone was subsequently sold by him to Nicholas de Harlay, Baron de Sancy, a Huguenot gentleman. From this owner the stone has assumed the name "Saney." It was borrowed of the Baron by Henry IV of France. The messenger sent in charge of this valuable stone was wavlaid and murdered by robbers, but, acting up to previous arrangements, he managed to elude them, by swallowing it. It was afterwards taken out of his stomach by the Baron, in whose family it remained for more than a century. It was next traced to James II of England, who, in his exile (1688) carried it to France. There it was sold to Louis XIV for 2,50,000 Rupees. Louis XV wore it in the clasp of his hat, at his coronation. In the French revolution of 1792, along with various

other Crown jewels of France, the Sancy was lost, until 1830, when it was found in the possession of a French merchant. In 1838, the Prince Paul Demidoff bought it at 7,50,000 Rupees. In 1865 Messrs. Garrads of London purchased it of the Demidoff family, for the late Sir Jamsetjee Jeejeebhoy of Bombay, at two lacs of Rupees.

This stone is almond-shaped, of very fine water and weighs 533 carats. The cut is evidently Indian.

Charles the Bold's Diamond.

According to some, the Sancy is quite a distinct thing from what is called Charles the Bold's Diamond. Those who confuse the one with the other, say that the Sancy, after it was brought from India, fell first into the hands of Charles the Bold, Duke of Burgundy, and then into those of the king of Portugal. Those who want to establish a separate indentity for "Charles the Bold's Diamond," affirm that this was one of the three Diamonds which Charles the Bold had given to Louis de Berquem to be experimented upon in rose-cutting. After the defeat at Granson, the Duke's Diamond was found by a common soldier, enclosed in a valuable box. Prefering to have the latter, the soldier threw away the stone, but subsequently changing his mind, picked it out from under a waggon and sold it for a florin to a priest who, in his turn, sold it to a citizen of Berne for

three francs. Jacques Fugger, a famous merchant. of the Nuremburg family, bought it of the Bernese Government. From this family it came into the hands of Henry VIII, whose daughter Queen Mary, brought it, in her dower, to Phillip II. We have already noticed that a large Diamond was pledged by Don Antonio with Queen Elizabeth, and from this portion of the history, the Sancy, (which was evidently the stone pledged by Antonio) is confounded with the Burgundian Jewel. It was a matter of utter impossibility for the latter to have passed into the hands of Antonio-one, who was known to have been the mortal enemy of Phillip's. By a strange chance, it came back to the greatgrand-son of its original owner, Charles the Duke of Burgundy. Its present whereabouts are unknown.

The Florentine Brilliant.

This stone was, according to a tradition, bought for a trifle at a curiosity stall in Florence, being then considered as nothing more than a yellow crystal. The history of this stone is sometimes confounded with that of Charles the Bold's. The same story regarding its being found by a soldier and sold by him to a priest is also repeated in connection with the history of this stone. The fact is, Charles the Bold had three Diamonds of very great beauty and value, and it appears that the history of the two is confused with one another. The third is the Saney. We have already noticed the

story in connection with what we have called Charles the Bold's Diamond The story about the other stone, which we will designate as the Thoren tine Brilliant differs from that of the other, from the point, where the gem was sold by the priest Instead of its being purchased by Tugger (as in the case of the other stone) the story makes it come into the hands of a rich Bernese merchant, Bartholomew May In 1482, it was sold to a Genoese, who in his turn, sold it to Ludovico Sforza the Moor, Duke of Milan, for 14 000 ducats After the fall of the house of Sforza, this stone came into the possession of Pope Julius II who present ed it to the Emperor of Austria It is also called the Grand Duke of Tuscany or the 'Austrian Yellow," owing to its decidedly yellow color, not withstanding which, it is valued at 10 50 000 Rs It is cut as a double rose and weighs 1391 carats

The Braganza

This stone was discovered in Brazil, in 1741, and weighed, in its rough state, 1680 carats It is of the size of a hen's egg, of deep yellow color and is reported to be valued at 58 35,00,000 Rupees But doubts are entertained as to its being a Dia mond, it being generally believed to be a white Topaz, and as the Portuguese Government, of whose Crown Jewels it forms a part, would not suffer it to be cut or even examined, there is very little chance of the doubts being cleared up

The Proott Dramond

This stone was taken away from India by Lord Pigott Over fifty years ago it was sold in a lottery for three lacs of Rupees and was subse quently bought by Messrs. Rundell & Co for 60 000 Rupees When sold to the Pacha of Egypt, it fetched 3 lacs of Rupees again It is Brilliant cut, of a beautiful shape and weighs 82½ carats The name of the present owner is not known

The Hope Diamond

A DETAILED account of this stone has already been given under the heading of "Coloured Diamonds". This beautiful and most important blue Diamond was supposed to have been taken from India by Tavernier and sold to the French Government, wherefrom it was stolen, during the Revolution. It was subsequently traced to Mr Ehrson and from him to Mr H T Hope. Its original weight was 112; carats, when stolen from the Trench Regalia, it was 67, and being subsequently recut as a Brilliant and thereby reduced by cleavage, (which has given us its counter part, the blue Drop Diamond,) it weighed 44½ carats. It figured a great deal in the Great Exhibition of 1851.

The Lugènie Brilliant

This perfect Brilliant was purchased by the late Emperor Napolean III, and given to the Empress Eugènie We are not certain whether it is still in her possession, as the greatest portion of her valuable jenelry has been sold to His Highness the late Maharajah of Puttiala, through Messrs Hamilton & Co., Jewellers, of Calcutta It is of an oval shape and blunt at one end and weighs 51 carats

The Cumberland Diamond

This stone was bought by the City of London for a free of Rupees and presented to the Duke of Cumberland, after the britle of Culloden. It was one of the stones claimed by the Hanover Crown, to whom it has been restored by our Most Gracious Majesty. Its weight is 32 carats

The Star of the South

This is the largest Drimond ever found in Brazil. It was found in July 1853, by a poor Negro who was at work in the mines of Bogragen, in the province of Mines Geraes When rough, it weighed 251½ carats, but the cutting of it into a Brilliant has reduced it to 125 carats. It is a Drimond of the puest water and under light exhibits a lovely rose tint. It was purchased by M. Halpen, or according to some writers, by Mr. Coster of Amsterdam, who is also reported to have cut it. It was shown in the London and Paris Exhibitions.

The Polar Star

This Brilliant was at one period owned in England, but is now to be found among the Russian

Crown Jewels It is remarkable for its purity and lustre, and is said to weigh 40 carats.

Other large Diamonds.

THE Portuguese Crown possesses many large and brilliant Diamonds, foremost among which is a Brazilian stone found in 1775 by a Negro, in the bed of the River Abaité, near Rio Plata. The following is the romance connected with the discovery. Three Brazilians, convicted of some high misdemeanour were banished to the interior of Brazil, for life. These unfortunates used to beguile their time by searching for valuable matter. One day they came to the River Abaité, the bed of which had lain dry for sometime, owing to scarcity of rain. they chanced to see a Diamond, nearly an ounce in weight, which, with the help of a priest, was taken to the Governor of Villa Rica. All the officers of this place having been satisfied as to the nature of the stone, the Governor restored the exiles to freedom and had the gem sent to Rio de Janiero and thence to Lisbon Its weight was then 1381 carats. Some conjecturers connect this story with the discovery of the "Star of the South," with which they identify this stone.

Some very large Diamonds have come from the Cape. One was the "Star of South Africa," weighing in the rough 83\cdot\ erats and after cutting, fo\cdot\ left. The largest stone yet discovered here is what is now famous as the "Stewart Diamond," which

weighed in the rough state 288\(^2\) carats. It was consigned to Messrs Pittar Leverson & Co, who have also in their possession the so called "Fly Diamond which was also discovered in this place by one Antonie The Dudley Diamond weighing about 46 carats is another important stone, come from the Cipe It is triangular in shape, very brilliant, perfectly free from color and very difficult of distinction from an old Indian stone. It was sold by Messrs Hunt and Roskell to the present Earl of Dudley

The Brazilian Government is in possession of some very large and curious stones

The Spanish Government is also very rich in Diamonds and other jewels

In the Russian Treasury is a brilliant Ruby colored Diamond of 10 carats, bought by Paul I, for 1,00,000 roubles

Mr Dresden a London merchant, possesses a drop shaped Diamond, one of the finest stones at present in the market It was lately found at Brazil, is perfectly free from flaws and has extra ordinary brilliancy It weighs 761 carats

In the 'Green Vaults' at Dresden, there is a green Diamond which once belonged to Augustus the Strong It is remarkably beautiful and weights 48½ carats Here are also some very beautiful purures and four very valuable yellow Brilliants, the largest of which weighs 117½ and the smallest 52½ grains respectively.

There are two large Diamonds with the Turkish Government, one of which is of 84 and the other of 147 carats in weight

There are several Diamonds of more or less bril hance and weight, in Burmah and China, also in the possession of some of the native princes and noblemen, in India (especially at Hydrabad, Baroda and Putuala) There are some very beautiful and costly Diamonds in Bengal, particularly, some with the Maharasah of Burdwan, Nawah Abdool Gunny CSI of Dacca* and Maharani Surnomove of Cos simbazar † Some of the rich families in Calcutta have Diamonds, conspicuous alike for their size and brilliance, amongst which may be mentioned the stones set in finger rings, belonging to the estates of Babu Kally Kissen Tagore t Coomars Rai Coomar Roy and Kally Kissen Roy, and the late Babu Khelut Chunder Ghose There are some very good Diamonds in the Mullick Family There are also some valuable Kanthas or necklaces to he found with the natives of this country. amongst which may be cited those in the posses sion of Rai Dhunput Singh Bahadoor of Azimguni, Rai Budridas Mokeem (Jeweller to His Excellenev the Vicerov and Governor General of India) and of the estate of the late Babu Khelut Chunder Ghose

[.] Used by the Nawab s son as an armiet.

[†] Also with Joshes jee of Benares and in the estate of the late Jug cut Sett of Moorshedabad

[†] This D amond shows a rosy color

Several remarkable Diamonds are to be seen in the estate of the Honble Maharmah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor, of Calcutta Amongst those that are set in rings may be men tioned the 'Tagore Brilliant,' a Diamond of about 55 Ratis* in weight, of the purest water and very great brilliance free from any flaws whatever, the 'Sulh tara (or the Morning Star), very white and of a round shape the Arun dhati (the Sanskrit name for a certain star), flawless and of exquisite beauty and purity, and the Banga tara, (or the star of Bengal) rose cut, of great lustre and of a lovely rose tint without the slightest spot or flaw in it. There is a brilliant Cape Diamond, (also set in a ring) circular in shape and weighing about 31 Ratis The large Diamond of about 50 Ratis, which is set in the Sees paich or head ornament of the Maharajah is ? specimen of rare beauty A splendid greenish Diamond belonging according to the jewellers to the Bunsput species, (which are believed to bring good luck to the owner,) bought of the late Sooklal Johury, adorns the crown of the Maharajah s family idol There is also in the Maharajah s estate a mag milicent kantha consisting of 19 brilliant Diamonds the largest of which weighs about 37 Ratis and the smallest, about 6 It has been valued by the icwellers at 80 000 Rupees



[·] A Rat is one e ghth less than a carat.

There is also in the possession of the Hon'ble Maharajah a red Diamond, called the "Cingalese Red," set in a ring, and weighing about 10 rates The stone is so red that no layman would know it for anything else but a Ruby. But, in fact, it is a rare specimen of a Diamond, conspicuous alike for its brilliancy and flawlessness, and without having the faintest tinge of what are called the "milky" imperfections, so common in the Ruby. It is said to have been discovered in a mine at Ceylon, and to have remained for sometime in the possession of a respectable family of that place Johnslal Mokeem, son of the late Boodh Sing Mokeem of Delhi, had this gem brought to him by a Chulia (petty dealer), and has subsequently sold it to the Hon'ble Maharajah.

श्रय साणिकंत्र।

मृत्तम्।

सिन्धी रावणगङ्गायां सिक्तं जन्म कीर्तितं। चेत्राणि चीणि तस्य स्थुमीणिकास्य ज्ञार्जुधाः ॥ १५२ ॥ सिक्तं तु भवेष्ट्रक पद्मरागम्बत्तममं। पीतं कालपुरोङ्ग्तं कुर्वावन्दामित स्मृतः॥ १५३॥ च्योकपद्धवन्द्यायममुं मीगन्धिकं विदुः।

तुम्बरे कायया नीलं नीलगन्धि प्रकीत्तितं॥ १५8 ॥

माणिकका वयान।

तर्जमा।

रलपार्ची पछित लोक ककते के, सिन्तु, रावणगङ्गा चौर सिंक्ल देश इन् की तिन जगकोमें माणिक पयदा कोता के। १५५।

ता है। १५२। कोई कोई पख्डित कहते हैं, के सिंहल, कालपुर

चार चार पाउत करत र, क निरुक्त नार्तुः चौर तुमुर देग यही तिन नामहोमें माणिककी खान पार नाति है, उसीमेंसे सिंहल देशने जो माणिक पयदा होता है, वह वज्जत् उत्तम, चौर सृख रङ्ग, सालपुरमें

जो भाषिक पयदा होता है, उसका पाँचा रज्ञ, चौर उसकी कुर्वाबन्द कहते है, घगर घशोक कुर्वाबन्द कहते है, घगर घशोक कुर्वाबन्द कहते है, चौर तुझुर देशमें जो साणिक पयदा होता है, उसका रज्ज नीवा होता है, चौर तुझुर होता है, चसका रज्ज नीवा होता है, चौर उसका रज्ज नीवा

RUBY.

TRANSLATION.

152 According to some authorities, the ruby is found in Ceylon and the lands bordering upon the Indus and the Ráyana Gangá.

153—154 According to others, ruby quarries are found in Ceylon, Kálpur and Tumbura. The rubies of Ceylon are beautifully red; those of Kálpur are yellow, and are called kurwinda (rubicelle); and those of Tumbura are furnished with a blue shade and are hence called nitagandhi (violet ruby) That ruby which shoots a gleam green as the leaf of the asola goes by the name of saugandhika (spinel)

মাণিক। অমুবার।

কোন কোন রক্তত্ত্ত্ত পণ্ডিত কছেন, সিন্ধুনদ, বাবণ গদা ও সিংহল দেশ এই তিন ক্ষেত্রে নাণিক্য বা পদ্মবাগ উৎপন্ন হয়। ১৫২।

কেহ কেহ বলেন, সিংহল, কালপুব ও তুষুর দেশ এই তিন স্থানেই মাণিকেব আকব দেখা যায়; তন্মগ্যে সিংহল-দেশাংপদ্দ মাণিক দেখিতে অতি উত্তন এবং রক্তবর্ণ; কালপুবে পীতবর্ণ পদ্মবাগ ছনিয়া থাকে; এবং তাহাকে ফুকবিন্দ কহে; যে পদ্মবাগ অশোকপদ্লবের ন্যায় ছায়। বিশিষ্ট, তাহাকে গোগদ্ধিক কহে; তুষুর দেশজাত মাণিক নীল্ছামাবিশিষ্ট এবং নীলগদ্ধি বলিয়া উল্লেখিত হয়। ১৫০1১৪৪।

मुलम्।

उत्तमं सिंदलोइतं निकष्टं तुम्ब्रोइवं। मध्यमं मध्यमं ज्ञेयं माणिकां चेचभेदतः ॥ १५५॥

वन्युकगुञ्जासकलेन्द्रगोप-

जवाननाच्यम्बर्णशोभाः l भ्याजियावो दाख्मिनीजवर्णा-

क्तथापरे किंग्रकपृष्यभासः ॥ १५६॥

तरजमा।

सिंचल देशमें जो माणिक पयदा होता है, वही सबसे उमदा ही, चौर तुम्बर देशमे जो गाणिक पवदा घोता है, वह वज्जत् खाराप श्रीर कालपुर देशका मध्यम श्रीर जगहों के बदलनेसे माणिक तिन कसिमका होता की १५५1

केत्ने घुघची, केत्ने वीरवज्ञटी, केत्ने कनेल पूल, केत्ने चौके समान रङ्गदार कोते हैं, चौर केत्ने बहु चमकदार

माणिकमेसे वज्जत्से माणिक केत्ने बन्ध्कके पुलः

चानारके दानेके समान, केत्ने पखाश्रक्तके समान

TRANSLATION

155. The rubies of Ceylon are good par excellence, while those of Tumbura are at the bottom of the scale, the rubies found in Kálpur occupying the middle position Rubies vary in value in accordance with the place where they are respectively found

156—159. Of rubies, some are like the bandhala* flower, some are like the gunya berry, some like the cochineal, some like the Clinia rose, some like blood, some like the seeds of the pomegranate, some like the flower of the butea frondosa,

व्यक्षतीम ।

দিংহল দেশে যে মাণিক জন্মে, তাহাই সর্কোৎকৃষ্ট; ছুমুবদেশোৎপদ পদ্মবাগ সর্কানকৃষ্ট; এবং কালপুবোহুত মাণিক মধ্যম বলিয়া প্রদিদ্ধ আছে। ক্ষেত্রভেদে মাণিক উত্তম, মধ্যম ও অধম এই তিনপ্রকাব হইবা থাকে। ১৫৫।

প্রবাগের মধ্যে কডকগুলি বছুক (বাঁধুনী) পুপ সদৃশ, কডকগুলি গুঞ্জাব (কুঁচেব) ন্যায়, কডকগুলি ইন্দ্রগোপকীটেব সমান, কডকগুলি জবাকুর্যনেব ফায়, কডকওলি রজেব ফাব, কডকওলি দাড়ি-ধ্বেব বীজেব ফাব্য, কডকগুলি প্লাশপুষ্পস্দৃশ,

^{*} A species of plant.

मृखम्।

सिन्दूररक्तोपलकुङ्गमाना स्राचारसस्यापि समानवर्णाः। सान्द्रेऽपि रागे प्रभवा सर्वेव

प्रत्ययलाचारसतुख्यभास'।

भवन्ति वाचास्कुटमध्यशोभाः ॥ १५७ ॥ कुसुमानीवद्यतिरागमित्र-

तथापरे गोच्रकग्टकारी-पुष्पार्चिपो चिद्रलवस्विषोऽन्ये ॥ १५८०॥

चकोरपुंस्कोकित्तमारमाना नेचायभासद्युतयश्च केचित्। अन्ये पननीतिविष्णिताना

तुर्वित्वपः क्षोकनदोदराया ॥ १५८॥

तर्जमा ।

केत्ने सिन्द्रके समान, केत्ने लालकमलके, समान, केत्ने रोखीके समान, केत्ने मधावरके समान, केत्ने गधेरे खुछ, खौर गधेरे समान, केत्ने जुसमणुलके समान, केत्ने जीलायनलियेड्य मधावरके समान, केत्ने नीलायनलियेड्य मधावरके समान, खौर केत्ने

केत्ने नीवापनवियेज्ञये मधानरके समान, श्रीर केत्न गोचुर श्रीर करहीकारीभुवके समान, केत्ने द्रंग्रुरके समान, श्रीर केत्ने चकोर, कोकिल, सारसपद्मीके श्रास्त्रके समान, श्रीर केत्ने कमस्त्रिक्षये वात पद्मकृतके येटके समान,

होते के । १५६ । १५७ । १५८ । १६८ ।

मृचम्।

प्रभावकाठिन्यगुरू त्वयोगैः

प्राय' समाना' खाटिकोट्भवानां !

म्रानीलरक्षोत्पलचारुभास

सौर्गान्धकाख्या मणयो भवन्ति॥१६० 🛭

यो मन्दरागः कुरुविन्द्जेषु

म एव जात स्फटिकोट्भवेषु।

निरर्ज्जिपोऽन्तर्वे छ की भवन्ति

प्रभाववन्तोऽपि न तत्ममाना । १६१ । ये तुरावणगङ्गाया जायन्ते कुरुविन्टव ।

पद्मरागसम् राग विभ्नाणा न स्कृटाचिष ॥ १६५॥

तर्जमा ।

सीमान्त्रिक मणि चमक्रमे मिक्रमे, चौर भारीवन्में चाक्सर स्कटिकसेजी माणिक पयदा चीता चे, उस्के सनान चे, चौर उस्कारद्र घोड़े नीलापनस्विग्रेड्ये लाम कमल फुलक्षे समान चें। १६०।

जो कुर्वान्ट योडे रद्भार घोए, यह स्प्रिक्सेमी पयटा घोता घे, चगर वह रद्भामे कुमभी घोए, लेकिन टस्के मितरका तेज एसा च्यादा घे, के बछत् रहर्र चौर कुटदेनेबाचा चर्चात् चितप्रभाविधिष्ट माणिक उसके समान निक्ष घोता है।१६१।

रायणगद्रामें को कुरुबिन्ट एयटा होता है, वह माणिषके समान सृख रहेटार होता है, बेकिन साणिषणे समान दीप्तिमान नहिं। १६२।

TRANSLATION.

160. The saugandhika resembles the crystal in brightness, weight and hardness; and its color is like that of the red-lotus dashed with blue.

161. Of kuruvinda rubies, that which is reddish, owes its origin to crystal; still its inner lustre is such as even to surpass the brightest padmarága.*

162. The Luruvindas which are produced in the Ravanaganga, are red like the padmarága, but are not so bright.

यश्वान ।

সৌগদ্ধিক মণি প্রভাব, কাঠিত ও ওরুৱে প্রাযই স্ফটিকোন্তব পদ্মরাগের সমান এবং তাহার বর্ণ ট্যাং নীলের আভাযুক্ত বক্তোৎপলের সদৃশ হয়। ১৬॰।

কুরাবিশের মধ্যে যেটা অমপরিমাণে লোহিতবর্গ হয়, সেটাও ফটিক হইতেই ছয়ে, তথাপি তাহার অন্তর্গ গতি তেজ এত অধিক হয় যে, মতি প্রভাবিশিত প্ররাগও তাহার সমান হইতে পারে না। ১৬১।

রাবণগলতে যে দকন বুফবিন্দ উৎপন্ন হয়, তাহারা প্ররোগের সমান বৌধিত্য ধারণ করে, কিন্তু তক্রপ দাঁধি-শানী হয় না। ১৯২।

· A Lold ratg.

मूसम।

बन्धूजीवि शिखण्डीक दन्द्रगोषोडुप्रप्यकः । रक्तास्त्रं कुट्टिमञ्जैव पर्षं मीमन्तक तया। १६३॥ गौरिकास्त्रं मूर्व्यमंत्रं द्वमामयमयोत्तरं । मद्याराजनगत्यास्त्रं गोसुरं कल्टकारिक 1९६४॥

तर्जमा ।

माणिकका रङ्गका अनुसार जो जो नाम के नकी सव नीचुमें लिखा जाता के ! ज्यासाः-जिंधका रङ्ग वन्यूजीव-फुलने समाम, उसको वन्यूजीवि, जिसका रङ्ग सुंघचीने समाम, उसको शिखरडीक , जिसका रङ्ग स्न्यूगोप कीटके समाम, उसको श्राह्मणोपि , जिसका रङ्ग कनेवजुडके समाम, उसको श्रोह्मण्याक , जिसका रङ्ग क्रानेवजुडके समाम, उसको श्रोह्मण्याक , जिसका रङ्ग स्वके समाम, उसको रक्ताखा ; जिसका रङ्ग श्रामारके द्रांमाके समाम, उसको कुट्टिम ; जिसका रङ्ग श्रामारक द्रांमाके समाम, उसको कुट्टिम ; जिसका रङ्ग श्रामाम, उसको सीमन्तक कुछते है। १६६।

जिसका रक्क गेरीमाहिक समान, उपको गेरिक; जिसका रक्क जाफरानके समान, उपको सूर्यमंत्र; जिसका रक्क जाफरानके समान, उपको सूर्यमय; जिसका रक्क जुरुम- फुलके समान, उसको महाराजनगन्धि; जिसका रक्क गोचुरके फुलके समान, उसको गोचुर; धौर जिसका रक्क करहीकारीफुलके समान, उसको गोचुर; धौर जिसका रक्क रहीकारीफुलके समान, उसको क्ष करहकारिक कहते हैं। १६८।

TRANSLATION

163. Rubies have different appelations according to their colors. That which is like the bandhuli flower. is called bandhujibi, that resembling the gunjá berry, is called sikhandika, that which is like the cochineal, is called indragopi, that which resembles the China rose, is called odrapushpaka, that which is like blood, is called raktakhya, that which is like the seed of the pomegranate, is called Luttima, that which is like the kinsuka flower, is called parna, and that which

164. That ruby the color of which is like mountain slime, is called gairikdkhya, that which is like saffron, is called surjasanga, that which is like lac, is called drumamaya, that which is like the Lusuma flower, is called maharajanagandhi, that which is like asteracantha longifolia, is called gokshura and that which is like the solanum jaquini, is called kanta-

káríka (Almandine Ruby.)

় অহবাদ। মাণিক্যের বর্ণগত নাম প্রদর্শিত হইতেছে। যথা:— যাহার বর্ণ বাঁধূলী পুল্পেব সদৃশ, তাহাকে বন্ধূজীবি; যাহার वर्ग खन्नामन्ने, जांशांक निवधीक; गांशांन वर्ग हेल-গোপকীটের সদৃশ, তাহাকে ইক্রগোপি; যাহাব বর্ণ জ্বা-ফুলের ন্যায়, ভাষাকে ওড়পুষ্পক; যাহার বর্ণ রক্তের সদৃশ, ভাছাকে রক্তাখ্য; যাহার বর্ণ দাড়িনবীজের সুল্য, ভাহাকে কুটিন; যাহার বর্ণ কিংশুকপুলের নদৃশ,তাহাকে পর্ণ এবং योहात वर्ग मिन्ह्रतत मात्र, छोहारक मीमछक दल । ১५०।

याहात वर्ग रेगतिकमन्म, ठाहारक रेगतिकाचा ; याहात वर्ग कुट्रायत नागि छाहारक मुधामान्छ; गाहात वर्ग नाकामनुम, जोशांक कामामाः गांशांत वर्ग द्यमक्नममृत्र, जाशांक मश्-রাজনগড়ি; যাহার বর্ণ গোকুরপুপাস্থা, তাহাকে গোকুর; गाहात वर्ग कर्नी हाती भूलगरूनो, जाहादक करने हातिक वात 1268 १६ मणिमाचा ।

मूचम।

मिणरागं चकोराचं कोकिलाचं तथैव च।
मारसाचं कोकनदं माणिका परम विदु ।
एवं वज्जविच विप्र माणिकां भृवि जायते ॥ १६५॥
वर्णातुयायिमसोपामन्द्रदेशे तथापरे।
प्रजायनो तु ये केचित मृत्यनो गमवाप्रुतु ॥ १६६॥

तर्येव स्फटिकोत्याना देशे तस्तृरसंज्ञके। समरामा प्रजायन्ते स्त्रसृत्या हि ते स्नृता ॥ ९६%॥

तरजमा। जिसका रङ्ग हिङ्ग लके समान, उसको मणिराग, जिस्का

रङ्ग चकोर पद्योके भाखके समान, उसको चकोराद्य, जियका रङ्ग कोयेलके चाखके समान, उसको कोकिलाद्य, जिमका रङ्ग सारसपद्योके चाखके समान, उसको सारगद्य चौर जिसका रङ्ग सासुककुलके समान, उमको कोकनर

जार जिल्ला रेन्न कालुक कुलक समान, उपका कालनर कक्ते हैं। जमीनपर यथी प्रकारसे बज्जत तरहेका माणिक पयदा दोता हैं। १६५।

धन्त्र देशमें जो माणिक पयदा होता है, उसमें वे जिसका जिसतरहका रह्न होए, उस्का ए सा दाम होता है। १६६।

तुम्बुर देशमे स्कटिक छे मणिकी तरच जो माणिक पयदाचोताचे उसका दास यद्धत् कम दोए।१६७।

TRANSFARTION

165 The ruby the color of which is vermilion, is called maniraga, that which resembles the eye of the Greek partridge, is called chalandkha, that which is like the eye of the cuculus Inducus, is called hohidakha, that which is like the egg of the Indian crane, is called hohidakha, and finally that which is like the red lotus, is called hohanda. The earth produces a splendid variety of the kinds enumerated above

166 The Andhra country* produces rubies re sembling the Luruvinda of Ravanaganga These have the same value as Luruvindas

167 The padmaragas of Tumbura, which resemble in color crystaline padmaragas, are of small worth

অগ্ৰাদ।

যে মাণিকেব বৰ্ণ হিন্দুলেব ন্যায়, ভাষাকে মণিবাগ, যাহাব বৰ্ণ চকোবপক্ষীৰ চকুব দদৃশ, ভাষাকে চকোবাক, যাহাব বৰ্ণ কোকিলের চকুবদৃশ, ভাষাকে কোকিলাক, যাহার বৰ্ণ নাবদপক্ষীর চকুব দদৃশ, ভাষাকে দাবদাকে এবং যাহাব বৰ্ণ কোকনদ পুষ্পোৰ উদবেব ন্যায়, ভাষাকে কোক নদ বলে। পৃথিবীতে এইপ্রকাব বছবিধ মাণিক জমিয়া থাকে। ১৬৫।

রাবাগধাসমূহুত কুকবিদেব ন্যায় বর্গবিশিন্ট যে অপব কতকগুলি মণি অন্ত্রু দেশে জন্মে, তাহাবাও কুববিদেব সমানমূল্যে বিক্রীত হয়। ১৬৬।

তৃত্বৰ দেশে ক্ষতিকান্তৰ পদ্মরাগেৰ সমান বর্ণবিশিক্ট যে পদ্মবাণ জন্মে,তাহাৰ মুন্য অতি অল্ল হইযাথাকে। ১৬৭।

[.] The modern Telingana. Its people are called Andrew by Pliny

मणिरागं चकोरासं को किलासं तथैव च।

मूचम।

मारसाचं कोकनरं माणिका परम विदु । एवं वज्जविधं विग्र माणिकां भृवि जायते ॥ १६५॥ वर्णातुयायिनक्षेपामन्द्रदेशे तथापरे । प्रजायन्ते तुथे वेचित मूल्यन्ते समवाप्तु ॥ १६६॥

तथैव सप्तियोत्याना देशे तुम्बुरसंज्ञके। समरामा प्रजायन्ते स्त्यमूल्या चिते स्नृता ॥१६९७॥

तरजगा।

जिसका रङ्ग हिंद्रु लक्षे समान, उसको माजराग, जिस्का रङ्ग चकोर पद्योको खाखके समान, उसको चकोराच, जिसका रङ्ग कोयेलके खांखके समान, उसको कोकिवाच, जिसका रङ्ग सारस्पद्योके खाखके समान, उसको सारमाच और जिसका रङ्ग सालुककुलके समान, उसको कोकनर कहते हैं। जमीनपर यद्यो प्रकारसे बज्जन तरहेका माणिक पयदा होता हैं। इस्पू।

भन्न देशमें जो माणिक पयदा होता है, उस्मेसे जिसका जिसतरहका रह्न होए, उसका एैसा दाम होता है। १३६।

तुम्बुर देशमे स्फटियमे मणिकी तरह जो माणिक पयदा घोता है उस्का दाम यज्जत् कम घोए।१६७।

TRANSLATION.

165. The ruby the color of which is vermilion, is called manuraga, that which resembles the eye of the Greek partridge, is called chalaraisha, that which is like the eye of the cuculus Inducus, is called kokuldisha, that which is like the egg of the Indian crane, is called darasikha, and finally that which is like the red-lotus, is called kokanada. The earth produces a splendid variety of the kinds enumerated above.

166 The Andhra country* produces rubics resembling the Luruvinda of Ravanaganga. These have the same value as Luruvindas.

167. The padmarágas of Tumbura, which resemble in color crystaline padmarágas, are of small worth.

অহুবাদ !

যে মাণিকেব বর্ণ হিস্কুলেব ন্যায, তাহাকে মণিবাগ;

যাহাব বর্ণ চকোবপক্ষীব চকুব দদৃশ, তাহাকে চকোবাফ;

যাহাব বর্ণ নাবদপক্ষীর চকুব দদৃশ, তাহাকে কোকিলাফ;

যাহার বর্ণ নাবদপক্ষীর চকুব দদৃশ, তাহাকে দাবদাক এবং

যাহার বর্ণ কোকনদ পুশেস উদনেব ন্যায, তাহাকে কোক
বলে। পৃথিবীতে এইপ্রকাব বছবিধ নাণিক জিমিয়া

থাকে। ১৬৫।

বাবনণদ্রাসমূত্ত বুক্বিদের ন্যায় বর্ণবিশিন্ট যে অপুর কতকণ্ডলি মণি অদ্ধ্র দেশে জন্মে, ভারারাও কুলবিদ্দের সমানমূল্যে বিফ্রীত হয়। ১৬৬।

তুর্ব দেশে ক্টিকোন্তব প্রবাশের সমান বর্ণবিশিষ্ট যে প্ররোণ ভল্মে,তাহার মুল্য অভি আম হইয়াধাকে। ১৬৭।

[.] The modern Telingana. Its people are called Andere by Pluy.

वर्णीधिया गुरुत्वय सिम्धता समता गुमा।

श्रिच्यां सहता च मणीनां ग्रणसंग्रहः ॥ १६८ ॥ माणिकास्य प्रवन्तामि ययाजातिचतुरुयं ।

वस्त्रचित्रविष्यास गूद्रसाच ययाक्रमं॥१६६॥

पदारागो भेवद्विप्र: कुरुविन्दस्त वाङ्यजः । सौगन्धिको भवेद्देश्यो मांसखर्डस्वान्तरजः॥१७०॥

शोषपद्मसमाकारः खिद्राङ्गारसमूभः। पद्मरागो दिजः प्रोक्तश्चायामेदेन सब्बेदा॥१७१॥

तर्जमा।

च्यादा रङ्ग, भारी, चमकेंबा, समान, ग्रुमलस्रण, कुट चौर कदमे बहा, यशी सब रक्षका बहा खास ग्र π चै । १६८ ।

ह । १६००। जिस् प्रकार मतुष्यको ब्राह्मण, चिवव, वैद्य और ऋद्र, यही पार जात होति है, उसी प्रकार माणिकमी चार . प्रकारको जात है, जाजक जालक उसका खद्यण कहते हैं। १६९।

हैं। है है । माणिक ब्राह्मणवर्ण, कुरियन्ट चिवण, शीगित्यक वैद्यवर्ण श्रीर मांसखर्ख (श्रवीत् कुटेज्ये मांगके समान) पूट्रवर्ण कहा जाता है। १७०। विसि किमि प्रियत्यके मतके सुवस्तर बाज्यवर्ण

किसि किमि पण्डितके मतके चनुमार ब्राह्मयवर्षे माणिक लालकम्ल, खबेरकाठके चन्नारके समान वर्षे-विशिष्ट कोता है। १७१।

O.O.

TRANSLATION.

168. Heaviness, coolness, evenness, lustre, thickness, deepness of color and auspiciousness are the principal good qualities of gems.

169. The four-fold division into castes obtains also among rubies. The characteristics of each class I shall now describe.

170. The padmarága (Oriental Ruby) is reckoned a Vipra (Brahmin), the kuruvinda (Rubicelle) a Khetriyá, tho Saugandhika (Spinel) a Vaisya, and the Mansa-khanda (Balas Ruby) a Súdra.

171. Some say that the Vipra rubies emit a shade red like the color of the red-lotus or the red-hot charcoal of the Acacia Catechu.

অভ্ৰাদ।

বর্ণাধিক্য, গুরুত্ব, বিশ্বতা, অবন্ধুরতা শুভলকণ, দীপ্তি এবং কুলতা এই ওলি সামান্যাকারে রড়েব প্রধানওণনধ্যে পরিলাণিক। ১৬৮।

ন্তাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও খ্রু এই জাতিচত্বন্টয়তেদে মাণিক্যও চতুর্বিধ হয়, ক্রনে তাহাদের লকণ বলা যাই-তেছে। ১১৯।

প্ররাগ বিপ্রজাতি, কুকবিল ক্রিয়জাতি, গৌগদ্ধি (নবন) বৈশুজাতি এবং মাংস্থণ্ড (লাহ্নী) শৃস্তজাতি বলিয়া ক্রিত হ্যা১৭৽।

কেহ কেহ বলেন, বিপ্রজাতি পদ্মরাণ হইতে রক্তপন্ন বা ধনিরকাঠেব অপারের নাায় ছায়া নির্গত হয়। ১৭১। मूचम्।

ग्रञ्जाचिन्दूरवस्कृषनागरङ्गसमप्रमः । दाख्मिकुसमामासः कुर्चवन्दस्तु वाज्जनः ॥१७२॥ स्टिकुलागोकप्रमामसीमत्योतन्तु लोचितः।

जवाजारामार्यं वैश्वं सीनात्मकं विद् । १७३॥ भारककान्तिशीनस् चिक्रणस् विशेषकः। सासकप्रस्वसामी यो सोऽन्ताल पापनासन् । १७४॥

तर्जमा ।

चिवर्ण कुरुबिन्ट घुवंची चर्यात गुझा, सिन्दूर, वर्गूक गुष्प, नारखी चौर चानारके फुबके समान रख्नदार छोता है।१७२।

विश्ववर्ष वीगान्यव दंगुर, श्रशोकका फुल, श्रीर शोड़ा पीलावनिवयेक्षये सुख, कनेलफुल श्रीर संशवरके समान रज़दार शोता है। १७३।

ग्रद्रवर्णका मास्वयुड कान्तिकीन, विक्वण, घोडा स्नुषीसायेन रङ्गदेना है। १७८ ।†

^{*} कर्साधक्यते रक्तं स्वेते अवेट्वियस्वतिरक्तसु चान्य । रक्तपोतो अवेदेशो रक्तनीयक्तयात्वत्र ॥ † कोरको अतमे खुखी सप्टोआयेच ब्राह्मयवर्यं, बङ्गतु सुखी चान्यवर्यं सुखोपीलायनवियेङये वैद्यवर्यं, धीर सुखोनीलायनविवेङये स्ट्रवर्यं ॥

172. The Kshetriya ruby casts forward a shade resembling in hue a gunjd, vermilion, or the flower of the bandhuka, the orange, or the pomegranate.

173. From the Vaisya saugandhika comes out a shade like vermilion, the flower of the asaka, the China rose, or alakta; or a red lustre tinetured with yellow.

174. A Sudra mánsakhanda emits a reddish, unbeautiful, and glossy shade resembling a piece of flesh,*

অন্তর্বান ।

ক্ষত্রিয়জাতি কুরুবিন্দ হইতে গুঞ্জা (কুঁচ), দিনুর, বাঁধুনী, নাগরদ ও দাড়িমের পুষ্পদদৃশ ছাযা বহির্গত ইয়। ১৭২।

বৈগ্রন্থাতি সোঁগদ্ধিক হ'ইতে হিবুল, অশোকর্ত্বন, দীবং গীতের আভাযুক্ত লোহিত, জবাপুন্স, ও অনক্তকের ন্যায ছাযা বাহির হয়। ১৭০।

শুদ্রজাতি মাংসথও হইতে ঈবং রক্ত, কান্তিহীন, চিক্ল, এবং মাংসথতের দদৃশ ছায়া নিগত হয়। ১৭৪।†

^{*} The Ruby which is red white, is a Brahmin, that which is deep red, is a Kahetriya, that which is red yellow, is a Vaisya, and finally that which is red blue, is a Scara.

[†] বাহার মতে পরমাণের মধ্যে মেটা রক্তর্যক-মিনিত বর্ণমিপিই, সেটা রাহণলতিমধ্যে; মেটা আত্যক-মোহিতর্য, সেটা অনির্যাচিত্র মধ্যে; মেটা রক্তশীত মিনিত বর্ণসূক, সেটা বৈত্যাতিমধ্যে এবং মেটা মীমানোহিত মিন্নবর্ণমানী, সেটা ব্যক্তিমধ্যে অবিনিতঃ

माणिकास्य कायादयः।

मस्य।

माणिकास्य यमाखाताष्ट्रायां पोद्य की निताः ।
गुणायतार चाखाता चारी दोषा मुनीवरः ॥ १७५ ॥
छावा सात् पद्मरागस्य रक्तकोकनद्ममा ।
यद्योतानिकपोताचिकोक्तिवाने चमित्रमा ॥ १०६ ॥
सारसाचिवकोरस्य पत्निभैयन्तु सप्तधा ।
एताः गुमफलाष्ट्रायाः विष्वतियमप्रामणेः ॥ १७७ ॥
सिन्दूरलोग्नुष्रप्यामा गुष्त्राकिमुक्तसिन्ताः ॥ १७८ ॥
छाणासाः कृषिन्दोस्य पत्रसः परिकीनिताः ॥ १७८ ॥
चथना चीरस्वाया कुष्तुनीद्वसित्रमा ।
दंपद्रका मनेक्टाया सीगन्यिकमणेरिय ॥ १७८ ॥

माणिकका छाया वगैरह।

रत्नपारची परिदत माणिकके मध्ये मोलप्रकारकी कार्या, चारप्रकारका ग्रण चीर चाटप्रकारका चरेब कहे गये हैं। १७५।

सिहत्तदेयके माणिकमे जानकमन, भगजुगनी धर्यात् पद्योत, धाग, कवृतर, क्षोयेल, गारम शौर पद्योरके धापने गमान छाया निगन धोता है, धौर यही ग्रातमकारकी काया गुमदायक है। १७६। १७०।

कुर्वाबन्द मणिमे सिन्दृर, लोग्नयुष्य, गुद्धा श्रीर पतार-फुलके नमान काया निर्भत होती है। १५८।

सीगायिक मणिमें इथ, रोमीमिनेख्य उनके ममान, भीर घोदा सुमीमायेन छाया निवेनती है, ट्राके मध्ये इथके ममान काया दीतनको नाम करती है। १७६।

Shades and other Qualities of Rubies.

TRANSLATION.

175. The authorities mention sixteen kinds of shade, four good and eight bad properties of rubies.

176—177. The rubies of Ceylon emit a gleam like the red-lotus, the glow-worm, fire, or the eye of the pigeon, the cuculus Indiens, the Indian crane or the Greek partridge. All these shades are auspicious.

178. The Kuruvinda shoots a shade resembling red lead, the gunjá berry, or the flower of symplocos racemosa or of the butea frondosa.

179. The saugandhika gem scatters a gleam either pale-red or like milk or the water colored by the crocus Sativus;—of these, the milky lustre blights wealth.

শাণিকের ছায়াদি।

অহবাৰ।

রত্বতত্ত্ব পণ্ডিতেরামাণিক্যম্বন্ধে ঘোড়শপ্রকাব ছাযা, চারিপ্রকাব তুগ ও আটপ্রকাব দোঘ নির্দ্দেশ করিয়া চেন ৷ ১৭৫ ৷

নিংহল-দেশীর পরাবাগ ইইতে রক্তপরা, থদ্যোত, অগ্রি, হপোত, কোহিল, সারস ও চকোরেব চলুর ন্যায ছাযা বহির্গত হয়; এই সপ্তবিধ ছায়াই শুভ্রন্নক। ১৭৬।১৭৭।

ङ्क्षविन हरेरिङ मिन्द्र, লোগ্রপুষ্প, ওলা ও কিংশুক পুষ্প मनुग होग्रा নির্গত হয়। ১৭৮।

শীগদ্ধিক মণি হইতে ছব্ব, বৃত্তুমের জল ও টব্বং রক্তের ভায় ছায়া বিকার্ণ হয়,তত্মধ্যে ছবচ্ছায়া ধনহানিকর। ১৭৯।

मूचम्।

मखिमाचा ।

नीवोत्यसद्वन्छाया वोष्वकान्तिसमममा ।
नीवगन्धिमणेः प्रोक्ते हे न्छाये रत्नकोविदैः ॥ १८० ॥
वावाकीभिमुख सत्वा द्र्षेणे घारयेन्मणि ।
तव कान्तिविसागेन छायामागं विनिर्द्धित् ॥ १८९ ॥
वावार्षकरसंख्याद्यः यिखां वोष्टितां वसेत्।
रञ्जयेदायमं वापि स महाग्रण उच्यते ॥ १८६ ॥

तर्जमा।

नीलगन्धिमिजिने नील कमल खीर लोक्षेके समान कायानिकेलती है । ९प्∽ा

पद्मराग वर्गरेड मणिको एक खुव साफ चाइनापर रखकर मुबदको सूर्यके सामने रखनेंसे वही पीत प्रकारकी कादा उन्मेने प्रकाय होगी। १८९। मुबदके मूर्यके किरणके सूर्यके जिस् माणिकमेंगे

खाबरद्र किरणकर तामाम मकानको खालरद्र कर², यक्षी माणिक मकागुणविग्रिष्ट चर्यात् बेलकुल वेच्य^{वेव}

श्रीर खुब ही। १८६।

180. The nilagandi shines in a halo like the blue lotus or iron.

181. When the ruby is placed over a mirror and is then exposed to the morning sun, the glass will flash with a lustre composed of all the above-mentioned shades.

182. That ruby which, when exposed to the sun 'new risen,' radiates red rays or paints the whole house with crimson, is surpassingly fair.

অন্বাদ।

নীলগন্ধি মণি হইতে নীলোৎপল ও লোহের সদৃশ ছান্না বহির্গত হয়। ১৮০ ।

পন্মরাগ নণিকে একথানি দর্পণে স্থাপন করিয়া বালার্বা-ভিনুথে ধারণ কবিলে তাহা হইতে উদ্লিখিত বোড়শবিধ ছামা দেই দর্পণে প্রতিবিধিত হইবে। ১৮১। প্রাতঃসূর্য্যের কিরণসংস্পর্ণে যে পন্মরাগহইতে লোহিত-

বর্ণ শিধা উন্গীর্ণ হয়, অথবা নাহা সমস্ত আশ্রমকে রঞ্জিত করে, সেই পররোগই মহাওণসম্পন্ন। ১৮২। मूचम्।

वमेक्छिवां कोहितान्वा पद्मरागः च उत्तमः । १८३ । ष्यत्यकारे महाघोरे वो न्यत्तः सन्त्रहामितः । प्रकायवित सूर्य्यामा च श्रेष्टः पद्मरागकः ॥ १८८ ॥ पद्मकोपेतु वो न्यत्तो विकाययित तत्त्वणात् । पद्मरागवरो स्त्रेष देवानामिष दुर्लभः ॥ १८५ ॥

दुग्धे भतगुणे चिप्तो रञ्जवेद्यः समन्ततः।

यो मणिर्देश्यते दूरात् व्यवद्गिनसमच्चिवः । यंग्रकान्तिः स विज्ञेयः सर्व्वस्यनिकारकः ॥ १८०६॥

तर्जमा ।

जो माणिक खपनेसे शौगुण ज्यादा दुधमे डालदेनेसे सन दुधको जालरङ्ग करदे; खयना दुधके खन्दरसे जाल-श्रिखा बाहेर करें, वही माणिक नेहायेत् छमदा होता है। १८८३।

जो माणिक चांधेरेमे सूर्यके समान तेल प्रकाम करे, वह सऊत् उत्तम, चौर चौळल ट्राजेका है। १८४।

जो माणिक कमलके फुलके कलिपर रखर्तेची कमलको खोला देगा, बच्ची माणिक सबसे उमदा है, चौर देवताचीको दुर्तम के । १८५।

जो माणिक दूरसे चागके समान देखलादू देवे, उसकी वंग्रकान्ति कहते हैं चौर उस माणिकके दारा सव-प्रकारकी सम्यत् हासिल होती है। १८८६।

E.

183. That padmardga which, on being east into a quantity of milk a hundred times its bulk, makes the white mass one entire sheet of red, or sends out a red flame, is nonpareil.

184. That padmaraga which, like the sun, can destroy even Egyptian darkness, is supremely excellent.

185. That padmarága which, when placed on the lotus-bud, anon makes it blossom, is Perfection's self—and is hardly attained even by the Gods.

186. The padmarága which is perceptible from a distance like a flame, is entitled vansakánti,—it leads to wealth.

অভ্যাদ।

বে পদারাগ স্বীয় পরিমাণের শতগুণ হুদ্ধে নিকিপ্ত হইরা সমুদায় হুগ্ধকে লোহিতবর্ণে রঞ্জিত, অথবা লোহিত বর্ণ শিখা উন্গীবণ কবে, সেই পদারাগ অতি উত্তম বলিয়া প্রদিদ্ধ। ১৮৩।

যে পদারাগ অতি প্রগাঢ় অন্ধকারেও দূর্য্যের ভায় আভা প্রকাশ কবে, তাহা অতি শ্রেষ্ঠ। ১৮৪।

যে পদ্মরাগ পদ্মের কলিকার উপর স্থাপন করিবামাত্র তাহা তৎক্ষণাৎ প্রক্ষুটিত হয়, সেই পদ্মরাগই দর্ম্ব-শ্রেষ্ঠ, এবং দেবতাদিগেরও ছুর্নত। ১৮৫।

যে পরাবাগ দূর হইতে জ্বন্ত অগ্নির শিথার ভাগ্ন দুখ্য-মান হয়, তাহাকৈ বংশকান্তি কহে, এবং তদ্বারা সর্ব্ব-প্রকার সম্পত্তি লাভ করা যায়। ১৮৬।

मूचस् !

नीलीरसं दुग्धरसं जलस्वा

ये रझ्झयन्ति दिश्चतप्रमाणं।

ते ते यथा पूर्वमितप्रशसाः

माणिकास्य समाख्याता ऋष्टी दोषा सनीयरिः। जन्नणं क्रममस्त्रेषां वस्त्रामि यक्षतो दिश ॥ १८८॥ दिस्हायत्व वीरूपतं सम्मेदः धर्करन्तवा। समोभन कोजिनस्र सद्दर्शसामिशस्य वे ॥ १८८॥

सीभाग्यसम्पत्तिविधानदायका: । १८७ ॥

तर्जमा।

जो माणिक चयने प्रमाणिक दोशो गुण नीलरङ्ग छा।
चीर दुध चयवा फकत, जलमे डालदेनेचे दूझी तिन
चित्रोंको लालरङ्ग कर दें, तो दर्जे बद्र्जे वेदतर हैं,
चर्यात् नीलरङ्ग जलको सुख करनेवाला चौमल
दर्जेका माणिक हैं, चौर दुधको सुख करनेवाला दोयम
दर्जेका माणिक हैं, चौर फकत् अलको सुख करनेवाला
चेयम दर्जेका माणिक हैं। चौर यह तिनो माणिक
दीलतके कारण हैं। १८०।

रत्नपारची पिराउतीने माणिकका जो चाट किसिमका चयेव कहा की उस्की तपसीलवयान किजाती है। १८८०।

चयव कहा है। उसका तपनालवयान किजाता है। उद्योगना हिच्छायत्व, विरूपता, मग्गेट्र, यहाँर, चर्जामना

कोषिस, जल भीर धूम यही माटिकिकिमिमका स्रो^{हे व} हमेसा माणिकमे देखा लाय। १८८१

187 All those padmaragas that, on being thrown into a quantity of milk or of water pure or blue two hundred times their bulk, crimson the liquid, conduce to prosperity though they differ among themselves as regards worth

188 I shall now describe the eight bad properties of rubies, which have been enumerated by the authorities.

189 Dwi-chchhdyatwa, virápatya, samveda, karkara, asovana, kokila, jara, and dhumra, are the defects commonly found in rubies

অহ্বাদ।

যে দকল পদ্মবাগ স্বীয় পবিমাণের দ্বিশত গুণ নীলীবদ, ছগ্ধ অথবা জলেব মধ্যে নিদ্দিগু হইলে উল্লিখিত বস্তুত্রথকে লোহিতবর্গে বঞ্জিত করিয়া তুলে, তমধ্যে পূর্ব্ব পূর্বপ্রলি প্রব প্রপ্রলি অপেকা অধিক প্রশস্ত এবং সমুদায়গুলিই সম্পত্তিকাবক। ১৮৭।

বত্র পরীক্ষকেবা মাণিক্যেব যে আট প্রকাব দোয নির্দ্দেশ কবিয়া গিয়াছেন, সেই অউবিধ দোযেব নাম ও লক্ষণ ক্রমণঃ বিশ্বত করা যাইতেছে। ১৮৮।

ছিন্তায়ত, বীরূপত্ব, দড়েদ, কর্মন, অণোচন, কোকিল, জন্ত ও ধূত্র এই অভীবিধ দোব সচরচির মাণিক্যে দৃষ্ট হয়। ১৮১।

म् जम् ।

क्षायाद्वितथसब्बन्धात् दिच्छायं वसुनाशनं। वीरूपं विषद्त्तेन गाणिक्येन परामव, ॥ ९८० ॥ सभोदो भिद्रामित्युक्त शस्त्रघातविधायनं। कक्षेर कक्षेरायुक्त पशुवसुविनाशकत्॥ ९८९॥

कक्षर कक्षरायुक्त पशुवन्युवनायकत्॥ १८९॥ इस्ये नेव समाजिप्त नस्ववीपुटसुच्यते । स्योभनं सम्रदियं गाणिकं वज्जवःखन्नत ॥ १८२॥

तरजमा।

जिस् माणिकमे दोिकिषिमकी छाया निक्ले, उसको दिक्हाय कहते हैं, दिक्हायका माणिक यन्भुको नाम करता है, जिस् माणिकमे पद्योक पात्रोका निमान होए. उसको बोरूप प्रयोग कहते हैं, बीरूप माणिक मालीकको सब आगे हार देता है। १८०।

जो माणिक एकिकतमे टुटा लिए है, मगर भन्नभाव मालुम होता है, उस्की सम्मेद खयेव कहते हैं, सम्मेद माणिक मालीकजो श्लाघातके भयसे छुटा निर्ध सक्ता। माणिकमे जो कङ्करसा देखा जावे, उसे कर्कर कहते हैं, कर्कर माणिक, पशु खीर बन्धुको नाम करता है। १८९।

निष्माणिको दुधके गमान मानुम चीता हो, उनको अयोभन अयेव कहते हैं, अयोभन माणिक बड़ा दुध-रायी है।१८२।

190. The padmardga which emits a two-fold shade is called a dwi-chchhdya. A dwi chchhdya ruby is the death of friends. That ruby which bears a mark like a bird's foot, is called a virápa. A virápa gem always brings humiliation to its master.

191. A samveda ruby is one which shows a mark like a rift. This gem renders its owner liable to blows from a weapon. A karkara ruby bears in its bosom a gritty fragment. It causes the death of friends and is also fatal to domestic beasts.

192. That padmardga which naturally appears as if it were immersed in milk, goes by the name of asovana; this gem is the source of a multiplicity of evils.

অমূবাদ।

যে প্রবাগ হইতে দ্বিবিধ ছাষা নির্গত হয়, তাহাকে দ্বিচ্ছাব বলে, দ্বিচ্ছায় পদ্মবাগ বন্ধুনাশক, যে মাণিকে পদ্মীর পদ্যচিহ্ন দৃষ্ট হয়, তাহাকে বীরূপ বলে, বীরূপ মাণিক্য স্বামীকে দর্বত্বে প্রাভূত কবে। ১৯০।

ভদ্নভাবকে সম্ভেদ বলে, সম্ভেদদোষাপ্রিতমাণিক্য-স্বামী শব্রাঘাতেব ভব হইতে মূক্ত হইতে পাবেন না, পর্ম-রাগেব মধ্যে যে কর্ম্বল (কাঁকব) দৃষ্ট হয়, তাহাকে কর্ম্বল বলে, কর্ম্বরুক্ত পদ্মরাগ পশু ও বন্ধুবিনাশক। ১৯১।

পদ্মবাগকে ছুদ্ধে অভিষিক্ত করিলে যেন্দ্রপ আকার ধাবণ করে, স্বভাবতঃ যে পদ্মবাগ তদ্ধপ, তাহাকে অশোভন বলে, অশোভনদোষণানী পদ্মরাগ বহু ছুঃখের আকর। ১৯২। · मूचस्। मध्विन्द्रसमच्छायंकोकिलं परिकौत्तितं।

चायुर्वेषोयशो चित्त मदीपं तद्म धारयेत्॥ १६३॥ रागडीनं जर्दं प्रोकं धनधान्यविनाशकत्।

रागधान जद प्राक्त धनधान्यावनाग्रकत्। धूम्रं धूम्रधमान्नारं वैद्युतं भयमावधेत् ॥ १८८ ॥ धूहगृदोषग्रतो निन्द्या मणयो मूल्यवर्जिताः। खिष प्राप्ता न ते धार्या एडे शोभनमिन्द्यता ॥ १९५॥

तर्जमा।

जिस् माणिकमे सहदने छिटेके समान हो, उस्की कोकिल खरेन कहते हैं, कोकिन माणिक उमर, दौलत चौर नामरीको नाम करता है। इस कारण ऐसा माणिक कभी पहेरना मनासिफ नहिं। १८३।

को माणिक रहदार निर्हे, उमको जद कहते हैं। जह चयेवयुक्तका माणिक धन चौर धान्य नाग करता है। धूर्य ऐसे रक्तके माणिकको धूम कहते हैं, धूम चयेवका माणिक विज्ञी गिराता हैं। १८९।

जी सब खयेब उपर बयान क्रियाये, यही सब खरेब दार माणिक नेषायेन, खरेबी खीर निन्दाके योग हैं।

दार माणिक नेषायेत् अवेदी श्रीर निन्दाके योग षः श्रीर वज्जतकम किमत, एसे माणिक सुप्त जिन्तिसेमी अपूने भावाद बाक्षेत्रेनाले कभी अपूने पात्र या मकानसे ना रखेता। १९५।

193 The mark in a ruby which looks like a drop of honey, is called a *lokila* A *lokila* ruby is inimical to life, wealth and fame, and must be shunned

194 The quality of being discolored is called jara A jara padmaraga causes loss of wealth The color of a padmaraga which looks like smoke, is called dhumra * A dhumra colored padmaraga renders one liable to lightning stroke

195 The above mentioned rubies are worthless and permicious, and should never be treasured up, even were they to be had for the gathering

অভ্বাদ।

প্রনাগেব উপবিভাগে যে মধুবিন্দ্র ন্যায় দাগ লক্ষিত হ্য, তাহাকে কোকিল বলে, কোকিলদোযবিশিক মাণিক্য আয়ু, লক্ষী ও যশ বিনাশ কবে, অতএব তাদৃশ পদ্মবাগ কদ্যচ ধাবণ কবা কর্ত্তব্য নহে। ১৯৩।

পদ্মবাণেব বাগহীনতাকে জড কছে, জডযুক্ত মাণিক্য ধনধান্তাদি বিনাশ কৰে, ধূত্রেব সাঘ বর্ণকে ধূত্র বলে, ধূত্র-বর্ণ পদ্মবাশ বজ্ঞপাতেব ভঘ উৎপাদন কৰে। ১৯৪।

উল্লিথিত দোষাশ্রিত মণি অতিশ্ব নিদনীব এবং মূল্য হীন, এবন্ধিধ বত্ন অনাবাদলভা হইলেও আত্মহিতেজুণণ কদাচ তাহা গৃহে বাধিবেন না। ১৯৫।

^{*} Literally smoke

मूचम्।

ग्रोभादितयवन्तो ये मणयः चतिकारकाः I

उभयच पदं येवा तैरेव स्थात् पराभव: **॥ १८**६ ॥ ये कर्कराश्चिद्रमलोपदिग्धाः

प्रभाविसुक्ताः पक्षा विवर्षाः ।

न ते प्रश्ला मणयो अवन्ति समासतो जातिगुणैः समस्तैः॥ १८७ ॥

दोषोपसृष्टं मिषमप्रवोधाद

विभक्तियः अञ्चन अञ्चिदेशं।

तं बन्धुदु खाय सबन्धुवित्त-नामादयो दोषगणा भजन्ते ॥ १८८॥

सर्जमा ।

जिस् माणिकको शोभा दोकिसिमकी है, अर्थात् कभी कोड रङ्ग, और कभी किनि तरहेका देखलाइ देता हैं। वह वज्जत्ही लोग्यान करनेवाला ही और जिस्के दो जगडमे पचीके पाचीका निशान हो, उसका हार्नेका कारण है। १८६।

की माणिक सर्करा अर्थात् कर्करदार, हेंदा अर्थात् केदवाला, मलिन, अर्थात् मवला, प्रभाषीन, अर्थात् दीप्ति-चीन, कर्क म अर्थात् खुर्थरा, और विवर्ण अर्थात् वेरफ. रें ना माणिक चगर उत्तम जात, श्रयवा श्रीर ग्रुणोसे भूषित

हो। चेकिन कभी चाच्छानहि । १८७ **।** थगर कोइ याट्मी अज्ञान चौर लाइन्मीसे सर्वेवी

माणिक पहेरे, तो जरुर उस् आद्मीको भाइ, और दीलत वगैरक्के नामका दुखभीग कर्ना होगा ।१८८ ।

196. Those rubies which send out a two-fold shade, bring about loss; and those which are marked with a bird's foot in two several places, are the cause of defeat.

197. Those which bear gritty fragments and are indented, dirty, lack-lustre, rough and discolored, are certainly unlucky, although they may be otherwise good and may belong to a superior caste.

198. If through ignorance, a person happens to wear a defective ruby, loss of friends, destruction of wealth et cetera, are the inevitable consequences

অহুবার।

বে দকল মণিব শোভা দ্বিবিধ, তাহাবা অভিশ্য ক্ষতি কাবক, এবং যাহাদেব ছুই স্থানে পক্ষীব পদ চিহ্ন থাকে, তাহাবা প্রাভবেব কাবণ। ১৯৬।

যাহাবা কর্ক বযুক্ত, সচিহদ্র, মনিন, প্রভাহীন, কর্ক শ ও বিবর্ণ, তাহারা উত্তমজাতি বা অন্যান্য ওণসমূহে ভূষিত হুইলেও কুদাচই প্রশস্ত নহে। ১৯৭।

যদিকোন ব্যক্তি অজ্ঞানতঃ দোবদূষিত মণি ধাবণ কৰে, তাহা হইলে সে ব্যক্তিকে অবশ্যই বন্ধুবিতনাশাদি দুঃধ ভোগ কবিতে হইবে। ১৯৮। मूचम।

सापत्नामध्येऽपि कताधिवासं प्रमादहनावपि वर्त्तमान ।

प्रमाद्द्यनावपि वक्तेमान । न पद्मरागस्य महाग्रुणस्य भर्तारमापत ससुपैति काचित्॥१८८॥

दोषोपसर्गप्रभवाख ये ते

नोपद्रवास्त समभिद्रवन्ति । गुणै समुखी मकतिरुपेत

य पद्मरागं प्रयतो विभक्ति॥ २००॥

चर्डाल एकोऽपि यथा दिजातीन् पमेत्य भूरीनिप क्षन्ति यहात्। तथा मणीन् भूरिगुणोपपद्मान्

यक्रोति विद्रावितं विजाति ॥२०९॥

तर्जभा।

जिस्के मकानमे वेश्वयेवी माणिक रहे, वह श्राहमी श्वार सब्दा चौतरफा दुस्मनके रहनेवाले मकानसे रहे, श्रायवा वज्जत् तरहकी तक् निपमे पड़े, तोभी उस्को कोर श्वाफत पकड़ नहि सिक्षा १८८।

जी चादमी मर्वग्रणसमान्न चार्यात् तामाम वस्की मराज्ञया एक माणिक परेरे, चौर उसके साथ भी माणिक चर्यवदार परेरे, तो उस्का कुच सोर्यान निष्णी मका। २००।

किसि परिष्ठतेकि मतसे एसाभी कहा है, के एक पाएडाच जिस् तरहसे भी हाजार ब्राह्मणको दूपित करदेता है, उसी प्रकारसे एक विजाति रत्न भी भी सर्वेष्ठणमन्यद्र रत्नको दूपित कर्ता है। २०१।

199. The man who keeps in his house a sterling padmardga, can with perfect safety, constantly live in the midst of enemies, and is impervious to the attacks of adverse fortune

200. He who wears a padmarága of matchless virtues, need not apprehend any mischief from the foul touch of bad padmarágas without number.

201. According to some, as the contact of a single chanddla* suffices to contaminate ever so many Brahmins, even so one impure gem serves to pol lute pure gems ad infinitum

व्यक्तांच ।

যাহাব গৃহে দণ্ডণ পদ্মৰাগ থাকে, দে ব্যক্তি যদি
দৰ্ম্বদা শত্ৰু পৰিবেষ্টিত স্থানে বাদ কৰে, অথবা নানা
প্ৰমাদে পতিত হয়, তথাপি কোন আপদ তাহাকে কথনই
আক্ৰমণ কৰিতে দমৰ্থ হয় না। ১৯৯।

যে ব্যক্তি দর্ববেওণদম্পন একথানি পদ্মবাগ ধারণ কবে, দমস্ত দোষদূষিত শত শত পদ্মরাগেও তাহার অনিষ্ট দাধন কবিতে পাবে না ।২০০।

কাহাবও মতে এক জন চণ্ডালেব নহবাদে যেমন শত সহস্র ব্রাহ্মণ দূষিত হইষা থাকেন, সেইপ্রকাব একথানি বিজাতি রম্বত শত শত সর্ব্বপ্রণসম্পন্ন বয়কে বিদ্রাবিত কবিতে সক্ষম হয়।২০১।

^{*} The generic name for a man of the lowest and most despised of the mixed tribes, born from a Sudra father and a Brahmin mother.

मृशिमाचा ।

218

मृचम्। जात्मस्य सर्वेऽपि मणेने जात

विजातय: सन्ति समानवर्णाः। तथापि नानाकरणायमेवं

भेद्प्रकारः परमः प्रदिष्टः ॥ २०२ ॥ गुणोपपन्नेन संदाववद्वो

गुञ्जाफलप्रमाणस्य दश् सप्त विग्रञ्जकान्।

मणिने धार्यों विग्रणो विज्ञात्यः । न कौसुभेनापि म्हावयद्वं विदान् विजातिं विभ्रयात् क्हाचित्। १०३ ।

पद्मरामसुलयित यदापूर्वं महाग्रवः। २०४।

पहेर्ना मनासिफ निह । २०३।

तर्जमा ।

भव तरहसे विज्ञाति मणि कभी सुजात मणिके गमान वर्ण हो निष्ठ सका, वज्जत् तरहके खानीके भेदसे रहके हिनाबसे बोहा करक होता है। २०२।

विज्ञाति सणि सब तरक्षे ग्रुणसम्पन्नमणिम्हित एक जगक जदेयाने सेभी पहेर्ना मनामिष निक के, पण्डित स्रोग ककेते के, विज्ञातिमणि कीस्त्रमणिके मातमेभी

गुद्धाप्तविक्षे समान माणिक घोजनमे तिन, घयवा गान, या दम गुद्धाके बरावर को चका की, उसमेसे को लिख्कद्र जादा घोजनी कोगा, वक गुमने ज्यादा की १२०४।

202 The colors of defective rubies are neverlike those of good rubies, yet to a certain extent they differ one from the other in color in accordance with their respective mines

203 Bad rubies should never be worn, although set along with the best rubies—nay, should they happen to be in company with Kaustuva* itself

204 Padmarágas which resemble in shape a gunja berry, may weigh three, seven or ten gunjas, and the heaviest is the most precious

অভ্ৰাদ।

সর্ব্ধপ্রকাব বিজ্ঞাতি মণি কথনই স্কৃজাত মণিব সমান বর্ণ প্রাপ্ত হয় না, কিন্ত নানা আক্রতেদে তাহাদেব বর্ণগত কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ভেদও লক্ষিত হয়।২০২।

বিজ্ঞাতি মণি সর্ব্ধপ্রকাব গুণসম্পন্ন মণিব সহিত একত্র সম্বন্ধ হইলেও ধাবণ কবা কর্তব্য নহে, এমন কি পণ্ডিতেবা বলেন, বিজ্ঞাতি মণি কোন্তভমণিব সহিত আবন্ধ হইলেও ভাষা পবিভাগি করিবে। ২০০।

ওঞ্জাফলের সমান আকাববিশিক্ট পল্লবাগ ওজনে তিন, সাত ও দশ গুঞ্জাপরিনিত হইতে পারে, তল্মধ্যে যাহা ওজনে যত অধিক ভাবী হইবে, তাহা তত ওপশালী বলিয়া প্রসিত্ত। ২০৪।

[•] The name of a celebrated pewel obtained with thirteen other precious things at the churn ng of the ocean. It was suspended on the breast of Krishna.

म्सम् ।

कोषुकोलफलाकारो चार्याष्टी चितुष्त्रकान्।
पद्मरागसुलवात यथापूर्व मचाग्रकः । २०५ ।
यररीकलतुल्ली यः सूरिहर्नवमायकः ।
धाचीफलसम्लिमहिंमहिंमतिद्यष्टमायकः । २०६ ।
तथाच्रफलतुल्ली यो निक्क्त्रिकेतमायकः ।
तास्युलीफलमानो यचतुल्लिहेम्सतोलकः ॥ २०० ।

सरजमा ।

क्रष्टुफल पार्थात् स्थाकुलको समान बद्दा माणिक भोजनमे बार, भाष्ट्रमा भाट, भाषता दी ग्रुष्ट्राणे प्रमाण भौता भे । २०५। जिस्का कद वयेरके समान भी, उसका राज भोजनमे

जिस्का कर बयरक समान इ, उसका राज आजना बार, द्या चौरनी मापा है, जो टेक्ट्नेमे चामले के पबके समान है, वह घोजनसे विश्व, विश्व चयवा पोल सापानक हो सक्ता है । २०६।

रीष्ट्राचके फलके समान माधिक तिन, भशवा है। अधरा एक माधा डीए, ताम्बूडीफलके समान की माधिक डीए, वह भीजनमें चार, तिन, दी भीर एक तीला डी सहा है। २०७।

205. Padmarágus resembling the fruit of Kroshtu (Terminalia Catappa), may weigh two, eight or twelve guniás.

206. That padmarága which is plum shaped, weighs nine, ten or twelve máshás,* that resembling the fruit of the Emblic Myrobalam in shape, weighs sixteen, twenty or thirty máshás.

207. A rudrákshya-shaped† padmarága weighs one, two or three máshás, a támbuli-shaped‡ padmarága weighs from one to four tolds.

অমুবাদ।

শেষাকুলেব ন্থায় আকাববিশিক পদ্মরাগ ওল্পনে বার, আট ও চুই গুঞ্জাপবিমিত হয়।২০৫।

যাহাব আকাব গামাত্ত কুলেব তাব, তাহাব তাব বাব, দশ ও নয মাযা; যেগুলি দেখিতে আমলকীফলেব তাব, দেগুলি ওজনে ত্রিশ, কুড়িও যোল মাযা হইবা থাকে।২০৬।

কন্দ্রাক্ষনসদৃশ প্রবাণেব ভাব তিন, ছুই ও এক মাবা; তাছুনীফনসমানাকাব প্ররাগ ওজনে চারি, তিন, ছুই ও এক তোলাপরিমিত হয়। ২০৭।

^{*} A particular weight of gold, = five brishnalas = 1sth suvarna (the weight in common use is said to be about seventeen grains Troy) Williams

[†] The berry of a kind of tree, Eleocarpus Ganitrus ‡ The berry of a plant of the same name

मूचम् ।

विश्वीफलसमाकारो वस्तपद् द्यतीलक ।

श्वत पर प्रभाषिन मनिन घन लभ्यते ।

यदि लभ्येत प्रखोन तदा सिद्धिमवागुयात् १०८ ।
केविज्ञास्तरा सन्ति आत्याना प्रतिरूपका ।

स्वेतात्र प्रथलेन विद्यालानुपलज्ञयेत् । १०९ ।
स्वेतप्रदेशो न च यो विभाति

यो वा प्रमुद्ध, प्रजहाति दीक्षिं।

या वा प्रमृद्धाः, प्रजचात दाप्ति चाक्रान्तमूद्धीं च तथाङ्गुलिस्या

य कालिका पार्श्वगता विभक्ति । तं स्रचिम जातिविद्योनस्त

दूरात्तरजेत् भूमिपति' खुलस्यं । ५१० ।

तर्जमा ।

जिस्का कर विस्वप्तवे समान भीए, उस्का श्रीजन दर, जाट, कय तीना भी मका भी, इन्हें च्यादा बद्दा श्रीर प्राचनमें भारी माणिक पाया निर्कलाता लेकिन किस भाग्य उन्तके नसीवसे इस्से च्यादा श्रीजनका माणिक मिने, तो वस्त सामा वस्तुमें विद्विको शासिवकर गक्ता भी । २०८।

केत्ने विजाति रह्न सुझाति रह्नके ममान दिलबर आर्थात् मने। जुडोते हैं, सेकिन परिष्टत लोग इन् किशिमके रह्नके। त्यागकरनेके। सहते हैं। २०१।

जो माणिक चमकदार घोकर प्रकाश ना पाने, भीर जिल्लो कापदेसे साम कर्ने ए पेने कि ए सी चमक कम ही जाय, भीर दो चहुनी चे पकदकर उठाने से कालाय देखलाइ देवे, ए वे किसमका माणिक क्रांचम चर्यात सदेश थीर दिवाति कराता है, उस्की सुप्त पाने सेमी ए देशना माणिक क्रांचम चर्यात करी करी है।

208. That padmardga which is like a vimba,* weighs six, eight or ten tolds—this is the maximum of weight. If any man by good luck happens to obtain a heavier padmardga, he will succeed in whatever he undertakes.

209. Some vicious rubies are as beautiful as good ones; but the authorities advise us to shun them carefully.

210. That pdmarága which is lack-lustre, or which loses its former brightness on being rubbed by cloth, and which betrays a dark shade on its sides on being held between two fingers, is a false and vicious gem, and should never be worn even when it is selling for a song.

অনুবাদ।

যাহার আকাব বিশ্ব (তেলাকুচ) ফলেব তুল্য, তাহার ভার দশ, আট ও ছ্ব তোলা হইযা থাকে। ইহাব অধিক রহদাকাব বা গুক্তভার পদ্মরাগ পাওঘা যাব না, যদি কোন পুণ্যবানের ভাগ্যে ঘটে, তবে তিনি সর্ব্ববিধ্যে দিদ্ধি লাভ করিতে পারেন। ২০৮।

ক্তকগুলি বিজাতি বত্ত স্থজাতির ভাষ মনোজ হইবা থাকে, কিন্তু পণ্ডিতেবা তাদৃশ বত্তকে অতিবত্তপূর্বক পরি-জাগা করিকে বিধি দেব। ২০১।

যে প্রবাগ চাব্চিক্যশালী হইযা প্রকাশ পায না,
যাহাকে বন্ত্রাদিবাবা উত্তমক্রপে মার্চন করিলে পূর্বর প্রভা পরিত্যাগ কবে, হুইটা অঙ্গুলিবাবা ধারণ করিলে যাহার পার্বে কালিনা দৃত হয়, সেই প্ররাগ রুত্তিন, বিজাতি, তাহা অতি যুলত হইলেও কথনই ধারণ ব্রিবে না। ২১০।

[·] The bright-red gourd of a plant (Momardies Monadelpha)

मूचम् ।

श्वप्रणयाति चन्हे गाणाया परिवर्षयेत् । सुनातकरमुत्ये न विखेद्वापि परसारं । २११ । ष्टपोऽप्यत्यन्त्रयोभावान् गरिमाणं न सुष्यति । सृज्ञेय. सुद्वजातिस्य ज्ञेयासास्ये विजातय.॥ ११२ । कुर्यवन्दं तथा वद्य विसुत्यास्येन केनित्तां। न यक्तं लेखनं कर्त्तं पद्मरागेन्द्रनीलयोः॥ २१३ ॥ यन्मूल्य पद्मरागस्य मगुणस्य प्रकीर्त्तं। तावन् मूल्यं तथा सृद्धे कुरुविन्दे विधीयते । १९४ ॥

तर्जमा।

कोइप्रकारके परीचा कर्नेसेभी श्वार सन्देश दूर ना होता, ग्रानके यन्त्रपर धिस्नेसेशी फरेवी श्वीर श्वास्त माणिकका हाल मालुम हो जायेगा, श्ववता श्वास्त माणि-कसे धिस्नेसे फरेबी माणिकका हाल मालुम हो जायेगा, श्रावीत कट जायेगा। २११।

चो माणिक यिन्नेसे चौरभी उमदा दो चौर चोजनमें कम ना दोए, वद्दी माणिक चासन है, उसके सेवाय सब माणिक विज्ञातिमें समार किये गहे हैं। ५१२।

कुर्विन्द भीर होरेके सेवाय किसि जातका रह माणि-कको कट नहि सक्षा। १९३।

मळाणमम्य सं चर्चात् सव तारिकोश्चे भरा ज्ञया माणि-कवा जो मूल छोता छै, वही किसत वेश्वयेव कुर्दावन्द-कोभी धोत से । २९८।

211. Should other tests fail in dispelling doubt, the reality or otherwise of a padmardga will be indubitably ascertained by rubbing it upon a whetstone or with a padmardga of tested genuineness. A false padmardga will receive scratches from the process.

212. That padmarága which shines out the more, the more it is rubbed, and which is moreover not light, is a pure gem; the others are impure.

213. Excepting kuruvinda and diamond, no gem can make scratches upon either the padmarága or the indrantla.

214. A genuine kuruvinda is worth as much as a padmarága furnished with every quality.

অমুবাদ।

অন্যান্য পরীকাষারা সন্দেহ দূর না হইলে শাণ-যক্ত্রে
ঘর্ষণ করিলেই প্রবাগের কুত্রিমাক্তত্রিমর প্রকাশ পাইবে,
অথবা স্থপরীক্ষিত অপব একথানি পদ্মরাগের সহিত পরস্পার ঘর্ষণ করিবে, তাহা হইলে কৃত্রিমথানি অঙ্কিত
হইবে। ২>>।
•

বে প্ররাগ অত্যন্ত ফুট হইলে অধিকতর শোভা পায়, এবং পরিমাণে লঘু না হয়, সেই পন্মরাগই শুদ্ধজাতি, তদ্বৈপরীত্ত্যে বিজাতিমধ্যে পরিগণিত হয়। ২১২।

কুরুবিন্দ এবং হীরক ভিন্ন অপর কোন জাতীয় রত্ন পুনারাগ ও ইন্দ্রনীলকে অফিত করিতে সমর্থ হয় না। ২১৩।

সর্ব্ধগুণসম্পদ প্ররোগের বংপরিনাণে দ্ল্য নির্দ্ধিন্ত হয, বিশুদ্ধ কুরুবিন্দেরও সেই পরিনাণে দ্ল্য হইয়া থাকে।২১৪। समुषे कुक्तिन्दे च यावन्मूल्य प्रकीर्त्तित । तावन् मृल्यचतुर्यायचीन स्यादै समस्यिते ॥ ५१५ ॥

यायनमूखं समाखातं बैखवणे च त्ररिम । तावनमूखं समाखातं बैखवणे च त्ररिम ।

वर्णरीप्रायपद्म हि मणिरतं प्रशस्ति । तास्यागोपद्मि भ्रष्टो मणिर्मूत्यात् प्रश्रीवते ॥ २९७ ॥

भन्टेडो यदि जायेत क्षत्रिमें सडजेऽपि वा। जन्योन्य धर्पेटेट्रबं क्षत्रिमं तहिमिद्यते ॥ ११८॥

तर्जमा ।

वेश्वयेव कुरुविन्दको जेत्ना टाम घोगा, चौगन्धिकका हाम उस्से चार थाना कम छोगा, खर्चात् कुरुविन्दका हाम खगर एक रोपया छोए, तो सौगन्धिकका हाम बारे

आना कोगा। २९५। वैद्यवर्ण माणिकका जो दाम कोगा, ऋदूवर्ण माणिकका

उससे चार चाना कम होगा। २१६।

सव किसिस्का जवाहेरात् कुट चौर रङ्गसे उमरा
होता है, कौर रक्षिक जरावि करिसे जसका टाइसी कम

होता है, चौर द्रसिक्ष जरामि कमिमे उसका दामभी कम हो जाता है। १९७।

चगर किनिरलको समसक्तर सक् ययदा डोण तो णक साम्रा रलसे घिमना चाडिए। तो स्कृदारल चुर डो जाये गा। २१८।

215. A saugandhila is worth three-fourth the price of a luruvinda.

216. A súdra padmarága is, according to the authorities, worth three-fourth the price of a Vaisya padmarága

217. All gems derive their value from their lustre and their color; accordingly, gems which are found wanting in these two essentials are of small worth.

218. When doubts arise as to the reality of a gem, the infallible test is to rub it with another gem of tested worth. A false gem will be reduced to fragments under the process.

अस्टाम।

বিশুদ্ধ বুরুবিলের যত মূল্য হইবে, স্থান্ধিকের মূল্য তাহার তিনের চতুর্বাংশ হইয়া থাকে। ২১৫।

পণ্ডিতেরা বৈশ্ববর্ণ পর্যবাধের চতুর্বাংশহীন দ্লা শুদ্র-জাতি পররাধের দ্লা নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ২১৬।

দর্বপ্রকার রক্ব দীপ্তি ও বর্ণাসুদাবে প্রাশস্তা লাভ করে, দেই বর্ণ ও দীপ্তি হইতে ঈবংপরিমাণে এই ইইনে তাহার মুন্যও অন্ন হইবে। ২১৭।

যদি কোন রয়কে হতিম বদিয়া দদেহ জন্মে, তবে একথানি অহতিম রয়ের সহিত ঘর্ষণ করিবে, তাহাতে হতিমধানি চুর্গ হইয়া যাইবে।২১৮। कि 228 मिलमाला।

पूजम।

सब्बेल चणसम्पूर्ण पद्मराग्ने गृहे स्तिते।

श्वासमेधफलं तस्य वित्तनायुर्जयं लमेत्। २१८।

तर्जमा।

सब्बेल चणाक्रान्त एक पद्मराग धर्यात् माणिक सकानमे

रहनेये ध्यमेधयणका फल लाम खनायास प्राप्त होता

है, और उस्ते धन, उमरकी हिंह और जय लाम

होता है। २१८।

219 The treasuring up of a padmarága furnished with every perfection is as meritorious as the celebration of the Aswamedha* jajna, and leads to wealth, success and long life

व्यथ्वाम ।

সর্বলক্ষণাক্রান্ত একথানি প্যবাগ গৃহে থাকিলে অগ্নসেধ্যজ্ঞেব ফল অনাযাদে প্রাপ্ত হওয়া যায় এবং তাহাতে বন, আয়ুর্যৃদ্ধি ওজ্ঞ্য লাভ হয়।২১৯।

ইতি পলবাগ।

[•] The Horse Sacrace a celebrated ceremony the antiquity of which reaches back to the Ved e period. Yiel bymns 162 and 163 in the first Mandals of the Rig Veda. In later times its efficacy was to entitle the sacrafteer to displace Indra from the dominion of Swarga. In it, the horse was generally, if not always immolated.



THE RUBY

Its Properties

HE Ruby is perhaps the hardest substance known next, of course, to the Diamond It is a variety of the Corundum, which name (de rived from the Sansl rit I orund,) is used to denote the class of aluminous stones generally, and particu larly a species or subdivision of that class Besides the crystalline form (which is generally rough and deformed), the Corundum appears in compact masses and in aggregates of grains of different sizes All the different varieties of the Corundum derive their names from their colour Thus, the crimson red Corundum is called the Oriental Ruby, the colourless, white Sapphire, the azure blue, Oriental Sapplire, the indigo blue, indigo Sapplire, the violet, Oriental Amethyst, the yellow, Oriental Topiz &c &c &c Count Bournon was the first European who had classified the Corundums into different heads (in 1802) But the Lastern nations have however adopted the different designations for several centuries past. The first and moct important variety of the Corundum is the Rubythe coarsest being the Emery, which is used for polishing metals gems, marble &c It is sometimes more valuable than the Diamond, when it is of a large size, good colour and free from defects. Its specific gravity is from 3 9 to 4.1. The electricity which it obtains by friction continues for a considerable time. This stone is composed of alumina and coloured by traces of metallic oxides, chrome, &c. Like the other varieties of the Corundum. it is infusible by itself, but together with a flux, melts with difficulty into clear glass. It is possessed of double refraction, though not to a very high degree. The system of crystallization to which it belongs is rhombohedral. Its cleavage is basal, that is, it breaks across the prisms with nearly a flat surface. Its lustre is vitreous It loses nothing of its beauty when viewed by artificial light. Its colour varies from the lightest rose-tint to the deepest carmine. The two extreme colours are not liked at all. The most esteemed colour is, what is called by the jewellers, the "pigeon's blood.". which is a pure deep rich red, without the faintest tinge of blue or yellow. The other colours are light-red, white, crimson, peach-blossom, violet, &c. The Ruby is divided into four classes.

1st.—The Oriental Ruby, called by Pliny the Indian Carbunele, is the best favorite and most valuable of all Its chemical properties have been described under the general heading. Theophrastus speaks of it as being incombustible and having the appearance of a burning coal when held up to the sun. Hence the name "Anthrax" (or "live coal.")

given to it by the Greeks. The ancient writers, both of the East and West, have described it as having the power of shining in the absence of all light. The fact is, that the Ruby can be rendered phosphorescent by exposing it to sunshine for sometime or by putting it in a close crucible, heated to a certain degree.

2nd.—The Spinel Ruby is of a fine lively red hue, with a cinnam on tint about it, but is very inferior to the true Ruby in brilliance. It is found in granular lime-stones; is transparent and translucent and receives its red tint from chromic acid. It belongs to the cubic system of crystallization and is almost found in octrahedral crystals. It does not acquire electricity either by friction or heat; is possessed of simple refraction and is infusible before the blow-pipe. It is distinguished from the Ruby by its peculiar formation and inferior hardness. Its specific gravity is from 3.5 to 3.8. It is called by the natives of India the Lal Rumani or the Pomegranate Ruby.

3rd.—The Balas Ruby is of a pale rose-colour and is of the same composition as the Spinel. According to the Persian tradition, the mines of these stones were not discovered until after an earthquake which rent the mountain in two. Their inferior hardness prevented people from taking them as the real Rubles. The ancient Greeks connect the origin of the name "Balas" Ruby with the word "Palatius," as they supposed it to be the matrix or

palace in which the true Ruby was found Probably, thename is derived from the mountain "Ballaheia" in India, which, according to Marco Polo, used to supply this stone. The old French name "Rubin de Balais" adds weight to this assertion The name Balas may have originated from the word "Ballen" or king—the Phrygian name for a certain flery stone. Chardin attributes the origin of the name to "Balachani," the stone of "Balachan" (Pegu)—the Persian name for the Ruby. Some say that the original of the term "Balas" Ruby is the ancient name of Beloochistan, Badakschan or Balaschan.

4th.—The Rubicelle is an inferior variety of the Spinel and is of a yellowish red color.

The Rubies are often found in company with Sapphire, Zircon, oxide of tin, magnetic iron, Topaz, &c. Where Rubies and Sapphires are met with, gold is almost certain to be present.

Where found.

The finest Oriental Rubies come from Burmah, Siam, India and Ceylon. Rubies are also found in Hohenstein on the Elbe, in the rivers Rhine and Danube; Espailly in Auvergne and Iser; in Bohemia, France, Brazil, Australia, Borneo, Sumatra, &c

The most beautiful of these stones are those that come from Burmah. The mines are very strictly guarded and rendered difficult of access to the Europeans. They are a royal monopoly, extreme care being taken to prevent the stones getting out of the country. The excessive fondness of the King for these stones has earned him the title, "Lord of the Rubies" Whenever any particularly large stone is found, a procession is sent with great eclat to meet it. When Pegu, the "father land of Rubies," was annexed to the British Crown in 1852, it was thought that the English Government would be richer by its ac But whether on account of the dangers quisition in the shape of wild beasts that surround the Rubyyielding countries, or some other cause, the Government has been sadly disappointed. The inhabitants of Burmak believe that Rubies ripen in the earth, that they are at first crude and colorless, and that, as they ripen, they become yellow, green, blue and last of all, red-which is the sure sign of perfect ripening The Burmese law prohibits the sale of Rubies in the market and makes it compulsory on the discoverer of stones of a certain weight (100 ticals) to make them over to the Government, under pain of death. To avoid this dangerous law, the finder often breaks up the large stones into small pieces; thus causing more loss to the Government than he gains. The Rubies that come out of Burmah must be either stolen ones or passed out through the agency of private individuals.

The Rubies that come from Ceylon are generally found in the heds of rivers.

Some pretty looking Rubies have been found for many years in Badakshan, a part of Tartary. Some were also found on the slopes of the Oxus, near to Shushan and Charan. The natives of these places are under the impression that Rubies always occur in pairs. If they chance to find out one, they are sure to conceal it until the other is found, failing which, they will break it in two.

Many Rubies have been found in the gold washings in Australia, but most of them are taken no notice of, being considered as Garnets. Some, however, of very good quality have found their way into the London market.

The Spinel Rubies are found in rolled pebbles in alluvial deposits and the beds of rivers in Cevlon. Ava. Mysore. Beluchistan, and other Eastern countries: in Meronity in Bohemia and in Libenburgen; in the region between Amity and Andover in North America; also in the Ovens River in Victoria and in the Pearl Rivers of New South Wales and other parts of Australia, Blue Spinels are found at Aker in Sweden; also in Torland and Straskan in Moravia: in Antwerp and Ceylon. These are translucent and generally contain three to four per cent. of iron. The Chloro-Spinels or green Spinels are found in the Ural Mountains. Black Spinels or Ceylonites, Jalso called Pleonaste by Hauy.) have been found in Coylon, Bohemia in the River Iser, in the Tyrol, at Andernach on the Rhine. in Russia and in several places in the United States, where also the brown Spinels are found in abundance The specific gravity of the Pleonaste

is from 35 to 38. The principal thing in its composition is aluminum and about 10 per cent of protoxide of iron. It is infusible before the blow pipe and with borax forms into an iron colored glass. The automalite or zinc Spinel is found in Sweden. The white Spinel is found at La Riccinear Rome. Some also come from Brazil mixed with Drimonds.

The Balas Ruby has been described by Marco Polo as being chiefly found in the Balascea or Ballahia (on the upper Oxus,) where they were found below the surface soil, and from which place, he had, in the latter half of the 13th century, made a collection

Mode of Cutting

THE Ruby is cut by means of Drimond powder on an non wheel or shaif, and polished on a copper one with tripolis and water. In the East, Corun dum is used for cutting, but the work is not flat and sharp. The usual form of cutting is the mixed or half brilliant, although silly and imperfect stones are often cut en cabechon—a cut by which the stone receives one or two convex faces, with or without facets at the base. The Asteriated Rubies, that is, those that have a six pointed star across the crystal, formed by a silly imperfection in the gein, are also cut en cabechon and particular care is taken to get the centre of the star as nearly

as possible in the middle of the gem. Such stones, if possessed of good colour, fetch very high price in the market

The Spinel is cut on an iron wheel, with Emery or Diamond powder and polished on a copper one. The form is generally the mixed-cut. The colour of this stone becomes deeper by being heated.

The Ruby, as known to the Ancients.

THE Ruby is spoken of in the book of Job and in the Proverbs, in the Bible. The breast-plate of the High Priest, which was composed of twelve stones, included the Ruby, then known as the Carbuncle. The fact of its having been well known to the ancient Greeks and Romans admits of no question whatever. The Anthrax of Theophrastus and the Indian Carbuncle of Pliny are, beyond doubt, Rubies According to Pliny, the Ethiopians used to increase the lustre of Rubies by steeping them in vinegar for 14 days. Though this process added to their splendour for the same number of months, they were afterwards rendered softer and more brittle. Alian, an nncient natural-historian, relates how a certain widow named Heracles, had tended a young stork and cured one of its fractured legs and how the bird, in token of its gratitude for her kindness. presented her with a Lychnis (Ruby). But the question as to why of all others the Lychnis was selected for the present, is best answered by the

assertion of Philostratus, according to whom, storks were in the habit of placing these stones in their nests as amulets against screents, and there fore as a fitting reward for the valuable services rendered by Heraclea, such a useful thing was presented to her In an account of the statue of the Syrian Goddess (Astarte), Lucian speaks of her, as wearing on her head a gem called Lychnis (lamp stone,) which used to light up the temple throughout the night Epiphanius, speaking of Carbuncle, says, "when worn, it is impossible to conceal it, for notwithstanding whatsoever clothes it may be covered over with, its lustre shows itself outside its envelope, whence it is called Carbuncle" The Oriental nations speak of Rubies and other precious stones as illuminating the place in which they were lept * In China, Rubics have been used from the earlist times for ornamenting the shippers of women and in India, for being set into cups, vases, sword handles or pipe mounts and other ornamental things

Engrarings

Ancient integlies and camees t engraved on this stone, are still in existence, some of which are said



^{*}Tiere as helef exat gill lattat Rubies grow; the lead I seepe taan littat they called lad ly through a lung of cowlung control of the latter has the teachest taccast ally taked mount of the least sollium eileflace where they search for food and; order that the annual more termination is the latter than the latter of the l that fles and meets melt ga ber round them attracted by the ight one we am insects my cit ga serrount it em attracted by iterpose. It appeals the cred that these at ca are so ramalle owing to the rer a sa to be called "the weal of seren k st." it is in base the des us at below the surface, in camen the subject are in rel for a selabore the air acce. Lost these k ods of the sa gard to be executed on a mot fall optic of store.

to have been done, 500 years B. C ,-a period when the Greeks had attained the acme of artistic excellence. A large oval slightly convex stone, of the real pigeon's-blood colour, in the Devonshire parure, has a "Venus Victrix" engraved upon it also exists a full-length figure of Osms in half-relief. Then there are a gorgon's head and a head of Pertinax, engraved on Spinels; and the head of a Bacchanite, upon a Balas. The earliest example of an engraving executed in the Middle Ages, has been discovered in the Spinel of the Marlborough cabinet It is a beautiful stone, 2 of an inch square, upon which is engraved a head in front face, wearing a crown, resembling very much that of Henry VI, as found upon his great seal Italians have left many engravings on the Ruby, amongst which may be mentioned an intaglio, of a head of Thetis, capped with a crab's shell, at present in the possession of the Rothschilds; and a cameo of a head of Scrapis in front face, found in the Hope cabinet of precious stones. Amongst the collection of cameos of our Most Gracious Maiesty, is one having the head of Louis XII, engraved upon a fine stone of considerable size, -- a specimen of the art after the Revival. Dominico dei Camei engraved upon a Balas of the size of a shilling. the integlio portrait of Ludovice il Moro. The Orleans cabinet had a Ruby engraved with an intaglie head of Henry IV, with the date 1593. Chardin who, in 1666, examined a Ruby, amongst the

Crown Jewels of Persia, describe it as being as big as a hen's egg cut in half The upper part of this stone bore the name "Chaic Sophy," cut upon it by its former master who had considerably maired its beauty by so doing Pistrucci executed a beautful front face of Diana on a Ruby, about \(\frac{1}{2}\) inch long

The Price of the Ruby, its Flaus and Defects, Mode of Testing

The jealous care with which the best Oriental Rubies are kept by the King of Burmah, renders them difficult of access to the public and makes them sometimes more valuable than the Diamonds. The ancients put a very high price upon the Rubies In the present day, fine Rubies under $\frac{1}{2}$ a carat, if English cut, cost from £4 to £10, if Indian cut, from £1 to £4

A Ruby of one carat is worth from £ 14 to £ 20 ditto " 25 to " 35 Ditto 11 ditto , 70 to , 80 Ditto 2 ditto ditto ,, 200 to ,, 250 Ditto 3 ditto ditto ,, 400 to ,, 450 Ditto 4 ditto ditto Stones of greater weight than 4 carats, being rare ties, fetch fancy price

Rubies with flaws and specks, or having any silky or milky appearance, either on the table or beneath it or which are too deep or too pale in colour, are now much deprecated in value A pale Ruby of 4 carats might be worth less than £12 It is true

that there are many Rubies in the market but these are of inferior quality and cannot command the same value as the true Oriental Rubies that come from Burmah and Siam

The value of the Spinel and Balas Rubies varies chiefly according to the demand, character and cut of the stones, and sometimes, to caprice and fashion At the present time the value of small Spinels ranges from 5 to £10 per carat.

Medium size of fair color, 20 to £ 40 per carat

Large ... 60 .. £100 ...

As an instance of the uncertainty of the value of the Spinels, a stone weighing 40 carats, clear and of good quality, was sold in 1856 for £400; in 1862, it fetched £80 by public auction, and was lately sold for £240

So is the case with Balas Rubies; for example, a dark rose red Balas of 10 millimetres, square-cut and polished as a brilliant will fetch 300 francs; while a pale rose of like character and size will sell for 20 fiancs only. A specimen of 5 carats will occasionally realize £50. At the sale of the Marquis of Drée, a Ruby of 10 grains sold for £56

In order that the pivots of watches may turn with greater precision, they are set in small Rubies perforated for the purpose; but these small jewels, about the size of millet grains, though very useful, are not of much value, owing to their abundance.

To test a perfect Ruby, it has to be placed on the same sheet of paper on which the fresh blood of a pigeon has been dropped. The perfection of the stone can then be ascertained if it exactly agrees with the blood in color. The Spinels or Balas Rubics have often been passed off as true Rubies: but with any one acquainted with the physical and chemical properties of these stones, the deception would not succeed. The hardness and specific gravity of the true Ruby is much greater than those of the others. An unset stone can easily be tested by taking its specific gravity; a set one would, if a true Ruby, be scratched by Diamond only but would scratch all other stones; if a Balas or Spinel, it would be scratched by a Sapphire. Then the refraction would point out the nature of the stone. In the case of the true Ruby, it would be double (though in a small degree,) but in that of the Spinel or Balas, it would be absolutely simple. The Brazilian pink Topaz is often made to imitate the Ruby by placing it in a crucible with sand and heated till it gets the requisite color. But it differs essentially from the real Ruby in its character. Its specific gravity is from 3.4 to 3.6, whereas that of the Ruby is from 3.9 to 4.1. It is 8 in the scale of hardness, while the Ruby is 9, i. e., next to Diamond, which has the full standard number 10.

The Garnet is sometimes made to pass for the true Ruby. The Garnet, however, pure and brilliant, will appear black and opaque, if held so as to reflect the light directly; while the Ruby would



retain its transparency and true color. Sometimes Garnets backed up by Ruby foils have been mistaken for Rubies. The Parisian traders have recently hit upon a plan by which they can, without the use of foils, give to pale valueless Rubies the best color they should have. They fill up the inside of the setting with Ruby-enamel, which gives a deep tinge to the entire stone enclosed within. The Rubies are also imitated in paste, which can only be detected by touching them with the emery-stone (cote). The artificial gems will appear softer and brittle, inferior in weight and, in some cases, showing silvery air bubbles in the interior. The Rubies are sometimes infected with white spots but these are removed by burning.*

The Spinel is also mistaken occasionally for the Garnet and more frequently for the Jacinth owing to similarity of color. But both these stones are of inferior hardness: while the Spinel would scratch quartz readily, these would, but slightly. Then, the Jacinth has double refractive power in a very high degree, whereas the Spinel has simple refraction

The Marvellous and Medicinal Powers attributed to the Ruby.

Each precious stone was supposed to have been gifted with special powers. The pharmacopæa of

^{*} The Indian jewellers, however, in spite of great care and labor, have not yet succeeded in entirely removing these spots from the stones.

the ancients had, among its most potent remedies, a very costly compound called the "Five Precious Fragments" which consisted of powdered Rubies, Topazes, Emeralds, Sapphires, and Hyacinths. But as the patients were not likely, nor were they competent, to analyze the chemical properties of the mixture, it generally happened that the physicians used to pocket the real gems, by substituting falso ones in their place. The Oriental Ruby, or the Carbuncle of the ancients, whether used externally or internally, was an antidote to poison and plague; it drove away sadness, evil thoughts, wicked spirits, night-mares and diverted the mind from sensuality. It was also used as an amulet against all illness. It would warn the wearer of the approach of any misfortune, by a change of color to blackness and would not resume its original brightness until the peril had passed away. To confirm the above, we can not resist the temptation of reproducing here the following apparently authentic story related by Wolfgang Gabelchover, a German philosopher, as quoted by Tollius: "It is worthy of notice that the true Oriental Ruby presages to the wearer by the frequent change and darkening of its color that some inevitable loss or misfortune is not far off: and in proportion to the greatness of the coming evil, so doth it assume a greater or less degree of darkness and opacity-a thing which I have heard repeatedly from people of the highest eminence and have, alast experienced in my own person.

For. on December 5th, 1600, as I was travelling from Stutgard to Cal-wam in company with my beloved wife Catherine Adelmann, of pious memory. I observed most distinctly during the journey that a very fine Ruby, her gift, which I were set in a ring upon my finger, had lost, once or twice. almost all its splendid color and had put on dullness in place of brilliancy and darkness in place of light: the which blackness and opacity lasted not for one or two days only, but several: so that being beyond measure disgusted thereat. I took the ring off my finger and locked it up in my trunk. Whereupon I repeatedly warned my wife that some grievous mishap was impending over either her or myself, as I foreboded from the change of color in my Ruby. Nor was I wrong in my anticipation, inasmuch as within a few days she was taken with a fatal sickness that never left her till her death. And truly after her decease, its former brilliant color again returned spontaneously to my Ruby."

Celebrated Rubies

TAVENIER speaks of a Ruby seen in the possession of the King of Visapore, India, weighing 50 carats and of very fine quality. The best Oriental Rubics, as we have said before, are rare in the market, being monopolized by the King of Burmah, who is reported to be the owner of a Ruby, of an extraordinary quality and of the size of a pigeon's egg.

But no Europeans have hitherto been allowed to have a look at it The king of Ada has a perfect Ruby of the size of a small hen's egg which he uses as an ear drop One of the largest Rubies in the Crown jewels of France, adorns the Order of the Golden Fleece and is cut into the form of a diagon with extended wings There was a remark able Oriental Ruby of the size of a pigeon s egg in the Crown of the Empress Catherine of Russia known to have been presented to her by Gustavus III of Sweden, when on a visit to St Petersburg, in 1777 There was one in Paris, seen by Far ticre which weighed 4061 carats. There are se veral Rubies of good size and quality among the Crown jewels of Austria It is related by Gesner that Catherine of Arragon used to wear a ring set with a stone which became luminous at night and which was therefore conjectured to be a Ruby Two remarkable genuine Rubies were sent to England from Burmah in 1875 The sale of these two stones crused great excitement at Burmah and the fact of two stones of such extraordinary quality ap pearing simultaneously created not a little sensa tion in England One was a dark colored stone, cushion shaped and weighing 37 carats, and the other, a blunt drop shape of 47 to carats Both were put in the hands of Mr James N Forster of London for recutting The former was reduced to 32% and the latter to 39% carats Both of these have found purchasers in the Continent, the smaller

fetching over a lac of Rupees The largest Ruby seen in India by Garcias did not exceed 24 carats, it was bought by a prince in the Deccan for 156th weight of gold

Rudolf II possessed a Ruby as big as a small hens egg, bequeathed to him by his sister, the Queen Dowager of France, it was about 100 carats in weight and was reported to have been originally valued at 66,000 ducats But modern mineralogists have pronounced this to be a Spinel

In the front of the Crown of our Most Gracious Majesty is the famous Ruby (now pronounced to be a Spinel) said to have been given to Edward the Black Prince by Don Pedro (King of Castile,) after the battle of Najera (near Vittoria.) in 1367. It was afterwards worn upon his helmet by Henry V, at the battle of Agincourt, 1415 It is an irregular oval, pierced through the middle, according to the usual oriental fashion, the upper part of the perforation being concealed by a small Ruby Two large Spinels taken from India in 1861 were shown in the Exhibition of 1862 The one that was exhibited by Messrs Hunt and Roskell, was a cabochon cut, octagon shaped stone, of perfect color and free from flaws It originally weighed 197 carats and after being cut by Mr Torster, 81 carats The other Spinel was also of the same shape and color, originally weighing 1021 carats, and after being recut, 721 carits One Spinel collected by Dr Heron, is said to be 49lb, being in 3 pieces

and containing cavities filled up by crystals of Corundum In the list of the French Crown jewels taken in 1791, we find, amongst others, one Spinel Ruby of 563 carats, worth 50,000 francs. A specimen of a blue Spinel, a thick oblong stone, was in the possession of Messrs Pittar Leverson & Co. It was an Indian-cut stone, weighing 375 carats and after being recut (by Mr. Forster,) 25 carats. It was originally sent from India as a Sapphire and having been afterwards found out to be a Spinel, the purchaser returned it to the merchant, who at once wrote to the consigner in India. The statement not being believed, the merchant had it cut and upon its identity as a Spinel being established, sold it for a much higher sum than it had fetched as a Sapphire. Tavernier tells us that he counted on the Great Mogul's throne, 180 large Rubies varying in weight from 100 to 200 carats and one single gem that weighed 21 ounces. These were, however, Balas Rubies. In the catalogue of the French Crown Jewels, of 1791, mention is made of two Balas Rubies, one of which, weighing 20% carats, was valued at 10,000 francs and the other, weighing 123, at 3,000 francs.

Charles the Duke of Burgundy, had lost several valuable stones at Granson. Among these were 3 Rubies called the "three brothers" and two called "La Hotte et la Balle de Flandres" James I, in sending some jewels to his son, mentions the "three brethren." The similarity of the name

leads many to identify these as the Rubies once belonging to the Duke.

Sir James Melville, in his Historic Memoirs. says that Queen Elizabeth showed him "a fair ruby. great, like a racket ball " Runjeet Sing is said to have owned a large Ruby weighing 14 tollahs. with the names of Aurungzebe, Ahmed Shah and several other kings engraved upon it. Robert de Berquem mentions that when Josephus Barbaro had (in 1472) an audience with Yussum Cassam, the king of Persia, (at whose Court he was an ambassador for the Venetian Republic,) he was shown a hand-kerchief, filled with the most valuable of precious stones. Amongst these was a table cut Balas Ruby, of, at least, a finger's breadth, of the most beautiful colour and weighing 24 ounces. De Berguem also speaks of 3 great Rubies, bclonging to a Parisian of great rank. The one had once been set in a gold crown covered with gems. with which Pope Stephen V, (who came to Franco in 817) crowned the King of France, Louis le Debonnaire, as Emperor. This Ruby was in the shape of a Lozenge and weighed 1293 carats. The other was egg shaped and weighed 2117 carats. It was given to Charles, Duke of Anjou, by the Neapolitans, in 1264. The third, weighing 209 carats, had belonged to Anne, Duchess of Brittany who married Charles VIII in 1191. How these monster stones came into the hands of the Parisian nobleman and what became of them subsequently are not known to us. It is said that when Peter the Great left England, he presented the King with a "rough Ruby, which the greatest Jewellers of Amsterdam (as well Jews as Christians) valued at £2,000 storling"

Some very good Rubies are to be found in India. A fine Oriental Ruby was recently bought of a Burmese merchant (at 22,000 Rupees), by Sir Salar Jung, on one occasion of his visit to Calcutta. The estate of the Paikpara Raj family (in the suburbs of Calcutta) has in its possession a large Ruby, set in a ring, and free from flaws. Another Ruby of a good size, also set in a ring is to be seen with Rai Luchmeeput Sing Bahadoor of Azimgunj. Babu Hurruck Chand of Moorshedabad has with him a Ruby of the true "pigeon's blood" color. A large Ruby is to be seen in the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor, set in a ring and having some Chinese letters, forming the name of God engraved on its back. There is also one large Ruby of the size of a pigcon's egg lengthwise cut in half, set in one of his watch-chains It weighed about 500 Ratis in its rough state, and has, upon being cut, been reduced to about 300 Ratis. There is also one beautiful Ruby of about 93 Ratis, set in another watch chain of the Maharajah's.



A TREATISE ON GEMS.

श्रय वैदूर्य्यम् ।

मूचम्।

षावद्दरे गिरे: कस्तु तथैवोस्त्यद्वियतः। ष्यिधस्यकाप्रदेशे च वेद्वय्यस्याकरो भवेत्। २२० ॥ पद्मरागस्पादाय मणिवणां ष्टि ये खितौ। स्यासान् वर्णयोभाभिवेद्व्यम्तागच्छति॥ २२१ ॥ सितस्य पूसगद्वाशमीयस्वृष्णस्विपभावेत्। वेद्वयं नाम तद्वतं रत्नाविद्वरुद्धान्ता । २२१॥ वेद्वयं नाम तद्वतं रत्नाविद्वरुद्धान्ता । २२२॥ वेद्वयं नाम तद्वतं रत्नाविद्वरुद्धान्ता । २२२॥ वेद्वयं नाम वद्वतं व्वरुद्धानाम वद्वतं । व्यर्थानाम वद्वतं । व्यर्थानाम वद्वतं । व्यर्थानाम वद्वतं ।

चासाग्रपचप्रतिमश्चियो ये न ते प्रथसा मणियास्त्रविद्धि ॥ २२३ ॥

वैद्रय अर्थात् लशुनियेका वयान।

तर्जमा ।

किंगि किंसि पाषाटके करीवकी जमीनमे, बीपके हिस्सेमे चीर पोटोपर लगुनिया पाया जाता है। २२०। पदराग वर्गरफ जहेरातमे जिस्तरहका रह देखलाइ देता है, वक्षी पव रह वैद्या चर्चात् लगुनियामेभी होता है। २२१।

हा २२८। उसके सेवाय सफेद रज़, बेंगुणी रज़ और घोड़ा सेवाई, यही तिन रज़ लगुनियामें देख आते हैं। १२१।

रलपारची परिउतलोक कश्ते है, के जित्ने किनिमका लग्नानिया है, उत्पत्ते को रह मोरेके गत्ने चीर बाग्रके पत्तके समान है, वही प्रधान है। चीर जिल्ला रह नीनकष्टपद्योके परके गमान है, वह चाब्दा शर्ह । देह

THE CAT'S-EYE.

TRANSLATION.

220. Car's Eye quarries are found at the top, or the mid region of certain mountains, as well as in their vicinity.

221—222 All those colors that shine in the padmarága and other gems of a like nature, are also seen in the Cat's-eye. Besides these, we find white, smoke-colored and gray cat's-eyes.

223 Of Cat's eyes, those which in color resemble the peaceck's neck or the bamboo leaf are first-class, while those resembling the wing of the mla-kantha* hird are of small worth.

देवमूर्या १

অহ্বাদ।

কোন কোন পর্ব্বতের সন্নিহিত প্রদেশ, মধ্যভাগ ও অধিত্যকা প্রদেশে বৈদূর্য্যের আকব লক্ষিত হয়।২২০।

পদ্মনাগপ্ৰভৃতি বৰ্জসমূহে যে সকল বৰ্ণ দৃষ্ট হয়, সেই সকল বৰ্ণ ই বৈদূৰ্য্যমণিব অনুগানী; তদ্ভিন শুলু, ধুমূল ও ঈষৎ কুফুবৰ্ণবিশিষ্ট বৈদূৰ্য্য দেখা যায় । ২২১ । ২২২ ।

মণিশান্ত্রবিৎ পণ্ডিতেবা ক্ষেন, যতপ্রকার বৈদ্য্য আছে, তন্মধ্যে যে ওলিব বর্ণ ময়ুবেব কণ্ঠ অথবা বংশ-পত্রেব দদৃশ, দেইওলি প্রধান, এবং যাহাদেব বর্ণ, নীল-বন্ঠ পক্ষীর পক্ষের তুল্য, তাহাবা প্রশন্ত নহে। ২২৩।

[·] A species of gallinule or water hen (1)

मूचम् ।

वस्रचित्रविद् शृद्गातिमेदाञ्जविष्यं।
युनचर्णं भवेद्रवं वेद्रव्यं नाम भूमितः ॥ २२४ ॥
सितानीचो भवेदित्रः सि तारक्षस्य वाज्रजः।
पीतानीचस्य वैद्यः स्थान्तीच एव हि शृद्रवः॥ २२५ ॥
एकः वेशुपवायकोमचरुषा मायूरकस्त्विया
यार्जारिचणपिञ्रचस्त्विजुपा श्रेयं विधा न्द्रायया।
यद्गाच ग्रुवता द्धाति नितरां सिग्धन्त दोषोषितं
वेद्रव्यं विश्वदं वदन्ति सुधियः स्वस्त्व तन्द्रोमनं॥ २२६ ॥

तर्जमा।

जिस्तरक्षे मतुष्यके ब्राह्मण, चिन्न, वैश्व चीर ऋह चार जात कोते के, उसी तरक्षे त्र मृत्यामेभी चार जात है। चौर यक्षे चार जात सुबचणाकान्त त्र मृत्या जमी-नसे पयदा कोता है। ५२४।

योदा नीवापनिवयेक्यये मफेट रक्त चमुनिया झाझाण जात है, योदा सुखीमायेव मफेट रक्त चमुनिया चिन्न जात है, योदा नीवापनजरिमायेख समुनिया वैद्य जात है भीर नीवरक्त समुनिया ऋत्र जात है। १२५।

वंशावा नवा पत्ता, मोरका गता, विद्योश चांच, रही ता वांग्रका नवा पत्ता, मोरका गता, विद्योश चांच, रही तिन वोजां के समान चयुनियाकी हावा देखि जाति हैं, भीर के समुनिया चोजनमें भारी, भीर बडत खिला पेसवें के स्थापन प्राप्त के स्वतं चांक व्यविष्ठ स्वतं सुमलचल कहते हैं। २२६।

TRANSLATION.

224. The earth produces all the four castes of Cat's-eye redolent of lucky signs.

225. A white Cat's-eye furnished with a blue gleam (say the authorities), is a Brahmin, a white Cat's-eye with a gleam of red, is a Khetriya, a yellow Cat's eye with a blue lustre, is a Vaisya, and a purely blue Cat's eye is a Sudra.

226. Cat's eyes possess a shade like the color of a fresh bamboo leaf, peacock's neck, or a cat's eye Those Cat's eyes that are heavy, deliciously cool, flawless, smooth and otherwise faultless, the authorities consider to be very lucky.

অহুবাদ।

রান্দাণ, ক্ষত্রিয় বৈশ্য ও শূদ্র এই জাতিচডুইন্যভেদে চছুর্বিধ স্থলকণাক্রান্ত বৈদুর্য্য মণি ভূমি হইতে জমিয়া থাকে। ২২৪।

ঈষৎ নীলেব আভাযুক্ত শুক্লবর্গ বৈদুর্য্য ভ্রান্ধণজাতি, ঈষৎ লোহিতের আভাযুক্ত শুক্লবর্গ বৈদুর্য্য ক্ষপ্রিয়জাতি, ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত গীতবর্ণ বৈদূর্য্য বৈশ্যজাতি ও বিশুদ্ধ নীলবর্ণ বৈদুর্য্য শুক্রজাতি বলিয়া কথিত হয়। ২২৫।

বংশের নৃত্ন পত্র, নয়ুবক্ঠ ও মার্লারের চক্চু এই তিন বস্তুর ফায় ছায়া বৈদুর্য্যে, দৃষ্ট হয়, এবং বে সকল বৈদ্ধ্য ওলনে ভারী, অত্যন্ত নিশ্ধ, দোষবন্দ্রিত, নির্মান ও বাছ, পণ্ডিতেরা তাহাদিগকে অতি শুভলকণ্-মুক্ত কহেন। ২২৬। म्लम् ।

ष्ट यदासना सन्दर खन्छाया निक्रमामान ।

स्मुटं प्रदर्शयेदेतहेट्ट्यं नात्यमुच्यते । ५५७ ।

श्रय वेटूर्यगुणाः । मार्कोरनयनप्रश्चं रमोनप्रतिम हि वा ।

कित्तं निर्मालं व्यङ्ग वैदृष्यं देवमूपण ॥ २२८॥ सतारं घनमत्यन्तं कितलं व्यङ्गमेव ४।

वेद्रयाणा समाखाता एते पश्च महाग्रणा ॥ २२८॥ छद्गिरद्भिव दीप्ति यत् मुतारमिति गद्यते।

प्रमाणतास गुर यत् घनमित्यभिधीयते ॥ ५३० ॥

तर्जमा ।

कसीटीपर धिसनेसे जिस् चमुनियेकी खच्छता भीर साफाइ ज्यादानर चीति जाय, वची चमुनिया भाषव हो। २२७।

लगुनियेका गुण।

विद्वीकी चाख चौर लड्झनके समान, कलिल, निर्मेल चौर खद्र लगुनिया देवताचे के लावेक हैं। २२८। सुतार, घन, चायक्छ, कलिल चौर खद्र, यही पाच

किस नम्बिता नजत् ग्रणसम्बद्ध है। २२६।

जिस् समुनियामें आभा निक्ते उम्मे सुतार कहते हैं। को कर्मे कीटा, लेकिन चोजनमें भारी, उस्को धन कहते हैं। २२०।

TRANSLATION.

227 That Cat's-eye which on being rubbed over the touch-stone attains additional lustre and smoothness, is sterling and excellent.

Qualities of the Cat's-eye.

228 That kalila or byanga Cat's eye which is like a veritable cat's-eye, or a garlic, and which is perfectly smooth, is a gem worthy of the acceptance of the gods themselves.

229. Sutára, ghana, atyachchha, kalila and byanga are the five best kinds of the Cat's-eye.

230. The Cat's eye which sparkles beautifully, is called *sutára*; that which combines small bulk with heaviness, is called *ghana*.

व्यक्ताम ।

কমপাষাণে মুক্ত হইলেও যে বৈদুর্যোব স্বন্ধতা ও ছামা অধিকতন উচ্ছলভাবে প্রকাশ পায়, সেই বৈদ্র্যাই উৎকৃষ্ট বলিয়া প্রসিদ্ধ ও অকুক্রিম। ২২৭।

रेक्टूर्यग्रह छन १

মার্জাব নয়ন বা বদোনের প্রতিরূপ, কলিল, স্বচ্ছ ও বাঙ্গ বৈদুর্য্য দেবভোগ্য। ২২৮।

স্তার, ঘন, অত্যাহ, কনিন ওব্যন্ন এই পঞ্চিধ বৈদ্র্যা । মহাগুণদম্পন্ন। ২২৯।

যে বৈৰুগ্য হ'ইতে দীপ্তি উদ্গীৰ্ণ হয়, তাহাকে হাতার কহে, যাহা প্রমাণে অন্ন, কিন্ত ওজনে ওজ, তাহা ঘন নামে বিধ্যাত। ২০০।

मूचम।

श्रथ वैद्रय्यदोषा।

कलङ्काद्विष्ठीनं तदत्यच्छमिति कीर्त्तितं । ब्रह्मसूचकलाकारचञ्चलो यच दृथ्यते ॥ २३९ ॥ कलिल नाम तद्रल सर्व्वसम्यत्तिकारक ।

विश्विष्टाञ्जन्तु वेद्रर्थं व्यञ्जमित्यभिधीयते॥ २३२॥

शक्षेरं कक्कर चास कलको देह दूत्यि। एते पच महादोषा वेद्दर्याणासुदीरिता ॥ २३३॥

शक्ष रायुक्तमिव यत्पृतिभाति च शक्ष र । स्पर्शे खरं यत् तज्ज्ञे यं कर्क्ष र वन्धुनाश्चनं । २३४ ।

तरजगा।

वस्त्रमा।

कल प्राद धरेदोसे खाती तम् नियेको श्रायक्त कक्षते हैं, जिस् नम् नियासे चन्द्रकलाके ऐसा चझत सुत देखताइ दे, उसको किनत कक्षते हैं, कितत तम् नियासव सम्यत्का कारण हैं। २३१।

ानया मच सम्यत्का कारण ४ । २३४ । जिस लगुनियेका चाधा चङ्क काटा मालुम छो। उसको ट्राङ्क कन्नते हैं । २३२ ।

लसुनेका ग्रयेव।

कर्कार, ग्रक्कर चास, कलक्ष चीर देच लगुनियामे यक्षो पाच किसिमका चयेय चै। २३३।

जो कृतेमे खुरधारा, उसे कर्कर करते हैं, कर्कर संगुनिया भाइचीको नाग करता है, चीर दुधिया नर्गानयाको गर्कर कहते हैं। ५३४।

TRANSLATION.

231. That Cat's-eye which is free from such defects as kalanka etc., is called atyachchha; that which shows a lustre resembling the Brabminical thread and aye twinkling like the moonbeam, goes by the name of kalila. This is the veritable cornucopia.

232. That which manifests a variety of parts and sides, is entitled byanga

Defects of the Cat's-eye.

233. Karla a, sarkara, trása, lalanka and deha are the five defects belonging to this class of gems 234. A Cat's-eye which is hard to the touch, is called karkara; and that which contains grits, is called sarkara. A karkara Cat's-eye brings about loss of friends.

অহ্বাদ।

কলস্কাদিদোযবিহীন বৈদুর্ঘ্যকে অভ্যক্ত বলে। এবং বাহাতে চন্দ্রকলাব স্থায় চঞ্চল অক্ষনুত্ত লক্ষিত হয়, ভাহাকে কলিল বলা যায়, কলিল বৈদুর্ঘ্য সর্ববদম্পত্তিব নিদান। ২৩১।

যাহাব অন্ন বিপ্লিউ, অর্থাৎ অন্ন প্রত্যন্ন পৃথক্ বলিযা বোধ হয়, তাহাব নাম ব্যন্ন। ২০২।

देवमूर्याञ्च स्नाम १

কর্বব, শর্কব, জ্রাস, কলঙ্ক ও দেহ, বৈদূর্য্য মণিতে এই পঞ্চপ্রকাব দোবেব বিদ্যুমানতা দেখা যায়। ২৩০।

যাহাব স্পর্শ অতি কঠিন, তাহাব নান কর্বব, এবং শর্ববায়ুক্ত বৈদুর্যাকে শর্বব কছে, কর্কর বৈদুর্য্যে বদ্ধবিনাশ কবে। ২০৪। मूचम्।

भिन्नभ्रान्तिकरस्तामः स कुर्यात् कुलर्धचर्यः । विरुद्धवर्णो यस्याङ्गे कलङ्कः चयकारकः ।

।वर्रह्ववणा यस्याक्ष कलक्षः ययकारकः। मलदिग्ध द्वाभाति देखे देखविनाश्चनः॥ २३५ ॥

गिरिकाच' शिशुपालः काच: स्कटिकच मूमिनिर्मिता'। वैदूर्व्यमगेरेते विवातय' यद्मिभाः पन्ति ॥ २३६ ॥ लिखामावात्काचं वयुमावाच्हिशुपालक विद्यात्।

गिरिकाचमदीप्रत्वात् स्कटिकं वर्षों ब्लुलनेन ॥ ५३७ ।

त्र्वमा ।

जिस् निमानके जिस्बेरी जमुनिया दृटा मानुम हो, उस्को चाम कहते हैं, चास चयेवका लम्नुनिया कुलका

नाम करनेवाला है, चीर जिस् लमुनियेके मध्ये दुस्रा रङ्ग खेलाप मानुम हो, उसको अलङ्ग कहते हैं, जनड

रज्ञ खेलाप मालुम को, उसको कलङ्क कक्षते के, बल्ड प्रयेवका लगुनिया चाट्मीका नाग्र करनेवाला के; और जिसको मध्ये मयला मालुम को, उसको देक कक्षते के,

देश ययेवका लगुनिया याद्मीका गरीर नष्ट करता ही १३५। गिरिकाम, शिगुराल, कांच चीर स्कटिल रक्की पीठीकि

गिरिकाच, शिशुपाल, कांच चौर स्कटिक दक्की चीं जिले बारा भुठा लशुनिया बानाता चै। १३६।

घीरेकेचेवाय चौर चीजके छारिये हो ना कटे, वह काच, डान्का डोनेचे शिशुपात डी, दीक्षि ना रहने गिरिकाच चौर ज्यादा उज्ज्वत डोनेचे स्कृटिक समन्त्रा चाहिये। ३३७।

莲

ِ پور

TRANSPATION.

235. That mark in a Cat's-eye which looks like a break, is a trasa. It destroys family dignity. That which shows conflicting colors, is called kalanka. Such a gem is destructive. A deka Cat's-eye bears dirt within it. This gem wastes the body.

236. Girikácha, Sisupála, glass and crystal are made use of in fabricating false Cat's-eyes.

237. A false Cat's-eye, if it is made of glass, is detected by being scratched by the diamond alone; if it is made of sisupála by its lightness; if of girikácha, by its want of lustre, and finally if of crystal, by its excessive gloss.

অহ্বাদ।

যে চিহুছারা বৈদ্বাকে ভগ্ন বলিয়া বোধ হয়, তাহাকে ক্রাস কছে, ক্রাসমুক্ত বৈদ্বা কুলফ্য-কাবক। যাহার মধ্যে বিরুদ্ধ বর্ণ লক্ষিত হয়, তাহাকে কলম্ব বলে, কলম্বদায় মন্ত্রয্যের ক্ষয়কাবক, এবং যাহাব-মধ্যে মলা থাকে, তাহাকে দেহ কছে, দেহে দেহক্য করে। ২৩৫।

গিরিকাচ, শিশুপাল, কাচ ও স্ফটিক এই সকল পদার্থ দ্বারা কৃত্রিম বৈদুর্য্য মণি প্রস্তুত হইয়া থাকে। ২৩৬।

হীরক ভিন্ন অন্য কোন বস্তুবারা অহিত না হওয়াতে কাচ, লযুতা ঘারা শিশুপাল, অদীপ্তিহেছু গিরিকাচ ও অধিকতর উষ্ণল বর্গ ঘারা ফটিক প্রকাশিত হইমা পড়ে। ২৩৭। मसम ।

नात्यस्य सर्वस्य मजेस यादक विजातय सन्ति मझानवर्णीः।

तथापि नानाकरणात्रमेय-

भेदप्रकार परम: प्रदिष्ट ॥ ५३८ ॥

मुखोपलच्यच मदा विचार्यो म्बय प्रभेदो विद्या नरेण।

से इप्रभेदो लघुता सतुर्व

विमातिविद्धं खत मार्ध्वमयः ॥ २३८ ॥ कुमला' कुमलै: प्रयुक्तमाना:

प्रतिवहाः प्रतिसत्त्रियापयोगैः । ग्रुणदोषसमुद्धवं लभन्ते

मणदीऽयन्तिरमुख्यमेव भिद्रा'॥ ५८०॥

तर जमा ।

भुठा जवाहेर अगर वेरज और कदम साम्रेके समान हो, लेकिन तरह तरहके परीचाके दारा एसका हास च्यामल माल्म की मक्ता की । ५३०८ ।

रलपारची पण्डित खें इमभेद, खध्ता, कौमलता रूझी सव विजातिनियानवे अस्यिमे चनाताम स्जात मणिका

विचार कर मके हैं। २३८। सोणेमे जड्नेसे दसकारीके अधेवसे वृद्धिया रहमी खाराप भी, चौर चोसाद कारिगरके भातका जडाउदा

वक्रत् कम कदर रक्रभी उमुद्गीको पाता है। ५४०।

TRANSLATION.

238. Even when a false gem resembles in color a real one to a degree, still there are characteristic differences between the two, which legibly mark out the one from the other.

239. Persons well versed in the science can easily distinguish a mendacious jewel from a genuine one, by its lightness, softness, gloss etc.

240. Much depends upon the art with which a gem is set on gold or any other precious metal,—indeed so much that a gem of really superior order may be shorn of half its lustre by the vicious skill of the goldsmith, while another of far less worth may gain in brilliancy from the skill with which it is set.

অনুবাদ ।

সর্বপ্রকার বিজাতি মণি স্কলাত মণির সমান বর্ণ-বিশিষ্ট হুইলেও নানাপ্রকাবে তাহাদের পরস্পার ভেদ প্রমাণী-ক্বত হুইতে পারে। ২৩৮।

রত্বত্ত্ত্ত্বে পণ্ডিতেরা স্নেহপ্রতেদ, লমুতা, কোমলতা প্রস্তৃতি বিজ্ঞাতি চিহ্নদারা খনাযাদে হুজাত মণিব বিচার কবিতে পারেন। ২৩৯।

মণিসমূদায হুবর্ণাদি ধাতু সদ্ধর হুইলে শিল্পীন শিল্প-দোবে উত্তম রন্ধও অভিজ্বয়ত এবং শিল্পীনারা অতি সামান্য রন্ধও অতি উত্তমকপে প্রতিভাত হয়। ২৪০।

THE CAT'S-EYE

Its Properties

HE Cat's eye is a rare variety of the Chryso beryl, of extreme hardness and is characteriz ed by the remarkable play of light in a certain direction, probably caused by a peculiarity in its crystallization This ray of light, or in the jeweller's language, this " line," shines in well polished stones with a phosphorescent brilliance This stone is found of various colours, ranging through all the shades of yellow, brown, green, and very rarely, black No matter what the ground colour of the stone may be, the "line is always white and more or less indescent The gas light or full sun light, which renders the line more vivid, displays the lustre to the best advantage. The most popular colours are the clear apple green and the dark olivethese forming splendid black grounds over which the line appears in beautiful contrast When held towards the light the stone resembles the contract ed pupil of the eye of a cat Its peculiar beauty lies in the mysterious gleaming streak which moves from side to side as the stone is turned The speci mens most liked by the Indians are those of a dark olive colour having the ray so bright on each edge as to appear double. The hardness of the

Cat's eye is 8 5 in the scale, it being scratched by the Sapphire, Ruby, &c Its specific gravity is 3 8 It is infusible before the blow pipe alone, but is not affected by acids It contains about 80 per cent of alumina and 20 of glucina and colouring matter (protoxide of iron) It belongs to the trimetic or rhombic system of crystallization Its lustic varies from being almost perfectly transparent to almost opique It possesses a double refraction and acquires electricity by friction and returns it for soveral hours

Where found

This gem is found in rolled pebbles in parts of North America, Brazil, Moravia, the Ural Mountain, India, but chiefly in Ceylon together with Supphire

Mode of Cutting

THE Cat's eye is generally cut in Ceylon, cn cabochon The Chrysoberyl of which it is but one variety, is cut on a copper wheel with Emery and polished with Tripoli

Its Price, Flaus and Defects, Mode of Testing

The Cat's eye is much used in jewelry for rings and pins and is never engrived upon. Its value chiefly depends on its size and beauty. The varie-

ties of colour do not affect the value very much; some people like one colour, some, another. To fetch a good value, the line should not only be perfect and brilliant but it should be well-defined, not very broad and should run evenly from end to end across the middle of the stone. It has always been very highly prized by the Indians and the Cingalese. The value has of late considerably increased, owing to the fancy which the Europeans have begun to take to it. A ring-stone may be worth from £10 to £100 or upwards. There are some large stones in the market said to be valued at more than £1,000.

The jewellers have frequently confounded the true Cat's-eye with another stone of the same name which is a variety of the Quartz, and have often sold the one for the other. Even by the least experienced, the Quartz Cat's eye can be distinguished from the true one, by its inferior hardness and want of brilliance. The colour of the Quartz Cat's-eye is of various shades of yellow and brown only. Its hardness is from 6 to 6.5. It can only scratch glass. Its specific gravity is 2-65. It melts with soda into a clear glass and is soluble in fluoric acid. The chemical composition is of 48 parts of Silicium and 51 of Oxygen with a small amount of oxide of iron and lime. It is usually set with a black or gold foil to add to its play and brilliancy.

Marvellous Powers.

THE fact of the gleaming streak shifting from side to side as the stone is turned, has led the superstitious to believe it to be the abode of some evil spirits. It was dedicated by the ancient Assyrians to their god Belus and was called, on this account, the oculus Beli and by others, the "wolf's eye." It is regarded by some nations as a sacred stone and used as a charm against witch-craft.

Celebrated Cat's-eyes

The largest Cat's-eye (also the "Hope") is hemispherical and \(\frac{1}{2}\) inch in diameter. In 1815 it was captured from the King of Kandy (Ceylon), with whom it had been an object of great pride It has attained a celebrity for many centuries past and appears to be the identical stone mentioned by Rubiero, in his History of Ceylon, as belonging in the 16th century to the Prince of Ura. It is mounted in massy pure gold and set* with Rubies (cut en cabochon), in the Eastern fashion. A very large sized Cat's

^{*} The late King Victor Emmanuel had many peculiarities one of which may be related in few words. It appears that His Majesty each year allowed in the too-naise to remain uncut through the year, and the many the state of the projecting nail which was year, and the naive had been considered in the state of nail, which acquired the appearance of the stone known as a "est's eye," and framed it in a rim of gold set round with diamonds. The King each year presented this jewel to be those novel or maneted Miraflow, who already post the late King on the lat January 1878. The affected has been to be the stone of the stone of the stone of a state of the stone of the sto

eye was once seen with one Pundit Lutchminaran, who had at one time refused an offer of Rs. 10,000 for it. It has afterwards been bought by a zemindar of Mymensing, East Bengal, for Rs 6000 Babu Than Sing Boyed of Moorshedabad has a good Cat's-eye of a black color. Rai Budridass Mokeem has, in the shape of a kanthá, a collection of Cat's-eyes of various shades and tints. There is a very large Cat's-eye, about the size of a pigeon's egg, set upon a pán dán, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. It is of a brownish color and shows the "line" to great advantage.





च्रयस्ता।

मूचम।

नागेन्द्रजीमूतवराष्ट्रगञ्ज-मत्स्याचिमुक्तुप्रद्वववेणुजानि। सुकामलानि प्रियतानि लोके

तेषान्तु ग्रुक्तुग्रङ्गवमेव भूरि ॥ २४३ ॥ धाराधरेषु जायेत मौक्तिकं जलक्षिन्दुमि' !

दुर्नभं तन्मधारलं देवेस्ततीयतेऽम्बरात्॥ २४४॥ धमाधिकोजमत्स्याना योपे मुक्ताफजोद्ववः। लक्तारम्हियञ्चाना गर्भे सुक्ताफजोद्ववः॥ २४४॥

मतिका वयान।

तर्जमा ।

हायी, भेंच, ग्रूकर, श्रञ्घ, सक्ष्ति, साप, सिप चौर याग इन् सब बसुसे मीति पयदा होता है। यह दुनियामें मस्डार है, लेकिन इन सबसेसे खाकसर मीति सिपमें ज्यादा पयदा होता है। ५8३।

मेघ फीकर जलके बुंदके जित्यमें जो मीति छोता है, उस्की महारत्नमें गिन्ति छोति ही, चादमीकी यस्तत् दुर्लभ है, देवता लोक चाकाग्रहीने उस्को से लेते हैं। २८८।

ष्ठायी, साप, मूलर श्रीर सक्रलि दून् सबके सस्तति भे श्रीर बाम, सिप श्रीर मुझके पेटने सीति दीता है। २८५।

PEARL.

TRANSLATION

243 It is generally believed that the Pearl originates in elephants, clouds, boars, conch shells, fish, serpents, oysters and bamboos—of which oysters have the largest share in their production

244 The Pearl which originates in a water drop from the clouds, is a gem of the first rank and a ranty,—the gods appropriate it from the sky

245 Pearls originate in the heads of elephants, boars, serpents and fish, in the hollows of bam boos, and in the wombs of oysters and conch shells

মুক্তা।

অনুবাদ।

হস্তী, মেঘ, ববাহ, শঋ, মংস্ফ, দর্প, শুক্তি এবা বংশ এই সকল-পদার্থেই যে, মুক্তা জন্মে, ইহা লোকপ্রাদিদ্ধ, তন্মধ্যে শুক্তি হইতেই অধিক পবিমানে মুক্তা জন্মিয়া থাকে। ২৪৩।

মেঘ হইতে জল বিন্দুখাবা যে মূক্তা জন্মে, তাহা মহা রক্তমধ্যে পবিগণিত, উহা মন্মুয়োব পকে অভিচুলভ, দেবতাবাই আকাশ হইতেই গ্রহণ ববেন। ২৪৪।

হস্তী, দর্প, ববাহ ও মংস্ত ইহাদিগেব শর্বদেশে এবং বংশ, শুক্তি ও শহা ইহাদিশেব শর্তমধ্যে মুক্তা জমিয়া থাকে। ২৪৫। मूचम् !

गलांडिलं सुद्रष्पायं भौक्तिकं तपग विना। मौक्तिकं लभ्यते श्रेष्ठमाकरेषु कलौ चिषु । २४६ं॥

वेध्यन्तु गुक्तुप्रद्वामेव तेया

शेषाण्यभेद्यानि वदन्ति तज्जाः। मतद्रजा ये तु विशुद्धवंश्या-

स्ते मौक्षिकानां प्रभवाः प्रदिष्ठाः ॥ २४७ । त्वक्सारनागेन्द्रतिमिष्ठसूतं .

त्वन्धारनागन्द्रातानप्रसूत यन्कङ्गजं यज्ञ वैराहजातं।

यच्छक्षण यम् वराष्ट्रजातः प्रायो विमुक्तानि भवन्ति भाषा

शक्तानि माञ्जल्यतया तथापि ॥ ५८८ । .

तर्जमा ।

हाथी और सापके गसक ने जो मोति पथदा होता है, विना तपस्मके वह मोति वज्जत् दुर्लभ है, जाव वाग्न, विण और शज्ज में उम्दा उम्दा मोति पथदा होता है। ५८९। पहिले जो किसिस सोविकी करान कि गट, उसमें से

पश्चि जो फिसिस मोतिकी बयान कि गई, उसमें से सिपका मोति बेधा जाता है, उस्मेसे आता है, उस्मेसेवाय चौरजातका मोति खबेध, अर्थात् वेध हो निष्ठ सका, पाणि वर्षण्यो जो मोति पयदा होता है, वही

सब मोति प्रधान हैं। २४७। बाग, हाबी, तिमि मळलि, शङ्खीर गूकर दून सब^{मे} को मोति पयदा होता है, यकी सब मोति खाबदार निर् होता है, लेबिन मञ्जलकार्योमे बद्धत् उत्तम हैं। २४८-।

246. Those Pearls that are found in the heads of elephants and snakes, are rarely to be had except by devout austerities;—at present good Pearls are obtained from bamboos, oysters and conch-shells

247. Of the kinds of the Pearl enumerated above, those derived from the oysteralone are penetrable, the rest being impervious Those Pearls that originate in clouds, are the best of their sort.

248. The Pearls that are produced in bamboos, elephants, whales, conch shells and boars, are generally lack-lustre, although they are of great use in auspicious rates.

षञ्चान ।

গল্প ও দর্পের মন্তকে যে মূক্তা জন্মে, বিনা তপত্যায তাহা অতিহুপ্রাপ্য, অধুনা বংশ, শুক্তি ও শঝ এই তিন বস্তু হুইতেই উত্তম উত্তম মূক্তা প্রাপ্ত হওবা যায়। ২৪৬।

পূর্ব্বে যে ক্যপ্রকাব মূক্রার বিষয় উদ্রেথ করা গোল, তমাধ্যে শুক্তিজাত মূক্রাই বেধ্য, অর্থাৎ এই জাতীয় মূক্রাতেই ছিদ্র করা যাইতে পাবে, তভিন অপরাপর জাতীয় মূক্র্ অবেধ্য, অর্থাৎ তৎসমূর্বায়ে ছিদ্র করা যাইতে পাবে না। মেয় ইইতে যে সকল মূক্রা উৎপন্ন হয়, ভাষারাই সর্ব্বপ্রকাব মূক্রাব প্রধান। ২৪৭।

বংশ, হস্তী, তিনিমংজ, শৰা ও ববাহ এই সকল পদার্থ হইতে যে সকল মূকা জন্মে, সেই সকল মূকা প্রায়ই তেজোবিহীন হইবা থাকে, কিন্তু তথাপি মাদল্যকার্য্যে অতিশ্য প্রশাস্ত। ২৪৮। मूलम्।

मौक्तिक तेषु जात हि चतुर्विधसुदीर्थ्यते ॥ २४८ ॥

वच्छे गजपरीचाया गजनातियतुविधा।

ब्राह्मण पीतम्रक्षन्तु चिन्वय पीतरक्षकं। पीतम्बामन्त् वैद्यस्थान्क्रद्रस्यात् पीतनीलक । २५०।

कुक्षुटाएडसम एत्तं मौकिकं निविद्धं ग्रह्ण । घनज भातुसङ्कार्य देवयोग्यममातुष ॥ २५९ ॥

तर जमा।

गजयिद्याके पिएडतोने डायोकी चार किनिमकी तक -सिम्की है, चर्यात् उसमे ब्राह्मण, चिन्नु वैख चौर गूट्र चार जात कायेम की है, इस् कारण गजमीति चार

किमिमका घोता है। २८८।

जो मोति पीलापनल्येक्टये, मफेट् रङ्ग घोए, वह बाह्मण्यणे है, जो मोति पीलापनल्येक्टये सुख रङ्ग घोए वह चान्यवर्णे, जो मोति पीलापनल्येक्टये खासवर्णे है, वह वैद्यवर्णे खोर जो मोति पीलापनल्ये

डिये नीलवर्ण कीए, वक युद्धवर्ण है। २५०।

मेधसे पयदाङ्गये मीतिमे जो सुरमके चराहरे बराहर

उमदा, गोल, ठोग, चोजनमे भारी, चौर मुर्देशे ममान

तेलकी खान, एँचा मोति देवताचाक भोगमे रहता है। मनुष्यदुर्लभ है। ५५१।

249. Persons who have studied the elephant with particular attention, have divided it into four classes, called after the names of the four cardinal divisions of the Hindus. Accordingly, Pearls derived from elephants are classed under four heads.

250. Pearls which are white and which emit a yellow lustre, are Brahmins; those which are red and possessed of the same lustre, are Kshetriyas; those which are black (lustre same), are Vaisyas; and those which are blue (lustre do.), are Sudras.

251. Of cloud-begotten Pearls, those which resemble in shape the hen's egg, which are beautifully circular, substantial, weighty and bright as the sun, are enjoyable by the gods and cannot be obtained by men.

অধুবাদ ।

গন্ধ-পরীক্ষক পণ্ডিতের। হস্তীকে ব্রাহ্মণাদি চারি জাতিতে বিভক্ত করিয়াছেন, হুতরাং তদমুসারে গজোৎ-প্রমুক্তাও ব্রাহ্মণাদি চছর্বিধ হইয়া থাকে। ২৪৯।

বে দকন মূকা গীতের আভায়ুক্ত শুরবর্ণ, তাহারা ক্রিয়বর্ণ; বাহারা গীতের আভায়ুক্ত রক্তবর্ণ, তাহারা ক্রিয়বর্ণ; বাহারা গীতের আভায়ুক্ত শ্রামবর্ণ, তাহারা বৈশ্রবর্ণ; বাহারা গীতের আভায়ুক্ত নীলবর্ণ, তাহারা পুদ্রবর্ণ বলিয়া পরিচিত। ২৫০।

মেঘোৎপদ মুক্তার মধ্যে যে গুলি আকারে কুকুটের অন্তদ্যুশ, উত্তম গোলাকার, নিবেট, ওজনে ভারী এবং সূর্য্যের ভাষ তেজঃপুত্র, তৎসমুদান দেবভোগ্য, মনুষ্যের অপ্রাপ্য। ২৫১।

मुचमु ।

कास्त्रोजकुमित्रम्भूतं धाषीकतिमं ग्रहः। चितिपन्त्ररमञ्ज्ञायं मीकिक मन्दरीधिति ॥ २५२ ॥ किर्णजं वर्त्तुलं रस्यं नीचच्छायं महाद्वाति । प्रष्यकीना न पर्यान्त वासकोः कुत्रसम्भव ॥ २५३ ॥

नाभ्येति मेघप्रभवं धरिचीं

विवद्गतं तहितुषा चरन्ति । श्रिच्चि प्रतानाचतिद्ग्विभाग-मादित्यवदु:खविभाव्यविन्तं । २५८ ।

तर्जमा ।

ख्यामद्देशके बीचमें कस्बोजदेशमें जो घायी पगदा होता है, उसके मायेमें जो मीति पगदा होता है, वह सब मोति खामलेके फलके समान, खोजनमें भारी, ज्यादा पीला, लेकिन कम खाव। ५५२।

सायसे जो सोति पयदा होता है, वह आब्हा गील, देखनेमे खाच्छा, योदा नीलापनलियेक्कये खौर बक्तर, खावदार, पुष्प्रहीन चादमीको एैसा मोति खाससेमी देखना नसीव नहिं होता। १५३।

मेघसे को मोति पपदा होता है, वह कभी जमीन निर्ह कृता, चाकामधीसे देवता लोग ले जाते हैं। उस मोतिका एँ वा तेक हैं, के दोपहरको मूर्यके ममान, उस्^{पर} चाल निर्हे ठहर सक्ति। २५८।

252. Those Pearls that originate in the head of the elephants of Khamboja in the country of Shyáma, are large as the fruit of the Emblic Myrobalan, heavy and more yellow but not more lustrous than the other kinds

253. Pearls which originate in the crest of serpents, are beautifully round, and are embosomed in a blue halo'of surpassing glory. These, persons void of merit are denied the privilege of even looking at.

254. Cloud-begotten Pearls never touch the carth, and are appropriated by the gods from the sky. They are clad in the mighty effulgence of the mid-day sun.

অহুবাদ 1

শ্চামদেশের অন্তর্গত কম্বোজদেশ-জাত হস্তীর মন্তকে যে মূক্তা জম্মে, তাহা আকারে আমলকী ফলের ফার বৃহৎ, ওজনে ভারী, অধিক পীতবর্ণ, কিন্তু অধিক তেজম্বী নহে। ২৫২।

দর্পজাত মূক্তা উত্তম গোলাকার, অতিরমণীয়, ঈবং নীলের আভামূক্ত এবং অলিতেজস্বী; পুণ্যহীন ব্যক্তিরা এতাদৃশ মূক্তা কথন চক্ষেও দেখিতে পায় না। ২৫০।

নৈঘোৎপদ মুক্তা কদাচ পৃথিবী স্পর্শ করে না, শুন্য হুইতেই দেবগণ তাহা এহণ করেন, সেই দকল মুক্তার তেজ এত অধিক যে, মধ্যাফ্কালীন সূর্য্যের তায় অতি ফু:সহ। ২০৪। मूचम्।

तेजिस्तर्स्कृत्य ज्ञताश्रनेन्दु-नचन्त्राराग्रहमसम्बद्ध।

दिवा यथा दीप्तिकरक्तथैव तमोऽवगादास्विप तिन्नशास्॥ २५५ ॥

विचित्ररत्नद्यतिचारतोवा चतुःससुद्राभरणाभिरामा।

मूर्त्यं न वा स्थादिति निश्वयो में कृतसा मंची तस्य सुवर्णपूर्णा । ५५६ ।

भीनो (पि यसास्रमते सब्धि-दिपासभागान्त्रस्तः भुभख् । सापत्रम्भीनः प्रविभी समग्रा भनकि तत्तिस्रति वावदेव ॥ २५७ ॥

वर्जमा ।

मेधसे जो मोति पयदा होता है, वह प्रकाशमें जाग, चल्द्र, नचन, तारा चौर ग्रहगवको मन्द्र करदेता है, चौर वही मोति जिस् तरह दिनको प्रकाश पाता है, द्वी तरह गाठे चाधरेमे रोसन रहता है। २५५।

दुर्शतर इ गाड चाघरेमें रोधन रकता है। २५५। उत्तम किरणविशिष्ट जवाहेरसे भरि चारा समुद्र-पूर्णित रलसे भरि तामाम एव्हीभी एक मेघे पयदा ^{क्रिये} मोतिके वरावरमें निर्दे को सक्ति। २५६।

भौतिक बरावस्ते निर्धं भी सक्ति । ५५६ । बज्जत कोटा भादमी निर्मोवके जोरके किमी निर्धं एक मेधने पददा ज्या मोति पनि चौर जित्ते दिन वह भौति उसके पाप रहेंगा, उत्ते दिन वह भादमी इ.स. तामाम छ्ळीपर राज करेगा। २५७ ।

255. They surpass in lustre, fire, the moon and stars, and are equally flaming in the light of day and the blackest night.

256 This world, ornamented by the four oceans,*
—the home of the most splendid gems of infinite
variety, can scarcely equal in value one cloud-generated Pearl.

257. If by rare good fortune even a person belonging to the very lowest order comes in possession of such a Pearl, he shall reign paramount in this world so long as the gem is with him.

অহুবাদ।

মেঘপ্রতব মূকা তেকে অগ্নি, চন্দ্র, নক্ষত্র, তারা ও অফ্যান্ত গ্রহগণকে পবাতব করে, এবং সেই সকল মূকা দিবাতাগে যেমন দীপ্তি পাম, অত্যক্ত গাঢ়ান্ধকার রাত্রিতেও তক্ষপ দীপ্তি পাইয়া থাকে। ২৫৫।

বিচিত্র-ছ্যুতি-বন্ধপূর্ণ চন্থ্যসমুদ্র-ভ্ষিতা রন্ধপূর্ণা সমগ্র পৃথিবীও একটা মেঘজাত মূকার প্রকৃত মূল্য হয় কি না সন্দেহ। ২৫৬।

অতিনীচলোকও ভাগাবলে কোনপ্রকারে একটী নেমপ্রত্রব মূক্তা লাভ করিতে পাবিলে মতদিন সেই মূক্তা তাহার হস্তগত থাকিবে, ততদিন সে ব্যক্তি এই পৃথি-বীতে একাধিপত্য কবিতে পারিবে। ২৫৭।

Our English readers are requested to remember that we go by our Schurzer, and not by the far more aid need lights of European Science As it is our most cherahed object to give a peculiarly Indian air to the book, (which is all the more necessary, having read to the authorties we follow) we have not scrupled to east it in the mould of Sanskrita writers.

मृषम् ।

न केवनं तच्छुभक्षम्पस्य भागेर' प्रजानामपि नम्म तस्य !

साग्रा प्रजानामाप जना तस्य यद्योजनाना परितः भतस्य

सर्वाननर्यान् विसुखीकरोति । २५०।

जनज्योतिमें बजाना मेघाना चिविधसावेत्। जनाधिकोधिक स्टब्स् कोमन ग्रुक् कान्तिमत्॥ २५८ ग ज्योतियं कान्तिमहुत्त हुनिरोस्त्य रविष्टमं। कान्तिमकोमनं दुनिरोस्त्यमन सुध । २६०॥

तर्ज्ञमा ।

भेषसे पयदाख्या सोति एैं सा निष्ठ हैं, के पकत उन्के मालिकहीका माला करे, बलके जिस् राजाके राजमे ऐसा मोति रहे, तो उसको भ-योजनतक दूर-रहनेवाली प्रजाका दुख नाम करें। २५८।

पाणि, तेज, चौर छावा इन् निन तत्त्रवे मिलनेसे सेष पयदा छोता छै, इसीतरछ सेघसे पयदाज्ञ्या मीति निनकिनिमका छोता छै, चर्यात् किसीमे पाणि, क्रिसीमे जिल चौर किसीमे चावाका छिसा ज्यादा अयवा कम रहता छै, जर्थात किम मीतिमे पाणिका छिसा ज्यादा एतता छै, जर्थात किम मीतिमे पाणिका छिसा ज्यादा एतता छै, वर्ष चजन साम ज्यादा छोता छै, वर्ष चजन साम ज्यादा छोता छै, वर्ष चजन साम ज्यादा छोता छै, वर्ष वर्जन साम ज्यादा छोता छै, वर्ष क्रिसमे तेज्ञा हिस्सा ज्यादा छोता छै, वर्ष क्रिसमे तेज्ञा हिस्सा ज्यादा छोता छै, वर्ष

"जप्रादा चमकदार नेष्ठायेत् गोन खीर सूर्यके तर्षये उप्पर चाख निष्ठ ठघरति, और जिनमे दावाका दिस्मा जादा दोता दे, वद ज्यादा रोसन, गोल, यक्तत्याक और खोजनमे दाल्का । २६०।

A cloud begotten Pearl is a blessing not

only to its owner ,-but it shoots its blessed influence a hundred yojanas* beyond the precincts of the

domains of the king possessing it

Clouds are produced by the union of three things, -water, energy and the air, accordingly. cloud begotten Pearls are divided into three classes. agreeably to the preponderance of one or other of these substances Those in which water forms the base, are very transparent, soft, weighty and highly agreeable

260 Those in which energy preponderates, are beautifully round and perceptible from a distance like the sun, while such as are predominated over by the air, are agreeably tender, spherical, highly transparent and light to a degree

অন্তবাদ।

মেঘোদ্রব যুক্তা যে কেবল তৎস্বামীবই শুভজনক এমন নহে,যে বাজাব বাজ্যে ঐ প্রকাব মূক্তা থাকে, সেই বাজাব শতযোজনদূববর্ত্তী প্রজাবর্গেবও সকলঅনর্থ বিনক্ত হয ।২৫৮।

জল, জ্যোতি ও বাযু এই ত্রিবিধ পদার্থেব সংযোগেই মেঘের উৎপত্তি, স্থতবাং উক্ত ত্রিবিধ পদার্থের আধিক্য অনুসাবে মেঘোৎপন মুক্তাও ত্রিবিধ হইষা থাকে, যে মুক্তায দ্রালর ভাগ অধিক থাকে, তাহা অত্যন্ত স্বচ্ছ, কোমল, ওলনে ভাবী ও অতিশ্য কান্তিবিশিক্ট হয়। ২৫৯।

যে মুক্তাতে তেজেব ভাগ অধিক থাকে, তাহা কান্ধি বিশিষ্ট, স্থব্নত ও সূর্য্যেব স্থায় ছুর্নিবীক্ষ্য এবং যাহাতে বায়ুব ভাগ অধিক থাকে, তাহা কান্তিবিশিষ্ট, কোমল, গোলা কাব, অতিনির্দান ও ওজনে অতিলঘু হয়। ২৬০।

A logana is sometimes regarded as about equal to a European league (i e 4 or 5 E gl sh miles but more correctly 1 Lrosas or about 9 m les according to other calculations 2; English miles and according to some 8 Irosus)-M Williams

मूचम।

वराच्यीर्षप्रभव वरिष्ठ' तस्यैव दंष्ट्राङ्गुरतुख्यवर्षा।

तस्य दे दृष्टु र तुर्वयया कचित् कयश्चित् समुवप्रदेशे

प्रजायते श्रुकरवद्गरिष्ठं ॥ ५६९ ॥ वस्रादिजातिभेदेन यराचोऽपि चतुर्व्विध ।

तेषु जाता भवेषाका समावेन चतुर्व्विधा । २६२ । वाद्मणः मुलवर्षमु कोमलस्पर्भ एव च ।

चित्रिय ग्रुक्तरकस्य सम्में क्षेत्र एव च । ५६३ । वैद्य स्वाच्छक्तपीतस्य कोमच कोजमित्रमः । ग्रह्नस्याच्छक्तनीतस्य क्षेत्र ग्राम एव च । ५६४ ।

तर्जमा।

मूक्तरके सम्तक्तमे जो नीति पयदा कीता की, वह मीति मूक्तरके दांतके समान सकेदबर्ण कीता की, खेकिन किमी किसी जगक्तमे मूक्तरके यदाने समान रहा कीता की। १९९१

विमा जगहम मूलरक यहनक ममान रहा हाता है। रहार विम्तरहे मतुष्यके ब्राह्मण, चन्त्र, वैद्य चीर गूरु बार

जात है, उशीतरह गुकरभी चार जातका होता है, धीर उसमे पवदाख्या गोतिभी चार जातका होता है। १६०। बाह्मगजातका मोति महेदवर्ष सीर बेर्नाः यान्न

जातका मोति मफेटा सुचीमायेच और हुनेमे कब्रम । > ()

वैग्रजातका मीति संबेद पीनावनतियेक्षये चौर हुने में पेन्ता: चौर मूहजातका मीति सर्वेद नीलावनवियेक्षये

चीर कुनेमे वर्षश्री २६८।

261. Pearls which originate in the head of the boar, are generally white as the tusks of that animal :-- rarely resembling in hue, the color of the boar

262. As hours are divided into four orders denominated after the names of the four cardinal castes, even so are the pearls which are produced by them.

263 64. The Brahmin Pearl is white and soft to the touch; the Kshetriya one is red-white and hard; the Pearl of the Vaisya class is whitevellow and tender: while the Sudra Pearl is blue-white and hard to the touch.

অনুবাদ।

ববাহমন্তকে যে সকল মুক্তা জন্মে, তৎসমূদায প্রায়ই ববাহ দন্তেব স্থায় শুক্লবর্ণ হয়, তবে কোন কোন স্থলে কথন বা সেই ববাহেব গাত্রেব বর্ণেব স্থায় বর্ণবিশিউও হইয়া থাকে। ২৬১।

ভ্রাক্ষণাদি জাতিভেদে বরাহও যেমন চারিপ্রকার হয়, তদ্বৎপন্ন মূক্তাও তদ্ধপ চতুর্বিংধ হইবা থাকে। ২৬২।

বন্ধবর্ণ মূক্তা শুরবর্ণ ও কোমনস্পর্শ, ক্ষত্রিবর্ণ মূক্তা শুক্র-রক্তবর্ণ ও কর্ক শম্পর্শ। ২৬০।

বৈশ্যবর্ণ মূক্তা শুরু-গীতবর্ণ ও কোমনস্পর্শ, শূদ্রবর্ণ মক্তা শুক্র-নীলবর্ণ ও কর্ক শস্পর্শ ।২৬৪।

मूलम्।

कोवजं कोवसहमं तहं द्वासहम्बद्धि ।

श्वतसं मनुनै रस्यं मौक्रिकं युख्यकितैः ॥ २६५ ॥

ये कस्वतः मार्डिसखावमप
पीतस्य शङ्कमनरस्य गोचे ।

स्वामोक्तिकानामिष्ठ तेपु जन्म

तह्वचणं सम्मति कीर्भवासः ॥ २६६ ॥

स्वयोनिमध्यक्यिनुस्यवणं

शङ्कादृष्टकोवफवममाण ।

कस्वृङ्गव तेषु मुभं प्रदिष्ट-

तर्जमा। जीमोति देरके फलके समान श्रीर शूकरके दातके

मुत्पद्यते यच गजेन्द्रकुस्मात्। १६७।

समान सफेद, ऐ वा युक्त के जातका मोति देखने वे बडत.
आच्छा और पुण्ड हीन घादमीको निह मील सक्ता। १६५।
जिस् युक्त बदन पोनार द्व होए और सु कालारक्त, ऐसे ही युक्त मोति पयदा होता है, दुस्विये
धाव उस्के जातके मोतिका हाल लिखा जाता है। १६६।
युक्त जो मोति पयदा होता है, उसका कद बद्दे
बद्दे वरके ममान है, और उसका रद्व ग्राहुके पेटके समान
है, युक्तवाला मोति चीर हावीके मस्तकका मोति सब्दिं
जेष्ठ और मद्दाल करनेवाला है। १६६।

265. A boar-begotten Pearl resembling a plum in shape and the tusks of that animal in hue, is a most beautiful object in nature and is not to be obtained by a meritless individual

266 Of conch shells, those only that are yellowbodied and black-mouthed produce Pearls. I shall now describe Pearls of this origin.

267. A Pearl that is derived from a conch shell, is of the dimensions of a large plum, and is white as the inner surface of the coat of that shell fish. Such Pearls as well as those produced by elephants, are the best of their kind and are productive of good fortune.

অহবান।

আকাবে কুলেব সদৃশ অথচ ববাহ দন্তবং শুরবর্ণ ববাহ-জাত মুক্তা দেখিতে অতিবমণীয এবং পুণ্যহীন ব্যক্তিবর্গেব অপ্রাপ্য । ২৬৫ ।

শশ্বেৰ মধ্যে যেওলিব অবযৰ পীতবৰ্ণ এবং মুখ কৃষ্ণবৰ্ণ, দেই দকল শশ্বেই মূকা জন্মিযা থাকে, সম্প্ৰতি তজ্জাত মুক্তাৰ বিবৰণ বিবৃত কৰা যাইতেছে। ২৬৬।

শখ হইতে যে সকল মূক্তা জন্মে, তাহাদিগের আকাব বৃহৎ বুলের ভাঘ, বর্ণ শখের উদ্বেব ভাঘ, শখজাত ও গজ-বুস্তজাত মুক্তাই দর্ববিপ্রধান এবং নচলজনক। ২৬৭। 5° 288 मधिमाचा।

मूलम् । वर्षीपलसम दीप्तरा पाञ्चजन्यकुलोङ्गवं ।

क्योताय्डममाण तद्तिकान्तिमनोघरं ॥ ५६८ ॥ श्राखन्याद्किनचचे ये जाता' कब्बय' सुभा' । मौक्रिकं तेषु जातं चि सप्तवियतिभेदमाक् ॥ ५६८ ॥

भारतक तथु जात । इ चताच बताच बताच हुन स्वर्ध । भारतक विकास नीव वर्षा प्रकीतिता । २७०॥

सर्जमा ।

शक्तके मध्ये पाञ्चलत्य शंख सबमे प्रधान की, लस्के

वंशमें जो शब्द होता है, उस्का मेति कतुत्रें आएडे के चमान है और घोले पायर के चमान सफेर, नियाल, रेरधन और देखने में मनका घरने वाला। १६८। अधिनी धार नच घर में सामाइश नच घरक जानाइश किसमका शब्द पयदा घोता है, इसी तरह के शब्द पयदा छोता है। १६८। शब्द के पयदा छोता है। १६८। शब्द के पयदा छोता है। १६८। शब्द के पयदा छोता है। एवं के प्रकार का सामा प्रकार का सामा जाता, कमपीवा, ज्यादा चाल, नीला, कम चाल, ज्यादा पीना, घालका खानी और इटके श्रीस एक, इसी तरह के नीकिसमका रक्त होता है। १७०।

268 The conch shell called panchajanya* 1s the best of its kind. The Pearls produced by it are like the pigeon's egg in size, and transparent as hall as well as white. These are exceedingly beautiful.

269. There are twenty seven kinds of conchshells, produced by as many stars of the Asumi class; accordingly Pearls generated in them being marked out by distinctive qualities, are divided into twenty-seven orders.

270. A conch-shell Pearl is white, black, yellowish, crimson blue, reddish, deep yellow, ashcolored or pale-red.

অহবাদ।

শদ্খেব মধ্যে পাঞ্চল্লন্ট সর্ব্বপ্রধান, তদ্বংশজশখোত্তব মূক্তা আকারে কপোত ডিঘ সদৃশ, কবকাব ন্যায় বচ্ছ, শুদ্ধবর্ণ, অতিশ্যকান্তিবিশিক্ট, দেখিতে অতিমনোহর ।২৬৮।

অগ্নিচাদি সপ্তবিংশতি নকজে সপ্তবিংশতিপ্রকাব শম্ব উৎপদ্দ হয়, স্থতরাং শম্বোদ্তব মুক্তাও তদমুসারে সপ্ত বিংশতিবিধ হইযা থাকে। ২৬৯।

শানোৎপর মূকাব গুরু, কৃষ্ণ, ঈষৎপীত, গাচ-লোহিত, নীল, ঈষং-লোহিত, গাচণীত, ঈষৎপীতটে এবং পাটল এই নববিধ বর্ণ হইমা থাকে। ২৭০।

So called because it is related to the five classes of beings, if, gods, men, Gandharvas and Asuras, serpents and Pitris.— Billiams.

मूलम् ।

महन्मधलघुनानै चत्रविंगतिधा भवेत्।

क्रमतस्रेषु विद्योय' नचचेषु मनौषिभि'॥ ५७९॥

पाठीनप्रस्थ समानवर्ष

मीनात् सष्टत्त लघु नातिसूषा'।

चत्यद्यते वारिचराननेष् मीनाख ये मध्यचरा: पर्योधे । २७२ ।

ग्रञ्जापलसमं यसु मौतिक तिमिनं वघु। पाटलीयुष्पमञ्जाशमस्यकान्ति स्वर्त्तुल ॥ ५७३ ॥

सर्जमा ।

षाखिनी प्राद् सालाइश नचचके मध्ये पाखिनीसे लेकर अञ्चेपातक यडी नी नचचमे पयदाङया मीति घोजनमे बद्धत् भारी, मधा नच वसे लोडा नव बतक. यकी नी नचवजातका मोति फकत् श्रोजनी श्रीर मूव नचम्ये रेवती मचमतक् यशी नी नचमजातका मोति चीजनमे दाल्का दोता है। ५७१।

जो मछलि समुद्रमे पयदा होति है, उस्के समे मीति पयदा होता ही, मक्तिजातका मोति बद्धत गील, देखनेमे कोटा, भोजनमे डाल्का भीर उस्का वर्ष वीयाल मक्रलिके पिठके समान । ५७२।

तिमि मक्कि को मोति पयदा होता है, उन्का डीन घुषटी चर्यात् गुष्त्राके समान, भोजनमे मछत् धान्का, पाटलीफुलके समाभ रद्गमे उम्दा, देखनेमे उत्तम षीर कदमे गोल, लेकिन ज्यादा चावदार नहिं।५७३।

271. The nine species of Pearls obtained from the first nine stars of the Assimi order from Assim to Aslead, are very heavy—those produced by the next nine from Maghá to Ieshthwá are less so; while those produced by the rest from Malá to Revati are very lepth.

272. Pearls are also obtained from the mouth of sea-fish. Such pearls are singularly round, small and light, and in color are like the back of the sheat fish, (Silurus Boalis).

273. Those Pearls that originate in whales, are gunjā shaped* and pātali-colored.† They are very light and agreeably round, but are not highly lustrous.

অমুবাদ।

অধিকাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রের মধ্যে অধিনী হইতে
অপ্লেয়া পর্যান্ত এই নবনক্ষত্রজাত মূকা ওজনে অতিওক্ত,
মুখা হইতে জ্যেষ্ঠা পর্যান্ত এই নবনক্ষত্রজাত মূকা ওজনে
গুকু এবং মূলা হইতে বেবতী পর্যান্ত এই নবনক্ষত্রজাত
মূকা ওজনে লঘু হইযা থাকে। ২৭১।

মে দকল মংক্ত দমুদ্রে জন্মে, তাহাদিগের মূথে মূকা উৎপদ্দ হয়, নংসাজাত মূকা অতিগোলাকাব, আকারে ক্ষুদ্র, ওজনে লঘু হয়, এবং তাহার বর্গ বোয়াল-মংস্যের পুঠভাগের বর্গ সদৃশ। ২৭২।

তিমিমংস্য হুইতে যে মুক্তা জন্মে, তাহা আকারে গুপ্তার (কুঁচের) ভাষ, ওজনে অতিলয়, পাটলীপুষ্প-সনুশ বর্ণবিশিষ্ট, উত্তম গোলাকার, কিন্তু অধিক তেজ-বিশিষ্ট হয় না। ২৭০।

^{*} Patal: is the trumpet flower, Bignonia Suarcolons.—Williams † A red and black berry of Abru's Precatorius forming the smallest (f) of the jeweller's weights averaging about ‡1 grains Troy.—Williams.

म्सम्।

षातिषत्ताकषदन्त्वस्तिपातग्रभेदतः । सप्तप्रश्रतयो मीनाः सप्तभा तेन सीक्तिकः ॥ २०४ ॥ विध्वप्रमक्षं यातात् चापीतं मृदु पित्ततः । गुक्कं ग्रक् ककोट्टेकात् वातपित्तात्मृदुवषुः ॥ २७५ ॥

तर्जमा ।

' यायु, पित्त, कफ; यायुपित्त; कफपित्त; यायुक्षफ फीर वायुपित्तकफ यही चान किविमकी मक्तिभी चाब प्रकारकी होति है, इसवासी मक्तिभी पयदाङ्या मीतिभी सात तरहेका होता है। ५७८।

जिम् सक्षतिमे द्वाया च्यादा द्वीता, उस्मे पयदाजया मीति भोजनमे सज्जत् द्वालका, भरणवर्षः जिस्
सक्षतिमे पित्त जादा द्वोता, उस्मे पयदाज्या मीति
द्वालका पीलारङ्ग, भीर जेरा ठोकरसे भट टुट् जायेगाः
जिस् सक्षतिमे कप ज्यादा द्वोगाः, उस्मा पयदाज्या मीति
भोजनमे मारी, भीर ममेद रद्रः भीर जिस् मक्षतिमे
वायुषित्त च्यादा द्वोगाः उस्का पयदाज्या मीति भोजनमे
वज्जत्वादा द्वोगाः उस्का पयदाज्या मीति भोजनमे
वज्जत्वादा द्वारा द्वोताः उद्वादेगाः १२७४।

TRANSTATION

274. Fishes are divided into seven kinds, according to the preponderance of one, two, or all of the three vital properties—the air, bile and cold; and so are the Pearls produced by the finny kind,

275. Pearls which come from fish into whose composition the air principally enters, are exceedingly light and reddish brown, those produced by bilious fish are yellowish and brittle; those produced by fishes in which cold preponderates, are heavy and white; and those which originate in fish predominated over by the air and bile, are brittle and excessively light.

অভ্ৰাদ।

বাত, পিন্ত, কফ; বাতপিত; বাতকফ এবং বাতপিত-কফ; এই সপ্তবিধ ধাডুপ্রাধাত্তনিবদ্ধন মংঅ সপ্তবিধ হইয়া ধাকে, স্ততরাং তত্ত্বাত মুক্তাও সাতপ্রকার হয়। ২৭৪।

বাতপ্রধান মংশুদ্রাত মুকা ওলনে অভিশন্ন লয় ও অফ্লাবর্ণ; পিতাধিক মংশ্রোম্ভব মুকা ঈষং শীতবর্ণ ও ভদ্ন-প্রবণ; কৃষ্ণবভাব মংশ্রোহণন মুকা ওলনে ভারী ও উক্র-বর্ণ এবং বাতপিতাধিক মংশ্রুমন্তব মুকা ভদ্পপ্রবণ ও ওল্পনে অতি লয়। ২৭৫। मिक्सिसा ।

¥ 294

मूचम्। यातस्ये पामवं स्यूजं पित्तस्ये पामम च्छं।

सर्वेलिङ्गप्रयोगेषे साझिगतिकसुच्यते। एकजा: शुभदा: ग्रोकासचा वै साझिगतिका: 1 २७६ 8

भीजज्ञमं नीलविश्रुद्धवसं

सर्वे भवेत् प्रोट्यु ववण्योमं । नितान्तधौतप्रतिकस्प्रमान-

निस्ति ग्रधारासमवयोगं क। ५७ ७।

भुजल्लमास्ते विषवेगहप्ताः श्रीवासुकेविश्वमवाः प्रथिद्यां ।

त्रावासकामनाः ष्टांघट्या क्षचित् कदाचित् खलु स्टब्स्ये

र् नदारपर् चलु उत्सदय तिष्ठन्ति ते पर्यात तान् मनुष्यः ॥ ५७८० ॥

तर्जमा।

जिस् महनिषे बायुक्क ज्यादा होगा, उस्का पयदा-छया मोति कद्मे कुच बद्दा; जिस् महनिमे पिना-कफ ज्यादा होगा। उस्का पयदाज्ञया मोति बज्जत् साफ भीर निम्माल; जिस् महनिमे बायु पिना कफ तिनो समान होगा; ज्यादाज्या मोति प्रजीलिखत तिन गुण्युक्क होगा; चौर इसी सातिसिम्की मह्मातुमधान महिसी यो मोति एकधातुमधान भ्रयुक्षा मुक्षातुमधान महिसी पयदा होए, वही गुमदायक है। १७६।

यापके मलकमे जो भीति पबदा होता है, वह छन्दा, गोस, यजन साफ चौर जेनाति ज्ञद्र तलवारके बादके समान नीलारज । २०७।

जिस् कोलार्क । २००। जिस् सर्पेक सम्मक्ते सीति प्यदा होता है, यह बास्रिक संग्रका साप होता है, जीर स्पेत साप जमीनपर हरलगहे जिह पयदा होता, कदाचिन किसी पविच देशमें रेसी सांप पाया याता है। २७८।

Se.



276. Pearls produced by fish predominated over by the air and cold, are rather large; those produced by fish in which bile and cold preponderate are very transparent; and those produced by fish into which the three substances enter in equal proportions, combine all the first-mentioned qualities. Of these, those only into the composition of which either one substance or all the three enter, are productive of good.

277. Pearls which adorn the serpent's crest, are finely round and highly shining; and reflect a beautiful blue halo like the flash of a polished sword,

278. Those serpents that bear Pearls on their head are the descendants of Vásuki*; these are not born everywhere, and are rarely seen by men in some seared ground.

অহ্বাদ।

যে মংজে বাতপ্রেমার ভাগ অধিক, ততুৎপদ মুকার
আকার কিঞ্চিৎ বৃহৎ হয়; পিতপ্রেমাপ্রধান মংক্তরাত
মুক্তা অতিবছর এবং বাত-পিত্তকদাধিক মংজোৎপদ
মুক্তা প্রথমোক্ত ত্রিবিধ লফণাক্রান্ত হইমা ধাকে। উক্ত
সপ্তবিধ মুক্তার মধ্যে যে ওলি একধাতুপ্রধান বা সর্ক্তধাতুপ্রধান মংস্কাইতে জন্মে, তাহারাই শুভজনক। ২৭৬।

ভূলদমন্তক্জাত মূকা উত্তমগোলাকার, অতিশয় উচ্ছল, এবং শাণিত করবালের ধারের হ্যায় বিশুদ্ধ নীল-আভাযুক্ত হয়। ২৭৭।

যে সকল ভূজদের মন্তবে মূক্তা জন্মে, তাহারা বাহ্-কির বংশসমূত্ত এবং সে সকল সর্প পৃথিবীর সকল আন জন্মে না, ক্লাচিং কোন পবিত্র প্রদেশে তাহাদিগকে দেখিতে পালয়া যায়। ২৭৮।

^{*} Sovereign of the anales.

मूचम ।

फणिकं वर्त्तुलं रस्यं नीलच्छाय महाद्युति । सुष्यहीना न पथन्ति वासुके कुलसमावं ॥ २७१ ॥

भृगालकोलामलकोलग्रञ्जा-

भनप्रमाणासु चतुर्विधासा । स्वतंत्रावाह्यस्वविधापूदाः

स्तुत्रस्तानस्त्रन्यसमूद्राः सर्पेषु जाताः प्रवरास्त सर्वा । १८०।

भाषापि रज्ञानि धर्ने श्रियस्वा राजश्रियस्वा महती दुरापां।

तेजीऽन्विताः पुण्यकतो भवन्ति

सुक्राफलस्यास्य विधारणेन ॥ ५८९ 🏾

सरजमा।

सापके सस्यक्षमा पयदाज्य या गीति गोल, देख्ने मे खुष-सुरत, नीलरञ्जकी पामासित, बज्जत रोसन, ऐसा गीति सुष्युचीन धादमीको घाष्ट्ये देख्नामी नवीय निर्ध चौता। २७८।

सापके मस्तकमें जो मौति पयदा होता है, यहभी वाद्याण, चिन्नु, वैद्य चौर ऋद्रके समान चारवर्णका है, उस्में को वाद्मणवर्ण होए, उस्का कद खांकुबके फलके समान, जो चिन्नुवर्ण, उस्का कद खांकुबके फलके समान, जो चिन्नुवर्ण, उस्का कद खांमलाक से समान, जो विद्यवर्ण, उस्का कद छोटे थेरके समान चौर जो ऋद्र वर्ण, उसका कद एञ्चाक समान है। २८०।

पुण्डामान् चादमी यज्ञत् रतः, धनः, वच्ची, या यज्ञत् सुम्बिक्तचे चासिवधीनेवाली रावलमीको धासिल कर्षे जिसतर्थये चमकति, पेमानी खौर सुराणी चेचारा धोते धे, उसी तरध्ये सामके मस्त्रकता एक मोति धारण करनेते तेजवान धो सक्ते ही रुटर्।

279. Persons void of merit cannot see the class of Pearls under description;—the exceeding brilliance and beauty of which are hidden from their view.

280. Such Pearls as are found on the head of serpents, are divided into four classes called after the names of the four principal castes. Of these, those which are Brahmins, resemble in form Shydkula*; the Kshetriya class are like the fruit of the Emblic Myrobalan; the Vaisya Pearls are like common plums; while the Sudra ones are gunjd-shaped.

281. The power which is attained by virtuous people through the possession of innumerable gems and great wealth, through ordinary prosperity or through regal good fortune, is attained by wearing one serpent-begotten Pearl.

অভ্ৰাদ।

ফণীর মন্তকোরুত, গোলাকার, রমণীয়, নীলছায়া-বিশিষ্ট ও অভিতেজন্বী মূক্তা পুণাহীন ব্যক্তির নয়নগোচর হইবার নহে। ২৯৭।

সর্পমন্তকে যে দকল মূকা উৎপদ হয়, তাহারা ত্রাহ্মণ, কজির, বৈশু ও শৃদ্রভেদে চতুর্বিধ হইরা থাকে। তম্মধ্যে যেগুলি জহ্মবর্ণ, সেগুলি শ্যাকুলের আয়; যেগুলি কজিবর্ণ, সেগুলি আমলনীর আয়; যেগুলি বৈশুবর্ণ, দেগুলি সামাত কুলের আয় এবং যেগুলি শূদ্রবর্ণ, দে-গুলি কুঁচের আয় হয়। ২৮০।

পুণ্যবান্ লোকেরা প্রচুর রত্ত্ব, ধন, সামান্য ঐ অথবা অতিছ্প্রাপ্য নহৎ রাজঐ প্রাপ্ত হইয়া যেরূপ তেজধী হন, একটী সর্পজাত মূক্তাধারণে সেইরূপ তেজধী হইডে পারেন। ২৮১।

A thorny shrub.

60× 298 मियमासा ।

> मूचम्। जिज्ञासया रत्नविनिचयज्ञैः

श्मे सुद्धत्ते प्रवतः प्रवतात्।

रत्ताविधानं सुमहदिधाय

चमार्जीपविष्टं कियते यदा तत्। २८५॥

तदा महहुन्द्भितूचेरघोषै-धनैधनैराबुयतेऽनारीचं।

न तं भुजद्वा न तु जातुधाना

न राचमा नापि च दुष्टलोका: 🏾 डिंसन्ति यस्याहिशिरःसमृत्ये

मुक्ताकर्च तिष्ठति कीषमध्ये॥ ५८३॥

भेकादिपृषि जायन्ते मणयो ये कचित् कचित्। भीजजनमणेसुल्यास्ति विच्चेया तुधीत्तमैः । २८४।

तर्जमा । जिस्कत कोद्र घाट्मी रत्नपारचीके मतके धतुसार

नेकसाबेतमे सांपके मक्तकते पयदा जये मीतिको मकानमे रखते हैं, उन्वक्तमे आकाशमग्रहतमे घन घन दुर्खिम वाजे, की शुन होति हैं, इस्कारण जो चादमी खाजानेमें

सांपका मोति रक्षे, वह धादमी कभी सांप, राचस, निमा-चर और डाकु वर्गेरहचे भय नहि रख्ता। ५८२।र८३।

किसि किसि जगहमें मेद्ककेभी मसकमें मौति होता है, पिएइत लोक उस् मोतिकोभी सांपके मौतिक समान कहते हैं। ५०८ ।

282—283 When in an auspicious hour, a person carefully keeps such a gem in his house, in conformity with the instructions of the authorities, the skies resound with the sound of the Dundhuri,* and such a person has nothing to fear from serpents, Rákshasas† and other demons, or from wicked people.

284. In certain places, Pearls are found on the head of frogs; learned men class these with serpent Pearls.

অনুবান।

যথন কোন ব্যক্তি বহুপবীক্ষন্দিগের অভিমত শুভলগ্রে দর্পোত্তব মূক্তা অভিবহ্নপূর্ব্বক গৃহে রক্ষা করেন, দেই সময়ে আকাশমণ্ডলে ঘন ঘন ছুন্দুভিধানি হইতে থাকে। এবং যে ব্যক্তিব কোমমধ্যে সর্পমূক্তা থাকে, সে ব্যক্তি কথনই সর্প, বাক্ষস, অপবাপব নিশাচর এবং ছুক্টলোক হুইতে ভীত হয় না। ২৮২। ২৮৩।

কোন কোন স্থানে ভেকাদিব মস্তকেও মণি জন্মিয়া খাকে, পণ্ডিতেবা সেই মণিকে মর্গমণিব তুল্য বিবেচনা করেন।২৮৪।

A sort of large kettle drum

[†] Fide antè

सेंडलिकपारलोकिकमीराष्ट्रतामुपर्णोपारमीका । कौवेरपाएडप्रविराटमिति मुक्ताकराद्याष्टौ ॥ २०५॥

स्वात्वा स्थिते रवी मेघेमुक्ता ये अलविन्दव ।

गौर्ण मुक्तिषु जायन्ते तेर्मुका निर्मवित्वप ॥ २००६ ॥ खूना मध्यास्त्रया सूचा विन्द्मानानुभारत । भवित्त सुक्षासाधाञ्च मूल्यं स्थान्मानरूपत । २००॥

तरजमा।

के उस्का नाम केव हैं), शीराष्ट्र (सराट), तासपर्थों (पश्चिम घाटपर्वतके पाम), पारसीक (पारस्व देग), कौबेर (कैनासपर्वतके तिकट), पार्ट्य (द्राविडके धन्तर्गत), बिराट (मत्स्व देश), इसी चाट जगहमें मोति पवदा होता है। रूप्। सूर्य जिस् समये स्वातीमचन्त्र रहता है, उस् समयमें जो स्व जनकी जुद सिपमें पड़ित है, उसी जनकी

सिंडल, पारलीकिक (भाव इसवक्तमे नर्डि मालुम,

होता है। २८६। जलकी बुदै जिस् तरहकी वर्षे गी, उसी नरहेका मीतिभी होगा, चर्यात् खगर जलकी बुद रति होगि, ती बडा

बुदके द्वारा बद्धत् साफ भाषीत् बद्धत् रौसन मीति पयदा

मोतिभी घोगा, चर्यात् चगर जलकी बुद रति छोगा, तो घडा मोति छोगा, चौर मध्यम जलकी बुद्धे मध्यम स्नोति छोगा चौर पत्ति बुद्धे छोटा मोति छोगा। २८७।

285. Pearls are produced in the following eight places:—Sunhala,* Páralaulika,† Saurástra,‡ Tam raparní,¶ Párasíka,∥ Kauvera,§ Pándya** and Vrata.††

286. The Pearls that originate in water-drops falling upon oysters, when the sun rests on the Swdttt star, are flawless and bright

287. The size of these varies in strict concomitance with the size of the water-drops—e. e. a large drop producing a proportionately large Pearl, and a small drop, a proportionately small one.

षञ्चोन ।

দিংহল, পাবলোকিক (অধুনা অজ্ঞাত নামে পবি-ণত) সোবাষ্ট্র (স্থবাট), তাত্রপর্ণী (পশ্চিম ঘাটেব সমিহিত), পারসীক (পাবগুদেশ), কোবেব (কৈলাস-পর্বতের সমিহিত), পাণ্ডা (দ্রোবিডেব অন্তর্গত), বিবাট মংগুদেশ), এই অন্টস্থানে মূকা উৎপন্ন হয়।২৮৫।

সূর্য্য যে সমষে স্বাতীনক্ষত্রে অবস্থিতি কবেন, সেই সময়ে যে সকল জনবিন্দু শুক্তিগর্কে নিপতিত হয়, সেই জনবিন্দু দ্বাবা অতিনির্দ্মন এবং অতিতেজস্বী মুক্তা জন্মে। ২৮৬।

বৃষ্টিবিন্দু দকল যে পবিমাণে পতিত হইবে, মূকাও সেই পবিমাণে জমিবে, অর্থাৎ স্থুলবিন্দু দাবা স্থূল, মধ্য-বিন্দু দাবা মধ্যমাকার এবং অতিসূক্ষবিন্দুতে অতিকুক্ত মূক্তা উৎপন্ন হইবে।২৮৭।

^{*}Coylon. † Cannot be identified now. † Surat.—(Vide ant?) † Near the Western Ghits. † Persia † Adjoining the Kailásha Mountain † Matsyadesha †† Matsyadesha

tt The star Arcturus (as forming the fifteenth lunar asterism)

भ्रतिसम्बद्धाः ।

मुचम्।

सुसिम्धं मधुरच्छायं भौतिकं सिइलौहवं। पारली जिससभातं मी क्षियं निविदं गुरु । ५८८ ॥ तासपणीं भवं तासं पीतं पारसस्भवं। र्पपच्यामञ्च रूचच कोवेराद्ववमीकिक। पाष्डादेशीहवं पाष्ड सित रूचं विराटन । २८८। रिकाणाखात्या स्वा श्रुक्ति सत्प्रसृतिः सुदुर्वभा।

तच जातं चितं खच्छ जातीफलसम वरं॥ ५८०॥

सर्जमा।

सिद्दलदेशी मोति वज्जत् चमकदार चौर शाफ मीमके समान रज्ज, पारलीकिक देशका पयदास्त्रया मोति वस्तत् ठीम श्रीर श्रोजनमें बज्जत भारी। २८८।

तास्त्रपणि देशका पयदाख्या मीति तावेके एक, पारस देशका मौति पीला रख, कौवेर देशका मौति थोड़ा

खान रज चौर नदा कर्कण, पायुडादेशका मोति फिका सफेद, विराट देशका मोति शक्तरज्ञ और कर्कश । ५८८। क्रिकाणी नामकी एक जात सिप पथटा छोति है, चेकिन उस् जातकी सिप बद्धत् कम है, उससे जी मोति पयदा होता है, वह नेहायेत खोसरदा, समेद चौर वज्जत् साफ चौर जायफलके समान वडा, दूस तरहेका मोति काविल इज्जत्के हैं। ५२०।

288. A Gingalese Pearl is very cool to the touch, pure and honey-colored; a páralaukika Pearl is very substantial, and consequently heavy.

289. A Pearl of the *Túmraparni* country is copper-colored; a Persian Pearl is yellow; a *Kauvera* Pearl is gray and frightfully rough; and a Pearl produced in *Pándya* is white and rough.

290. There is a particular oyster called Rukmini, which is very rare. The pearls found in it are white, transparent and large as nutmegs. They are much coveted.

অহ্বাদ।

সিংহলদেশীয় মূকা অতিস্লিগ্ধ এবং বিশ্বদ্ধ স্থায় বর্ণবিশিক্ত; পারনোকিকোৎপদ্দ মূকা অত্যন্ত নিবেট, স্থাক্তরাং ওজনে ভারী হইয়া থাকে। ২৮৮।

তাত্রপর্ণীসমূদ্রত মুক্তাব বর্ণ তাত্রেব ন্যায়; পাবস্যদেশীয় মুক্তা পীতবর্ণ; কোবেরদেশোন্তব মুক্তা ঈষৎ স্থামবর্ণ ও অতিকর্মণ; পাণ্ডাদেশোৎপদ্ম মুক্তা পাণ্ডুবর্ণ এবং বিরাট-দেশজাত মুক্তা শুক্রবর্ণ ও কর্মশ হইষা থাকে ১২৮৯।

রুদ্ধিণী নানে একজাতীয় শুক্তি জন্মে, তঙ্গাতীয় শুক্তি অতিতুর্নভ, তাহাতে যে মুক্তা উৎপদ্দ হয়, তাহা শুরুবর্ণ, বক্ত ও জায়দনের ন্যায় রহৎ হয়, এবং এ প্রকার মুক্তা অতিয়াদরণীয়। ২৯০°। मूलम् ।

खायावडर्त्तुचं रस्यं निर्होषं यदि सम्यते ।
चमूत्यं तांदनिर्हिष्टं रत्नलचणकोषिदैः ।
इत्तेमं नृपयोग्यं स्वाइसमाग्ये ने सम्यते ॥ २८९ ॥
बस्नादिकातिमेदेन गुक्तयोऽपि चतुर्विधाः ।
तास गब्बास जातं हि मौक्तिकं स्वाझतुर्विधं ॥ २८२ ॥
बास्नणसु चितः सम्बे गुक्तः सित्यः प्रमान्तितः ।
चारकः चित्रः स्युक्तयाक्णविभान्तितः ॥ २८३॥

तर्जमा ।

रत्नपारची पिछतों के मतके श्रुतसार जक्षम कुटरैंन-बाला और गोल, देखने में रमणीय और विश्वधेव मोति बज्ज तृ दुर्लम है; और बेलिमत् है, और राजाके योग्य है, उस् जातका मोति कम नसीवके योग्य मिहं, बच्चे एक बालमन्द प्रतापमानके योग्य है। १८९। जिस् प्रकारसे बाद्धाण, चिन्न, बैग्य और ग्रुट्र चारजात होति हैं, उसी प्रकार विपमेभी चारजात है, उस्से पवद'-ज्वा मोतिभी चार जातका है। १८९।

हात है, उन प्रकार विषयमा बारजात है। उर्व कर हिसा से किया मीतिभी चार जातका है। इर्द ।

जो मीति चफेद रख, चाफ, खोजनमें भारी, चमक-दार चौर तेजस्ती होए, उद्युक्ती बाह्मणवर्ष कहते हैं।
जो मीति सुखीमायेल, चौर देखनेमें बढ़ा, सुप-रक्ष चौर कुटदेनेवाला, वह मीति चन्निवर्ष है। इर्ट ।

291. According to the authorities, perfectly circular and chaste Pearls casting a beautiful shade, are rarely found and are of priceless worth, they being fit enjoyment for princes. Such Pearls are beyond the reach of unlucky individuals.

292. The four-fold division of caste holds also with oysters; accordingly oyster-begotten Pearls are of four kinds.

293. Such of these as are white, transparent, weighty, cool and shining, are reckoned Brahmins; those which are ruddy, and large and which possess a reddish light, are Kshetriyas.

षञ्दान ।

রত্বলক্ষণবিৎ পণ্ডিতদিগেব মতে উত্তম ছাঝাবিশিষ্ট, হুন্দর গোলাকান, দেখিতে রম্ণীয়, অথচ নির্দ্দোষ মূক্তা অতিত্বর্লত, অমূন্য এবং রাজতোগ্য, তঙ্গাতীয় মূক্তা অন্ন ভাগ্য ব্যক্তিগণের অপ্রাপ্য। ২৯১।

ব্ৰহ্মাদি দ্বাতিভেদে শুক্তি চতুৰ্বিধ হইযাথাকে, স্থতবাং শুক্তিদ্বাত মুক্তাও চতুৰ্বিধ হয়।২৯২।

যে সকল মূক্তা শুরবর্গ, স্বচ্ছ, ওজনে ভারী, রিশ্ব ও প্রভাবিশিন্ট, তাহারা ব্রহ্মবর্ণমধ্যে গণ্য; যেওলি ঈবং বক্তবর্ণ, আকারে হৃহৎ ও অরুশবর্ণ প্রভাবিশিন্ট দেওলি ক্ষত্রিযুবর্ণমধ্যে গণনীয়। ২৯০। वैश्वस्वापीतवर्षोऽपि सिन्धः खेतप्रभान्वितः । त्रष्ट्रः मुक्तवपुः सूचासया खुलोऽपितद्यृतिः ॥ ५८८ ॥

यदः मुक्तवयः चूक्तवया स्यूवाग्रवतद्यातः॥ २००॥ वैश्वजं शश्चितद्वार्यं कक्कोलफलमाचकं।

प्राप्यते वज्जभिः सुर्ध्यस्तद्रतं देवसमातं । २८५ ।

पञ्चमूतससुद्रेकार्द्रगः पञ्चिविधो भवेत्। सुकाः पञ्चविधास्तामा यथालचणसुच्यते ॥ ५८६ ॥

तर्जमा ।

जो मोति कम पीलारज्ञ, चमकदार, समेद और छुटदेने-बाला डोए, उस्को वैश्ववर्ण कडते डी, और जो मोति सादारज्ञ, लेकिन छोटा, और जो मोति कट्चे बढ़ा, लेकिन कालारज्ञ वड शूद्रवर्ण मोति डी १२८॥

वायसे जो मीति पयदा होता है, यह देखनेमें पन्द्रके समान मुक्तवर्ण और उच्का कद कक्कोलफलके समान यहा, इस जातका मीति खास, कोइ कोइ लोक बऊत् मुख्यके जोरचे दो एक पाने। १८५।

एध्वी चार पाच मधाभूत चार्थात् माट्टी, पाणि, घावा, चाग चौर चाकाण इसी पांच तत्त्वके कभी विश्वीचे वांगभी पाचमकारका छोता है, इस्कारण वाग्रजातका मीतिभी पांचप्रकारका छोता है। ५२६।

291. Those Pearls that are yellowish and cool. . and which are possessed of a white lustre, are Vaisvas; lastly of Súdra Pearls, some are white and small while the rest are black and large.

295. Pearls which originate in bamboos, are clear as the moon; and are like the kakkol* fruit in shape. They are generally enjoyable by the gods. Some through rare merit obtain possession of one or two.

296. There are five species of bamboos, on account of the preponderance in them of one or other of the five elements; consequently bamboo Pearls are classified under five distinct heads.

অমুব্দি ৷

যে সকল মুক্তা ইষৎ পীতবর্ণ, স্লিগ্ধ অথচ শ্বেতপ্রভা বিশিষ্ট, তাহারা বৈশ্ববর্ণমধ্যে পরিগণিত এবং শূদ্রজাতীয় মূক্তার মধ্যে কতকগুলি শুক্রবর্ণ ও কুদ্রকায়, এবং কতক-গুলি কৃষ্ণবর্ণ ও বৃহৎকায় হইয়া থাকে। ২৯৪।

বংশদ্ধাত মুক্তা দেখিতে চক্রের ভায শুরুবর্ণ, আকারে ককোল (সুগন্ধি দ্রব্য বিশেষ) ফলের সদুশ, এই জাতীয় মুক্তা প্রায়েই দেবভোগ্য, কেহ কেহ বহু পুণ্যবলে ছুই একটা প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ২৯৫।

পৃথিব্যাদি পঞ্ছতের প্রাধান্যনিবন্ধন বংশ পঞ্চবিধ হয়, স্বতরাং বংশজাত মূকাও পাঁচপ্রকারের হইয়া থাকে। ২৯৬।

[·] A fragrant fruit.

मूचम्।

पार्धिनो ग्रहरक्का च तैजसी तेजसा समु:।

वायनी च चदु: ख्ला गागनी कोमना समु:।

प्राप्पा सित्था च्या गुक्ता पद्धिता प्रवरा मता:।

प्राप्ता धारणमाचेण व्याधि: कोऽपि न नायते। १८८।

पत्रुषा मीतिक क्याया पीता च मधुरा सिता।

नीता चैव समाखाता रक्तस्वपरीचक ॥ १८९॥

तर्जमा। जिस् मेतिने प्रथीका हिस्सा ज्यादा है, वह चीज-

नमें भारी, श्रीर बद्धत् साथ, जिस् मेतिमे तेजका हिसा अप्रादा है. वह याजनमे हाल्का, जिस्मेतिमे हाबाका हिस्सा ज्यादा है, वह घोडा ठोकरसे टुट आता है श्रीर कदसे वडा, श्रीर जिस्मेतिमे श्राकाणका

हिस्सा कारता है, वह कुनेमें खाच्छा और बीजनमें हाल्का। २८७। जिस् मेतिमें अलका हिस्सा ज्यादा है, वह समकद्दार, सादा और साफ, यही पांचजातके मेति

पहेरनेसे किमी तरकको व्याधि खर्थात् बहनके विमारिका खीफ निर्षः , २८८ । रक्षपार्ची पण्डित पीला, मधुके समान रङ्ग, मुक्तवर्षे चीर नीलवर्ष, यशी चारप्रकारका स्थामा मीतिकी कहते हैं । २८८ ।

297. Earthy Pearls are heavy and spotless; energy-begotten Pearls are very light; airy Pearls are exceedingly brittle and thick; skyey Pearls are very soft and light.

298 Watery Pearls are cool and eminently white. All these kinds are superior; and the wearing of them wards off disease.

299. Authorities in the matter of gems mention four kinds of shade as belonging to Pearls:mz., the vellow, the honey-colored, the white and the blue shade.

অমুবাদ।

পার্থিবী মুক্তা ওল্পনে ভাবীও অতিনির্মাল, তৈজসী মুক্তা ওজনে অতিলযু, বায়বী মুক্তা অতি-ভসুর ও সুল, शाशनी गुरु पछि-द्यामन पथ्ठ एकंत नय । २৯१।

क्रमीया गुरू सिक्ष, प्रजास एउन्दर्भ हरेया थाट्ट, अर्हे পঞ্চবিং মুক্তাই অভিশ্রেষ্ঠ এবং এই সকল ফাতীয় মুক্তা शरन दहिएत द्वानश्रदांत वाधिल्य थाद्य मा । २৯৮।

ब्रह्मविश्व शिष्ट्र क्षेत्र, मधुब, एक ध नील धरे हाकि-প্রকার ছামা মুক্তাতে নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ২৯৯।

मिक्रमाचा ।

मूचम्।

पीता लक्कीप्रदा च्छाया मधुरा बुद्धिवर्ह्धिनी । भुका यमस्तरी च्छाया नीचा सौभाग्यदायिनी ॥ ३०० ॥ सितच्छाया भवेदिप्र चित्त्वयार्वरिक्षमान्।

पीतच्छाया भवेहीया शूद्र हाम्याविकात ॥ ५०९॥

श्रथ मुक्ता-ग्रणाः।

सुतारञ्च सङ्चञ्च खच्छञ्च निर्मालनाया । घनं सिन्धञ्च सुच्छायं तथास्सुटितमेव च । त्रष्टी ग्रणा समाखाता भौतिकानामग्रेपत' ॥ ३०२।

सर्जमा।

पीला चाभायुक्त मोति दौलतका ज्यादा करनेवाला है, मधुके समान आभाविशिष्ट मौति बुह्विको देनेवाला, भुक्षवर्षे **भाभायुक्त मीति यशका** च्यादा करनेवाला है

भौर नील भाभायुक्त मोति सुभाग देनेवाला। ३००। भुक्त भागायुक्त मोति ब्राष्ट्राणवर्षं , प्रात कालके यूर्यके

समान आभायक मोति चित्तृवर्ष, पीत आभायक मोति वैद्यवर्ण और कृष्ण भागतुक्त मोति श्रुद्रवर्णमे सुमार किया गेया है। ५३९।

मोतिका गुण्।

सुतारत्न, सुष्टत्तत्व, स्टब्ह्त्न, निर्मात्वत्न, धनत्न, चिन्धल, सुक्तायल और चर्फ़्टितल यही बाटप्रकारके गुण मोतिमे हीता है। ३०५।

TRANSLATION.

300. The first brings on wealth; the second fosters the understanding; the next brings about fame; and the last is the harbinger of good luck.

301. A Pearl with a white shade belongs to the Brahmin, with a pale-red shade to the Kshetriya, with a yellow shade to the Vaisya, and with a black shade to the Sudra order.

Properties of Pearls.

302. A Pearl is named after the name of the quality which forms its distinctive feature; and eight sorts emerge as the consequence of this classification.

অহ্বাদ।

পীতছাযা লক্ষীর্ছিকাবিণী, মধুরছাযা বৃছিদাযিনী, শুরুছাযা যশোবর্ছিনী এবং নীলছাযা সোভাগ্যদায়িনী হইয়া থাকে। ৩০০।

শুরুছায়াবিশিক্ট মূকা বিপ্রবর্গ, তরুণ অরুণছায়া-বিশিক্ট মূকা ক্ষত্রিযবর্গ, গীতছায়াবিশিক্ট মূকা বৈশ্ববর্গ এবং ক্বফছায়াবিশিক্ট মূকা শূমবর্গনধ্যে গরিগণিত। ৩০১।

মুক্তার গুণ ৷

স্তারক, থ্রতক্ত, বাছক, নির্মানক, ঘনত, নিগ্রন্থ ফ্রায়ের ও অফ্টিডর, এই আটএকার গুণ মূক্তায় বিদ্যানান থাকে। ৩০২। मियमाचा ।

× 312

मूचम्।

तारकाशुतिसङ्काश सुतारमिति गद्यते । सर्वेतो वर्त्तुवं यनु स्टब्सं तिन्नगद्यते ॥ ३०३॥

सन्दरं दोपविनिर्मृक्त निर्मलं मलवर्जित। युक्तव तुलया यस्य तद्धनं मौक्तिकं वर ॥ ३०४।

श्रीताशुविस्वसङ्कार्यं मौतिर्कं सिक्यसुच्यते । कायासमन्त्रित यञ्च सुच्छाय तन्त्रिगदाते ।

व्रणरेखाविकोनं यत तत् खादस्कृटितं ग्रुमं॥ ३०५॥ खोतकाचसमाकारं ग्रुमागुणतयोजितं। भग्रराजप्रतिच्हायं भौक्रिक देवभूषणं। ३०६॥

तरजमा।

जिस मौतिमे तारेके समान भाभा निक्जे, वह सतार,

जो मोति गोलाकार, वह सुष्टत्त । ३०३।

जो मीति वेषयेव होए, उस्को खब्द कहते हैं, जो मीति मयला ना होए, उस्को निर्माल कहते हैं और जो

मोति चोजनमें भारी छोए, उमको घन कछते हैं। इ०४। जो चन्द्रके समान किरणविश्वष्ट हैं, उसको खिम्ब कछते हैं, जो मोति उत्तम खायाविश्वष्ट चर्यात् उत्तम

कडत हैं, जा मीत उत्तम कायाविश्वष्ट खयात् उत्तम भाभाविशिष्ट उस्को सन्दाय कडते हैं, श्रीर जो मीति साम सध्रा डोस, उसको खस्तुटित कडते हैं। ३०५ ।

सफेद रङ्ग काचके समान, उत्तम किरण्विमिछ, राष्ट्र मकलिके नमान चाभायुक्त, ऐसा मीति देवताचीके गण्नेके योग्य है। १०६।

TRANSLATION.

303. Those Pearls which throw out starry beams, are termed sútdra; those which are entirely round, are called supritto.

304 Those which are flawless, are called sachchha (transparent); those in which dirt has no place, are called nirmala [dirtless]; those which are

weighty, are termed ghana [dense].

305 Those Pearls which are ray-darting like the moon, are called snigdla [cool]; those which cast a fine shade, are denominated suchchhaya (finely shadowing); and finally those which are free from spots or breaks, are termed asfutita (not indented).

306. Such Pearls as resemble in color the white glass as are furnished with an excellent brightness, and as are possessed of a shade like the robuta* fish, are fit ornaments for the gods.

অভ্ৰাদ।

বে দকল মৃক্তা হইতে তারাব ন্যায় আভা নির্গত হয়, তাহাদিগকে স্কৃতার, যাহারা দর্বতোভাবে গোলাকার, তাহাদিগকে স্বর্গুক্ত কহে । ৩০৩।

যে সকল মুক্তা দোঘবর্ত্তিত, তাহারা স্বক্ত; যাহাবা মলবর্ত্তিত, তাহারা নির্মান ও যাহারা ওজনে ভারী,

তাহাবা ঘন বলিযা প্রসিদ্ধ। ৩০৪।

যে দানায় মূকা চন্দ্রের কায় বিরণবিশিষ্ট, তাহারা প্রিঞ্চ; যে গুলি উদ্দেহায়াবিশিষ্ট, দেগুলি হুচ্ছায় এবং যাহারা অণরেথানিবিহান, তাহাবা অন্ধূর্টিত বলিয়া বিব্যাত ।০০০। শেত কাচের কায় শুর, উৎস্কট বিরণাছটাবিশিষ্ট,

বোহিতন-তেব ভায় ছায়াযুক্ত মোক্তিক দেবতাদিগের ভূমণযোগ্য। ৩০৬।

Cyprinus Rohlia.

314 मखिमाचा।

र्रहक्सम्बर्णियतं भौतिक येन घार्यते। तस्यायुर्वेद्वते उन्नी सर्वेपाप प्रणयति । ३०७॥

मुच्म ।

प्रमाणवदगौरवरिक्षयुक्तं सित सुष्टनं समसूषारस्यं।

वित सुष्टमं समसूष्परम् । श्रक्तेतुरप्यावचित प्रमोदं यन्त्रीकिकं तदग्रुणवत् प्रदिष्टं । ३०८ ।

यन्मातक तद्युणयत् प्राट्ट ∎ २००० । एव समझेन ग्रुणोट्येन यन्ग्रीकिक योगसुपागत स्थात् ।

न तस्य भन्नोरमण्यकात-मेकोऽपि दोष समुपति सद्य ॥ ३०० ॥

ग्रणवहुक यह हे मौकिकसय तिष्ठति । चञ्चलापि स्थिरा भूत्वा कमना तथ वर्तते । ३१० ॥

तरजगर।

उपरमे जिन् सब ग्रणोकी बात कांड ग्रेड्रं है, बड़ी सब गुणबुक्त मीति जी प्याह्मी धारण करे, उसकी उनर और दीलत टोनो वादति हो, और धर्म पापनाय

होए। १००। जो मीति घोजनमे भारी, चमहा, दीप्तिविधिष्ट, सफेद, गोल, समान घीर बारिकवेध सेवाय खरिदहाके देखनेवानेकामी चानन्ददेनेवाला है, ऐसा मीति सबसे

चाक्टा है। ३०८।
जो सीति सवतर है वेचयेव है, वही भीति चयने
भानेकका जब दुखनाम करनेवाला है, और उस्हे
मालिकको सोद दुख है। नहि सहता। ३०८।

मालिकको को दुध के निक्ष क्या । ३०८। मालिकको को दुध के निक्ष क्या । ३०८। जम् धरमे वेक्यवेव गोति रक्ता के, चञ्चन टीनत चम् धरमे मर्स्यदा कान कावल रक्ति के। ३१०।

ۇق.

***3

600

TRANSLATION.

307. The wearing of such Pearls leads to longevity and wealth, and purges the wearer of every sin.

308. A Pearl which is heavy, lustrous, silvery, well-rounded, which is furnished with equal and minute openings and which is a delight not only to its owner but also to the observer, is the name of perfection.

309. Those Pearls which are possessed of every valuable quality, shield their master from every evil, and suffer nothing harmful to come near him.

310. The house which contains a perfect Pearl, the ever-restless Lahsmi* chooses to make her dwelling for ever and a day.

অহ্বাদ।

উন্নিধিত গুণসমূহে ভূষিত মৌক্তিক যে ব্যক্তি ধারণ করে, তাহার আয়ু ও লক্ষীরন্ধি পায় এবং সর্ব্বপাপক্ষয হয়। ৩০৭।

যে মূকা ওন্ধনে ভারী, উত্তমনীপ্তিবিশিন্ট, শুত্রবর্ণ, উত্তমগোলাকার, সমান অথচ সূম্মরদ্ধুরুত, ক্রেতা ভিন্ন অপর ব্যক্তিরও প্রমোদবর্ছন করে, সেই মূকাই সর্ব্বাপেকা উত্তম। ৩০৮।

যে সকল মূকা সমূনায গুণমূক, তৎসমূনায় নিজৰামীর সমূনায় অনর্থ বিনাশ করে, এবং তৎস্বামীকে কোন দোবই স্পূৰ্ণ করিতে পারেনা। ৩০৯।

যে গৃহে গুণমুক্ত মুকা থাকে, স্থভাবচকলা লক্ষ্মী সে গৃহে চিরকাল নিশ্চলা হইয়া থাকেন। ৩১০।

[.] The goddess of wealth.

मूचम्। चिन्तान तस्याकरजा विशेषा

रूपे प्रमाणे च यतेत विद्वान्।

न च व्यवस्थानि गुणागुणेषु सर्वेव सन्त्रीकृतयो भवनित । ३११ ॥

त्रय सुता-दोषा: I

चतार: सुमें बादोपा. पण्मध्याय प्रकी तिता'। एव द्य समाखातासेवा वच्चामि लचणं ॥ ३१२ ॥ यभैकदेचे संनान भूकिषण्डो विभाव्यते। भूकितान' ममाखात' स दोव लुद्धकारक' ॥ ३९३॥

तर्जमा।

मोतिके पवदा इस्की अगध्या दिखना कुछ जहर निष्ठ, उस्का अथेव, जनर, रद्ध और रूप देखना चाहिए ऐसा ना समभना चाहिए के फलाने जगडका पवदाज्ञया मोति आच्छा घोता है, और फलाने जगडका पवदाज्ञया मोति व्हा घोता है, वल्के सव जगहों मुद्दा भाना दोनो प्रकारका मीति पवदा होता हैं। ३९९।

मोतिका श्रयेव ।

रक्षपार्ची पण्डितोंने सीतिके दशमकारके श्रवेष करें है, उन्मेरी चारप्रकारके वर्षे श्रवेष श्रीर क्षमकारके मध्यम श्रवेष हैं, चावम श्रावम उन्का उच्च विश्वते हैं। ११२।

जिस् मोतिके किसी रहने विषका टुकरा लागा रह जाता है, चस्को मुक्तिनान दोष कहते हैं, मुक्तिवान अयनवा मोति पहरनेसे कोड्की विमारि होति है। ११३।

TRANSLATION.

311. The consideration of origin is trivial in regard to Pearls; not so the consideration of form and other qualities: no source but it produces good and bad Pearls.

Defects of Pearl.

312. The authorities mention ten kinds of defects as belonging to Pearls; of which four are principal, the rest being of a less essential character. I will treat of these now.

313. If any part of an oyster remains fast attached to a Pearl, the defect is called sukti-lagnadosha: and brings on leprosy.

षश्वान ।

মূক্তার আকারগত কোন বিশেষ বিবেচনা কর্তব্য নছে, তাহার রূপ ও প্রমাণই বিবেচনীয়, কোন আকরবিশেষে যে শুভজনক বা অসম্বলকারক মূক্তা জন্মে, এমন নছে, সকল আকবে সকল রকম মূক্তাই জন্মিয়া থাকে। ৩১১।

মুক্তার দোষ।

রক্ববিং পণ্ডিতের। মূক্তাসযমে দশবিধ দোবের উল্লেখ করিযাছেন, তমধ্যে চাবিপ্রকাব দোব মহাদোব এবং ষড়্বিধ মধ্যদোবমধ্যে পরিগণিত, ক্রমশঃ তাহাদিগের লক্ষণ নির্দেশ করা যাইতেছে। ৩১২।

মূক্তার কোন একখানে শুক্তিগও সংলগ্ন থাকিলে তাহাকে শুক্তিলগ্ন দোষ করে, শুক্তিলগ্ন দোষগুক্ত মূক্তা ধাবণ করিলে বুঠব্যাধি হইতে পাবে। ৩১০।

 Laterally, the defect incident to the fact of an oyster fragment being attached. मूचम।

मीनकोचनमञ्जाको दखते मौक्ति के तु य'।
मीनाच स तु दोष खात् पुचनामकरो छुवं । ३९८ ।
दीतिषीनं गतच्छाय जठरं तदिदुर्देधा ।
दारिद्राजनकं वस्तात् तस्ताक्तरादिक्क्वयेत् । ३९५ ॥
मीक्तिकं विद्रमच्हायमतिरकं विदुर्वधा ।
तस्तिन् चन्धारिते चत्युर्जावते नाच समय, । ३९६।
खपर्युपरि तिष्ठन्ति वचयो यच मौक्तिके ।
विद्रमं नाम तस्त्रोकं सीमाम्यवयकारक ॥ ३९७ ॥

तर्जमा।

मोतिमे मळ्लिके चासके समान एकतरकता निप्रान रहेनेको सीनाच चयेव कहते हैं, चौर वह चयेव लेट्छेका नाम करनेवाला है। ३१८।

सोतिमे दीप्ति और चामा ना रहनेको जठर खयेव कहते है, जठर खयेवदार मोति पहरेनेच द्रारिद्रा खयात् सर्ज्विस होति है, इस कारण इस्मकारका मोतिकभी पहरेना मनासिफ नहिं। ३९५।

मोतिमे सुद्दे के समान पासा निजेत्ने को प्रतिरक्त प्रयेव कहते हैं, प्रतिरक्त प्रयेवी मोतिको पहेरनेसे जहर स्वस्यु होस । १९६१

मोतिमें जो कड़े के समान तिन रेखा होए, ध्रम्की विद्या खरेब कहते हैं, विद्या दोषयुक्त मोति सुमाग

नाम करता है। ३१७ ।

TRANSLATION.

314. On certain Pearls, there are marks like the eye of a fish and these are hence called mindksha.* Pearls possessed of this defect bring about loss of sons.

315. When a Pearl is without lustre and shade, it is said to have the jathara defect. Such Pearls lead to poverty, and should not therefore be worn by any person.

316. When a Pearl has a shade like coral, the defect is called atirikia; this is inevitably fatal to the wearer.

317. The three bracelet-like streaks which are sometimes met with in Pearls side by side, are termed trivrita. They are destructive of good fortune.

অমুবাদ।

মুক্তাতে যে নংস্তের লোচনসদৃশ একপ্রকাব চিহ্ন থাকে, তাহার নাম মীনাক্ষ, মীনাক্ষদোষ পুত্রনাশকর বলিয়া উল্লিখিত আছে। ৩১৪।

মূক্তাতে দীপ্তি ও ছাযা না থাকাকে জঠরদোষ বলে, জঠরদোষবূষিত মূক্তাধারণে দারিক্র্যদশা উপস্থিত হয়, হুতরাং তাদৃশ মূক্তা কদাচ ধাবণ করা কর্ত্তব্য নহে । ৩১৫।

মুক্তা হইতে বিক্রামেন আম ছামা নির্গত হৎয়াকে অভি-রক্তানোর বলা যায়, অভিবক্ত-দোষযুক্ত মুক্তা ধারণ করিলে অবশ্যই ধাবকের মৃত্যু হইবে। ৩১৬।

মুক্তাতে যে উপরি উপরি তিনটা বল্যাকার রেথা থাকে, তাহা ত্রিরভদোষনামে অভিহিত, ত্রিরভদোষশালী মুক্তা সৌভাগ্য নাশ করে। ৩১৭।

[·] Laterally, the eye of a fish

मूचम् ।

ष्ण्यमं भौतिकं यञ्च चिषिटं तिद्याग्यते ।
भौतिकं त्रियते येन तस्याकीर्त्तिभेषेत्वस्य । ३९८॥
चिकोणं त्युक्तमाखातं भौभाग्यचयकारकं ।
दीघं यत्तत्वृत्रं प्रोकं प्रमाधिकंषकारकं । ३९८॥
निभाग्नमेकती यञ्च क्रमपाकं तद्यते ।
सदोष मौतिकं निन्दां निकद्योगकरं चितत् । ३५०॥
पश्चत पौदकोपेतं सम्बस्यम्त्यक्ष मौतिकं । ३२९॥
परस्यं गुणकीनस्य स्त्रमृत्यक्ष मौतिकं । ३२९॥

तर्जमा।

जो मोति गोज निक, उसको चिपिट कहते हैं, चिपिट मोति पड़ेरनेसे हमेगा चयम चर्चातु बदनामी हासिज होए। ३१८ ।

जो सीति चिकीण घोष, उसका नाम त्यूस, त्यूस अथविक मोति पछेरनेसे शीमात्य नाम घोष और जो सीति सस्या, उसे क्या कडते घें, क्या अथविक मोति पछेरनेसे यहि जाय। ३१८।

जा मीति कोर जगक्षे टुट जाय. उसको छमपार्च क्रवति है, स्नम्बत्तारका मीति यज्ञत् खाराप चीर रूप, जातका मीति पदरनेसे पार्मीको चासकत् पानि हैं दिर्श

जो मीति वेचकुण गोल निंह', नानामकार किमारी-क्यों क्यवेवोस भराज्या, देखनेभी सन्दर निर्ध चौर बज्जत गुण्डीन, ऐसा मीति सव तर्द्ध दीखतका नाम करनेवाला, इम्कारण उस्का दासभी भज्जत कम होता है। ३५१।

96.

TRANSPATION.

318 That Pearl which is not perfectly circular, is called cupita It brings its wearer to disgrace

319. The Pearl which tends to be triangular, is called trasra A trasra Pearl is mimical to good fortune A large-sized Pearl is called Krisha This Pearl is reputed to be fatal to knowledge.

320 A Pearl with a broken side is called Krisha-párswa, and brings on inactivity. It is a pest which should be carefully avoided.

321. A Pearl which is not faultlessly round, which is productive of a variety of diseases, which is not agreeable to look at, which is in short utterly void of any valuable quality, is destructive of every sort of wealth; its price is very small

অহ্বাদ।

যে মুক্তা সম্পূর্ণ গোলাকাব নহে, তাহাকে চিপিট কহে, চিপিট মুক্তা ধাবণে পদে পদে অকীর্ত্তিভান্ধন হইতে হয়। ৩১৮।

যে মুক্তা ত্রিকোণাকার, তাহাব নাম ত্র্যস্ত, ত্র্যস্ত মুক্তা সোভাগ্যনাশক, এবং যে মুক্তা দীর্ঘাকার, তাহাকে রুশ বলে, রুশ মুক্তা জ্ঞানের মহা অন্তবায় বলিয়া প্রদিদ্ধ আছে।৩১৯।

মূক্তাব কোন স্থান ভয় হইলে তাহাকে রুশপার্থ বলা যায, তাদৃশ মূক্তা অতিনিন্দনীয এবং তদ্বাবণে মনুষ্য একবাবে নিক্দ্যোগী পড়িয়া পড়ে। ৩২০।

বে মূকা সম্পূর্ণ গোলাকাব নছে, নানা গীডাকর দোব-সঙ্কুল, দেখিতে বমগীয় নছে, এবং নিতান্ত ওণহীন, সেই মূকা সর্বব্যকাব সম্পত্তিবিনাশক, এবং তাহার মূল্যও অতিঅন্ন হইয়া থাকে। ৩২১। मू चम् ।

मौक्ति यच मन्देषः क्षाचिम सष्ट केश्वा ।

परीचा तच कर्त्ते व्या रतणास्त्र विश्वार रहेः ॥ ३२२ ॥

यच क्षाचिमसन्देषः क्षाचिद् भवित मौक्ति ।

चक्को सलवणे सेष्ठे निणा तद्वासये ज्ञाले ॥ ३२३ ॥

परेख् प्रातनत्वाय गृष्य वस्त्रोपवेष्टितं ।

एसे भौक्तिकमादाय ज्ञीष्टिमियोपवर्षयेत् ॥ ३२८ ॥

यम् नायाति वैवर्ष्यं विद्यं तदक्षाचमं ।

क्षाचिम मक्षमाप्रोति सण्ड व्यातिहीष्यते ॥ ३२५ ॥

तर्जमा ।

मोति बनावा होए, खबबा धासत होए, मनमे सक होनेसे रतपारची परिदुतके दारा उसकी परीचा कर्ना अक्ट हैं। इस्ट्रा

अगर किंपी मोतिने फरेबका सक होए, तो उम् मोतिको एक रात गरम नेमक्तिमलाङ्कये पाणिने भिगेर कर रख्ना चाहिण। ३२३।

सवेरे सखे कापडमे रखकर चौर घोड़ा चाउल लेकर चातसे रगडना चाचिए। ३२४। दमीतरचे करनेसे चामल मीति खाराप ना चीकर

इमीतरहे करनेचे चामल मौति खाराप ना हो हर चौरभी माफ होगा, चौर बनाबाङ्या मौति उमीदम टट लावेगा। ३२५।

TRANSPATION.

322. Whether a Pearl be real or false, whenever doubts arise concerning its genuineness, the authorities should be resorted to.

323. When doubts are entertained as to the genuineness of a Pearl, it should be placed in salt water for one night.

324-25. The next day, put it on a piece of dry cloth, and mixing it with a quantity of paddy; rub it with the hand, when if the Pearl is real, it will attain greater brightness, while if it is false, it will be broken to pieces.

অহ্বাদ।

মৌক্তিক কৃত্রিমই হউক অথবা অকৃত্রিমই হউক, মনোমধ্যে সন্দেহ উপস্থিত হইলেই বন্ধতন্ত্রিশারন পণ্ডিড দ্বারা তাহাব পরীক্ষা কবা কর্ত্তব্য । ৩২২ ।

যদি কোন মুক্তাকে কৃত্রিম বলিবা সন্দেহ উপস্থিত হয়, তাহা হইলে সেই মুক্তাকে এক রাত্রি উফ লবণমিশ্রিত জলে ভিজাইবা বাথিবে। ৩২০।

প্রদিব্দ প্রাতঃকালে সেই মূক্তা শুরু বন্ত্রমধ্যে বাথিয়া কতকগুলি ধান্যের সহিত একত্র করত হস্তে ঘর্ষণ কবিবে। ৩২৪।

এইৰূপ প্ৰক্ৰিয়া দারা অর্বত্তিম মূক্তা বিবর্ণ না হইয়া অধিকত্তৰ ঔদ্ধল্য প্রাপ্ত হইবে, এবং ক্বত্তিম মূক্তা তৎ-ক্ষণাৎ ভগ্ন হইয়া যাইবে। ৩২৫। मूखम।

चिपेत् गौम् घमाण्डे तु लवणचारसयते ।
सेदयेत् विज्ञना वापि घस्ते मौक्तिकमाद्दत् ॥ इ२६ ॥
नोष्ठेत्वेष स्वोज्य मह वेस पुन पुन ।
स्विमं भङ्गमायाति मध्यवातिरीयते ॥ २२७ ।
स्नामनत्स्यपुटमध्यगतन्तु कत्वा
पद्यात् पचेत् तत्त तत्तष वितानगत्या ।
मुद्दे तत पयसि तदिपचेत् सुराया
पक्ततोऽपि पयसा मूचिन मुनेन ॥ २२८ ॥
मुद्द ततो विसलवस्त्रनिष्येष न
स्यान्तोक्तिक विमलवस्त्रनिष्येष न
स्यान्तोक्तिक विमलवस्त्राव्या

सर्जमा ।

नेमकिमलाङया गौके मूचके मरेज्ञये वर्जनिये मोतिको रखकर त्यागपर घोदा घोदा गरम करना होगा, बार उद्देक हातसे उठाकर धानके क्लिकेके सावमे धिमनेषे बनायाज्ञया मोति टुट जावेगा, चौर त्यागल सोति खौरभी साक रहेगा। ३२६।३२०।

यिं के किलिये पटी गरम करके उत्में मीतिको रखकर जागपर छोडा गरम करना डोगा, बाद उस्कें दुध, गराप या साफ पाणिमें जाडेकी जाडेकी पाकाना डोगा, बाद उस्कें गाँदे कापड़ें में रखकर घिष्ठा डोगा, जासल मोति डोनेंधे बज्जत् गाफ जीर जाबदार डोगा। मोतिको जगर लेसके रसमेपाकामें, तो बेधनेमें बज्जत् जावानी डोगा। इस्ट (१९८)

इति मोतिका वयान।

TRANSLATION.

326-27. This is another way:—Cast a Pearl in cow's urine mixed with salt; then gently heat it in fire; lastly placing it in a small quantity of chaff, rub it with the hand. By this process, a false Pearl will be reduced to fragments, while a real one will shine with greater light.

328-29. Enclose a Pearl in one of the hot lungs of a fish; then gently heating it in fire, boil it successively in pure milk, wine and water; next rub it with a piece of cloth, when it will look fresh and fair. A Pearl can be perforated after it has been boiled in lime juice.

অহ্বান।

দলবণ গোয়ত্তাপূর্ণ ভাষে যুক্তা নিক্ষেপ করিয়া আয়িতে অন্নপরিমাণে উত্তপ্ত করিতে ছইবে, পবে হতে ছলিয়া তুষ-সংযোগে পুনঃ পুনঃ মর্কন করিলে কুত্রিম যুক্তা ভাষিয়া যাইবে, এবং অকৃত্রিম যুক্তা অতিশ্য উত্ত্বল হইয়া উটিবে ৷ ৩২৬ ৷ ৩২৭ ৷

প্রথমতঃ, মৃক্তাকে মংত্যের অতি উষ্ণ পট্পটার মধ্যে পৃবিয়া অমিতে অন্নপরিমাণে উত্তও করিযা পশ্চাৎ বিশুদ্ধ ভূমা, স্থরা ও নির্মান জনে ক্রমান্বযে সিদ্ধ কবিতে হইবে। ৩২৮।

তংপশ্চাৎ অভিশুত্র বদ্ধে ক্ষরিলে মূক্তা বিশুদ্ধ অভি-নির্মান এবং কান্তিযুক্ত হইবে। মূক্তাকে লেবুর রদে দিন্ত ক্ষিয়া তাহাতে যথেন্ছ ছিদ্র করা বাইতে পারে। ৩২৯।

ইতি মূজা।

THE PEARL.

Its Properties

HOUGH the Pearl cannot properly come under the province of precious stones, on account of its being inimal product, it is held in great esteem by the newellers and all lovers of gems This beautiful gem is formed in the shells of ovsters and mussels and is composed entirely of carbonate of lime and organic matter It possesses a lustre peculiar to itself and called by its own name, pearly It calcines by being exposed to heat and is easily affected by acid and fetid gases. The specific gravity is from 2.5 to 2.7 It is found of various shapes and colors and receives certain names ac cording to its size and form Those of extraordinary size are called Paragon Pearls, when of the size of the cherry, cherry Pearls, small, piece Pearls, smaller, seed Pearls, smallest, dust Pearls Those of a long and oval form, pear Pearls, while the deformed ones are known as "baroques" Pearls The Romans called the large ball shaped Pearls, "Uniones", the pea shaped, "Elenchi", the half ball shaped, ' Tympania," and those possessed of the most beautiful color, "Exaluminate Margaritæ" The Saxon word Pearl signifies a gem or white speck The oriental Pearls are seldom found of any other color than white and yellow, and are generally of a round or button form, while the

American, better known as the Panama, Pearls, are generally blackish or brownish and mostly long and drop-shaped.

Original formation of Pearls

THE ancient authorities had started several curious theories as to the presence of Pearls within the oysters. According to Athenœus, the Pearls were found in the flesh of oysters, just as the measles (tubercles), in the pork Pliny and Diascorides supposed that the Pearls were the tears of fallen angels, or dew-drops from heaven, taken in by the oysters, which opened at certain seasons to receive them; the size and quality varying according to the size and purity of the dew imbabed weather spoilt the colour, lightning stopped the growth and thunder made the shell-fish miscarry altogether Valentine said that they were the eggs of female oysters, while Samuel Dale held, that they were a sort of calculus produced by hurt received. This last theory suggested to Linnæus the idea of creating the disease in the fresh water mussel of Sweden, and thus of manufacturing artificial Pearls Artificial Pearl-oyster beds were established in several rivers but the process by which the Pearls were formed was kept a secret. It was, however. ascertained that small holes were drilled in the shells of the hving oysters into which some foreign matters were put. But the Pearls which were produced by this means were so small and the labor and cost incurred, comparatively so great. that this ingenious invention was soon given up. In India a somewhat similar way of producing Pearls existed. Some of the shells of the large Pearl oysters have been found with brass wires inserted throughout their whole length, and the cavities in the interior proved that Pearls had been produced in consequence. The Chinese have succeeded in introducing within the living fish minute Pearl beads, strung on a string, or miniature idols of brass or stone, and in the course of a year these are found so completely covered with a pearly coating as to resemble true Pearls of fantastic figures. A few specimens of these are in the possesion of W. J. Ingram Esq., M. P Pearls are looked upon, according to the most generally received opinion, as concretions arising from the superabundance of calcerous matter destined to form the shell, and in confirmation of this, it has been observed that the oyster is of the same brilliancy as the mother-o'-pearl that forms the inner coat of the shell If a Pearl is cut, it will be found to be composed of a succession of laminæ like the onion and presents the same appearance in its substance as the shell With the help of the microscope we find that the shells of all the oysters that produce Pearls have three layers. The outside layer, i.e, the outer skin, consists of thin scales or leaves, having no regular form: the second one, is composed of numerous small horny cells, (filled with a calcerous mass) in which the various pigments that give to

the shell such beautiful colors are deposited, the third and inner layer has a more foliated form and an uniform foundation, which looks like fine folds on the outside, and which produces, when the light shines upon it, the peculiar mother-o' pearl lustre. that adds so much to the beauty of many shells It is the soft and tender unevenness of its surface and not its material (which is nothing but lime) that gives the exquisite sheen to the mother o' peurl Several naturalists account for the formation of Pearls, in the attempts made by the animal to get rid of some substance which has entered into its shell. by covering it with a deposit similar to the interior of the oyster shell-commonly known as the mother o'-pearl In some cases, a Pearl has been found, by bisecting, to consist of a series of lavers or skins round a speck of some darker substance in others. the middle of the Pearl has been found hollow and of a globular or spherical form, while in some others, it appears perfectly solid and of the same colour, texture and formation all through The beautiful polish and consequent brilliance of a fine Pearl is the result of the friction of the soft body of the oyster for a long time. In most cases, the polish exists on the outer skin only, the inner layers being found dull as a fish's eye In other cases, a Pearl of a hard exterior has been found to contain a fine and lovely kernel The Pearls are situated either in the body of the oyster or loose between it and the shell, or lastly they are fixed to the latter by a kind

of neck. Sometimes the Pearl is a sort of wart, hollow inside, and is then called coq-de-perle and fetches but little value. It is said that Pearls take four years for their formation. There are two kinds of Pearls. The one highly valued is called the Margarita*(the sea Pearl oyster) or by its full name, "Meleagrina Margaritifera lamarck," which is a large oyster of 7 or 8 inches in diameter, with very thick shells, rather flat, and of a greenish black exterior; whilst the inside is of a very white colour, reflecting various hues and is known as the mother-o'-pearl. The other kind is called the Unio Margarita (River Pearl oyster). A kind of Pearl called the phantasy Pearl has sometimes been found in the market. These are Pearl substances which are taken out of the shells, consisting partly of mother-o'-pearl and partly of a pearly substance. A curious circumstance in connection with one of these pieces is mentioned by Barbot. "A French Pearl merchant, in Mexico, bought one of these pieces of a fisherman for a small sum of money, inorder to learn something of them He was not a little surprised, on cutting it in half, to find a perfect, round Pearl inside, of purest water and brilliant lustre, weighing 142 carats and which he sold sometime after in Paris for 5000 francs -about half of its value." Now a-days. Pearls are fre-

^e The term Margarita is probably the Greek form of "Mukta," the Sanskrit name for Pearl, and not, as erroneously supposed by some writers, of "Marakata" which, in Sanskrit, means the Emerald



quently peeled and have been found to contain a finer Pearl underneath,

Where found: Pearl fisheries.

Pearls were a mercantile commodity with the Phænicians and Babylonians, According to the author of the Periplus, Pearls were fished near Manaar, between Cevlon and India. Cevlon, the Taprobane of the ancients, also produced Pearls. According to Arrien. Hercules visited all the Indian ocean and found a Pearl with which he adorned his daughter Pandea. The story of this fishery is also mentioned by the companions of Alexander, when he came to India, and it is therefore clear that it existed prior to this time. There were some other Pearl fisheries also known to the ancients, in the Red Sea and the Coromandel Coast the Red Sea were at that time considered very important, and were distinguished by the title "Exaluminatæ," e clear as globules of alum Under the Ptolemies and latterly under the Egyptian Caliphs, several merchants settled on the coasts and by following the Pearl-trade became considerably rich. Pearls were also fished up in the Mediterra-The chief Pearl fisheries in the modern times are on the west coast of Ceylon, in the Bay of Manaar, in the Persian Gulf, in the Red Sca, in the Bosphorus, in the Sooloo Islands (near Borneo,) in Japan, Java, and Sumatra; near the island of Papua or New Guinea; in America, (both on the

Pacific and Atlantic coasts), and latterly, in Australia and the Fiji Islands Some Pearls are also obtained in Trance, Scotland and Ireland from the Ilz in Bavaria, the Battava in Bohemia and the Elster in Saxony, in Sweden, in the North of Russia and in Finland

The Peul fishery in Ceylon, which is one of the most productive ones, now belongs to the Colonial Government and is conducted by it The Portu guese were the first Europeans who obtained firm footing in Ceylon (1506) It was stipulated with the then ruler of the Island that he should pay them an annual tribute in the shape of spices and Pearls The Portuguese fattened on this tribute for a long time till the Dutch obtained supremacy and seized upon the fishery (1640) Under them the natives were allowed every three years twenty alternate days to fish for themselves and every other day was for the Government, after which the produce was sold to the highest bidders From 1760 to 1796, the fishery at the bank at Manuar was stopped by the Rajah in consequence of a dis pute with the Dutch When the English obtained possession of Ceylon, they had the benefit of the accumulation, which, when sold in 1798, fetched 14 00,000 Rs clear This profit might be realized if the fishing was confined to 20 days, every seien years The fishing season is generally in March and April when the sea is calm and unruffled Before the commencement of work, the banks are carefully

tested by experienced divers A fleet of boats. sometimes consisting of 150, are sent out-each containing ten rowers and ten divers, besides a steerman and several "pillal karras," or shark-charmers, whose duty is to keep off sharks, by incantations. The latter people are indispensible in a fishing excursion, as without them no diver would agree to descend, and the Government is consequently obliged to keep them on regular pay Other conjurors remain on the sea-shore, repeating their prayers until the return of the fleet The divers go down into the sea, five at a time, the other five remaining on the boat till the first batch come up to refresh themselves for another plunge. These people (Roman Catholics and mostly Hindus) who principally come from the Colang, on the Malabar Coast, get, in some cases, fixed wages but generally, by mutual consent, they keep 1 of the produce to themselves and give 3 to their employers. As a preparation, they abstain from food and drink (except, occasionally, toddy) and rub their bodies over with oil, stuff cotton into their ears, compress their nostrils by means of an instrument made of horn, and bind over their mouths a sponge soaked in oil, which serves as a temporary proof against Then they sling a rope round their body . and generally hang a heavy stone on their feet to hasten their descent. Some use a crescent-shaped stone which they fasten round their waist, in order to keep the action of the feet free; for some of these

people use the toes as nimbly in picking up the smallest things as any other could, with their fingers. These stones generally weigh 20 to 25 lbs each. With all these preliminaries, which are also attended with prayers and incantations, the divers go down, each seizing a rope with the right hand, and soon reach the bottom. By means of a sharp knife they loosen from the bank and collect as many oysters as they can and put them into bags, with which each of them is provided on his back. The time they can usually remain under water is from one to two minutes and the gain in that time is from 50 to 80 oysters Some have been known to remain from 4 to 6 minutes. If any accidents happen while under water, either in the shape of loss of strength or the approach of a shark, they give a sign with their rope and are pulled up at once Some of the divers are provided with a charm or amulet which they keep on their persons, wrapped in oil-cloth, while they go down. The Roman Catholic divers would not commence business until they get an assurance of their safety, from their own clergymen, and also seem to have firm faith in the ability of the conjurors in keeping the sharks away.* Continuous submersion into water tell fearfully on

on a paper published in the Transactions of the Korja Assitution of the Corja Assitution of the Corj





the constitution of the divers, many of whom, on coming out, bleed at the mouth and nose. The strongest of them can work only for a few years. These people can make 40 to 50 descents in a day. The adoption of the diving bell in the present times has made diving less dangerous, but unfortunately it is too dear to be of general use. With this a single diver can collect one to four thousand ovsters in one season. On the return of the boats, they are unloaded and the oysters left, in closed pits or in closed vessels, to get foul, whereby most of them open of themselves. After this the Pearls are washed from the decayed oysters, in troughs, with salt water. Those shells that do not open of themselves are thrown on one side and made over to the clippers whose duty is to disengage them from the Pearls by means of a forceps and hammer. The part which sticks to the ovster has to be polished by means of a powder made of the Pearls themselves. The roundest and best of these Pearls are rendered fit to be strung with other Pearls, and some of them are used for setting in rings and brooches. The refuse is mixed with the sand Pearl and sold to make chunam (lime) for the consumption of certain Chinese grandees. The ovsters are, however, generally sold without being opened, in much the same form as a lottery, the

appear before me and desired him to account for permitting a shark to appear before me at a time when alarm might have a serious influence on the success of the fishery. He regled that I had frequently requested him to summon a shark to as pear and he had therefore allowed this out the laberty, to please me."

profit of the purchaser depending on chance; for some oysters may contain Pearls worth 2000 or 3000 rupees each, while many may contain nothing at all. At certain times, the Pearl oysters are seen floating about on the sea, as minute in shape as the spawn of fish. These are carried by the currents, around the coasts of Ceylon, where, owing to their increased size and weight, they sink and form the beds. The best Pearls are generally taken from the most fleshy part of the oyster near the hinge of the shell, but they are also to be found in all other parts of the oyster, and especially sticking to the shell. Each oyster is supposed to contain one or more Pearls, or in some cases, none at all. Sometimes an oyster is found to contain over a hundred Pearls of different sizes, known as the seed Pearls. The Ceylon Government derive a considerably large income from the fishery and take particular care of The beds having become exhausted, the fishery has been discontinued for some years.

has been discontinued for some years.

Megasthenes, an officer of Seleucus, King of Syria, gives to the Western nations, the first account of Pearls found in the Persian Gulf The Portuguse held mastery over the fisheries of this place during the sixteenth century; after which the native princes have regained possession of them. June to September is the best time for fishing, which is allowed freely, barring a small duty paid to the Sheik of the harbour. The sword fishes are great obstacles in fishing here. The sum annually realized by sale

comes from 30 to 35 lacs. The Pearls found here are much inferior to those of Ceylon and are commercially known as the Bombay Pearls—Bombay being the place to which they are chiefly sent.

The Red Sea fisheries are not so flourishing as they used to be in former days. Good Pearls are still to be found in the Island of Dhalak, opposite Massowa, on the Abyssinian Coast. The fishery, which is carried on by the Negroes, generally takes place from December to April; the average gain being one Pearl from five oysters

The produce of the fisheries of the Sooloo islands and of Japan, Java, &c , generally goes to China.

The first Spaniards who landed in America, after its discovery, saw the aboriginal nations decorated with necklaces and bracelets of Pearls. New Cadix, in the little island of Cubagna, was the first place that rose to affluence, owing to the Pearl trade. The next fishery in importance was that of the Island of Santa Margarita or the Isle of Pearls. about three miles from Cubagna. The Pearls produced in this place were in size and beauty far superior to those of the other deposits. Tavernier had one of these Pearls, which weighed 55 carats and which was of a beautiful pea-shape and fine "orient." The third fishery was at Camogote. near the main-land. The fourth was in the River La Hacha, along the same coast. The fifth and last was at Santa Marta, about 180 miles from the River La Hacha. The last three fisheries produced large Pearls, but they were mostly badly-shaped and had a leaden hue Now-a days, the fisheries in the Gulf of Panama and in California supply the best American Pearls Pearls in the coast of New Jersey were discovered by a farmer, who, when fishing for oysters, came across one which contained a very large Pearl

'The rivers in Scotland produce many Pearls but they are generally small and deformed and liable to become black by wear. A large number of rose inted Pearls, much esteemed by the Parisian nobility, has been found here. These together with those found in Ireland are generally called Scotch or Brock Pearls, are possessed of a dull hue and are used for brooches and ornaments, strung with horse-hair or mother-o'-pearl, previously formed into the pattern designed.

The River Moldava in Behemia annually produces from 300 to 400 Pearls, of the purest orient and of very good shape, besides several hundred deformed ones. The greatest portion of the banks are in the possession of the house of Schwartzenburg Besides the Moldava, Pearls are also found in another small river called the Wattava. The opsters are not fished up from the niver beds but are picked up from the banks where they are thrown by the overflowing of this river.

The fishery of the Ilz yielded at one time a large income to the Bavarian Government, but owing to

bad management, it has now become almost entirely exhausted.

Mode of Boring and Polishing.

The operation of boring, better conducted in India than elsewhere, must be performed slowly, particular care being taken that the Pearl does not break in halves The Pearl should be held between two pieces of wood and drilled with a very fine drill, with a bow and string Unbored Pearls are called "virgins," and in Persian, by the generic name, "Merwerid," and those that have suffered from wear, "widows," and in the Persian, "Lulu," In order to perforate the Pearls, which they intend to string, the Arabs take a piece of wood of a porous nature on the flat surface of which they make small spherical boles with a knife; into these holes they put the Pearls so that only a portion of each Pearl goes into the opening, and then the whole is placed in a little water. The Pearl being thus held tight by the wood which swells, a small iron drill, which is turned by means of a wheel, cuts the hole. The Pearl is then loosened and taken out by letting the wood dry. The cleaning, rounding, polishing and, sometimes, the drilling and stringing are performed by skilful Negro workmen. Pearls are polished and rounded (as found in the market) by means of their own dust ; the portion taken from one Pearl in the process of cleaning it, serving to round and polish another. If worn next to skin, Pearls are

liable to lose their lustre. Redi who tried the experiment of restoring their original orient by making pigeons swallow them, found out that, after remaining in the stomache for twenty hours, they have diminished in weight by one-third. Pearls also get discoloured by contact with acids, gases, foul weather and noxious vapours. The simplest and best remedy would be to wipe them, after being worn, with a clean linea and to keep them carefully covered with it, in a closed box. Pearls kept in dry, common magnesia, instead of the cotton wool generally used in jewel-cases, are according to some, never known to lose their brilliancy. Pearls, unlike precious stones, crumble into dust and lose their beauty in course of time. When the tomb in which the daughters of Stilicho were buried with all their ornaments, was opened, after a lapse of 1118 years, all the riches that had been put in were found in good condition except the Pearls, which had become so soft, that they crumbled into fragments when pressed between the thumb and the fingers.

Pearls as known to the Ancients.

The beauty of the Pearl being entirely due to nature and being utterly incapable of improvement from art, it has, from the earliest ages, held the

^{*}A smults prestice still obtain in India among the Mahomedan Peal merchants had as in the labit of grancing halash Peal's at clean price and making pigeons evolve from Thee are afterwards taken out of the stonach by ripping it open, but the whitial lustre thus obtained lasts for a short time—just enough for them to be sold to advantage.



highest place amongst precious gems. The mythology of the Hindus ascribe the discovery or creation of Pearl to Vishnu and makes frequent mention of the gods and goddesses and of heroes as being adorned with it. It was held in great esteem hy the ancient Persians, Egyptians, Babylonians, Medes, and other oriental nations of antiquity. The Persian nobles used to wear in the right ear a golden ear-ring containing Pearls. Ethiopian and Egyptian princes and nobles profusely used this gem. It is said that, according to an ancient law in India, any one who spoilt the Pearl and precious stones in boring, should not only make good the mischief but pay a fine of 250 panas. (a pana being, at the present time, equivalent to onesixteenth of a Rupee). It was also a great favorite with the ancient Chinese. 2300 years before the birth of Christ, Pearls were known to have been paid as tributes. When Pompey conquered Mithridates. he found in his treasury, besides several crowns of Pearls, one portrait of that king consisting of Pearls in mosaic. In his third conquest over the Asiatic princes (61 B. C.), Pompey took away a large number of jewels, 33 crowns of Pearls and the portrait of his own wrought in the same material. From this period, the taste for Pearls rose so extravagantly high in Rome as to bring down censure from the philosophers and authors of the time. Pliny says that it was the Romans only who gave to drop Pearls the name of "Unio," on account of the

difficulty that then existed in obtaining matches for those white round and brilliant things. Califula wore slippers made out of Pearls, while his wife Lollin Piulina used in her parure, Pearls to the value of 70,00,000 frames. Nero presented them in large numbers to his courtier, and adorned with them the sceptres and masks for his theatre as well as his couches. Julius Crear presented to Servilla, the mother of Marcus Brutus amagnificent Pearl (received from I gept as boots.) the value of which was then estimated at 990,000 france. The Romans used to decorate their temples and dwelling houses with Pearls and the ladies used to hire them for personal use on festive occasions, if they had not a sufficient number of them in their possession Clodius, the son of Ason, the celebrated tragic actor, is reported to have swallowed, in a banquet, water in which Pearls were dissolved and, relishing the flavour very much, generously provided each of his guests with the same costly drink Latterly on, Cleopatra laid a wager with Antony (who is well? reputed for his extravagance) that she would spend 10 lacs of our money, upon a single dinner, and claimed victory when she had! taken out of one of her car rings, one of the finest Pearls in the world, dissolved it in a cup of the strongest vinegar, and supped the contents off. She was about to do the same with the other, when L Planeus, the appoin ted umpire, snatched it off her hands, and declared Antony s defeat After the death of Cleopatra and)

the conquest of Egypt, this Pearl fell into the hands of the Emperor Augustus of Rome, who had it cut into two pieces and made into two ear-rings of the statue of Venus, in the Pantheon. Assimilar piece of folly was committed, in the modern times, by the princely English merchant Sir Thomas Gresham The Spanish Ambassador at the court of Queen Elizabeth, had, before the Queen, been boasting of the revenue and riches of his master and of the noblemen of his country, when Sir Thomas, who was present, told him that his Sovereign had subjects who could spend on one meal, the whole of a day's revenue of the Spanish King together with that of all his grandees; and this he was prepared to show any day, on a wager. The Ambassador called on the merchant one day, without previous engagement, and dured with him, but finding only an ordinary meal, told him, "you have lost your wager " " Not at all," replied Sir Thomas, and, immediately pulled out from his pocket a box from which he took out one of the finest oriental Pearls, (for which he had often refused 15,000 £) and, after showing it to the Ambassador, ground it and drank the powder in a glass of wine, to the health of his Queen. It is said that one of the things which had excited the cupidity of Julius Cæsar in conquering Britain, was the somewhat ovaggerated accounts he had heard of the Pearl fisheries that existed in or about the country. He is known to have been a great connoisseur in jewelry, and could tell the specific weight and value of a Pearl by simply taking it in his hands. The Roman ladies were Pearls fastened to their finger-rings, and sometimes in their ears in clusters of two or three, which went by the name of "Crotalia" (rattles), on account of the rattling sound made by their clashing against each other. Mahomed Ben Mansur placed the Pearl on the top of the list, while the Romans placed it second, after the Diamond, to which they gave superiority, on account of its talismanic virtues and not, evidently, for beauty

Price of Pearls, Imitations.

THE price of Pearls depends upon their form, texture (technically called "skin"), transparency (water) and lustre. It also depends upon national tastes for colour In Lurope, the white specimens, (and sometimes those with the bluish tinge), are most valued To the Europeans, a perfect Pearl should be perfectly round or dron-shaped, seeming as if fashioned or turned into shape; should have a perfectly white colour; should be transparent in a slight degree; should be free from flaws or blemishes, and should have the lustre peculiar to this gem. The Indians, Arabians and the Chinese prefer those with the yellow tinge, which have this advantage over the white ones that they do not lose their lustre and tint by wear To fix a standard price for the Pearls would only tend to mislead the buyer, for, like the Diamond, their value greatly

depends upon their shape. For example, a onecarat Pearl may be worth from 24/ to 40/; two-carat ones, if fine, from £6 to £8; and the value of the large and fine Pearls ranges from £2 per grain, upwards. It is easy to examine a single round or drop-shaped Pearl by itself, but not so, if they are strung in a row as in a necklace : for it becomes difficult to find out from the group the particular color of an individual stone,-the Pearl-stringer arranges them so ingeniously, with reference to gradation of color, that the tints, imperceptively blending with each other, make all appear to be of one hue, The yellow tint in the Pearl is said to be due to the decomposition of ovsters which are sometimes left to open of themselves The heat at the Straits of Manaar being greater and consequently the oysters naturally opening 5 or 6 days sooner than in the Isle of Bahrein (in the Persian gulf), the number of vellow Pearls found there is comparatively smaller than those that come from the latter place. Goa was the principal mart in which the Pearls were sold. The American Pearls, commercially called the "Panama Pearls," though appearing whitish (rather quick-silverish) at first sight, have almost invariably a sort of blackness under the skin. Like similar Pearls found in the Pacific and in Western Australia, these are sometimes worth from £1 to £10 per grain. Inferior coloured Pearls are often dved black (with Hematite, and imported iron ore) or russet-brown, but the want of the true

pearly tint and lustre can be detected by even the most inexperienced. The black or bad coloured Pearls are sold for good price, if they are of good colour and shape. Some people like the lead or plumbago tint, others, the shining greenish black. These would sell for 35/ to £6 per grain. The pink coloured Pearls are generally found in America and the West India Islands and are valued, according to their shape, quality and size, at £5 to £6 per grain These are seldom found of regular shape, and when bad or deformed look somewhat like decayed teeth Although called "pink," these are found of different colors, ranging from red to pale yellow, and frequently of a dull white, like a polished fish's eye. The grey Pearls being unfit for use in jewelry are not of much value. The specimen known as La Perle Roséi ranks the same with the clear white rose but the irregularity of its shape prevents its being used for personal ornaments The pale pink Coral is sometimes cut and shaped like a Perle Roséi and offered for sale as a real Pearl, but an experienced eye would not take the glistening of the cellular structure of the Coral for the peculiar sheen of the Pearl. Jewellers sometimes make very large Pearls by applying, one on the other, two of the hemispherical rounded tubercles taken from the interior of a Pearl shell. The paste makers of ancient times, notwithstanding their wonderful skill, did not think, or lind not the ability, of counterfeiting Pearls In 1680, one

Jacquire, a rosary maker of Paris, observing the pearly lustre of the scales of the small river-fish called the bleak, struck upon the idea of filling therewith hollow glass spherules prepared with a glutinous fluid. The manufacture has flourished since that period, the Parisian jewellers exporting four lacs of Rupees worth of these counterfeit Pearls. Although some of the false Pearls are made solid and of fish scales, and do not break easily, yet they are generally brittle and much lighter in weight than the real ones Then again, the holes in the real Pearls are drilled very small and have a sharp edge, whereas in the spurious ones, they are larger and have a blunt edge. The deformed Pearls, called the "Barrok Pearls" (perles baroques, in French,) are sold for £10 to £200 per ounce, the value depending upon the quality. colour and size of the specimens. Pearls are split in halves, when they are used for setting in jewelry. Those that are flat on one side and convex on the other are mostly used and are called Button Pearls (perles bontons). These are worth about 25 per cent less than the round Pearls of the same size and quality. The round Pearls, (perfect, according to the given standard), fetch the highest price. The approximate value of one round Pearl of 10 grains would be from £10 to £11; one of 20. £40 to £50; one of 30, £50 to £100 Pearls above 30 grains are of rare occurrence and consequently of exceptional value. Pearls of rare

colour or of any fanciful tint or shade are, as a matter of course, sold at fancy prices. The value of Pearls generally has risen up since the last few years, owing, perhaps, to the stoppage of the fisheries at Ceylon. The mother-o'-pearl fetched a high value in the Middle Ages

In Europe large Pearls are sold by enats, like Diamonds and other precious stones, but in Persia, they are weighed by the abas, which is $\frac{1}{6}$ less than the carat, and in India, by ratis, which is equivalent in weight to the abas. In Europe the ounce weight is used for weighing small and Baroques Pearls, Coral, Peridots and rough Garnets; an Euglish ounce being equivalent to $151\frac{1}{2}$ carats and a Cologne ounce, to 72 carats.

The Marvellous and Medicinal Virtues of the Pearl.

From the earliest times the Pearls have come to be considered as emblems of purity, beauty, and nobility. In Bengal, they were at one time worn by virgins on their arms, as preservatives of virtue. The oneirocriticks or interpreters of dreams drew interpretations from Pearls. These had great medicinal effect, when taken internally. It is said that one of the medicines given to restore Charles VI to reason, was a decoction of Pearls and distilled water. In China and other oriental countries, they are used as medicines—being thought to possess the power of

curing syncope, flux of blood, &c. Large quantities of seed Pearls are used, even at present, in the composition of Majoons or electuaries, in the formation of which powders of several precious stones are sometimes used. The Majoon, (in which there is a large quantity of Pearls,) is much in use for its supposed stimulating and restorative qualities. The oriental potentates were supposed to burn Pearls and use the powder as Chunam with the beetle-leaves they chewed. Powdered Pearls were also considered a sovereign remedy in stomach complaints, but there is nothing in the gems or in the shells which can render any more beneficial service than that done by chalks or other anti-acids.

Celebrated Pearls.

ONE of the largest Pearls known at present is called La Perigrina or the Incomparable. It was brought from India in 1620 by Gongilius of Calais, who sold it to Philip IV of Spain in 1625. This gem is now said to be in the possession of the Russian princess Youssopoff and is valued at 80,000 ducats. It is pear-shaped and is of 106 carats in weight. According to some writers of jewelry, the shell of this Pearl was found by a Negro bay, in the Panama fishery. The Pearl was presented to Philip II and was valued by the jewellers of the time at 11,400 ducats. It was pear-shaped, weighed 134 grains and was "as big as the biggest pigeon's egg." According to these writers, the one which has become so much

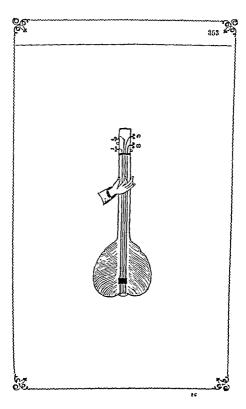
celebrated by the name La Perigrina is a different gem altogether. De Boot mentions a Pearl belonging to Rodolph II, weighing 120 grains-" 30 carats that cost as many thousands of gold pieces" Napolean had one, weighing nearly 180 grains. Tavermer speaks of one perfect round Pearl weighing 361 ratis, purchased by Aurungzebe. He also gives a drawing of a large pear-shaped Pearl bought by the Shah of Persia (in 1635) from an Arab coming from the Catifa fishery. It weighed 192 ratis and was valued at Rs 5,60,000. It is above an inch in diameter and is still in the possession of the Royal family The Imam of Muscat has one for which he is said to have refused 3,00,000 Rs. The Pearl, which the King of France gave to Madam de Mainton and which was offered for sale in 1819, weighed 27% carats The famous necklace of the Empress Eugènie, consisting of a row of matchless black Pearls, fetched £4,000, after the removal of the Pearl forming the snap, which was subsequently sold, for 1,000 guineas, to form the centre of a bracelet. The Crown Prince of Prussia gave to his bride, the Princess Royal of England, a necklace of 32 Pearls, valued at 5,00,000 francs The Marquis of Abercorn is said to possess a matchless drop Pearl of considerable size. The Municipality of Florence long gloried in the possession of a splendid single row of Pearls which was borrowed of them by the Grand Duchess, after the Restoration (in 1849) The Devonshire Cabinet possesses a large Pearl of the finest

orient, but of the Baroques nature, skilfully converted into the body of a very graceful mermaid. It is valued at Rs. 20,000. Another specimen of the deformed Pearl, made into a beautiful shape, now belonging to Col. Guthrie, is thus described: "Cinque-Cento pendant in the form of a syren; the head, neck and arms, of white enamel; the body, of a very fine and large Pearl Baroque, ending in scrolls and a fish's tail, beautifully enamelled and set with rubies. She is represented arranging her hair, with a combin her right hand; her left originally held a mirror. This splendid gem was brought from India; it is of fine Italian work of the 16th century. On the back is inscribed Fallit aspectus cantusque syrenæ and 'D. L. V. D. R.'" The initials can be interpreted as "Donum Ludovice Regis," i e. presented by the king Lodovico, (the XII, of Lombardy). It is supposed that this jewel was brought by Tavernier and other jewellers, to India and sold to the Mogul Emperor. The Londenborough unicorn is modelled out of two big Baroques, mounted by figures of France and Victory in sisterly embrace. In the list of the iewels of Henry III, of England, mention is made of a Baroque resembling a head in relief. The curious articles of jewelry by Dinglinger, in the green vaults of Dresden, mounted in gold and enamel, are made of "Cog de perle." A Pearl of this nature, formed into the shape of a strawberry, was shown in the Exhibition of 1862 and was afterwards sold to an English merchant for a fabulous sum, its intrinsic value being next to nothing

Pearls of great beauty and value are to be seen amongst the state-jewels of the Indian Princes, of which special mention can be made of those belonging to the Guikwar of Baroda and their Highnesses the Maharajahs of Gwalior, Holkar, Jeypore, &c. The estates of the late Juggut Settjee and of the late Babu Inder Chand, of Moorshedabad, have in their possession, Pearl necklaces of very great beauty and value. In Calcutta* there is a Pearl of extraordinary size in the possession of the Sett family. There are also some valuable ones with the Mullick family. Rajah Kally Kissen, the son of the late Rya Buddmauth, has a valuable necklace of Pearls and also some beautiful single Pearls The late Rajah Prosonno Narain Deb of Sobha Bazar had a good collection. There is a Pearl of extraordinary size, nearly as big as a sparrow's egg, in the possession of the Hon'ble Maharaja Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. There are also some very good Pearls and necklaces in his estate.

Several specimens of Baroque Pearls have been seen in Calcutta, amongst which was one in the shape of a dog

[•] There are some very large and heapiful Fearls in the possession of Mr David, a Jewsh gentleman of Calcutta. A very good necklase, consisting of very large Fearls (valued at Da. 125,607) was once seen in Calcutta in the hands of Fanna Lal, a Dombay needler.



श्रय गोमेदः।

मुखम् ।

हिमानवे वा मिन्यो वा गोमेदमणिसमावः।
खच्छकान्तियुं तः भिन्यो वर्णाव्यो दीमिमानि ।
बन्दाः पिञ्चरो धन्यो गोमेद इति कोर्नितः। ३३०॥
चतुर्धा नातिभेदस्य गोमेदेशिय प्रकाखते।
बाह्मणः गुक्तवर्णः खात् चिन्यो रक्ष उच्यते। ३३१॥
धापीतो वैद्यनातिय ग्रद्रस्वानीन उच्यते।
कावा चतुर्विधा श्वेता रक्षा पीतासिता तथा॥ ३३२॥

गोमेरका वयान।

तर्जमा।

हिसालय पत्नैत श्रीर सिन्धुनद्गे गोमेट् मणि पयदा होति है। खच्छ, ग्रुन, खिख, गरेरा रङ्ग, दीप्तिमान्, गर्मेट् श्रथना जरद् रङ्ग गोमेट् नङ्गत्तारिफके लायेक है। इहे०।

जिस् तरक्षे बाझण, चिन्नु, वैश्व चौर खूट्ट चार जात होते हैं, उसी तरके गोमेदभी चार्राकिसममा होता है। सफेद रङ्ग बाझणजात, लालरङ्ग चिन्नुजात, थीखा पीवा वैश्वजात चौर थोड़ा नीला गूट्रजात गोमेद होता है। सफेद, लाल, पीला चौर काला यही चार्यकारकी काया दूपी चारजातके गोमेदये निकलति है। ३३१। ३३१।

GOMEDA.

TRANSLATION.

330. Gomeda is produced in the Himalaya and the shores of the Indus. A transparent, weighty, cool, deep-colored, shining, and white or green gomeda is worthy of the highest admiration.

331—332. The Brahminical classification of castes obtains also with gomeda. The white gomeda is the Fipra; the red one is the Kshetriya; the yellowish one is the Vaishya; and the bluish one is the Sudra. These respectively cast the white, the red, the yellow and the dark shade.

গোমেদ 1

অञ্বাদ।

হিমালয পর্বত ও দিরুনদে গোমেদ মণি উৎপন্ন হয। বছে, ওক, প্লিঞ্চ, প্রগাচবর্ণ, দীপ্তিমান্, শুরু বা হবিদ্রাবর্ণ গোমেদ অতিপ্রশংসনীয়। ৩০০।

গোনেদেও ব্রাহ্মণাদি চাবিপ্রকাব জাতিভেদ আছে। শুরবর্ণ বিপ্রজাতি, রক্তবর্ণ ফত্রিমজাতি, ধ্বিংশীতবর্ণ বৈশু জাতি ও ঈরং নীলবর্ণ শুদ্রজাতিমধ্যে পরিগণিত। খেত, রক্ত, পীত ও রক্ষ এই চতুর্বিধ ছামা উক্ত চারিজাতির হুইমা থাকে। ৩০১। ৩০২। मृजम् ।

ग्रुक: प्रभाद्य: सितवर्षेरूपः

सिग्धो चदुर्वातिमद्वापुराणः।

सिक्या खबुवातमङापुराणः।

खच्छात गोमेदमणिषृतोऽयं करोति लग्नीं धनधान्यवृद्धिं । ३३३॥

चघुविँरूपोऽतिखरोऽन्यमानः

स्रेडोपलिप्तो मलिनः खरोऽपि।

करोति गोमेदमणिविनामं

सम्मिनभोगासिलवीर्यराग्नेः ॥३३४ । ये दोषा घीरके ज्ञेयासे नोमेदमणाविष । परीचा बिज्जतः कार्यो गाले वा रस्रकोविदैः ॥ ३३५ ॥

तर्जमा।

भारी, प्रमाविधिष्ट, चफेद रङ्ग, खिल्य, छोमल चळत् पुराणा चौर खच्छ गोमेदचे चळत् दीलतकी बाद्ध्ति फोति है। ३३३।

डास्का, बदसरत, ज्यादा सुरधरा श्रयवाकम सुर-धरा, श्वान्तिजनक, श्वांत् मक पचदा करनेवाला, श्रविग्ध, मलिन गोमेद दीलत, भीग श्रीर बलको नाम कर्ता

है। ३३८।

शिरिका जेतृना खर्येय कथा गरा श्री, गोमेदसेभी वधी सब खर्येय पावा जाता श्री, रत्नपार्ची पश्चित खाग चीर साममे गोमेदकी पश्चान करने श्री। १६५॥।

6.

TRANSLATION.

333. The wearing of a weighty, lustrous, white, cool, tender, very old, and transparent gomeda leads to prosperity.

334. A light, discolored, exceedingly rough, dilusion-creating, and cool yet dirty gomeda blights happiness and saps the foundations of energy.

335. Those defects that have been mentioned as belonging to the diamond, are also found in the gomeda This gem is tested by fire or by whetting

অফুবান।

গুফ, প্রভাবিশিষ্ট, শুরুবর্ণ, মিঝ, কোমল, অত্যন্ত পুবাতন ও অচ্ছ গোমেদ ধাবণ কবিলে অত্যন্ত এীর্ছি হয়। ৩০০।

লঘু, বিৰূপ, অত্যন্তথৰস্পৰ্শ, আন্তিজনক, এবং স্লিগ্ধ অথচ মনিন ও থৰস্পৰ্শ গোমেদ সম্পত্তি, সমুদায় ভোগ ও সমস্ত বীৰ্য্যেব নাশকাৰী। ৩৩৪।

হীরকেব যে সমস্ত দোব উল্লিখিত হইযাছে, গোমেদেও সেই সকল দোষ লক্ষিত হয়, রত্নবিৎ পণ্ডিতেবা অগ্নি বা শাণদাবা গোমেদের পরীক্ষা করিয়া থাকেন। ৩৩৫। मूचम्।

गुहुस्य गोमेदमणेसु मूखं सुवर्षतो हैगुणमाज्जरेके।

श्वन्ये तथा विद्रमतुल्यमूल्यं तथापरे चामरतुल्यमाजः ॥ ३३६ ॥

स्कटिकेनैव कुर्व्वन्ति गोमेदप्रतिरूपिण । चतुर्विधानामेषान्तु धारणं पविसमातम् ॥ ५३७ ॥

तर्जमा ।

वेषयेव गोमेदका मूल, धवके सतके समान महि होता, किसीके कौलके सुजिय धगर एक तोला गोमेद हो, दो तोला सोणादाम उसका है। और किशीके कौलके

दा ताला साणा दाम उसका है। श्वार कियान कालम सुजिन एक तोला सुद्गेका को दाम होगा, वही दाम एक तोला गोमेदका होगा। किसीके कौलके मुजिय चामरका समान दाम गोमेदका होगा। इहहैं।

यमान दास गोभंदका क्षेत्रा । ३३६ । फरेबी सबदागर फाटिक्से गोमेंद बनाते कें। बाह्रा णादि चारमकारका कीरा पहेरनेसे जी फल कीर्ता कें

णादि चारमकारका चीरा पहेरनेसे जी फल होता चै। चारमकारका गोमेद पहेरनेसे वही फल होता चै। ३३७।

इति गोमेदना वयान ।

TRANSLATION.

336. Opinions are divided as to the price of a sterling gomeda, some maintaining it to be double that of a proportionate mass of gold, some holding it to be equal to that of a Vidruma, some making it equal to that of chamara.*

337. Fraudulent jewellers fabricate false gomedas with crystal. The good that is reaped by wearing the four classes of the diamond, is also obtained by wearing the four classes of the gomeda.

यश्वीन ।

বিশুদ্ধ গোমেদের মূল্য সকলের মতে সমান হয় না, কাহার মতে প্রবর্ণের দ্বিশুণ, কাহার মতে বিক্রমের সমান এবং কাহারও মতে চামরের সদৃশ হইমা থাকে। ৩৩৬।

অসং বণিকের। ক্ষটিক ছারা কৃত্রিম গোমেন প্রস্তুত করিয়া থাকে। ব্রাহ্মণাদি চতুর্জাতি বক্ত ধারণের যে ফল, চতুর্ব্বিধ গোমেদ ধারণেও সেই ফল। ৩৩৭।

ইতি গোমেদ।

^{*} The bushy tail of the Bee Granmens, used as a Sy-Sap or fan and as one of the insignia of royalty.

THE ZIRCON, HYACINTH OR JACINTH,

Its Properties.

HE Zircon, Hyacinth or Jacinth and Jargoon are identically the same stone, differing only in colour. The Greek name is "Wakinthis." Latin, "Hyacinthus," German, "Hyacinth," and "Ein breuneder Jacinth," French, "Jacinthe La Belle." The word Zircon is supposed to be derived from the Arabic word Zerk, which means a gem ; the Hyacinth, from the Arabic Vakut which means the Ruby. The transparent and bright-coloured varieties are known as the Hyacinth or Jacinth; the grevish and smoke-coloured ones, (which are sometimes sold as inferior Diamonds.) as the Jargoon The Jargoon again occurs of several colours and is seldom perfectly transparent. Botius de Boot. describes the varieties thus; "(1) there are some that flame like fire or are similar in colour to crim-These the French son or to natural vermillion. jewellers call Jacinthe La Belle, and these they esteem the best. (2) Those with a yellow red (3) Others are like unto Amber, so that they can hardly be distinguished from it, but by their hardness. These are of no great value, by reason of the atoms they contain, and the multiplicity of small bodies which are in them, which do hinder their transparency and translucency." According to Cardanus, "there is a fourth kind which have no redness at all in them, which are like to white pellucid Amber, and these are of least value." This gem belongs to the dimetric system of crystallization. Its specific gravity is from 4 07 to 475. In the transparent varieties, the lustre is almost adamantine; in the opaque ones, it is vitrious. It varies in colour from red to yellow, brown, green, grey and white Its number in the scale of hardness is 75: it having the power of slightly scratching quartz. Its cleavage is imperfect; its fracture conchoidal and brilliant. It is composed of zirconia, 66 8, silica, 33 2 and peroxide of iron, 1. Being heated it becomes phosphorescent, loses its colour and increases in specific gravity, but regains its normal properties when cool, and if reheated immediately after, the phosphorescence does not appear. It is infusible before the blow-pipe but melts with borax into clear glass. No acids but sulphuric can affect it, and that even, after long maceration. It possesses double refraction in a very high degree, specially the Jargoon of Cevlon. The Zircon is distinguished by its quadrilateral crystals, terminating at both ends in a pyramid. with the same number of facets.

Where found.

NICOLS, writing 226 years ago, speaks of the Zircons:—"They are found in Ethiopia, India and Arabia. The Arabs distinguish three kinds; (1) Rubris Coloris; (2) Citrine Coloris; (3) Antimonia Coloris. Of these the worst is found in the river Isera, which is upon the confines of Silisia and Bohemia. The best and most excellent ones are brought from Cananor, Calicut and Cambia." Since this period, several places have been found which are known to contain Zircon. It is found in embedded and attached crystals in granite, Syenite and Gness and also in beds of rivers together with Garnets, in Ceylon, Pegu, India and parts of Europe and America It has been found in small crystals in Syenite at Meissen and in the Plauenschen Grund, (both near Dresden), and in dense basalt, in Siben-Giberge, in Prussia; in the rivers Espially (France) and Iser (Bohemia); in the island of Harris, in the Pfitsch Thal in Tyrol; in Gaston, Pennsylvania and in Hammond, New York. It is also found in some volcanic places (and with many Volcanic or Plutonic stones), such as at Neide-Mindy, in porous millstone lava; in Pachersea, (in little white and red crystals), in volcanic bomb-shells and in the lava of Vesuvius

Mode of Cutting and Polishing

THE Zircon is soldom used in jewelry, but when it is necessary to proper it for ornaments, such as rings, pins, car-rings &c , it is ground in a leaden plate with emery powder, and polished on a plate of copper with powdered rotten stone. The Jargoon is generally cut in the form of a Rose Diamond; *i.e.*, flat at the bottom and pointed at the top; the Jacinth or Hyacinth, like a brilliant with a rounded table.

The Zircon, Jacinth or Hyacinth as known to the Ancients: Engravings

ALTHOUGH this stone was well-known to the ancients, it is a matter of question whether the gem they called by this name was the same as the true Some suppose it to be the Lyncurium of Theophrastus. Its Hebrew name is Technleth or blue, hence, perhaps, Pliny called the stone known to us as the sapphire, by the name Hyacinthus, It was a great favorite of the ancient Romans, but is little worn at present. In the Paris Museum may be seen a splendid specimen of a very ancient engraving on a Zircon, representing Moses with the two tables of the law. It is 54 millimetres in length and 34 in width Lord Duncannon is said to be in possession of a Zircon having the figure of an athlete engraved upon it. The modern Chinese use this gem profusely in decorating their gods

Price of the Zircon; its Flaves and Defects: Mode of Testing

No standard prices can be given for the Zircon as it is seldom used for jewelry purposes

I formerly it commanded a very high price A solitary specimen of a Zircon, if free from flaws and possessed of a fine colour, may fetch a high price, in the pro-

sent time A perfect Zircon should be of a beautiful orange colour, with a shade of scarlet, quite clear and without flaws To remove dark spots from the stone and to equalize its colour, it is sometimes very carefully burnt with sand and iron filings The Jargoon that comes from Matura (in Ceylon) approaches the diamond so closely in lustre, that in the 18th century it had been supposed to be an inferior diamond and sold as such. The people of Ceylon call it the "Maturian Diamond" It is seldom found of large size-the maximum weight has not yet exceeded more than 12 carats It was formerly much used in mourning ornaments The Zircon is sometimes confounded with the Essonite or Cinnamon stone, from which, however, it differs in its essential characteristics. While the specific gravity of the former is from 4 07 to 47, that of the latter is from 3 5 to 4 3 Then, in the scale of hardness, the former is 7 5, while the latter is from 6 5 to 7 5 Then there is a great deal of difference in the chemical composition of each. The latter has a large element of lime, magnesium and aluminum in it and is fusible before the blow pipe, whereas the former is not As to refraction, the Zircon possesses double, while the Cinnamon stone, single refraction The Spinel is sometimes mistaken for the Jacinth, owing to similarity of colour in some of the specimens, but a reference to the dis tinguished characteristics of each will easily correct the mistake To distinguish the Zircon from all

other stones of a similar nature, it should be looked at through a microscope in front of a strong light, and care must be tiken to observe, whether it has a peculiar texture, called in French, Ratine (nappy)—which has the appearance of water when spirit is poured into it. This cottony or "nappy" look is its special characteristic.

Marvellous Properties attributed to the Zircon

In the Middle Ages, this gem was supposed to bring riches, honor and wisdom, and was considered a great charm for plague and wicked spirits. "One of these," says Cardanus, "he was wont to wear about him, for the purpose of procuring sleep, to which purpose it did somewhat to confer, but not much." It was also thought to be a safe-guard against lightning.



ऋष विदु,मम्।

स्लम्।

खे तगागरमध्ये तु जायते वस्तरी तु या । विद्वमनामरसाख्या दुर्लेगा वस्त्रस्थिणी ॥ ३३८ ॥ विद्वमं नाम यद्रसं धारयन्ति मनीपिणः,। ब्रह्मादिजातिमेदेन तस्तुर्विधसुख्यो ॥ ३३८ ॥

श्रहण ग्रगरक्ताचं कोमलं सिन्धमेव च । प्रवालं विप्रजातिः स्थात् सुखवेष्यं मनोधरं ॥ ५४० ॥

विदुम अर्थात् मुंगेका वयान।

तर्जमा)

धफेद ससुद्रके मध्ये वज्रकृषिणी एक किसिमका वताकार रक्ष पथरा घोता है, उस्को विद्रुम खर्थात् मुंगा कहते हैं। ३३८ ।

पांख्रत लोक जिस् मुंगेके पहेरते हैं, वह मुंगा जिस् तरहे ब्राझण, चिन्न, वैश्व और श्रद्ध चार जात होते हैं उसी तरह उस्कीभी चार जात होते हैं। ३३८।

खरगोयके चायके समान सुख, कोमल चीर बङ्ग सिम्म मुंगा बाह्मणजात है, बाह्मणजातका मुंगा देखनेन

न्त्रत्व भुगा नास्त्रपात ६ ६ नास्त्रकातका भुगा देवन नज्जत् आच्छा है श्रीर जल्दि वेध होता है। ३४०!

THE CORAL.

TRANSTATION.

338. A cross-shaped gem resembling a plant is found in the White Sea. It is called Vidruma.
339. The Brahminical classification of castes has also been introduced among Vidrumas.

340. That, Vidruma which is red like the eye of the hare, tender and very cool, is the Brahmin. It is exceedingly beautiful and is easily penetrable.

বিক্রম ৷

অমুবাদ।

শ্বেতসমূদ্ৰেৰ মধ্যে যে বজ্বৰূপিণী একপ্ৰকাৰ লতাকাৰ বহু জন্মে, তাহাকে বিজ্ঞামণি কহে। ৩৩৮।

পণ্ডিতেবা বিজ্ঞানামক বে রত্ন ধাবণ কবেন, তাহা ব্রাহ্মণাদি জাতিভেদে চাবিপ্রকাব হইযা থাকে। ৩৩৯।

শশকের চকুব তায অকণবর্গ, কোমল ও অতিরিগ্ধ প্রবাল বিপ্রদ্রাতিমধ্যে গণনীয় এবং দেখিতে অতিমনোহর অধচ জনায়াদে বেধ্য । ৩৪০ । मूचम्। जवावश्रुकसिन्द्रं दाङ्गीकुसमोपनं।

काँठन दुवेश्वमस्तिम्धं चचनातिसहस्यते ॥ ५८९ ॥ पनामकुसमाभासं तथा पाटनसन्निमं ।

वैद्यनातिभवेत् सिम्धं वर्णाढंर मन्द्रकान्तिम ॥ ३४२ ॥ रकोत्पनद्रनाकारं कठिनं श्रीचरद्यति ।

रक्षात्पवदत्वाकार काठन श्राचरद्यात । विद्रुम ऋद्रवाति: खादायुवेधं तथैव च ॥३४३ ॥ रक्षता खिम्मता दार्टेंग्र चिरद्युति खवणता । प्रयावाना गुणाः प्रोका धनधान्यकराः पराः ॥ ३४४ ॥

तर्जमा ।

क्षनेलका फुल, बाधूबीका फुल, छिन्दूर श्रववा श्रानारके फुलके समान सुख, सक, सुब्रक्तिल वेवेधक्षोनेवाला श्रीर

यखिम्य मुंगा चित्त्रजात है। ३८१। पनाम्पुन चौर पाटनी फुनके समान स्नृ स्ट्रू, सिम्य चौर योडा कान्तिविशिष्ट मुंगा वैद्यनात है। ३४२।

जो मुगालाल कमलके समान रङ्गदार, कक्त, जिस्की

चमक योदे दिन रहे चौर जो बद्धत् जल्दि वेधा आय, वह श्रद्भजात हैं। ३८३। जावरह, खिल्लात, सक, कायेमस्द्र चौर सुन् सुरस्

मुंगेका यही कद्रएक छास ग्रण है। श्रीर यही सब गुण-सक मुंगा धनधान्यकी छहिकर्नेवाना है। ३८८।

B.

TRANSLATION

341 That which resembles the China rose, the bandhuls flower, vermilion or the pomegranate flower, which is impenetrably hard and which is not cool, is a Kisetriya

342 That Vidruma which is like the Butea frondosa, or the trumpet flower, which is cool and slightly lustrous, is reckoned a Vaisya

343 That Vidruma, the lustre of which is not enduring, which is like the levves of the red lotus, which is hard yet easily penetrable, is a Sudra

344 Yellowness, coolness, hardness, perma nancy of lustre and beauty are the principal qualities of the Coral, and those Corals that possess them, are auspicious

षद्भवान ।

জবা, বাঁধুনীপুঞা, সিন্দুব অথবা দাভিমেব পুঞ্জেব তায বক্তবর্ণ, কঠিন, ভুর্ভেদ্য ও অলিগ্ধ বিক্রমকে স্বজ্রজাভিমধ্যে গণনা কবা যায়। ৩৪১।

পলান ও পাটলপুষ্পদদৃশ বর্ণাচ্য, স্লিগ্ধ, অথচ অল্প কান্তিবিশিক্ট বিক্রম বৈশুজাতিমধ্যে পবিগণিত। ৩৪২।

যাহার দীপ্তি অচিবস্থায়ী, 'যাহা বক্তোৎপলদলেব তাথ বর্ণবিশিক্ট, কৃচিন এবং অনাধাদে বেধ্য, সেই বিক্রমকে শুক্রজাতি বলা যায়। ৩৪৩।

লোহিত বর্ণ, স্লিগ্ধতা, দৃঢতা, চিবস্থায়ী কিবণ ও সোন্দর্য্য, প্রবালের এই কয়েকটা প্রধান ওপ এবং এই দবল ওপশালী প্রবাল বনধাক্তকর। ৩৪৪। मूचम)

हिमाद्री यत्तु सजात तद्रक्तमतिनिष्ठुरं । तस्य धारणमानेण विषरोग प्रशास्यति ॥ २४५ ॥

तस्य धारणमाचेण विषरीम प्रशास्त्रति ॥ ३४५ ॥ विवर्णता तु खरता प्रवाचे दृषणदय ।

रेखा काकपदो बिन्दुयैया वज्जे पु दोपछत्। ३४६ । रेखा चन्याद यशो लक्षीमावर्त्त कुलनागन ।

पटुलो रोगकत् खातो निन्दुधैनविनागकत्। चास सननवेनार्सं नीलिका चत्यकारियी ॥ ३४० ।

वर्जमा।

हिमालय पब्लेतमे बद्धत् गहेरा लालरङ्गका जी मुगा पयदा होता है, उस्की पहेरनेसे जहेरका दोगनाम होता है। इ841

वदरकी, खुरधरापन यथी दो मुगेके प्रधान खबेव हैं, इस्केंधेवाव चिर्, काकपर खीर क्टिट वर्गरेष हीरिंगे जो खबेव होते हैं, वही सब खबेव मुगेमेभी खक्षणर होते हैं। इहहं।

चिर खयेबसे नाम्बरी श्वीर दीलतनाय होति है, धावन धाये कुछनाय कर्ता है, परिवर्त खयेब विधारी पयदा करता है, किटाका धायेब दीलतका नाम कर्ता है, चास खयेब चास देता है श्वीर नीला खयेब मीतका कारण है। ३४७।

TRANSLATION.

345. A deep red Coral is found in the Himalaya. The wearing of it leads to instant cure from poisoning.

346. Roughness and the quality of being discolored are the two primary defects of the Coral; besides which, there are Rekká,* Kákapada, Vindu, and other defects found in Diamonds.

347. Rekhá blights fame and heauty, Avarta brings about loss of family dignity, Pattala leads to disease, Vindu to loss of wealth, Trása to fear and Nilakdya to death itself.

অহ্বাদ ৷

হিমালয় পর্ব্বতে অতিগাঢ় লোহিতবর্ণ যে প্রবাল জন্ম, তাহা ধাবণ কবিবামাত্র বিষরোগ প্রশমিত হয়। ৩৪৫।

বিবর্গতা ও থবতা এই তুইটী প্রবালেব প্রধান দোব, তদ্ভিন রেখা, কাকপদ ও বিন্দু প্রভৃতি বজ্রাপ্রিত দোষ সমূহও প্রবালের দোবনধ্যে গণনীয়। ৩৪৬।

রেখাতে যশ ও ঞী বিনই হয়, আবর্তে কুলনাশ, পরীলে রোগ, বিন্দুতে ধনক্ষয়, ত্রাসে ত্রাস ও নীলিকায মৃত্যু হইয়া থাকে। ৩৪৭। भवाम । भवाम ।

मूर्त्यं शुद्वप्रवालस्य रूप्यविगुणस्रयते । धारणेऽस्थापि नियमो जातिभेदैन पूर्ववत्॥ १४८ ॥

विक्पजाति विषमें विवर्णे खरप्रवार्लं प्रवर्णन्त ये वा । त ऋत्युमेषात्ननि वे चरन्ति •

सत्यं बद्खेष करो सुनीन्द्र: ॥ २४६ ॥ जीरमं खुच्छता कान्ति: काठिन्यं रत्नका गुणा: । विदाय वद्यकार्खोप गीरवं शोभनं भवेत ॥ ३५० ॥

तर्जमा।

वेषयेव सुंगेका दाम उस्के घोजनसे इना खालिस् षादी घोगि, सुंगा परेरनेका फल, जिन्तर जातमेदके िष्सावरे सावेक लिखेळ्ये रत्न देते हैं, चनी तर्ष्ये सुंगाभी फल देता है। ३८८।

कर नामे एक सुनिका वचन है, के जी चार्मी वद् सुरत्, विज्ञाति, नीचा उंचा, वद्रञ्ज चीर सुरधरा मुंगा पहेर्ता है. वह जापनि मीत चाप बोनाता है। ३४८। पुरुता, ख्वरता, कान्ति चीर कठिनतामी कोइएक रकके प्रधान गुण हैं, वेकिन होरेकेसेवाय चीर रहाँकी

भारी छोनेकी तारिफ हैं। ३५०।

6

TRANSLATION

348. The price of a faultless Coral is twice that of an equal quantity of pure silver. As in regard to other gems, the effects of wearing Corals vary in accordance with each of the four classes.

349. According to Kar, the celebrated sage, the man who wears an ugly, discolored and rough Coral, courts his own death.

350. Heaviness, transparency, beauty and hardness are the principal qualities of jewels. But the first holds with respect to diamonds only.

অমুখাদ।

বিশুদ্ধ প্রবালের মূল্য বিশুদ্ধ রোপ্যের দ্বিগুণ পরিমাণে ইইয়া থাকে। প্রবালধারণের ফল, জ্বাভি-বিভাগ অসুসারে পুর্ববর্ণিত অপুরাপুর রম্বধারণের অসুরূপ। ৩৪৮।

করনামক মুনিপ্রবর বলেন, যে ব্যক্তি বিরূপ, বিজাতি, বন্ধুব, বির্বু ও থবস্পর্শ প্রবাল ধারণ করে, সে আপনাব মৃত্যু আহ্বান করে। ৩৪৯।

গুরুতা, স্বছতা, কান্তি ও কঠিনতা রছের এই ক্ষটা প্রধান গুণ, কিন্তু বন্ধু বাতিরেকে অপবাপর রছের ওকতাই অধিক পৌরবজনক। ৩৫০। मूजम्।

रत्नानारूपसम्बन्धः भूतां कुर्व्वन्ति युक्तिनः । तेषा परीचां वच्चामि रत्नगस्त्रविचारिणी ॥ ३५१ ॥

यज्ञेण वेधयेद्वज्ञं सिचमन्त्रे विधीयते ।

क्रिम मौक्रिकं नखेत् चालितं लवणामसा । ३५२॥ साणिक्यादीनि रत्नानि घर्षणासु परस्परं।

शोधयेद्रतित् प्राप्त किम् गुहुमेव च । ३५३।

त्यजिति क्षयितं रागं किचमं तददीरित। माईवं हखते षृष्टं च्रेयन्तत् क्षविमं युधे.॥ ३५४॥

सरजमा ।

भूमें बोबा बुद्धियल कर्के गाञ्चे रत्नके समान अहुटा रत्न तैयार कर गक्ते के, इस् कारण प्राव्यके प्रमाणके मोयाफिक रत्नकी परीचा विखि जाति के। ३५९।

शीरेके दारा भूठा शीरा वेतक सुप वेध शो जाता है, श्रीर भुँठा मीत जलमे लोण मिलाकर धोनेसे नष्ट शी

जाता है। ३५२। रत्नपारची पविडत कहते हैं, के परस्पर धिस्नेचे

रलपारचा पावडत कडत ह, क परसर विकास माणिक चाद रक्षकी भुडाइ चीर वाचाइ मालूम ही र्चाक है। ३५३।

ऐसे गाइकी कान वगैर इसे जिस्की पाणिमें देवर पाकानेसे पाणिका रद्ग नदर ज हो जाय, और उन् पाणिमें कस चा जाय, ऐसे जनसे जिस्सक्तों केंद्र देनेसे उनका रङ्ग नदर ज हो जाय, और धिस्नेसे नरम हो जाय उन्को भुठा कहते हैं। ३५८।

TRANSLATION.

351 Whereas fraudulent traders fabricate false gems, I will now describe the way of testing precious stones as laid down by the authorities.

352. A false diamond is easily penetrable by a real one; a false pearl is destroyed when washed in salt water

353. The Ruby and other gems, say the author ities, are very well tested by rubbing one by the other.

354 When a false gem is put in any gruel, it loses its brilliance; and when rubbed becomes soft.

অভ্ৰাদ।

ধূর্ভনোকেরা নানা কৌশল অবলম্বনপূর্বক বঙ্কের প্রতিকৃতি প্রস্তুত কবিতে পারে, অতএব শাস্ত্রামূমত পবীকৃ। বলা বাইতেছে । ৩৫১।

কৃত্রিম বজ্র বজ্রবাবা অনাধাদে বিদ্ধ হয়, কৃত্রিম মুক্তা লবণাস্থতে ধৌত করিলে নফ হইযা যাব। ৩৫২।

বত্নতত্ত্বন্ধ পণ্ডিতেরা পবস্পব ঘর্ষণ দ্বাবা মাণিক্যাদি বত্ন সমুদাযের কুক্রিমতাকৃত্রিমন্তাদি বিচাব করিতে পাবেন।৩৫৩।

কোন বস্তুব কাথে নিকিপ্ত হইলে কৃত্রিম বত্ত পূর্ব শোভা পবিত্যাগ করে এবং হৃত হইলে কোমল হইয়া পড়ে। ৩৫৪। र 876 मणिमा**ला**।

मूचम्।

एवं विचार्ये रल्लानि कीचे सखितवान् नृषः। श्वायुर्वेद्धी जयं कीक्तिं मात्रीति नाच संग्यः॥ ३५५॥ प्रयद्धं कौमलं स्वित्यं सुरागं विद्वमं चितं।

धनधान्यकरं लोके विपात्तिभयनाशनं ॥ ३५६ ॥ —————

राजा लोगोंको मनासिक है, इसकाय्ट्रिके मोतानिक रत्नको परीचा कर्ले बाद उसके रत्नको खाजानेमे रस्तेकी

तर्जमा ।

षाजा दें, इस् सबबसे उत्तर, दीवत घीर नाम्बरी बाद गि घीर फते घामल घोता। ३५५ । परिष्कृत, कोमल, खिट्टा चौर उत्तम बर्णविज्ञिष्ट मुंगा

परिष्कृत, जोमल, स्निन्ध चौर उत्तम वर्षाविश्रष्ट मुंगा चाद्भीचाका हितकारी है धनधान्त्रकर्नेवाला चौर जहेरका रोग नामकर्नेवाला है। ३५६। स्ति मुंगेका वयन।

TRANSLATION.

355. Princes should examine precious stones by these tests before depositing them in their treasury, so that they may enjoy long life and prosperity, and acquire success and fame.

356. A clear, soft, cool, and finely red Coral is auspicious, conduces to prosperity and is an autidote to poisoning.

to poisoning.

অহুবাদ 1

নুপতিগণের কর্ত্তব্য যে, এই প্রণালীতে অগ্রে পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ বন্ধ সন্মূরার কোমে স্থাপন করেন, তাহাতে ভাঁহাদের আয়ু, নক্ষ্মী ও কীর্ত্তি বর্ত্তিত এবং জন্মনাত ইইতে পাবে। ৩৫৫।

পনিষ্কৃত, কোমল, মিগ্ধ ও উত্তম বক্তবর্ণ বিজ্ঞা লোকেব হিতজনক, ধনধাত্তকব ও বিষবোগবিনাশক বলিয়া বিখ্যাত আছে। ৩৫৬।

ইতি বিজ্ঞম।



₹\$ ₃₇₆ मिमासा (

मूलम्। एवं विचार्य रहानि कीं में चित्रतवान् नृपः।

धाय्वैधी जयं की तिं प्राप्नीति नाच संगयः॥ ३५५॥ प्रचन्नं की मलं स्निन्धं सुरागं बिद्रमं हितं।

धनधान्यकरं लोके विपात्तिभयनाशनं ॥ ३५६ ॥

तर्जमा ।

राजा लोगोंको मनासिक है, इस्काय्देके मौतानिक रत्नको परीचा कर्के बाद उस्के रत्नको खाजानेने रख्नेकी षाचा दें, इस् सनवसे जमर, दौबत घीर नाम्बरी

बार्दे गि श्रीर फते हामिल होगि। ३५५। परिष्कृत, कोमल, सिग्ध श्रीर उत्तम वर्णविशिष्ट मुंगा

चाद्मीचाका दितकारी ही धनधान्यकरनेवाला चौर जरेरका रोग नामकर्नेवाला है। ३५६।

इति मंगेका वयान।



TRANSPACTON

355 Princes should examine precious stones by these tests before depositing them in their treasury, so that they may enjoy long life and prosperty, and accours success and fame

356 A clear, soft, cool, and finely red Coral is auspicious, conduces to prosperity and is an autidote to poisoning

অহুবাদ 1

নৃপতিগণেৰ কৰ্ত্তব্য যে, এই প্ৰণানীতে অথে পৰীক্ষা বৰিষা পশ্চাৎ বন্ধ সমূদাৰ কোনে স্থাপন কবেন, তাহাতে তাঁহাদেৰ আয়ু, লক্ষ্মী ও কীৰ্ত্তি বৰ্দ্ধিত এবং জয়কাত হইতে পাবে। ৩৫৫।

পৰিকৃত, কোমল, স্নিগ্ধ ও উত্তম বক্তবর্ণ বিজ্ঞা লোকেব হিতজনক, ধনধাত্তকৰ ও বিষয়োগবিনাশক বলিয়া বিখ্যাত আছে। ৩৫৬।

ইতি বিজ্ঞম।



THE CORAL.

Its Properties.

HE Pearl is one of the two animal products included amongst the precious gems. The Coral, the other, is the production of gelatinous creatures, belonging to the family of "Polypi," of which there are many varieties. The variety known as "Isis Nobilis," (or the precious Coral,) is like a tree with leafless branches, the stem of which is sometimes seen to be as thick as a man's body, but generally about a foot high and an inch thick. "The calcarious axis of the 'Isis Nobilis' is distinguished by its size, hardness and capability of polish as well as by its beautiful red colour. It has a sort of leathery covering in the cells to which the Polypi adhere. In the soft rind which surrounds the axis, there are small lime-needles and outside these the nets of the common canals which the little creatures weave." The sub-marine forests which are formed by the Coral grow to such an extent as to make islands and to seriously obstruct navigation. It was the belief of the ancients-a belief still shared in by many, in the present timethat the Coral is of vegetable origin; but modern science, with the help of the miscroscope, has discovered the form of the insects which produce this wonderful phenomenon of nature. The Polypi consist of a soft gelatinous substance, and when they sit in their cells undisturbed, each of them is found to resemble an eight-cornered star, notched on each point and situated in a circle round the mouth, by means of which they catch their food and convey it to this opening. They are so peculiarly organized, that if one of them be touched, even in the slightest degree, all the separate molusks on the branch will form into one corporate body. Though the insects show, in this respect, a marvellous degree of sensitiveness, they have not yet been discovered to possess nerves or any of the five senses. In the case of the precious Coral, the food goes into a hole in the stomach and is there wellmixed with water and circulated in all directions in little vessels, and thus conveyed to the whole mass, which are all in communication with each other. Particles of plants, found in the water and little worms or insects, form their chief nourish ment. They are very much averse to light and to a disturbance of the water, either of which is sufficient to make them recede to their cells. The Corals are affected by heat and acids

Where Found: Coral Fisheries.

THE Corals are found in many parts of the water-world, but those that are used for ornaments principally come from the Mediterranean and especially from the African Coast. The beds, (formed by the creatures themselves), in the clefts of rocks, are evidently the result of very great labour, for, in some cases, they have been found 700 or 800 feet beneath the surface of the sea. The Coral fishery is conducted in many places, principally amongst which may be mentioned the coasts of Tunis, Algiers, Sicily, Corsica, the Red Sea and the Persian Gulf. Although it is chiefly carried on by the Italians and Maltese, it was first initiated by the French. In 1450, a French Company was established at Calle or Kalak, (a seaport of the African coast), the fishing at which place became their monopoly, on condition of their employing Provencal sailors only. In 1791, the fishery was thrown open to all who traded with the Levant and states of Africa. In 1794, however, the French ships were protected by a duty laid on those of all other nations During the time England held possession of Calle (1802 1816), the fishery was pursued with great energy. In 1830, the Italians had, according to fresh arrangements, to pay a duty for it, while the French were exempted. But still the Italians predominated. The fishery, which begins in March and ends in the beginning of October, is conducted in the following way. "Two iron rods about 7 feet long and having 4 prongs, are bound crosswise together, and wrapped up in hemp about & inch thick, and bound to this is a net-work bag In the middle of the rods a weight of lead is fastened. This machine is let down by means of a cable and when drawn up

again, it catches the projecting Coral in the hemp which is gently brought to the surface "Each fishing boat consists of 13 sailors. Experienced divers can sometimes bring up a strong branch of the Coral. It is then cut into various lengths as required and sorted, according to their thickness, size and beauty.

Cutting and Boring of Coral.

THE Coral is principally cut into beads and boutons or pieces cut en-cabochon, into drops for ear-rings, also into leaves. flowers and various other forms, for making the carved ornaments, as seen in Naples and Genoa, into charms which are worn in bunches: sometimes into Cameos and into stick and whip mounts and handles It 'is bored by steel needles; in Italy it is done by hand. But Karl Hoffmann of Leipzig has rendered the operation much cheaper by inventing a machine for boring. The working on Coral is chiefly carried on in Marseilles, Leghern and Genoa. In Leghern about 300 persons are employed in conducting the operations and the Coral thereof is exported to India, Persia, China and Japan. The branches of the Coral are cut in such a manuer as may be convenient and advantageous, according to their shape and freedom from flaws. They are afterwards ground into beads and polished with oil.

Engravings

On account of its softness the Coral is often used for Cameo. At the sale of the Empress Eugènic's

jewels by Messrs. Cristic and Manson (1872), a very fine suit of carved Coral and gold ornaments fetched a very high value. Fine specimens of carved Coral are not at all rare.

Coral as known to the Ancients: Its uses.

According to a Greek tradition, the Coral was supposed to have sprung out of the blood dropping from the head of Medusa, which Persues had deposited on some branches near the sea-shore and which, on becoming hard, was taken by the seanymphs and planted in the sea Pliny termed it "Dendrites" and "Corallum" It was dedicated by the Romans to Jupiter and Apollo.

The Coral is not so much liked in Europe as it was in former times. In the beginning of the present century, however, it was set in gold or silver and was used in ear-rings, bracelets, necklaces and baby-rattles in the nursery of the middle and upper classes of people. In the oriental countries it is held in great favour. The worm eaten Coral and especially that of the dark red variety is in great demand in certain parts of India. One house of Naples is reported to export Rs 80,000 worth of Coral to Calcutta, and India is said to spend 20 lacs of Rupees a year for the purchase of this commodity Coral is very profusely worn by the Eastern nations in strings, on turbans and on the handles of swords and daggers. The Brahmins and Fakeers, use the Coral beads as resaries to count their

prayers. The rich wear the red Coral on their head, throat and legs. Some writers say that there is scarcely to be found an Indian who does not wear Coral in some or other part of his body. The Chinese mix the red Coral with Jade beads and wear them as ornaments for the neck and head. It is also worn in Spain and in the West Indian Islands by the Negroes.

The Price of Coral: Its Imitations.

Conal is found of several colours, all shades of red and pink, green, brown, yellow, white and black. The last three varieties are not of much value. The most beautiful production is called the "flower of blood." The rose-tinted ones, on account of their resembling the fanciful shapes assumed by pink Pearls, obtain the highest price. These sell for £100 to £200 per ounce. A single large bead or drop will fetch £30 to £40. The next in quality is the pale-coloured one, which sells from £10 to £100 per ounce. The price of the other red varieties ranges according to colour, between £3 and £20 per ounce. The red Coral was once considered the most valuable. But present fashion awards the palm to the pink ones.

Th Coral is often imitated by bone, horn, and ivory, stained with cinabar—also by a composition of gypsun, gum and cinabar.

Marvellous and Medicinal Powers attributed to Coral.

In the most ancient times the Coral was held in great esteem. But at the time of Pliny, its influence was evidently not much appreciated, as in one of his works, he remarks that "formerly it was deemed excellent as an antidote to poison." In the Middle Ages, it regained its attributes, both as a medicine and as a charm. It was then considered as a powerful astringent and a talisman against enchantments, witch-craft, venom, epilepsy, assaults of Satan, &c. &c. &c. From an old work quoted by Brand, it appears that, "Witches tell that this stone withstondeth, lyghtenying and putteth it as well as whirl-windes, tempestes, and the stormes, from shippes and houses that it is in " Pierre de Rosnel says, that if worn by a man, it would deepen in colour and look lively; and would become pale and livid, if worn by a woman or by a man who is ill and likely to die. It would stop hemorrhage, if hung round the neck. Beetius do Boot says, that he was himself cured of a dangerous pestilential fever by taking six drops of tincture of Coral. Armand de Villenevee prescribes 10 grains of Coral, to be given to an infant, in its mother's milk, (provided this be the first child and its first food), in order to preserve it from epilepsy or any other fit, throughout life. In the modern times, the power of the red Coral in withstanding witcheraft is believed in some nurseries and

Corals are sometimes suspended round the necks of infants.*



^{*} Some women in India make their children swallow bits of Coral put within plantains, in the hope of radding them of stehes, &c.

ऋथ मरकतम् ।

मूलम् ।

तुरुष्कविषयामोधिनमीपविषमस्त्रते। भवेन्मरकतं रत्नं ग्रुणो दोषोऽस्य कथाते॥ ३५७॥

तचाकठोरगुककण्डभिरीयसुष्प-

खद्योतप्रथनरमाद्दलभैवलानां।

कह्नारपचकमुजङ्गभुजाञ्च पच-

प्रान्तत्वियो सरकताः ग्रुभदा सविना ॥ ३५८ ॥ तस्मित्त्वरकतस्वाने यत्किश्चिदपञायते । तस्त्रेषं विपरोगाणां प्रयमाय प्रचस्त्रते ॥ ३५८ ॥

अरकत अर्थात् पान्तेका वयान I

तर्जमा।

तुर्किदेशके ससुद्रके करिव नीचि ज'ची जभीनमे पाझा पयदा चोता है, पानेका जनर चौर चयेब सुफसल वयान घोता है। ३५७।

पाले के मध्ये वो वर्धम खर्यात् खुरथरा नहिं, धीर जिस्का रङ्ग मतुज मुगेके गले, सिरीपफुल, खर्त्वातकी विठः नद्द घास, चेवार, कीद्र फुलपाला धीर मयूरके प्रकृषि ममान मतुज रङ्ग. यदी मब बळत् थाच्छा घै। १५५०। पालेकी खानसे लो कुच पयदा छीए, यह सम जहरके रोगको नाम कर्ता है । १५८।

EMERALD

TRANSLATION.

357. Emerald is produced in the undulating coast of the Black Sea belonging to Turkey. The good as well as the bad qualities of Emeralds will follow.

358. Those Emeralds that are smooth, and the color of which is like that of the parrot's throat, acaera surisa, the glow-worm's bick, new-born grass, Fallisniria Octandra, leaves of the water-hily or the peacock's tail, are auspicious

359. Genuine Emeralds are infallible remedics

for all cases of poisoning.

মর্কত 1

ष्प्रदोन ।

ভুক্তের সমুন্নসমিহিত বন্ধুব ভূতাশে মবকত রত্ন উৎপদ্দ হয়, মবকতেব ওগ ও দোব ক্রমশঃ কথিত হই-তেছে। ৩৫৭।

মবৰতেৰ মধ্যে বে ওলি কর্জণ নহে, এবং বাহাদেৰ বৰ্ণ শুকপফীৰ কণ্ঠ, শিবীৰপুন্স, থদ্যোতপুষ্ঠ, মূচন তৃণদন, শৈবাল, কফোৰ (ফুঁদি) ফুলেব পত্ৰ ও মনুরপুচ্ছেৰ মনুশ শুদান, সেই ওলি অভিডভ্ডনক। ৩২৮।

প্রসিদ্ধ নবকতাকবে যাহা কিছু উৎপন্ন হয়, তৎসনু-দাদেব দাবা সর্বপ্রকাব বিষরোগ প্রশনিত হইয়া থাকে। ৩১৯। मूलम्। सर्वमन्त्रीपधिगणेथेन्न शक्यं चिकित्सित्।

सहाहि दं पुण्यसर्व विषं तत्तेन शास्यति । ३६० ॥
श्रम्यद्धाकरे तत्र यहोपेण विविद्धाते ।
श्रायते तत्पविचाणासुत्तम परिकीर्त्ति । ३६९ ॥
सक्तं चंस्थानगुणे समराग गीरवेण परिहीर्न ।
स्वितु करसस्यशंस्कृवयति सर्वात्रम दीप्ता ॥ १६२ ॥
सित्रा च हरितभावं यस्यान्तविनिह्नता सर्वेहीप्ति ।
श्रस्रभाग्रभाष्टतनवशाहलसन्निमा साति ॥ ३६३ ॥

यञ्च मनस प्रसाद विद्धाति निरीचितमतिमार्घ। तम्मरकत मधागुणमिति रत्नविदां मनोष्टिसः ॥ ३६४।

तर्जमा।

सांपका जहर खगर मन्त्र चीर दायाचे दूर न हो, वह पानेके जिर्थेसे नाम होता है। ३६०।

पान्नेके खानसे पागर चौर को इ. इस्टे किसिम्की वेन चर्येय मणि पयदा घो, तो उसको उसदा चयया उत्तम ककते हैं। ३६९।

जो पाझा गुणडीन जीर घोजनमे युद्धत् चाल्का, सब जगड रजुमे बरावर सूर्यकी किरणसे सुर्य कर्क सब मकानको रोमन करे। घयवा जो रजुमे धानका, लेकिन उम्के भितरकी धामा जिस् तरह विजनिक चमकनेसे घामके स्पर दिख्नाइ दित है, प्रयमा जिस्क देखनेहीसे मनमे बद्धत् सुनी चासिल हो, रक्षणार्द्धी प्रिट्तांको मतके प्रतुसार वही पाझा नेहायेत् समुदा है ।३६१।३६८।१६८।

TRANSLATION.

360. Such cases of snake-inte in which incantation and medicine are of no avail, are curable by Emeralds.

361. Even any other flawless gem assuming the

form of an Emerald is highly prized.

362 An Emerald which is of one uniform color, although excessively light and devoid of any other good property, which illumines a place when exposed to the sun:

363. Which is not extremely green, yet the splendour of which looks like the lightning's play among fresh grass:

364 The sight of which instills the livehest pleasure into the mind, is the very best of its kind.

অন্তবাদ।

যে দকল দর্গবিষ কোনকপ মন্ত্র বা ^উষধপ্রযোগদাবা নিবাবিত না হয, তৎসমূদায় মরকতদাবা শমতা প্রাপ্ত হয়। ৩৬০।

মরকতেব আকবে যদি অন্য কোনকপ নির্দোষ মণি উৎপন্ন হয়, তাহাও উতম বলিষা কীর্ত্তিত হইযা থাকে।৩৬১।

যে মরকত শুণবিহীন ও ওজনে অতিশয় নযু হইযাও দর্বজ্ঞ সমান বর্ণবিশিষ্ট এবং সূর্যাকিরণসংস্পর্ণে সমুদায় গৃহ দীপ্রিমান্ করে। ৩৬২।

याश निकास हिदबर्ग नाह, ध्यक्त छोशेर घरार्गक विद्यारक्षका-क्षेत्रिकांक नवक्षमातव मृग । ०५० ।

অথবা বাহা দৃত্টমাত্রেই মনেব মধ্যে নিরতিশ্ব আনন্দ উৎপাদন বরে, বহুতত্ত্ববিং পণ্ডিতদিগেব মতে সেই মুব্-কতই অতি উৎস্কট । ৩১৪। मूलम्।

यसु भास्तरसस्याद्वस्तायस्तो महामणः ।
रस्त्रयेदात्वपादेस्य महामरकतं हि तत् ॥ ३६५ ॥
वर्णस्याति वस्त्रतात् यस्यान्तः स्वस्त्रकरणपरीधानं ।
सान्द्रस्त्रियविशुह कोमलवर्ष्णमादिसम्बान्ति ॥ ३६६ ॥
चलगोक्कृतया कान्त्रा सान्द्रकरो विभासया माति ।
तद्यि न ग्रण्यत् संज्ञामाप्रीति हि ताहर्योपूर्वे ॥ ३६० ॥
चतुर्यो जातिभेदेस्तु महामरकते सणौ ।
ह्यायाभेदेन विद्या चतुर्वेणस्य लच्योः ॥ ३६८ ॥

तर्जमा।

जो पादा द्वातर रख्नेसे सूर्य के किरणके लाग्नेसे च्याने किरणको नेकाले, और चारा तरफको खुम्नमा करे. उस्पादेको महामरकत कहते है। ३६५।

रज़ में ने चायेत् गांचेरा, श्रीर जिस्का वीचका धिस्मा माफ, घन, श्र्यात् गांचेरा रज्ज सिन्ध, श्रीर मयूरके पेषिके समान कोमल किरणविशिष्ट, वधी पान्ने मध्ये उत्तम पाद्धा समार किया गया श्री । ३६६।

को पाना माफ रोमनविजिष्ट, लेकिन वकी रोमनि चगर चञ्चल हो,तो उसको होनेने उसका गुण पहिले वयान कियेज्जवे पानेक समान नहि हैं। ५६७।

जिस् तरक्षे ब्राह्मण, घानुब, बैख चीर शूद्र घार जात कीते के, उसी प्रकार इस्के मकामरकत माजिमेसी चार जात के, कावा भेद चीर तरक तरकके अञ्चलके द्वारा चार जातका भेद मानुस कोता के। इस्ट।

SE.

TRANSLATION.

365. The Emerald which when placed on the palm, and exposed to the sun, scatters light all round, is termed a Maha Marakata.*

366. An Emerald, which owing to its deep green has a densely transparent centre, the home of cool and gentle rays of the color of the peacock's tail, is a sterling gem.

367. If an Emerald is lustrous, but if its lustre is unsteady, it can never equal the above-mentioned one in value.

368. Mahámarakatas are divided into four castes like the Hindus, each caste being recognized by certain peculiarities of shade and by other marks.

অনুবাদ।

যে মরকত করতলে স্থাপিত হইমাও সূর্য্যকিরণসংসর্গে নিজকিরণ বিকীর্ণ করিরা চতুর্দ্দিক রঞ্জিত করে, তাহাকে মহামরকত কহা যায়। ৩৬৫।

বর্ণের বাছল্যপ্রযুক্ত বাহার মধ্যভাগ বচ্ছ, কিরণ-বিশিষ্ট, ঘন, স্লিপ্ত ও মনুরপুছসমূশ কোমল কিরণ-পরিপূর্ণ, তাহা বিশুদ্ধ মরকতমধ্যে পরিগণিত। ৩৬৬।

যে মরকত উম্বন-দীপ্তিরিশিক, কিন্তু সেই দীপ্তি যদি চঞ্চল হয়, তাহা হইলে তাহার তথ পূর্ক্ষোক্ত মরকতের ফায় হইতে পারেনা। ৩১৭।

নহানরহত মণির আম্মণাদি চারিপ্রহার ফাভিভেদ লফিত হয়, ছায়াভেদ ও অভাত লফণদারা দেই চারি ভাতি পরিভাত হওয়া যায়। ৩৬৮।

[·] Laterally, the Great Emerald.

दोषाः सप्त भवन्तास्य गुणाः पञ्चविधाः सृताः। भवन्तारुविधा च्छाया मणेमरकतस्य हि ॥ ३६१८॥

भवन्तप्रष्टावधा च्छाया मणमरकातस्य हि । ३६६ अय मरकतदोगाः।

श्रक्षित्रं क्वमित्युकं व्याधिक्षित् भृते भवेत्। विष्फोटः स्थादं गपीते भृते गस्त्रको भवेत् ॥ ३७० ॥ धपापाणे भवेदिष्टनामो भरकते भृते।

विच्छायं मलिनं पायो व्याधिसीन प्रजायते । ३७१ ।

तर्जमा ।

मरकत मणि खर्वात् पाझेने सात प्रकारका खर्वनः और पाच प्रकारका ग्रुव खीर खाट प्रकारकी क्षाया कहते हैं। ३६८।

पान्नेका चयेव।

जो खामाविक छिन्छ निह, उस्को रूच कहते हैं, एँग पाझा पहेरनेसे विमारी होति है, और जो पाझा किसी जगहें इल्हिंका रहू रख्ता है, उस्को विष्कोट कहते हैं, विष्कोट पाझा पहेरनेसे श्रद्धातसे मौत होति

ष्टी १९००। पायरके टुक्रेके सहितवाला पाझा पहेरनेसे मनका

श्रमिलाम नष्ट श्रीता है, श्रीर लिएकी श्राकार मलिन श्रोण उस्पालेको विच्हाय करते हैं, ऐसा पाला होनेसे तर्ष नरहकी विमारी पददा हो। ३७१।

Ser Ser

TRANSLATION.

369 Seven defects are mentioned as belonging to Emeralds, as also five good qualities and eight shades.

Defects of the Emerald

370. An Emerald which is not cool, is called a Rukshma; it leads to disease That which has a yellow spot, is called a Bishfota. Death from wounds inflicted by a weapon may be apprehended from wearing it.

371. An Emerald to which a stone fragment is inseparably attached, has a baleful influence. That which is dirty, is called a Bic chaya. Such an Emerald may bring on a variety of diseases

অফুবাদ 1

মবকত মণিব সপ্তবিধ দোষ, পঞ্চপ্ৰকাব গুণ ও অফী বিধ ছামা নিৰ্দ্ধিক আছে। ৩৬৯।

মরকতের দৌষ।

যে মবকত স্থভাবতঃ অন্নিষ্ক, তাহাকে কক বহে,
তাদুশ মবকতধাবণে বাাধি হইমা থাকে, যাহাব একদেশ
পীতবর্ণ, তাহাব নাম বিজ্ঞোট, বিজ্ঞোট মবকত ধাবণ
কবিলে শব্রাঘাতে মৃত্যু ঘটিবাব সম্ভাবনা। ৩৭০।

পাবাণবণ্ডযুক্ত মৰক্তবাবণে ইউনাশ হয, এবং যাহাব আকাৰ মলিন, তাহাকে বিছায কহে, তাদৃশ মরক্ত হুইতে মানাব্যাধি উৎপন্ন হুইতে পাৰে। ৩৭১। मुखम।

कर्तरं गर्करायुक्त मुचग्रोकमयप्रद । जठर कान्तिचीनं स्वादंष्टिस्थो भवमादिशेत् । ३७२ ॥

जाउर कान्तिकान स्थादाधुम्या भवमादिशत्। २७२। कुल्मापवर्णभवने भृते चत्यभयसावेत्।

इति दोषाः समाखाता वर्ष्यन्ते साम्प्रतं ग्रुणाः 🛙 ३७३ 🛭

च्यय मरकतगुणाः ।

निर्मालं नियत खच्छं गुरु स्वादग्रस्तायत । स्वित्यं रूचविनिर्मातनरजस्त्रमरेणुनं ॥ ५७४ ॥ सुरङ रजनजनिति पञ्च ग्रणाः स्रोताः ।

एतिर्वेक्त मरकर्त सर्वेषायभवायस् ॥ ३७५ ॥

सरजमा।

चिनि पर्यात् सफेद प्रक्षरके चूरके समान चूरसक पानेको कर्षर कप्तते हैं, कर्षर पाना चाचौलातको नाग करता है, चौर कान्तिणीन चर्चात् वेनुर पानेको जठर वोल्ते थे, जठर पाना परेरनेसे दांतकादनेवाले लानवरींका

भय पयदा हो। ३७५।

उर्दीके दालके समान वर्णविज्ञिष्ट श्वद्यान् रज्ञवाला पाद्रा पडेरनेचे भीतका भव घोण, यधी सानप्रकारका अर्थेव वयान किया गया, मस्पृति नुषका वयान करते हैं। ३७३।

पाचेका ग्रण !

निर्मानल, गुरुल, मिग्नल, घरअस्तल धीर सुरङ्गल यही पांच ग्रुण पासेके प्रधान ग्रुण है, यही सब ग्रुणयुक पांग सब पांपको नाम करता है। २०४। ১७५।

TRANSLATION.

372. An Emerald containing gritty fragments is termed a Karlara It causes the death of its owner's son; an ugly Emerald is called a Jathara. A Jathara Emerald renders one liable to bites

373 The Emerald, the color of which is like that of Máshalalái,* is fatal to its wearer. These are the seven kinds of defects pertaining to Emeralds. I shall now mention the good qualities.

Good Properties of the Emerald.

374—375. Purity, weight, coolness, freedom from dust, and beauty, are the five principal qualities of Emeralds. Such Emeralds cleanse men from all sin.

অনুবাদ ৷

শর্ক বায়ুক্ত মবকত কর্জ ব নামে অভিহিত, কর্জ ব মব কত পুত্রনাশক; কান্তিহীন মবকতকে জঠব বলা যায, জঠব মরকত দংষ্টিতযোহপাদক। ৩৭২।

মাৰকলাইবেৰ স্থায় বৰ্ণবিশিষ্ট মৰকত ধাৰণকাৰীৰ মৃত্যু আসন। এই সপ্তবিধ দোষেৰ বিষয় বলা হ'ইল, এফণে ওপের বিষয় বলা ধাইতেছে। ৩৭৩।

মরকতের গুণ ৷

নির্মানন্ত, গুরুত্ব, স্লিক্ষত্ব, অরজদ্বত ও ফুলবত্ব এই পাঁচটা নবকতেব প্রধান গুণ, এই সকল ওণমুক্ত নবকত সর্ববাপাক্ষয়কর। ৩৭৪। ৩৭৫।

Vide ansê

म् चम्।

धनधान्यादिकरणे तथा सैन्यक्रियाविधी। विषरोगोपशमने कर्माखाधर्वणेप च। शस्यते सुनिभिवसादयं मरकतो मणिः ॥ ३०६ ॥

श्रय मरकतच्छाया।

वर्हिपिच्छ समाभासस्यासपत्तनमाः पराः। हरित्काचनिभायान्ये तथा शैवालमन्त्रिभाः । ३७७ । खद्योतप्रसम्बागा वालकीरममत्विपः। नवशादलमच्छायाः शिरीपकुसुमोपमाः । ३७८ । एवमछी मनाखाताम्बाया मरकताश्रयाः। कायाभियुक्तमेताभिः श्रेष्ठ मरकतं भवेत् । ३७८ ।

सर्जमा ।

रक्षपारची पण्डित कचते चै, के धनधान्यादि न्यादा करनेकेवाची छठाइको यक, जहरके रोगक्ष्वाची चीर ष्पयर्विदेखे विधिके कर्मा करणे समे उसी सब काममे पान्नेकी मणि वछत् चाव्छि है। ३७६।

मयुरकी पुंच, नीलकाइ पद्यीका पत्त, सबुज काच, शेवाल, भग्युगनीकी पिठ, शुगेके बाचे, नद्र धाम और भिरीपमुन, यही चाटप्रकारकी काया पाद्मेने देख्नाइ

देति के, और यक्षी चाट विशिषका कायाविज्ञित पान वञ्चत् चाच्हा है। ३७०। ३०८। ३७८।

TRANSLATION.

376. According to the authorities, the Emerald causes increase of wealth, brings about success in war, cures cases of poisoning, and renders successful the rites performed according to the Atharva-Veda.

Shades of the Emerald.

377-379. The shade of an Emerald is seen to resemble the hue of one or other of the following eight objects --

The peacock's tail, the wing of the NilaLantha,* yellow glass, moss, the glowworm's back, the young of a parrot, fresh grass, or the Sirisa† flower Emeralds which possess these shades, are superior.

অনুবাদ।

রত্বত্তত্ত্ববিশাবদ পণ্ডিতেবা বহেন, ধনধাত্তাদিরক্তি করণে, যুদ্ধে, বিষরোগনাশনে এবং অথর্কবেদোক্ত কর্মে মবকত মণি অতিপ্রশস্ত । ৩৭৬ !

মরকতের ছায়া ৷

ময়্বপুচ্ছ, নীলক্ঠপদিপক, হরিবর্ণ কাচ, শৈবাল, খদ্যোতপুর্ত, শুক্দিশু, নৃত্ন তৃণদল ও শিবীবর্ত্মন, এই অফীবিধ পদার্থেব ভাষ ছাষা মবকতে লক্ষিত হয় এবং এই অফীপ্রকাব ছাষাবিশিউমবকতই সর্বপ্রেষ্ঠ IO৭৭া০৭৮া০৭৯I

^{*} A blue-necked jay + Lids ant?

T Flasania

मूबम्।

यैवालबह्गरीच्छायं सुरद्धं चासवर्जितं।

थन्षे तन्मरकतं प्राङ्णः सर्वेविषापण्डं ॥ ३८० ॥

थत् सन्धिन्धे पितं रत्नसन्म न्मरकताद्भवेत्।

श्रेयस्कामैने नहार्थे केतत्मध्य कथद्य न ॥ ३८९ ॥

खिमत्वं पष्ठजतं दखते श्रिरिमः कचित्।

धर्षयेत् मस्तरे व्यद्धः काचस्तक्षाद्विषद्यते ॥ ३८२ ॥

सेख्येद्वीष्ठभुद्वेणः चूर्वेनाय विवेषयेत्।

पष्ठजः कान्तिमाधाति क्षविभो मिलनायते ॥ १८८ ॥

तर्जमा ।

जो पाचा भेवारके समान कावायुक, बज्जत् गुल्टर-रद्ग और चासके भवेबसे बर्जित, प्रविद्धत लोग उसकी वेकिमत भाषात् धान्मोल और तामाम जहराका नाम करनेवाला कन्नते हैं। ३८०।

पानेके सेवाय दोस्रा रक्ष टुट जानेने चम्ने मालार चाडेनेवाले उन्को कभी पडरेक्ट्रेनडि चौर खरिटेक्ट्रे निष्ठ । ३८९।

जो पाता भुंठा मालुम होता, उस्को किसी सार्चे पात्रेसे घिस्ना चाहिये,तवभुंठा पात्रा टुट आवेगा। इटर।

लीषस्त्र (एक किमिन्के लोहेको कलमके उदिया लिक्के तालपनपर लिक्ते हैं) से छत् देकर चूना लागा-नेके भुंठा पाद्मा मलिन हो आनेगा चौर चानल पाद्मा बळत्याक होगा। इटहे।

TRANSLATION.

380 An Emerald which is furnished with a shade like moss, which is of a fine color and which is free from flaws, is a priceless gem, and is considered an antidote to poisons of all kinds.

381. Any gem excepting an Emerald found to be broken should not be worn ;—nay, should not be

bought by one who has a care for his good

382. Any Emerald which raises doubts as to its genuineness, should be rubbed against a real one, when the former, if false, will be broken.

383. Or scratch an Emerald with Lauhavringa,* and then smear it with lime. By this process a false Emerald will grow exceedingly dim, while a real one will attain additional brilliancy.

অহবাদ।

যে মবকত শৈবালেব ভাষ ছাষাবিশিক্ট, অতিস্কৃদ্দব বৰ্ণযুক্ত এবং জ্রাসবর্জিত, পণ্ডিতেরা তাহাকে অমূল্য ও সর্ব্ববিদ্যাশক বলিয়া থাকেন। ১৮০।

মবকত ভিন্ন অন্য বত্ন ভগ্ন হ'ইলে শ্রেযোহর্থী ব্যক্তি বখনই তাহা ধাবণ, এমন কি ক্রয়ও কবিবেন না। ৩৮১।

যে মবকতকে কুত্রিম বলিয়া সন্দেহ হইবে, তাহাকে কোন অকুত্রিম মবকতেব সহিত ঘর্বণ কবিলেই কৃত্রিমথানি ভগ্ন হইয়া যাইবে। ৩৮২।

লোহভূদ (একপ্রকাব লোহলেখনী, উড়িবাবা বাহা-ঘাবা তালপত্রে লিথিবা থাকে) তদ্ধাবা অঙ্কিত করিয়া চূণ লেপন কবিলে কুল্রিম মবকত অত্যন্ত মলিন হইযা বাইবে এবং অক্যুক্তিম মবকত অধিকতর উত্তল হইবে। ৩৮৩।

The iron pen with which an Uriya writes on his palm leaf

म्सम्।

महातक' प्रिका च तदमैसात्यायिन'।
मण्मेरकतस्रोते चल्लणीया विजातय'। १८८४॥
चौभेण वाममा घृष्टा दीप्तिं त्यजित प्रिका।
लाधवेनैव काषस्य शक्या कर्त्ते विभावता। १८५॥
तुल्या पद्मरागस्य यमस्त्रांत्रपञ्चायते।
लमतेऽस्वधिकं तसान्याणमरकतं सुमा। १८६॥
तथा च पद्मरागाणा दोपैर्मुट्लं विकीयते।
ततोऽसिद्मविका चानिदाविक्रेरकते भवेत्॥ १८८॥।

तर्जमा ।

जिस्पानेका रज्न भेला या पुंद्र शासके ममान है, वह विजातिमे सुमार किया गया है। ३८८।

रेशमी काप्डेसे घिस्तेसे पीतके रैंसा रङ्गार मुठा पाता अप्तिके समझ कोद देगा, श्रीर सबुजका पका सनायाज्ञ्या पाता शासका श्रीतेसे अनायास मानुम श्री आसेगा। १८५।

एक चार्ट्स माणिक, एक चार्ट्स पाञ्चा चार घोजनसे समान को, तो पद्मरागचे पाञ्चेका दाम च्यादा घोगा ।३८६। जिस् चयेवचे पद्मराग घर्णात् माणिकका दाम कम कोता की, पाञ्चेका उस् चयेव कोनेचे वज्जत् दाम कम कोता । ३८७।

इति सरकतका वयाम ।

TREATISE OF GENS

TRANSLATION

384 An Emerald which resembles in color the Bhelá* fruit or Putilá is not classed with first-rate Emeralds

385. A putilá colored† false Emerald on being rubbed with a piece of linen, will lose its brightness, and a false Emerald composed of yellow glass can easily be detected by its lightness

386 If a Ruby and an Emerald weigh equally, the Emerald is the more precious

387. That defect, the existence of which lessens the price of a Ruby, reduces that of an Emerald still more

অগুৰাদ।

যে সকল মবকতেব বর্ণ ভেলা বা পৃতিকা শাকেব সদৃশ, তাহাবা বিজাতিমধ্যে পবিণণিত। ৩৮৪।

শ্লেমবন্ত্ৰে ঘৰ্ষণ কবিলে পৃতিকাৰ ভাষ বৰ্গবিশিষ্ট কৃত্ৰিম মৰকত স্বীঘূলীপ্তি পৰিত্যাণ কবিবে, এবং হবিৰ্ঘণ কাচৰাবা কৃত্ৰিন মৰকত প্ৰস্তুত কবিলে লঘুভাৰতাম্বারা তাহা অনাযাসে উপশ্বদ্ধ হইবে 1 ৩৮৫ ।

একথণ্ড পদ্মবাগ ও একথণ্ড মবকত যদি ওজনে সমান ভাৰী হয়, তাহা হইলে পদ্মবাণ অপেক্ষা মবকতেব মূন্য অধিক হইবে। ১৮৬।

যে দোষে পদ্মবাণেব মূল্য অন্ন হইবা থাকে, মবকতে সে দোষ থাকিলে তাহাব মূল্য অভ্যন্ত অন্ন হইবে। ৩৮৭।

ইতি মর্বত।

T T

^{*} A certain fruit with which Hindu washermen mark the clothes.

† A species of cultoary plant

THE EMERALD.

Its properties

HE beautiful green color which the Emerald possesses has not been surpassed by any other gem. This color is in pleasing contrast with the lime stone matrix in which the gem is found Formerly it was supposed that the coloring matter of the Emerald was the oxide of chrome, but the quantity of chromic acid, obtained by Mr Lewy, on analysis, was so small as to be mappreciable He gives it as his opinion that the beautiful tint of the Emerald is produced by some or ganic substance, which, he imagines, is a carburet of hydrogen, similar to that termed chlorophylle, which constitutes the coloring matter in the leaves of plants The Emeralds of the darkest tint con tain the largest amount of organic matter, and it is remarkable as a test that at a low heat the Emerald loses the color and becomes white and opaque, whilst the minerals of which the coloring matter is chrome (as the chrome Garnet, "Uwarowite") remain unaffected by intense heat It is possible that the organic coloring matter of the Emerald may be derived from the decomposition of the animals whose remains are now fos silized in the rock which forms the matrix of the gem This rock, as stated before, is a lime stone slightly bituminous, often black with white veins, and con-

taining ammonites and other shells. Mr. Lewy has also arrived at the conclusion that the Emerald has been formed in the wet ways, that is to sav. it has been deposited from a chemical solution. This stone has the same chemical properties as the Beryl or Aquamarine-except in color, which, in the case of the latter, is light blue or sea-green. It belongs to the hexagonal system of crystallization and is found in hexagonal prisms truncated at both ends. Its hardness is between 7:5 and 8. It is scratched by Spinel and can scratch Quartz with difficulty, (though specimens vary in this respect.) It is the lightest of all hyalines, its specific gravity being from 2 67 to 2.75, and its bulk is very large, compared to its weight-it being nearly double the size of a Sapphire of equal weight It is transparent and its lustre is vitrous It does not loose its beauty by artificial light. It is so brittle and is so soft just when it is taken out of the mine, that it crumbles by friction, but hardens by being exposed to the air. On account of this softness, it loses somewhat of the intensity of its color by long use. It possesses double refraction, though in a very small degree and acquires positive electricity by friction. It generally remains unchanged before the blow-pipe, and if it changes at all, it becomes a shade cloudy. With borax it fuses into a pale green substance much like glass. Acids cannot affect it, but it can be slowly dissolved with microsmic salt, (salt of phosphorus). It is composed of silica 68.5; alumina, 15.75; glucina, 12.50; peroxide of iron, 1; lime, 25; oxide of chrome, 3, the rest being made up of traces of magnesia, lime and soda. Its cleavage is imperfectly basal.

Where found.

The Emerald is now to be found in all the four quarters of the globe.

quarters of the globe.

Europe.—Emeralds of the finest quality have been found in the Ural and Altai mountains The first Emerald, found in this place (in 1830), was discovered accidentally by a charcoal-burner, at the root of a tree in the district of Perni, (east side of the Ural). A regular working of the bed, which followed at once, resulted in the discovery of several good Emeralds, (one of which weighed 1014 carats). The supply has now diminished Several dark-green and six-sided stones are supplied by Salzburg in Austria. These are not so very transparent as they should be.

Asia.—Several beds of Emeralds are found on

Asia.—Several beds of Emeralds are found on the Chinese borders of Siberia and in parts of Burmalı, in sands, or heds of small rivers, mixed with pure gold and Spinel. It is a matter of question whether India has ever produced Emeralds Some that are sent to Europe hear marks of unfaished cutting, (evidently performed by the Indian lapidaries,) and have to be recent there, in order, that they might have their proper beauty.

These are so very unlike in nature to those that belong to South America, that all conjecturers have been at a loss to account for their real locality. A large Emerald, of a medium-sized hen's egg, presented to the Queen Victoria, by the King of Oudh, is said to have been found in Burmah.

Africa.—Those found in Egypt are the most esteemed. Pliny mentions the rocks about Coptos, as containing the celebrated mines of old. According to Mahomed Ben Mansur (13th century), the Emerald mines were situated on the borders of the land of the Negroes, which are still in the possession of the Khedive* De Laet points out the same locality in the 17th century. The mines most known at present are in the mountain of the Sahara, and the beds of the river Harrach (in Alguers), where it joins the river Qued Bouman. Some large specimens have been found in the Dolomite mountains

America.—This is the place from which the best Emeralds come. The conquest of Peru by the Spaniards has opened a rich field to merchant-jewellers. The conquerors got possession of several large-sized stones, one of which was as big as a pigeon's egg. A large number of Emeralds was taken from the temple of the Sun. When one of the Peruvian chiefs fell into the hands of the Spaniards, he had on his person a collar of Emeralds of large size and of

This word is evidently a form of the Sanskrit word Khitipa, which
means literally, Ruler of the land.

great lustre. They also took possession of the large collection of Emeralds which had remained for centuries in charge of the priests of "Esmeralda"* -a large Emerald of the size of an ostrich's egg, which was supposed by the natives of Manta Valley to have been the abode of the goddess of the same and which was worshipped by them on occasions of high festivals, by the offering of as many of her own daughters (small Emeralds), as they could afford to bring. A Dominican friar, who accompanied the Spaniards, declared that the test of the true Emerald was its infrangibility. The ignorant soldiers, who knew nothing of the brittle character of the stones, began to put them to the test as dictated by the priest, by placing them under the hammer-the result being, as may be imagined, the indiscriminate destruction of a vast number of good and large Emeralds. It is said that the advice of the friar proceeded from interested motives, his object in diminishing the number of Emeralds obtained, being to sell those that he had collected for himself, to the best advantage. Most of the Emeralds now come from Santa Fé and the Tunka Valley, between the mountains of New Granada and Popagan. The Peruvians believed that the Eme-

^{*} Stavenson, in his "Residence in South America, Vol. II," speaks of the neighbourhood of Las Esmeraldas, as follows; "I never ratiked it, owings to the superstitions dread of the natires who assured me that it was enchanted and guarded by an exchanted dragon, which poured forth thunder and lightning on those who dared to ascend the river!"

ralds ripened in the matrix just as the fruit does upon the tree; that it was first colorless, and became gradually green, that corner first, which faced the sun. In corroboration of this belief, Pierre De Rosnel, in his book published in 1664, speaks of a Peruvian, who had seen, in Cuzco, an Emerald, a corner of which was green, and the remainder purely white. Philip II was desirous of obtaining this marvel, but unfortunately the owner of it had shortly before caused the white corners to be rounded off, thinking that this peculiarity detracted from its merit.

The Emerald as known to the ancients

THAT the Emerald was known to, and much used by, the ancients, admits of no question whatever. It is called in Arabia, Zamarut; in Chaldean, Ismaragdon; in Greek, Smaragdos; in Latin, Smaragdus; in Spanish, Esmeralda; in French, Emerande; in Italian, Smeraldo. It will appear that the name has undergone but little change in its course through the various countries and that it is evidently derived from the Sanskrit term, "Marakata." Ornaments made of this stone have been excavated from Pompeii and Herculaneum. Similar ornaments have been found in the ruins of ancient Rome and on the Egyptian mummies. Theophrastus says that "the Smaragdus possesses also some peculiar properties, for, it assimilates the color of the water into which it is thrown to its own color." "It is also good for the eyes: on which account, people wear ring stones made of it, for the sake of looking at them." Pliny writes about it at great length. In one place he says :- "It is said that the tomb of Hermins, a prince of that island, which stood on the coast near the Tunnyfishery, was surmounted by a marble lion, the eves of which were made of these Emeralds, (a proof of their large size and little value), and shot forth such lustre upon the sea as to scare away the fish; nor could the cause for a long time be discovered, until the gems in the eves were changed." The Emerald was for a long time called the Neromanus, on account of its being a great favorite of the Emperor Nero, who used to see the feats of the gladiators, through an eye-glass of Emerald.* Seneca speaks of Democritus of Thrace as having been possessed with the power of imitating the Emerald and of throwing the fire and color of this stone into a common pebble. Isidorus (Bishop of Seville, 630 A. C.) speaks of the Emerald thus :-"It surpasses in greenness all green stones and even the leaves of plants, and that it imparts to the air around it a green shimmer, that its color is most soothing to the eyes of those engaged in cutting and polishing the stone." Psellos, in the

Maniminan II. was credited with the possession of a ring set with an Einerald, by the reflection on which he discovered one of his courtiers belying himself to the contents of a gold cup, (falled with discasses a present to the Emperce), white all were occupied in locking at a grand show, out of the windows of the reception room.

11th century, speaks of it; -"It is leek-green, playing easily into gold and blue, and that it has power, when mixed with water, to heal leprosy and other diseases." An Emerald mine, unquestionably known to the ancients, was discovered in the mountains of Zebarah, (near the Arabian sca,) by Monsieur Caillaud, a French traveller who had undertaken a scientific expedition, at the request of the Pacha of Egypt. He saw ropes, baskets, lamps, levers, tools and utensils of various kinds, lying about all over the place The Persians used the Emerald, in preference to all other gems, for adorning their jewelled goblets Ben Mansur says, "several bits of Emerald united together upon one surface, by means of mina (green glass) are called Astar." This was evidently borrowed of the Romans. The tradition of the Sacro Catino may have given the idea to the ancient nations. The Sacro Catino was the celebrated Emerald dish, which the Queen of Sheba had, along with other gems, offered to Solomon, (who deposited it in the Temple,) and out of which Jesus Christ was said to have eaten the Last Supper. It was taken out of Palestine by the Genoese Crusaders in the 12th century, and was pledged by them for 9,500 livres. It was afterwards redeemed and placed in the church of San Lorenzo, guarded by Knights of Honor and exhibited once a year with great ceremony. It was then seized by the French and carried to Paris, where, after careful examination, it was pronounced to be a piece of green glass. At the Congress of Vienna (1815), Victor Emmanuel, the King of Italy, insisted upon having the accred dish, only for the purpose of restoring it to the church of San Lorenzo. The Italians say, that the substitution of the green glass for the real dish was made by the guardians of the sacred relic before it was taken to Paris.

In the \(\text{Inddle Ages} \) the Emerald was used to ornament \(\cdot \text{hurch treasures} \) In the thara of the Popes there was an Emerald, one inch long and \(\text{14} \) inch thick \(\text{There was also a brilliant Emerald in the Crown of Churlemagne} \)

Ben Mansur divides the Emerald into 7 classes according to color —I The grass green, (like the beautiful color of the little worms that are often seen in the grass) II The Basil green III The Leaf green IV The Verdigris green V The Euphorbium green VI The Myttle green VII The Sop green (which is the worst quality—pale, opaque, and resembling frozen oil)

The Emerald has been in use amongst the Hinaus from time immemorial. They use it profusely in ornaments and fancy articles. It is used as a pendant for the ear and brucelet for the arm Ranjeet Sing used a brucelet made of one of the finest Emeralds known. Emeralds are often drilled through and strung together to form beads or nose rings. They are used in snuff boxes or as paper slice, hooka pipe, &c.

Engravings on Emerald.

PLINY says, that on account of its beauty and costliness, "by the common consent of mankind, the stone was spared, being not allowed to be The fact is, that engraved real engraved." Emeralds are seldom met with. A very few can be mentioned One bore the intaglio head of the Emperor Hadrian, another, that of his consort Sabina, a third, the heads of both facing each other. An intaglio head of the Solar Luon, in full relief, with open jaws, furious and life-like, was engraved upon an Emerald of a very fine color and lustre and of very great value. The Devonshire parure also shows a very large and beautiful Emerald cut into a Gorgon's head in high relief. The Persians were in the habit of engraving upon Emeralds the figures of eagles or beetles, believing in their power of procuring royal favors and of averting tempests. One of these charms had engraved upon it a head of Jupiter within a coiled serpent resting upon a crocodile, surrounded by the symbols of the The celebrated five Emeralds, which Planets. Ternando Cortez brought from the "Golden Castile" (America,) and gave as a wedding present to his bride in 1529, were wonderful specimens of Mexican ingenuity. "The first was in the form of a rose; the second is in that of horn; the third, like a fish with eyes of gold; the fourth was like a little bell with a fine Pearl for the tongue; on the rim of which was the inscription in Spanish, 'Blessed is He Who created thee.' The fifth, which was the most valuable, was a small cup with a foot of gold, and with four little chains of the same metal attached to a large Pearl as a button" Several texts from the Koran have been found on the Emerald. The Hindus have sometimes these stones carved into figures of idols. In his "Narrative of a voyage round the world in 1835-6-7," W. S. W. Buschenberger, M. D., mentions the following :- "In the temple of Boudha, in Siam, there is the figure of the god two feet high, said to be cut of a single Emerald. This idol had two brilliants, flashing light through the temple, in place of eyes, which cost in Brazil twenty thousand Dollars. The value of the whole god s inestimable. I doubted its genuineness, but Prince Momfani assured me it was an Emerald, and not a Beryl as I suggested."

The Cutting of Emerald.

THE Emerald is cut on a copper wheel with emery and polished on a tin one with rotten stone. It is generally trap-cut. The object of cutting it as a brilliant, with rounded tables, is to disguise flaws which would otherwise come to view. The Emerald can be cloven at right angles to its axis. Advantage is taken of this by the Indians, in whose ornaments flat stones of large size are often seen,—simply on this account.

The Price of the Emerald its Flaws and Defects Instations

In value, the Emerald ranks next to the Ruby Latterly it has risen enormously in value and has become a great favorite, owing to its uniform pleasing effects, both by night and day. The price depends to a great extent upon its color, for example,

A light color, almost white, is worth 5/a crut
Lightest green

A fair body of color .100/
Good color, with flaws, from £10 to £15

Pure color and clear £20 to £30
Very fine dark color, velve-

ty, and without flaws, as £50 to £60 ,, high as

A perfect Emerald should be of a rich, soft, lively, pure, meadow green and without any flaws But an Emerald without flaws is a rarry. Perhaps there is no other gem which suffers more from in equality of formation, color, transparency and from clouds and specks than the Emerald. The defict is inherent in the stone to such an extent that "an Emerald without flaws" has become a proverbal expression to mean unattainable perfection. Even the smallest Peruvian stone will show one or more specks when cut. In fact, the total absence of any flaws in it should put the would be purchaser on guard, as there is no other precious stone which can be more perfectly imitated in glass or counter-

feited, my, surpassed by paste There were several pamphlets in Plinys time, which gave directions for making counterfeit Emeralds The Rock Crys tal had to be heated and plunged into Verdigris, dissolved in Turpentine The Crystal became full of minute cracks, into which the coloring fluid en tered and tinged the whole substance care was taken in so forming the surface as not to shew these cracks prominently upon it large flat Emerald, if so held as to reflect the light, will look as if it is silvered at the back, its green will disappear when its plane is brought to certain angle with the incident ray and in the same position it will exactly appear as a bit of looking glass This singular change is not to be observed in any other colored stone Ben Mansur says, that an Eme rald can be distinguished from the Jasper, the Green Laal (Spinel) and the Mina (green glass,) by its polish In fact, the lustre of the Emerald even in the palest specimens is such as to make it impossible to be mistaken for any other stone of similar color The ancient glass Emeralds were far superior to the modern pastes, in color, lustre and hardness A specimen of the former, found at Rome, had been recut and set in a gold ring Some jewellers, whenever they come across a fine green paste, get it cut and facetted for a ring stone and sell it for an Emerald to the mexperienced The Cingalese are known to collect the thick bottoms of wine bottles, out of which they cut very good



415

Emeralds, which they sell to the sailors. The Brighton Emeralds are made of similar stuff. The lapidaries of the place purposely throw away the broken bottles into the sea, where, through the attrition of the shingle, they become transformed into natural pebbles and thus bring to the clever artists a good profit.

Pebbles of Quartz are often mistaken for Beryls and vice-versa. If Emerald or Beryl, the fracture will be in planes; if Quartz, it will never be in a straight line but conchoidal.

Marvellous and Medicinal Properties

This stone was dedicated to Mercury and was supposed to bestow wealth, eloquence and a knowledge of futurity. Used, as an amulet, about the neck, or set in a ring, it preserved women in child-birth and put evil spirits and vain terrors to flight. It was an infallible test of chastity and betrayed or punished its violation by flying into pieces. The following lines by Miss Landon was evidently suggested by this particular virtue of the stone:—

"It is a gem which hath the power to show,
If plighted lovers keep their faith or no
If faithful, it is like the leaves of spring,
If faithless, like those leaves when withering

"Take back again your Emerald gem, There is no color in the stone, It might have graced a diadem, But now its hue and light are gone" According to an ancient author, "he who dreams of green gems will become renowned and meet with truth and fidelity." Even in the modern times, the fall of an Emerald from its setting has been considered an ill-omen. When George III. was crowned, a large Emerald fell from his diadem The superstitions attribute to this—the loss of America during his reign.

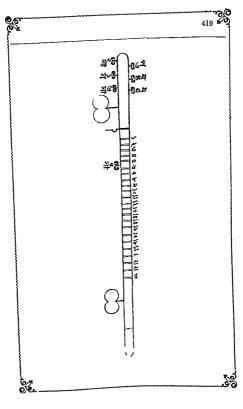
Being like all precious stones, " of a cold, dry nature," the Emerald had very potent medicinal virtues. Applied to the lips, it stopped hemorrhage. When hung round a child's neck, it prevented epileptic fits. It was a restorer of sight and memory. Where it failed to cure any disease or prevent any evils, it shivered into atoms, "being," says Boetius de Boot, "as it were, bound to expel the evil or confess itself vanquished in the combat it sustains." He also gives directions for extracting out of Emeralds the coloring matter, which, taken internally, was considered a powerful remedy for many diseases Amongst the medicinal virtues of the Emerald, he mentions its power of curing dysentry, epilepsy, venomous bites, and pestilential fevers, and gives the following prescription for them :-"Pound the Emerald in an iron mortar, sift the powder through muslin, then cover it with spiritus uring (Sal volatile); the spirit must be distilled off, leaving the powder of a grey color, but which will communicate that of the Emerald to spirits of wine "

Celebrated Emeralds.

THERE are few Emeralds which are known to possess any historic interest. A finger-ring, (diameter, $1\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{8}$ inch), cut out of a solid piece of Emerald of the purest quality, with two Emerald drops and two collets set with Rose Diamonds and Ruby borders, ---- once belonging to the Emperor Jehangir of Delhi, whose name is engraved on itwas presented by Shah Suja to the East India Company, and was afterwards purchased by the late Lord Auckland, Governor General of India now in the possession of Hon. Miss Eden. There is also one in the possession of Duleep Sing, which is three inches long, two inches wide and $\frac{1}{2}$ an inch thick. It is of a rare beautiful color and with very few specks. It was, we believe, shown in the Great Exhibition of 1851. The Russian, Saxon, and Papal Crowns contain beautiful and large Emeralds There is a Crystal of Emerald in the Austrian treasury which is said to weigh 2,000 carats. The Duke of Devonshire has one whose weight is nearly 9 ounces. It came from the Muzo Mines of New Granada, near Santa Fé di Bogota and was purchased by the Duke from Dom Pedro. It is two inches in diameter and is of the finest color. It is still uncnt

There are some very good Emeralds in Bengal, amongst which we may mention those that are in the estates of the late Rajah Chunder Nauth Roy, of Nattore, of the late Baboos Kally Coomar Tagore and Soobuldas Mullick of Calcutta. Amongst the jewels, belonging to the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, is an Emerald of about 31 ratis and of exactly the same color as the green grass, another of about 9 ratis and a third of about 5, (the last, without any flaws whatever)——all set in rings. There is also a large stone set in a snuff-box and also one very beautiful paper-shee in the possession of the above Maharajah One Emerald set in a ring, belonging to the estate of the late Hon'ble Prosonno Coomar Tagore, c s 1, has engraved upon it, its owner's name in the Persian character. It is now in the possession of the Hon ble Maharajah





श्रथ प्रवृपरागः।

मूलम्।

षापीतपाणु रिचर पाषाण पुष्परागमंत्रस्य ।
कौरण्डको नाम स्थात् स एव यदि लोकितापीतः ॥ १८८ ॥
धालोकितस्य पीत सन्धः काणयक स एवीक ।
धानीलमुक्तवणे सिग्ध पोमालकः स्वगुर्णे ॥ १८८ ॥
धायन्तलोकितो य स एव खलु पद्मरागमन्नः स्वात् ।
षापि चेन्द्रनीलसंत्र स एव कवित सनील सन् ॥ १८० ॥
मूख्यं वैद्र्य मणेरिव गदित छास्य रक्षणास्वविदा ।
धारणफलस तहत् किन्तु स्वीणा सतमहरे भवति ॥ १८९ ॥ ।

ष्ठप्पराग भ्रघीत् प्रख्राजका वयान । करजगा।

घोडा पीलापनिवर्दे ये मनोहर, थोडा सफेंद्र रहें प्राथरको प्रध्माग प्रधान पुखराज कहते हैं, वही प्रध-राज घोडा पीलापनिवर्द्धिय लालर होने से बीरिष्ट्य कहलाता है, चौर योडा सुबीमायेल जरद रह चौर खड़ होने से साधाय कहलाता है, चौर घोडा सुधीमायेल चर्नेद रह चौर खिछ होने से सोमावक करनाता है, चौर बजन लालरह होने से पोमावक करनाता है, चौर बजन लालरह होने से पामाया कहनाता है, चौर बजन नीला होने हन्द्रनील कहलाता है। चौर बजन नीला होने हन्द्रनील कहलाता है। चौर बजन नीला होने हन्द्रनील कहलाता है।

रक्षपार्ची पिछतनोग सहते हैं पुख्राजका मूल भीर पहेरनेका फल लमुनियाले समान है। खान् कर्ते वाज स्त्री पुख्राज पहेरनेसे लेडकेवाली हो गक्ति। स्ट^{९१}।

THE TOPAZ.

TRANSLATION

A certain ash colored stone having a beautiful yellowish shade, goes by the name of 388-390 If it is red with a yellowish shade, it is called Kauruntaka, if it is transparent and yellow with a pale red lustre, it is called Kasáyaka, if it is cool and white with a pale red shade, it is called Somálaka, if it is deep red, it is called Padmaraga, and finally, if it is deep blue, it is called Indranila 391 In worth and use, (say the authorities)

Topazes resemble the coral, -with this difference, that by wearing a Topaz, a barren woman can get a child

পষ্পরাগ ।

অনুবাদ ৷

ষ্টমং পীতেব আভাযুক্ত মনোজ্ঞ পাণ্ডুবৰ্ণ প্ৰস্তবকে পুস্প-বাগ কহে। সেই পুষ্পবাগ ঈষং গীতেব আভাবিশিউ লোহিতবর্ণ হইলে কোকণ্টক নামে, ঈষল্লোহিতেব আভা যুক্ত পীতবৰ্ণ ও স্বজ্ঞ হইলে কাষায়ক নামে, ঈষং লোহি তেব আভাযুক্ত শুরুবর্ণ ও শ্লিগ্ধ হইলে সোমালক নামে, অত্যন্ত লোহিতবৰ্ণ হইলে পন্মবাণ নামে এবং অত্যন্ত নীলবর্ণ হইলে ইন্দ্রনীল নামে কথিত হয় ।৩৮৮।৩৮৯।৩৯০। মণিশান্ত্রবিং পণ্ডিতেবা কছেন, পুষ্পবাণের মূল্য ও

ধারণফল, বৈদূর্য্য মণিব সদৃশ, বিশেষেব মধ্যে পুষ্পাবাণ ধাৰণ কৰিলে ৰক্ষা জ্ৰীলোকও পুত্ৰবতী হইতে পাৰে।৩৯১। मूसम्।

यणपुष्पमाः कान्ता स्वक्त्भावस्य चिक्रणः।
युवदो धनदः पुष्पः पुष्परागमण्यितः॥ ३८२ ॥
द्रैपत्पीतञ्च सक्कायं खन्धं कान्ता मनोष्टरं।
युष्परागं भवेक्तुद्धं कथितं रत्नकोविदैः॥ ३८३ ॥
मह्मादिमातिभेदैन तदिन्ने यं चतुर्विषं।
कथा चतुर्विधा तस्य सितापीतामितासिता॥ ३८४ ॥

तर्जमा ।

प्रथाके पुलक समान कान्तिविश्वष्ट, खुद्ध, चिक्रण, पुखराज बद्धत् पाक और दूशी तरक्षका पुखराज पर्हेरनेधे बेलेड्केवाला लेड्केवाला और बेधन दीलतवाला छोता है। ३६२।

रत्नणार्ची पिछतके मनके चनुषार बोडा जरद एवं, कावाविशिष्ट, खब्क चीर मगोचर कान्तिविशिष्ट गुखराज जत्तम है। ३२३।

जिस् तरस्ये बाह्मण, चिन्न, वैख धीर श्रष्ट्र चार जात होते हैं, स्मी तरस पुखराजभी चार जात होता है और वही चार किमिमके पुखराजसे सफेद, जरद, होदा हफेद और रूपा यही चारप्रकारकी काया निक्तति हैं। 388 ।

له. وهد

TRANSLATION.

392. A Topaz, beautiful as the Sana* flower, transparent and smooth is sacred. By wearing this gem, a person who has no child may be blessed with one; and a poor man acquire riches.

393. According to the authorities, a Topaz which has a fine yellowish shade, and which is smooth, is excellent

394 The Brahminical classification of castes holds also with Topazes . they emit white, yellow, whitish and black shades.

অনুবাদ।

শণপুস্পের তায় কান্তিমান, বছ ও চিৰুণ পুস্রাগ অতিপবিত্র, এইপ্রকাব পুস্বাগ ধারণ কবিলে অপুত্র ব্যক্তি পুত্রবান ও নির্ধন ব্যক্তি ধনী হব। ৩৯২।

বত্নবিৎ পণ্ডিতদিগেব মতে ঈষংশীত্রবৰ্ণ, ছাযাবিশিষ্ট, স্বক্ত ও মনোহব কান্তিমান্ পুষ্পবাগই উৎকৃষ্ট। ৩৯০।

ব্ৰহ্মাদি জাভিভেদে পূজ্যবাগ চাবিপ্ৰকাৰ হইষা থাকে, এবং পূজ্যবাগ হইতে শুরু, গীত, ঈষৎ শুরু ও রুষ্ণ এই চতুর্বিধ ছায়া নির্গত হয়। ৩৯৪।

[·] Cannavis Saliva

मुखम्।

सच्चायपीतगुरु गाचसरङ्गगुर्द्ध

स्मिथ्य निर्मालमतीव सहनागीतं।

यः युष्परागणकानं कलयेदसुष्य

पुष्पाति कीर्त्तिमितिशीर्य सखायुरविन् । ३८५॥ कप्पाविन्ट द्वितं रूचं धवलं मिलनं लघ।

क्षणावन्द्राक्षतं रूचं ववतं नातनं लघु। विच्छायं ग्रह्मरागारं ग्रष्मरागं मदोषकम्॥ ३८६॥

तर्जमा ।

जो चारमी उत्तम कायाविशिष्ट और वेचयेव जरद् रङ्ग, भारी, सिग्ध, बज्जत् गाफ, गोल और ठाएडा प्रस्ताञ पद्दरे, उस्की नाम्बरी, वल, सुख, उत्तर सीर दौलत ज्यादा डोति हैं। ३८५।

जो प्रवराज क्रिटेदार, नीचा उ'वा, गादारङ्गः योदा मयवा, त्रोजनमे जाल्का, कमरङ्ग श्रीर दुधक, ऐसा प्रवराज वज्जन् खाराफ घ^र। ३८६।

इति पुखराजका वयान ।



TRANSLATION.

395 A man, who wears a faultlessly yellow Topaz possessed of a beautiful shade, weighty, exceedingly cool, flawless, and perfectly round, reaps fame, heroism, happiness, wealth, and length of days.

396. That Topaz which is spotted, rough, white, yet dirty, light, void of lustre, and containing grits, is noxious.

অञ্বাদ।

বে ব্যক্তি উত্তম ছামাবিশিউ, গীতবর্ণ, গুৰু, বিশুদ্ধবর্ণ, মিশ্ল, অত্যন্ত নির্মান, উত্তম গোলাকাব ও অত্যন্ত শীতল পুস্পবাগ ধাবণ কৰে, তাহাব কীর্ত্তি, শৌর্য্য, হৃথ, আয়ু ও অর্থ বৃদ্ধিত হ্য। ৩৯৫।

যে পুজাবাগ বিন্দুচিহ্নান্ধিত, বৃক্ষ, ধ্বলবর্ণ অথচ মনিন, ওজনে লবু, ছাবাবিহীন ও শর্কবাযুক্ত, দেই পুজাবাগ দোষদূষিত। ৩৯৬।

ইতি পুষ্পরাগ।



THE TOPAZ.

Its Properties.

HE Topaz belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization Its specific gravity is greater than that of the Diamond-being from 3 6 to 4 2, but it is next to it in hardness-being 8 in the scale It is scratched by Diamond only and can very easily cut Quartz It possesses double refraction, though in a small degree; acquires electricity by heat, friction and pressure, and retains it for se veral hours. It is transparent and its lustre is vitreous. It is infusible in charcoal before the blow-pipe, but, under the influence of strong heat, the surface breaks immediately as blisters are With borax it fuses into clear glass formed thereon and gets blue with cobalt solution. It yields hydro fluoric acid by the application of sulphuric acid, but is not affected at all by muriatic acid Its cleavage is perfectly basal, i.e., it breaks with a flat surface at right-angles with or across the prism. The Topaz is generally divided into two kinds, according to the difference in the chemical composi tion. Those called the Oriental Topaz, are composed of nearly pure alumina; those known as the Occidental, contain little more than 57 parts of alumina -the rest consisting of silica and fluorine.

Where found: Varieties of the Topaz

THE Topaz is found in almost all the parts of the world, though it varies in color and appearance in almost every country, where it is met with. Next in importance to the Oriental Topaz, is that variety which comes from Brazil. Those from Villa Ricca have a deep orange tint. The crystals, seldom exceeding 2 or 3 inches in length, are generally found in soft loose sandy clay. Those that come from the province of Minas Geraes, are found in rounded pebbles, perfectly pure and colorless. These are called "pingas d'agoa" or "gouttes d'eau," or the "Novas Minas," and, by the Portuguese, the "Slave-Diamond." These are capable of much higher polish than rough crystal. Some specimens of this kind have been found in Tasmania, where also some blue and green ones have been discovered, though these are more water-worn than those of any other place. Topazes of a fine pale blue color are also found in the east of Siberia, together with Beryl, Felspar, Quartz, &c ; also in the Ural, north of Katharinburg, in Graphic, Granite and Albite. The Saxon Topaz, found at Altenburg, is generally of a clear, transparent yellow, extremely hard and very brilliant. It becomes perfectly white by being put in a small crucible or in a tobacco pipe, covered with ashes or sand, and subjected to heat. It is also found in the Voigtland, 2 miles from Auerback. sometimes covered with a yellowish marl. The

Bohemian Topaz is of a deep hyacinth and sometimes of a brown hue The so-called German Topaz is nothing more than a sort of glassy spar. The Topaz is also found in Connecticut, the United States, Peru, Ceylon, Asia-Minor, Great Britain, and Ireland, and the Hebridis.

The Topaz as known to the Ancients.

This stone was called in Hebrow,—"Pittdoh," by Professor Aaron Pick, and "Pittdoh," by Gesenius, who (the latter) thought, that it was derived from the Sanskrit word Pita (yellow) and that the Groek "Topásion" is a transposition from "Pittdoh" to "Tipdoh." But the Topazion (found in an island of the same name in the Red Sea, is not what is known as the present Topaz Topazion is the modern Peridot, while, according to some, Chrysolite was the ancient name for the Oriental Topaz. The Topaz is one of the stones noticed in the Bible and was, in the Middle Ages, considered to be the emblem of Apostle James the Younger. It was also held in high esteem by the Greeks and Romans.

Cutting and Engraving

THE Topaz is cut on a leaden wheel with emery and polished with tripoli. The form of cutting is the full Brilliant, leaving the table smaller and the bezil rather deeper than in the Diamond. The grain (which is the technical expression for the cleavage surface) is well nigh impossible to polish and it becomes necessary for the lapidary to take a small angle from the cleavage plane, instead of cutting it flat, in order that the highest degree of brilliance might be obtained. Now-a-days, few stone-cutters pay the necessary amount of attention to secure the intense whiteness and lustre, which it should have, and the consequence is, a well-cut Topaz has become a rare article. The Goutte d'eau, if cut as a Brilliant, with a small table, will make a beautiful

ornament.

There are still to be found several intaglios engraved on this stone by the Greeks. The Emperor Hadrian (Hadrianus Guildmus of Naples) was said to possess a Topaz seal-ring, upon which the following lines were engraved:—

"Natura deficit Fortuna mutatur Deus omina Cernit."

Pliny says, that this stone was found in the Alabaster mines, near the Egyptian city of Thebes. In the Bibliotheque Royal in Paris, is a signet-ring of Topaz, upon which the portraits of Philip II. and Don Carlos, are deeply cut. There is also a Topaz, of a citron-yellow tint, which represents an Indian Bacchus. There is in St. Petersburg a specimen of excellent workmanship on the Topaz,



upon which is engraved the Constellation of Sirius. A Persian jeweller is reported to be in the possession of a Topaz amulet, through which the words "From God alone is success" are bored, in Arabic characters During his visit to Rome (1524 to 27), Cellini mentions, as one of the three finest antiques procured by him from that place, a perfect Topaz, as big as a hazel nut, upon which was engraved a head of Minerva. But whether the stone was a real Topaz or not is a matter of question

Its Price Imitations.

THE Topaz is not so much liked now as it was 50 years ago. The fact 18, it is now only used in the cheapest jewelry, in the jewelling of common Swiss clocks and for optical purposes The rough stones, used for optical purposes, realize from 5 to 10s. per pound avoirdupois The pink Topaz fetches better value-the price ranging between 40s. to £20 per ounce, according to the depth of the pink color. The Topiz is called by different names according to the difference of color in the specimens :- The Nova Mina is colorless; The Brazilian Sapphire is light blue; the Aquamarine is greenish; the Brazilian Chrysolite is greenish yellow; the Brazilian Ruby is the artificially obtained pink or rose color. It should be distinctly borne in mind that the fine pink in the Topaz is not natural;

it is obtained by covering a brownish yellow Topaz with sand and putting it to a low red heat. The experiment can also be tried by wrapping up the stone in German tinder, bound with thin iron wire, and then exposed to heat, either by setting fire to it or by putting it before the blow-pipe. Those which are of the peculiar brown color obtain this pink hue; while the pale yellow ones become permanently white The Topaz can be distinguished from the Chrysoberyl or a yellow Sapphire by putting their electrical properties to the test. A yellow variety of the Quartz is sometimes sold for the Topaz, but a careful reference to the characteristics of each will set the question of identity at rest. The Cairn-Gorm (a variety of the Quartz) is often called by the term "false Topaz," owing to its similarity with the stone The Egyptian Topaz is sometimes passed off for the Oriental, but it is less hard. The true Topaz should be of a bright citron, and at times, of a bright clear gold color. The soft satin-like hue is the one most preferred.

Marvellous and Medicinal Properties attributed to the Topaz.

Like the Ruby, the Topaz was gifted with the power of giving light in the dark. A Topaz given by Lady Hildegarde, (wife of Theoderic, Count of Holland) to Monsieur Adelbert, was known to give such a brilliant light throughout the chapel where

it was kept, that prayers could be read without the help of a lamp. According to the Ancients, the Topaz would become pale and obscure if it came in contact with poison. It soothed anger and quenched the heat of boiling water. It drove away sadness and night-mares, strengthened the intellect, sharpened the wit, bestowed courage and if bound on the left arm or hung round the neck, set in gold, it dispelled enchantments. If worn on the left hand, it preserved from sensuality. It was also supposed to possess great medicinal virtues When powdered and taken in wine, it cured asthma, sleeplessness and many other diseases.

Celebrated Topazes.

The finest Topaz on record is the one which Tavernier saw in the treasury of Arungzebe, when he had an audience with that Emperor in 1665. It weighed 157\frac{3}{4} carats and was of an exactly octagonal shape, with two rows of small facets, along the top of the besil It was purchased by the Emperor, at Goa, for Rs. 1,80,000.

The Braganza, of which fuller notice has been taken under the heading, "Celebrated Diamonds," is universally believed to be a white Topaz of unusual brilliancy and extraordinary weight. There is a heavy crystal at St Petersburg, which is 4½ inches long and 4½ wide, weighing 311ts A big lump of white Topaz, now in the British Muscum,

was many years ago used by a London Marine store-dealer as a door-weight, and afterwards sold by him for 3 shillings. Its weight is about 12 lbs. avoirdupois.

There is, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, a very large Topaz, of a beautiful citron tint, weighing about 103 ratis, of very great brilliance and without any flaws whatever. There is also one, with the Maharajah, which is of a smoke-color and weighs about 200 ratis It forms the pendant to a neck-lace of his family-idol at Moolajore.



ग्रघेन्द्रनील: ।

म्सम्।

इन्ह्रनीलस्य सम्भूति: सिंहजदीपमध्यत:। नद्या रावणगङ्गायाः कुले पद्माकरे स्मृता ॥ ३८७ ॥ तचासिताङ्गह्यस्यनामिश्चन्न-ग्राङ्गीयुधाङ्गहरकष्ट्रकलापिषुच्छैः।

मुक्ते तरेश्व कुछमैर्गिरिकाणिकाया-स्राम्बान् भवन्ति मणयः गहशावमामः ॥ ३९८ ।

इन्द्रनील या नीलम्का वयान।

तर्जमा।

सिंडलदीपने चन्तर्गतमे रायणगद्भाके करिट पद्माकर-देशमे दुन्द्रनील या नोला पबदा डोता है। १८७। तामाम दुन्द्रनीलका रद्भ समान निक्ष दोता, कोद्र कोद

नीजकमल, नीलास्वर, वज्जत् माफ तलवार, भ्रमर, रुप्प-जीका बदन, महादेवजीका कष्ट्र, मयूरके पुंकका चाद,

श्रीर काले श्रपराजिताका फुनके ममान है। ३८८ ।

SAPPHIRE.

-Now glow'd the firmament

With living Sapphires-Par Lost B IV

TRANSLATION.

397. The Sapphire is found in the country of Padmákara near the river Rávana Gangá in

398. All Sapphires are not of the same color. Ceylon. Those found in Ceylon resemble one or other of the following objects — The blue lotus, a cloth dyed in blue, a polished sword, the Bhramara,*
Sri Krishna,† Mahádeva's throat,‡ the eye in a

peacock's tail, the black aparanta § व्यथं हेन्दुनील।

অমুবান।

শিংহল দ্বীপেৰ মধ্যগত বাৰণগন্ধাৰ সমিহিত প**ন্না** কব প্রদেশে ইন্দ্রনীল উৎপন্ন হয়। ৩৯৭।

ইন্দ্ৰনীলেৰ মধ্যে কতকণ্ডলি নীলপন্ম, নীলৰ্মন, স্থমা-র্জিত করবাল, অমৰ, ত্রীকৃষ্ণ, মহাদেবেৰকণ্ঠ, মনূৰ পুচ্ছান্ত-ৰ্গত চন্দ্ৰক, ও কৃষ্ণাপ্ৰাজিতাপুশ্পেৰ সদৃশ হ্য। ৩৯৮।

[•] The black bee

[†] A God analogous to the Capid of classical mythology His color

The throat of the Great Destroyer of the Hin in Triad is blue He swallowed the posson that arose at the far famed churrong of the 'Vasty Ser' - along with the moon the nectar the fair and lovely . any ory along with the mood the nectar the last and lovely SFT—the Impersonation of all loveliness and grace—Mahá leva took in the poison to rave Nature and her works, but could not awallow itin the poison to rave asture and net works, one court not a rainow it—
a passage in Hindu Mythology rivalled only by the Sufferingat Calvary

[§] A name applied to several Hants, Chitoria Ternatea, Marsika Quadrifolia, Scalania - Lapptisca.

मूचम्।

यन्ये प्रसन्नपयसः पयसानिधातु-रस्वत्विपः शिखिगलप्रतिमासायान्ये ।

रस्थात्वयः । शाखगलप्रातमास्त्रथान्य नीलीरसप्रभवद्यदुद्भाञ्च केचित्

केचित्तया समदकोकितकण्टभासः ॥ ३८८ ॥

एवस्रकारविद्याष्ट्रवर्षेशोभामिभाचिनः । जायन्ते भणयम्बद्धिनन्द्रनीला महाग्रुणाः ॥ ८०० ॥ ऋ तनीलं रक्तनीलं पीतनीलमधापिया ।

क्षम्पानीलं तथा त्रियं वाह्यणादिक्षमेण तु ॥ ४०९ ॥ काया चतुर्विधा तस्या गृणु वच्चामि लच्चणं । चितच्छायो मेबेदिप्रसायच्छायस्य चिन्त्यः । पीतच्छायस्य वैद्यः स्वाद्वयदः कष्णदीधितः ॥ ४०२ ॥

तर्जमा।

ससुन्दरका साफ पाणि, मधूरका गला, नीलरज्ञ जलका बुद्बदा श्रीर कोकिलका काल्ड इ.ज्ली गत घीजॉके समान रज्ञ इन्द्रनीलमे देखा जाता है। श्रीर इ.सी किसिमका इन्द्रनील सिंघलदेशमे पथदा शोता है। ३८८। ४००।

जिम् तरक्षे नास्मण, चिन्नु, वैद्य श्रीर ऋट्र चारजात कोते के, उमी तरक नीनममेंभी चारजात कोते के हैं। मफेदीमायेल नीला, सुखीमायेल नीला, जरदीमायेल नीला श्रीर सेयाकीमायेल भीला यकी चारजात कोता कै। ४९९।

सार सयाशमायल नाला यक्षा चारजात काता छ। ४९९ पूर्वी चारजातका दस्त्रील चारजातके ह्याबे जरि देवे जाना जाता है, बाच्चागवर्णकी किंदे ह्याया चीत्र प्रविच वर्णकी सुख ह्याया, वैद्यवर्णकी अरद् ह्याया चीर ऋदवर्णकी वेया ह्याया तजविज् किंगेर हैं। ४०२।

TRANSLATION.

399—400. The 'dark blue ocean,' the peacock's throat, the bubbles of blue water and the throat of the mad Kokula.* These kinds of the Sapphire are generally found.

401-402. A blue Sapphire with a white shade is a Brahmin; a blue one with a red shade is a Kshetrya; a Sapphire of the same color with a yellow lustre is a Vaisya; and finally a blue Sapphire shining in dark lustre is a Sudra.

অনুবাদ।

সমুদ্রের নির্মান জলবাশি, মন্ত্র্বেব কঠ, নীলবদেব বৃদ্রুদ্ধ ও মন্ত্রকোকিলকঠ, এই সকল পদার্থেব সদৃশ বর্ণ ই সচবাচর ইন্দ্রনীলে লক্ষিত হয়, এইপ্রকাব বর্ণবিভূষিত ইন্দ্রনীল সিংছলে জন্মিয়া থাকে। ৩৯৯। ৪০০।

ব্রাহ্মণাদি বর্ণভেদে ইন্দ্রনীলেব খেতেব আভাযুক্ত নীল, বক্তেব আভাযুক্ত নীল, পীতেব আভাযুক্ত নীল এবং রুম্বেব আভাযুক্ত নীল, এই চতুর্বিধ বর্ণভেদ হইবা ধাকে। ৪০১।

উক্ত চাবি জাতি চাবিপ্রকাব ছাযা ধাবা পবিজ্ঞাত হওযা যায, ব্রহ্মবর্ণের ধ্বেডছোযা, ফ্রন্ডিবরর্ণের বক্তছাযা, বৈশ্যবর্ণের পীতছায়া এবং শূদ্রবর্ণের বৃষ্ণছোযা নির্দিউ ইইযাছে। ৪০২।

Vide anté.

मूलम ।

यया च पद्मरागाणा जातकिवितय भवेत्। इन्द्रनीलेपूपि तथा द्रष्टव्यमविशेषत ॥ ४०३॥ यस्य भव्यगता भातिनीलस्वेद्यन्युध्यमा। तिम्द्रनोलमित्या स्तर्भेशां भृति दुलेश ॥ ४०४॥

यसु वर्षस्य भूयस्वात् चीरे गतगुणे स्वित । नीतभाव नयेत् सर्व महानीत स उच्चते ॥ ८०५ ॥ इन्द्रनीतस्तु नीताता एदारागस्तु वीहित ।

धानी वधुक्ष सिध्यस्य मणिनरकता भवेत् ॥ ४०६ ॥ धानी वधुक्ष सिध्यस्य काषायक विद्र । धानी तत्र सिद्धः व्यापायक विद्र । धानी तना राष्ट्रपावाण पुष्परागोऽभिधीयते । तमेन लोधिताकारमाञ्ज कौरएडकं वृधा ॥ ४००॥

तरजमा।

खत्तम, मध्यम चौर चध्यम चर्यात् पहिला, दोस्रा चौर तिस्र दर्जेक क्षिसायम जिस् तरहेसे पद्मराग तिन किसिम्का घोता है, उसी तरहेसे नीलामी तिन किसिम्का

घोता है। ४०३। जिस इन्द्रनीचके बोचमे इन्द्रधतुकके ममान खामा निकेन्ति है, वह इन्द्रनील वछत् दुलैम है, खनायास

निक्षच्ति च, वच इन्द्रनील वज्जत् दुलंग च, चनायास मिल्नेसे बज्जत किमतको विकता च । ४०४। जो इन्द्रनील चप्ने एकग्रीग्रुणे दुधने रचनेसे तागम

जा इन्द्रनाल अपन एक बाहुण दुधम रहन व तानान दुधको नीलरद्व कर्द, उसको महानील बोल्ते हैं। 18०५। रत्नके मध्ये जो नीलरद्व, वह इन्द्रनीन, जो सुखी

रतक मध्य जा नालरङ्ग, वह हुन्द्रनान, जा स्तुधा मध्येल, वह पद्भाग, जो सतुष्ठा, वह पाझा, जो खोडा नीलापनिविद्यच्ये भीर योडा स्तुख, वह साधाप, जो पीलापनिविद्यच्ये योडा साहा, वह मुख्रान चौर पृष्ठी सुद्धान स्तुष्ट होनसे सीरएडक कहलाता

ž.

र्षे । 8०€ । ४०७ ।

TRANSLATION.

403. As Rubies are good, middling and bad,—so it is also with Sapphires.

That Sapphire whose interior gleams with

the iris, is a rare gem of priceless worth.

That Sapphire which being thrown into a quantity of milk a hundred times its bulk, paints the whole mass with its native blue, is entitled a mahánīla.

406-407. Of gems, those which are blue, are Sapphires; those which are red, are Rubies; those which are green, are Emeralds; those which are red with a shade of yellow are Kasáyas, those which are ash-colored with a yellow shade, are Pushparágas; those of the last which are red, are called Kaurandakas.

অহুবাদ।

উত্তম, মধ্যম ও অধমভেদে পলবাগ যেমন ত্রিবিধ হয, ইন্দ্ৰনীলও সেইৰূপ ত্ৰিবিধ হইষা থাকে। ৪০০।

যে ইন্দ্ৰনীলেৰ মধ্যহইতে ইন্দ্ৰাযুধেৰ ভাষ আভা বিনিঃ স্ত হয়, সেপ্রকার ইন্দ্রনীল অতিছর্লভ, দৈবাৎ প্রাপ্ত হইলে মহামূল্যে বিক্রীত হইতে পাবে। 808।

যে ইন্দ্ৰনীল শতগুণ ছুশ্ধে নিক্ষিপ্ত হইয়া নিজনীলবৰ্ণে সমুদায ছগ্নকে নীলবৰ্ণ কৰে, তাহাকে মহানীল বলে। ৪০৫।

বড়েব মধ্যে যেগুলি মীলবর্ণ, তাহাবা ইন্দ্রনীল; যে ওলি লোহিতবর্ণ, তাহাবা পন্মরাগ; যেওলি হবিদ্বর্ণ, তাহাবা মবকত; যেগুলি ঈ্ষংপীত্যুক্ত লোহিত্বর্ণ, তাহারা কাষায়; বেওনি ঈনংপীতের আভায়ক্ত পাড়বর্গ, তাহারা भूलाता अवर सिर्ह भूलातान त्नाहिन्दर्भ हरेति दर्शनस्व বলিষা অভিহিত হইয়া থাকে। ৪০৬। ৪০৭।

श्रवेन्द्रनीलगुणाः।

युवन । युद: खिग्धद वर्णाळा पार्च वर्त्तो च रख्नकः । इन्द्रनीलः समाखात: पद्यभिः समझाग्रुणे ॥ ४००० ॥

प्रमाणेडको ग्रहमिन कुलप्टहिकरो गुदः । को कं स्रयद्भिवाभाति स्थियो धनविवर्द्धनः ॥ ४०८ ॥ वालाक्षीभमुखो नीलो वमन्त्रीला ग्रिका कि यः। वर्णाद्यो नाम नीलोड्य धनधान्यविवर्द्धनः॥ ४९०॥

नीलाका गुण।

तर्जमा।

ग्रस्त, सिम्बल, वर्णोद्यल, पार्खवर्त्तल चौर रच्जकल यकी पाच तरकका गुणबुक इन्द्रनील श्रेष्ठ की ४०००।

जो इन्ह्रनील कह्मे कोटा, चीर चोजनमे भारी, उस्को ग्रुव कहते चैं, गुव इन्ह्रनील चावजात्की ज्यादामी कर्ता चैं; चीर जियके डोनेसे हामेसा सुहब्यत् शीत है, उस्को सिम्य कहते चैं, सिम्य इन्ह्रनील दीवतकी हि कर्ता है। 8°ट!

सुवहके सूर्य के सामने रखनेसे जिस् इन्द्रनीलसे नील-वर्ण शिखा निक्ने, उसको वर्णाटा कहते हैं; सीर वर्णाटा इन्द्रनील सरियेसे धन और धान्यको हहि होति है। ४९०।

É.,

Qualities of the Sapphire

TRANSLATION

408 Weight, coolness, depth of color, the quality of being parsvavarti* and beauty, invest a Sapphire with matchless worth

409 That Sapphire which combines great weight with small bulk is called Gurut such a gem con duces to increase of family That which always gives out moisture is called Snigdha † A Snigdha Sapphire brings on accession of wealth

That Sapphire which, on being exposed to the morning sun, flames in a blue effulgence, is termed Varnadh a It brings prosperity

हेन्द्रनीत्वद छन।

অনুৰাদ।

গুক্র, ম্লিশ্বর, বর্ণাচ্যর, পার্খবর্ত্তির, ও রঞ্জকর, এই পঞ্বিধ গুণভূষিত ইন্দ্ৰনীলই শ্ৰেষ্ঠ। ৪০৮।

যে ইন্দ্রনীল প্রমাণে অতিযন্ন হইয়াও ওছনে অধিক ভাবী হয, তাহাকে গুৰু কহে, গুৰু ইন্দ্ৰনীল বংশবৃদ্ধিবৰ, যাহা হইতে সর্বনা' শ্লেহ নির্গত হয়, তাহাব নাম স্লিদ্ধ, শ্লিগ্ধ ইন্দ্রনীল বনরন্ধিকাবক। ৪০৯।

প্রাতঃকালের দূর্য্যাভিনুথে ধারা কবিলে যে ইন্দ্রনীল হইতে নীলবৰ্ণ শিৰা নিৰ্গত হয, ভাহাকে বৰ্ণাচ্য বলা याय, वर्गाण हेस्प्रनीन बांवा धनधालानि इक्ति थाथ ह्य 185०। I Vide ante.

[†] Laterally heavy See page 413.

म्सम्।

चयेन्द्रनीखडोघाः।

स्काटिकं रजतं खणंमन्यदा वसु तैनमं। पार्य्वास्त्रत नीनमणे' पार्यं बर्त्तों वय'प्रदः ॥ ४१९ ॥ चात्रयं यस्त्र नीनस्त्र तमसेव समावतं। रख्यको नाम नीनोऽय चीवय'कववर्द्वनः॥ ४१२॥

दोपान्नीने प्रवस्थामि नामभिनेत्रवैय पट्। श्रभ्मकपटलक्छाया चासिश्यक्त एउ च। एटप्सगर्भरीत्थाणि महानीनेषु दूपवं॥ ४९३॥

तरजमा।

जिस् इन्द्रनीलके एक जगहने स्कटिक, रूपी, शेषा भयवा चौरकोइ चमकनेवाला परार्थ देखा जाय, उसका नाम पार्श्व चर्ची भवत् लाजवर्च करते हैं, उसके परेरनेथे नास्वरी होति हैं। हरू ।

जो इन्द्रनील किसी बर्त्तनभे रख्नेसे तामाम वर्त्तनको छत्पारङ्ग कर्दे, उस्का नाम रख्नक चै; रख्नक इन्द्र-नील दीलत, नाम्बरी चौर चावलातकी छद्वि कर्ते चै । ४१२ ।

नीलाकाश्रयेव।

अभ्रक, चास, चित्रक मृद्यभी, श्रक्षमर्भ श्रीर रीख यश्री कप्रकारका अधेव इन्द्रनीलमें श्रीता है। ४९३।

TRANSLATION.

411 That Sapphire through which any lustrous substance such as crystal, silver, gold, is seen, is entitled pārsvavartī. A pārsvavartī Sapphire brings on fame.

412. That Sapphire which, when placed in a pot, darkens it all through, is called Ranyaka. This gem increases wealth and is conducive to fame and increase of family.

Defects of the Sapphire.

413. Avrala, Trása, C'itraka, Mridgarva, Asmagarva and Raulshya are the six defects of Sapphires.

অমুবাদ 1

যে ইন্দ্রনীলেব একদেশে ক্ষান্তিক, রজত, বর্ণ বা অফ কোন তৈজস পদার্থ লাকিত হয, তাহাব নাম পার্থবর্তী, পার্থবর্তী ইন্দ্রনীল হইতে যশোলাত হয়। ৪১১।

যে ইন্দ্রনীল কোন পাত্তে স্থাপন কবিলে गদুদায় পাত্তটী কৃষ্ণবর্গ ধাবণ কবে, তাহার নাম রগুক, বগুক ইন্দ্রনীল লক্ষ্মী, যশ ও বংশ বর্জন কবে। ৪১২।

हेमुनीत्नत सीय।

অভ্ৰক, আদ, চিত্ৰক, হৃদগৰ্ভ, অশুগৰ্ভ, ও রৌফ্য, এই ছ্যপ্ৰকাৰ দোহ ইক্ৰনীলে লফিত হ'ইযা থাকে । ৪১০। मृचम ।

चस्वत् पटनं यश्चिन् तद्भावनिति सातं ।

धार**णे तस्य गम्पत्तिरायुद्धैव विग**खति ॥ ४९४ ॥

मेद्संत्रवक्षन्ताससीन दं छि, भयं भवेत्। चिववर्षे द्वाभाति चिववः कुलगायनः ॥ ४९५ ॥

मृत्तिका यस्य गर्भस्या चन्द्यते रत्नकोविदै । मृत्तिकामभैकं नाम तग्दोपजनक भवेत्। ४९६॥

तर्जमा।

जिस् इन्द्रनीलके उपरके हिस्से में चभ्जकके ममान छाया मालुम हो, उस्की श्रम्तक कहते है, दूस्तरहका इन्द्र

नील पहेर्नेसे उमर श्रीर दीनत नाश छोति है। ४९८। जिस् निशानके जरियेचे पून्द्रनील ट्टा मालुम हो,

उसको चास कहते हैं, चास चावेवका इन्द्रनीन दात कारनेवाले जानवारीका खीक पथदा करता है। ही दुन्द्रनील कोद्रप्रकारका रद्ग रख्ता हो, उस्का नाम चिचक; चिचक षायेवका इन्ह्रनील कुलका नाग कर्ता

है। ४१५। जिस्के वीचके डिस्से मे माद्विके रीमा मानुम डीण चम्को मृद्गर्भ कछते हैं, मृद्गर्भ चयेयथा नीला जिल-

दिको विनारी पयदा कर्ते चै। ४१६।

Translation.

414. A Sapphire the surface of which wears a mica-like sheen, goes by the name of Arrala. Such a gem brings about loss of wealth and life.

415. That mark in a Sapphire which at first sight looks like a rift, is called *Trása*. A *Trása* renders one liable to bites That Sapphire which is party-colored, is called *C'uraka*: it causes loss of family dignity.

416. The Sapphire which contains dirt, has the sobriquet of *Mridgarva*. This gem produces a variety of skin-diseases like itching.

जङ्गाम ।

যে ইন্দ্রনীলের উপরিভাগে অত্রেব ভায ছাযা দৃউ হয়, তাহাকে অত্রক কহে, এইপ্রকার ইন্দুনীলধারণে আয়ু ও সম্পত্তি বিদক্ত হয়। ৪১৪।

যে চিহ্ন ছারা ইন্দুনীলকে সহসা ভার বলিয়া বোধ হয়,
তাহাকে আস কহে, আসহারা দংট্রিত্য উৎপন হয়।
যাহা নানাবর্গে চিত্রিত, তাহাব নান চিত্রক, চিত্রক দোলে
কুল বিনন্ট হয়। ৪১৫।

যাহার নধাভাগে ছিলে স্মিহিত থাকে, তাহাকে
ফুন্গর্ভ কহে, ফুন্গর্ভনেষ হইতে গাত্রকণ্ণ প্রভৃতি নানা
ছকের রোগ উৎপন্ন হব। ৪১৬।

संच्रम

हणत् प्रवच्यते गर्भे चम्मगर्भ विनासकत्।
स्वेरामिश्रत यन्तु तद्रोच्यं विधतं वधिः।
तिम्मन् भृत द्रिष्ट्र्वं देशक्यागच्य जायते॥ ४९७ ॥
दोपेस्यको ग्रुणेश्वे क इन्द्रनीचो महामण्डिः।
वच्य हच्चे भवेत्तस्य चायुवेवयस्वरः॥ ४९० ॥
इन्द्रनीने भृते सुद्वे भौरिरेव मगीद्ति।
चायु- कुल यसो वृद्धिचेत्यो सोमा च बहुते॥ ४९० ॥
धार्यामणस्य ये दोषा' पद्मरागमणेर्डुणाः।
धारणादिन्द्रनीचस्य तानेवास्नोति मानवः॥ ४२० ॥

तर्जमा ।

जिस इन्द्रनीवकी चन्दर पायरका मा ट्रक्रा मानुम घोए, उस्का नाम चम्राममें कहते हैं, चम्राममेका नीवा जान मारडालता हैं। जिस्मे चिनिके समान सकेद किटे माल्म की चर्यात् दुधक हो, उसको रीख कहते हैं, रीच्य चयेक्का इन्द्रनील जो चादमी पहेरे, उसको देश कोडकर भागना हो। ४१७।

वेचयेव जनस्वाली इन्द्रनीतमाल जिम्के पाम रहे। उसकी उमर, जोर और नास्त्ररी ज्यादा होण । ४९८।

उन्का उनर, जार चार नास्त्ररा ज्यादा डाण । ४१८ । जो च।दमी वेचयेव इन्द्रनीन पहेरता ड, नारायण उम्से सोस डोता ड, चौर् उस्ती उनर, सान्दान,

चम्से खोस होता है, श्रीर उस्की उमर, सान्दान, नामरी, श्रक्केल, दीवत श्रीर ए खर्च ज्यादे होए। ४९६। जन्मक प्रसार एकेटनेसे को स्वरण कीवा प्र

गुणसुक पद्माराम पर्हेर्नेसे को फुट्रा होता है, गुणसुक रान्द्रनीन पर्हेर्नेसे बही फुट्रा होता है, खुयेबहार माणिक पर्हेर्नेसे को नीक्गान होता है, खुयेबहार रान्द्रनीत पर्हेर्नेसे बही लोकगान होता है। ४०।

TRANSLATION.

417. That which contains gritty fragments, is called Asmagaria This defect is destructive. That which is rough, is called Raukshya Banishment is the consequence of wearing this jewel.

418. A flawless, sterling Sapphire brings its

wearer, strength, fame and length of days.

419. The man who wears a Sapphire of spotless chastity, finds favor with Narayana* and acquires longivity, family dignity, fame, understanding and wealth.

420. Those good and bad consequences which follow the wearing of a Padmaraga combining good and bad qualities, are also produced by the wearing of a Sapphire of a like nature.

অনুবাদ !

যাহাব অন্তবে প্রস্তবধণ্ড লক্ষিত হয়, তাহাব নাম অশ্য-গর্ভ, অশাগর্ভ দোষ বিনাশেব হেছু। ষাহা শর্কবাযুক্ত, णशास्क त्वीका वत्न, त्वीकारमायाधिक हेस्त्रनीनथावी ব্যক্তিকে দেশত্যাগ কবিতে হয়। ৪১৭।

দোৰহীন অথচ গুণযুক্ত ইন্দুনীল মণি বাহাব নিকট থাকে, তাহাব আয়ু, বল ও বশ বৃদ্ধি হয়। ৪১৮।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ইন্দ্ৰনীল ধাৰণ কৰে, নাৰায়ণ তাহাৰ প্রতি প্রদম হন, এবং তাহাতে আয়ু, বুল, যশ, বুলি, লক্ষী ও সমৃদ্ধি বৰ্দ্ধিত হয়। ৪১৯।

ওণসম্পন্ন এবং সদোষ পদ্মবাগ ধাবণে যে ওণ ও যে দোষ হয়, ইন্দুনীলেবও তজ্ৰপ হইয়া থাকে। ৪২০।

^{*} The Preserver of the Hindu Triad

मुचम ।

युरभावजित्नभावायेतेषां नित्यमेव विश्वयौ । काषाद्ययावदुत्तरविवद्वमानौ विश्वेषेण ॥ ४२९ ॥ तदावरससुद्भूतो मत्तमृज्ञ वमद्यतिः । दीपिट्यायाममाविष्टो भ्वामरो निणक्यते ॥ ४२२ ॥ यारकता यदा तच तदा टिष्टिमसंज्ञितः । तस्य धारणमादेण गर्भिणो स्त्रो प्रयूवते ॥ ४२३ ॥ यत पश्चरानस्य मणायुष्य मुख्यं भवेन्यापस्य सम्मातस्य ।

तदीन्द्रनीलस्य महाग्रणस्य सुवर्षेचंख्यातुलितस्य मुख्यं ॥ ४५८ ॥

तर्जमा।

भारी और एक होनेने इन्द्रनीतको नाचा समभ्ता पाहिये, पार्यात् ज्ञाचसे फरक कर्ना चाहिये। ४२१!

इन्द्रनील के खानमेसे भागको ए से रङ्गका दीति चौर छायाविशिष्ट जो सणि पथदा छोति चै, उस्को भागर

वाइते द्वी ४२२।

जिस् इन्द्रनीचमे घोडा खुडीमायेल खामा मानुम हो, उसकी टिट्ठिम कहते हैं, टिट्टिम जातका मणि गर्मिणी खीका गर्म यञ्जन् अवद खारामये खावास कर्ता है। ४२६।

मचागुणसम्पद्म पद्मराग मणिका जो दाम छोता है, ग्रुणसम्पद्म दुन्द्रनीचकाभी वधी दाम छोता है। ४२४ ।

TRANSLATION

A Sapphire is distinguishable from glass by weight and hardness only

422 A shining gem which is found in Sapphire quarries, resembling the Viamaia, and furnished with a shade, is called Vramara

That Sapphire which shows a dash of red, is called a *Tittiva* (amethyst) No soonei a woman who is in her family way, wears a Tittiva than she is delivered of her child, with perfect ease

424 The price of the best Sapphire is equal to that of the best Padmaraga

অনুবাদ।

গুৰুত্ব ও কাঠিন্য অনুসাবেই ইন্দ্ৰনীলকে কাচ হইতে পৃথক্ বলিমা পৰিজ্ঞাত হইতে পাৰা যায়। ৪২১।

ইন্দ্ৰনীলেৰ আকৰে ভ্ৰমবেৰ ন্যায় বৰ্ণ, দীপ্তি ও ছায়া বিশিষ্ট যে মণি উৎপন্ন হয়, তাহাকে ভ্ৰামৰ মণি কহে। ৪২২।

যে ইন্দ্ৰনীলে ঈষৎ লোহিতেব আভা দৃষ্ট হয়, তাহাকে টিট্টিভ কহে, টিট্টিভজাতীয় মণিধাবণমাত্রেই ণতিণী স্ত্রী স্থথে সন্তান প্ৰদৰ কৰে। ৪২৩।

মহাওণসম্পন্ন পদ্মবাগ মণিব যেৰূপ মৃশ্য হয়, ওণশালী ইন্দ্ৰনীলেবও তাদৃশ মূল্য হইষা থাকে। ৪২৪। ইতি ইল্রনীল।

THE SAPPHIRE

Its Properties

HE Sapphire is a variety of the Colundum and is of the same composition, hardness and electricity as the Ruby, differing from it only in color, which varies from white to the deepest blue and black The true Oriental Sapphire is of a clear, beautiful azure blue, (of the shade formerly called " Bleu du roz) soft rich and velvety, neither too light nor too dark But the blue is seldom pure or spread all over the stone It is sometimes mixed with black which gives it an inky appearance, and sometimes with red which, though difficult to be seen by day, can be found out by candle light Sometimes a Sapphire is found exhibiting a variety of colors The asterrated or Star Sapphire is usual ly of a greyish blue color, and shows, under the microscope, 'thread like shafts, directed towards the faces of the six sided prisms, said to be spaces left at the moment of ciystallization, and it is the re flection of light from these which gives to the stone its star like brilliancy" "The Star Sapphire is also known under the title of Astrapia (lightning stone), from its supposed action in a colorless or an azure ground, sending out, as it were, rays of lightning diverging from the centre

Where found.

In former days, Sapphires were found in Persia The best stones now come from and Arabia. Mo gast and Kiat pyan, in Burmah, and from Siam. Those that are found in Ceylon are smallsized and rather rose-colored The blue Sapphire is found in many parts of North America. A fine red Sapphire is said to have been found in South America, with the Diamond. Specimens of the blue and white Sapphires are found in Ballarat, (in Victoria) and near the Pearl river in New South Wales, Australia. The Sapphire is also found in several countries of Europe; on the tops of the Iser Mountains in Bohemia, and in the beds of the river Iser; also in Saxony and Saxon Switzerland.

Sapphire as known to the Ancients.

THE Sapphire of the present day was known to the ancients as the Hyacinthus. Pliny believed, that it was so called on account of its resemblance to the colour of the flower of the same name. Solinus says :-- "Amongst these things (in Ethiopia) of which we have treated, is found also the Hyacinthus of a shining cerulean color; a stone of price, if it be found without blemish, for it is extremely hable to defects." What was called Sapphirus by the classical authors now goes by the name of Lapis-Lazuli Sapphire was, in old Arabic, termed "Sappeer," to scratch; and in the Syriac and Hebrew languages, it was called by similar expressions,—probably, on account of the great hardness of the stone and of its power of scratching any other stone, (except, of course, the Diamond) According to the Ancients, those Sap phires which were of an indigo or very deep color were the male, the pale blue ones, the female According to Ben Mansur, the Jacut had six divisions, ver, the red, the yellow, the black, the white, the green or percock colored, and the blue or smoke colored Sapplure came under the last heading—blue, which had three sub divisions, ver, the hight blue, the Lapis Laruli blue and the indigo blue, each of which, again, had peculiar grades of tint

Ingraing and Cutting

The Sapphire being a very hard stone renders itself difficult of being engraved upon. There are still to be found a few specimens of the incent integlies, amongst which may be mentioned a magnificent head of Jupiter. This stone was one inch in drameter and was quite accidentally found in the pointed of a Turlish Dagger. In the Marlborough collection is found a Medica's head in nearly full free, engravel on a very clear and besutiful Sapphire; also, the head of Circeilla, on a stone of a inch in length and a in tradith. A large pule stone was seen in 1860, in the lines of Mr Borelee, on which was engraved the figure of an actor in front of an altar, with in other ever

imitating his gesticulations. The Signet of Constantius II, a Sapphire of 53 carats, represented that Emperor as spearing a large wild boar, before a reclining female figure. There was another stone, heart-shaped, of a beautiful color and $1_{\frac{1}{3}}^{1} \times 1_{\frac{1}{4}}^{1}$, in dimensions, lately seen in the London market, on which was engraved the figure of Hebe feeding the Eagle. Amongst the modern works of Art may be mentioned the portrait of Pope Paul III, executed on a beautiful Sapphire, 3 of an inch square. There is also one pale Sapphine of an octagonal shape, upon which is the bust of Henry IV, with the initials C. D. F., engraved upon it by Coldoré. In the cabinet of Strozzi, in Rome, is a Sapphire, upon which is the profile of Hercules engraved by Cincius A Sapphire has also been seen in England, on which are engraved the crest and arms of Cardinal Wolsev.

The Brilliant-cut shows the lustre of the stone to the best advantage.

Its Price: Flaws and Defects: Imitations

SAPPHIRES do not, like the Rubies, rise in value according to their size, but like the Diamonds, in proportion to their color, purity, and symmetry. When a Sapphire is too thick in proportion to its surface, its value is not to be estimated by the weight it actually possesses, but by the weight it should have, if it were properly proportioned. A fine, perfect, evenly-colored, spread Sapphire,

54

er one carat, if English cut, is worth from to £12, if foreign cut, from £2 to £5, f one carat, from £12 to £25 The value of Star Sapphire, (which the Hindus did and do in great veneration) if small, is from £2 to , if large, from £10 to £100 A really fine phire should appear blue, as well by day as night It has often been noticed that two phires which appear to be of the same color by differ widely, by night "In many of these es, where the color is partially dark, the lapi has a method of cutting by which he takes y the dark colored part, with the exception of mall spot reserved for the cullet, whilst the er part of the stone is perfectly white, so that n such a stone is looked at from the table, it present a most vivid hue, often superior in earance to those stones which are colored sughout If the stone be held in a pair of nary forceps-or corn-tongs, as they are termed he trade-an inch beneath the surface of clean er, the parts of the stone colored and uncolored

untageously be applied to all other stones he Oriental Sapphire is most highly admired is consequently of very great value. A perfect is of this species, weighing about 3 carats, hes even far higher price than a Diamond of that weight and quality. But, like the Emerald, i rarely free from imperfections, which generally

be distinctly apparent' This test might

consist of clouds, milky semi opaque spots, white glassy stripes, cracks, knots, a congregating of colors at one part and salky flakes on the table The spots are sometimes removed and the color equalized by burning the stone in a crucible, with sand and iron filings, but this process involves serious risks The white Sapphire resembles the Diamond to such an extent, that when well cut and polished, it may pass for the latter deception can be detected by taking the specific gravity of each, or by testing the hardness with another Sapphire or with a Diamond The pale Sapphire, by being rendered perfectly colorless by exposure to a regulated heat, and thereby made to acquire great lustre, has often been sold for the The distinction between this uncolored stone, the white Topaz and the frue real Diamond Diamond can always be made by remembering the fact that neither of the two possesses the midescence

which the Diamond always exhibits when citching the light at a certain angle.

The doublets or somi stones are counterfeit stones composed of two pieces of crystal, with a color between them so arranged as to make the whole substance appear colored. These are often made use of to cheat the inexperienced. The color may partly point out the imitation, and more specially, the inspection of the girdle, where the infuror stone has been joined. The top of a Sapphire is in some cases genuine, and the under part, r g.m of less

value, as for instance, Garnet Sometimes the under part is glass, artistically joined with the top, with cement. In this case, the application of the file to both the parts at once detects the imposition Stones that are of a pale color or of little lastre are generally set with a back, often with a colored ful, to add to their beauty. Those that are set "azure" or open, have the interior of the setting enamelled or painted to throw a tint of color into the gem

The doublets are often sold by the Cmgalese at Colombo, to Europeans and to the passengers by the P & O Co's steamers Sometimes blue glass, cut into facets, are sent there from Birming ham and Paris, in order that they might pass for real Sapphine and stones of similar color

rear pupping and stones of similar color

Marcellous and Medicinal Properties attributed to the Sapphire

ETITIANLS mentions that the vision which appeared to Moses on the mount was in a Sapplure and that the first tables of the law, given by God to Moses, were of Sapplure. It was dedicated by the Greeks to Apollo and was when consulting his oracle, worn by the inquirer, on account of its divine nature, which was supposed to secure him an early and favorable answer. St. Jerome, in explaining the 10th chapter of the project, of Isaah, states that the Sappline procures royal fivors, softens the anger of the enemies, frees people from enchantment and obtains for them.

release from captivity If placed on the heart, it bestows strength and energy It prevents evil and impure thoughts Owing to its coldness to the touch, due to its great density, it was thought to have the power of extinguishing fire It "is said to grow dull, if worn by an adulterer or lascivious person," or by an intemperate man If "worn in a ring or in any other manner," it "is able to quench concupiscence, and for that reason, is proper to be worn by the priest hood and by all persons vowed to perpetual chastity" For this reason, perhaps, this stone has been used, to adorn the episcopal ring of office, from the commence ment of the Middle Ages down to the present time The ring of the Abbot of Folleville, the oldest ecclesia tical jewel yet in existence is set with a large Sapphire Great medicinal virtues have been attributed to the stone Placed on the heart, it cured fever, on the brow, it stopped hemorrhage It was an excellent preserver of eye sight If Sapphire powdered and made into 2 pill, were placed on the eyes, 1t would draw out any dust or small insect or any other foreign substance that might have fallen into them, and cured them also of inflammation or irritation by small pox or any other disease The application had to be renewed daily for sometime If the powder were taken internally with milk, it would prove a sovereign remedy for pestilence, fevers, poison, hysteria, &c. The Sapphire is such a deadly enemy to poison that

PPP

if put into glass, or on the mouth of a phial that contrined a spider or any other venomous reptile or insect, it would immediately kill it

Celebrated Sapphires

A VERY large Sapphire of 951 carats in weight, of a beautiful blue color and without a single flaw was seen by the English Ambassador, who had, on some occasion, been sent to Ava In the Musèe de Minèralogie of Paris, is another very beautiful and flawless Suppliere, weighing 1321 carats This stone, called the 'Wooden Spoon sellers," from the occupa tion of the poor man of Bengal who was credited with its discovery came somehow in the possession of the House of Rospoli in Rome, and subsequently of a German Prince, who sold it to Perrèt, a French jeweller, for 1,70,000 francs, a sum known to be far less than its true value. It is lozenge shaped and has six faces The treasuries and regalias of Europe contain some very good Sapphires There are also some large and beautiful specimens to be seen in the Green Vaults at Dresden Amongst the seve ral valuable stones to be found in the Russian trea sury is one of a light blue color, which once be longed to Mr Hope There is one Sapphire of considerable beauty and size in Vienna An English lady had a large sized Sapphire, which she sold and replaced by such a skilful imitation as to hood wink the jeweller, who estimated it, for probate duty, at £ 10,000 The disappointment of the legatee, who

came in possession of it, after paying the legacy duty may well be imagined An oval Sapphire and a drop of a considerably large size and of great purity, belonging to a Russian Countess, were shown in one of the Paris Exhibitions and attracted the notice of all. Several magnificent Sapphires, from the collection of the late Mr. H. T. Hope, were shown in the London Exhibition, where also Mr. A. J. Hope exhibited his well known "Sapphire Marveilleux," which is blue by day and amethys tine by night. There is a very large Sapphire, (partly drilled), in the State Crown of England, purchased for it by His Majesty the late King George IV.

A very good Sapphire was once seen with a Mohunt of Mirzapore. Rai Buddree Dass Mokeem has in his possession a small and beautiful stone set, in a ring. The Hindus have a prejudice against this stone and consider it to be the bringer of misfortune. In consequence of this notion, some of them would invariably keep a stone on trial for several days before they would make final settlement with the sellers. Hence, perhaps, the paucity in the number of Sapphires in their possession.



कके तनम्।

मूचम्।

सिग्धा विश्रुद्धाः समरागिणस

श्रापीतवर्णा ग्रुरवो विचिचाः।

चामव्रणव्यालविव**ि**तास

कक्षतनास्ते परमा. पविचा: ॥ ४२५ ॥

वर्णेन तद्वधिरसोममधुप्रकाश-मानामुपीतदक्षनोट्यालितं विभाति।

नीलं ग्रन खलु सितं कलुपं विभिन्न व्याखादिदोपकरण्ने न तदिभाति । ४२६॥

कर्के तकका वयान।

सिन्ध, वेचयेव, सव जगर समान रङ्ग, घोड़ा जरद् रङ्ग, घोजनमें भारी, देखनेमें मनोचर चौर चास, उंचा नीचा चयेव वगैरक्षे पाक, कर्षेतक वड़त् उमदा है १४५५।

खुनके समान सुख, चन्द्रमाके ममान गर्फेट, मधुके समान कम जरद रज, तांचेके समान शोडा लालरज, धागके समान चन्नुव, नीलरज्ज धायबा यज्जत गर्फेट कर्कतक पापका नाम करनेवाला है, लेकिन खब साफ नावानानेके

श्रयेव से समक देने वाला नहिं शोता। ४५६।

8

CHRYSOBERYL.

TRANSLATION

425 A Chrysoberyl which is cool, pure, uniform ly colored, slightly yellow, heavy, singularly fine and free from such defects as *Trása*, is the best of all 426 A Chrysoberyl which is blood red, pale like the moon, slightly yellow like honey, light red like copper, yellow, bright like fire, blue, or white, purges sin away, but sometimes has not that glitter which it has, owing to the defective art of the lanidary

অথ কক্কে'তন ৷

ध्यभूवीम ।

ম্লিদ্ধ, বিশুদ্ধ, সর্বব্র সমান বর্ণবিশিক্ট, ঈষং শীতবর্ণ, ওজনে শুক, বিচিত্র এবং ত্রাসনুণাদিদেদ্দ বিবর্জিত বর্জে তন অতি উৎকুক্ট। ৪২৫।

কধিরেব আয় লোহিত, চল্লেব আয় পাণুব, মধুর তায় ইবং পীত, তান্সেব আয় ইবং লোহিত, পীত, আরির তায় উদ্দেশ, নীল এবং শুরবর্গবিশিক্ট বর্কেতন পাপনাশক এবং সংকারকেব দোবে ইহা তাদৃধ দীপ্রিধানী হয় না। ৪২৬। मूखम्।

पनेण काञ्चनमयेन तु वेष्टियत्वा इसो गलेऽय धृतमेतद्तिप्रकार्यः। रोगप्रणाञ्चनकर कलिनायनन्त-

रागप्रकर कालनायनन्त-दायुक्तरं कुलकरच सुखप्रदच्च ॥ ४२७ ॥ एवब्विधम्बद्धगुण मणिमावधन्ति

एवास्वधन्द्रस्य मणिमावहान्त कर्षे तर्ग सुभमलङ्कृतये नरा ये । ते पृजिता बङ्कधना वङ्गबन्धवास्य

नित्योच्चुचाः प्रमुद्तिता चिप ते भवन्ति ॥ ४६८०॥

कर्क्केतनं यदि परीचितवणेरूपं प्रत्यग्रभासरदिवाकरसमकार्थ।

तस्योत्तमस्य मणिशास्त्रविदा मिष्टमा तुल्यन्त मृत्यमुद्तिं तुनितस्य कार्यः ॥ ४५९ ॥

त्रजमा।

कर्कतक मणि सोनेके पचमे मोड़ कर्के गर्ने चण्या डातमे पडेरनेगे देखनेमे बड़त् चाच्छा मानम डोता रे, रोग चौर कलियुगके दोषको नाग कर्ता रे, चौर उमर खान्दान, मुखकी हिंद्व कर्ता है। ४२०।

जो चारमी रम् किमिम्का बज्ज्यणमस्यत्र वेचयेथ कर्षेतक गण्नेकेयाको परेरता है, वक चारमी लोगममाजमे पूजित चौर बज्जत् दीलतमन्त, बज्जत् भार बादरवाला, तेजक्षी चौर कामेगा खुण्रस्ता है। ४६८।

कर्कतक निष्यार परीचा कियाज्ञया वर्णविष्य । भीर मूर्यके ममान चाच्छि रीमनि पावे, तो रत्नपार्ची परिकृतिके मतके चतुनार उम्बादान उम्ब घोजनके समान घोगा। ४२६।

इति सर्वेतस्या वदान ।

TRANSLATION.

427. A Chrysoberyl when set on gold and worn on the neck or the hand, is very fine to look at, removes diseases and various vicious properties, and increases life, family and happiness.

428. The man who wears a sterling Chrysoberyl free from every defect, is honored among men, acquires wealth, friends, fame and contentment.

429. If the color of a Chrysoberyl challenges scrutiny, and if it flames like the sun, it fetches (so say the authorities) a price proportionate to its weight.

অভ্বাদ।

২ছে তনমণি হ্বর্ণের পাত্তে মুড়িয়া গলে অথবা হস্তে ধারণ করিলে দেখিতে অতিহালর হয়, বোগ ও কলিলোয নাশ করে এবং আয়ু, বংশ ও হুণারুত্তি করে। ৪২৭।

বে ব্যক্তি বহুওপদশের নির্কোব, কর্কেতন রহু অলহা-রের নিনিত্ত ধারণ করে, দেঁ মানব লোকসমাজে পৃজিত, বহুধনের অধীধর, বহুবাছব, দাঁভিমান ও নিতা সম্ভূত হয়। ৪২৮।

কর্কেতন যদি পরীক্ষিত বর্ণবিশিক্ট এবং দূর্য্যের তায় হাপ্রকাশিত হয়, তাহা হইলে মণিশাম্রবিং পণ্ডিতদিগের মতে তাহার মূল্য ওজনের মনুরূপ হবৈবে। ৪২৯।

हेडि दहर्ड उन ।

THE CHRYSOBERYL.

Its Properties

HE Chrysoberyl, otherwise called the Orien tal Chrysolite, is a brilliant stone, the color of which, varies from asparagus green to grassgreen, greenish-white, and yellowish green belongs to the trimetric or rhombic system of crys tallization and possesses a vitreous and oily lustre It varies from being perfectly transparent to nearly opaque Its cleavinge is parallel to the frees of the right angled prisms, it breaks with a conchoidal fracture rather uneven Its specific gravity is from 36 to 38 It is brittle and translucent. possesses double refraction in a high degree, and acquires by friction positive electricity, which it has the power of retaining for several hours is infusible before the blow pipe alone, but with borax or salt of phosphorus, melts with difficulty into clear glass It is 8 5 in the scale of hardness. scratching Quartz easily and being scratched by the Suppline, Ruby &c It is not affected by acids but with a solution of cobilt, it becomes blue. Its composition has been ascertained to be about 80 per cent. of alumina, and 20 of glueina with traces of protoxide of iron, oxides of lead and copper, according to color and locality

Where found.

The Chrysoberyl is found in rolled pebbles in Ceylon, Brazil, Moravia, Pegu, and in the river Tajowaja in the Ural Mountains. The last variety shows by reflected light, an emerald-green hue, and by transmitted light, a red one, and is called the Alexandrite, after Alexander, the Emperor of Russia This stone is also found on the east side of Borneo, mixed with gold dust, Diamond, Topaz, &c. It has latterly been found at Haddam, Connecticut, at Greenfield near Saratoga, New York, and in the granite of Orange Summit, Vermont.

Mode of Cutting

The transparent yellow Chrysoberyl, which is the variety used in jewelry, is cut in the brilliant form, on a copper wheel with emery and polished with tripoli. The semi-transparent varieties, known as the Cymophanes, and the "Cat's-eyes" of commerce, possess an opalescence and are generally cut en cabchon

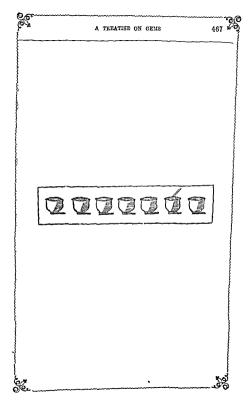
The Chrysoberyl as known to the Ancients.

CHRYSOPRASE appears to have been the gem which was the Chrysoberyl of the Ancients. The name Chrysoberyl is formed of two Greek words, signifying "Golden," and "Beryl." Cymophane is derived from two words, which mean "wave," and "appear," perhaps, so-called, on account of its variable color.

Its Price.

The transparent yellow Chrysoberyl now being out of fashion and rarely mounted as ornaments, fetches but a nominal value. But the Cymophane or the Chrysoberyl Cat's-eye is worth a good deal; its price varying from £100 to £200 or £300, in proportion to the distinctness and brilliancy of the ray of light across the stone. This gem is considered very lucky by the people of the East, and even by those of the West, and consequently it is getting more valuable than before. An English mobleman is reported to have paid so much as £1000 for one of these. Its beauty is enhanced if surrounded with brilliants or rubies

The transparent yellow Chrysoberyl, or the Indian Chrysolite must not be confounded with the true Chrysolite, with which it materially differs in hardness and specific gravity; the latter being 6 to 7 in the scale of hardness, and its specific gravity, from 3 3 to 3 5. The Chrysolite, moreover, contains a large element of iron in its composition, and can easily be dissolved into a jelly by sulphuric acid. The Chrysoberyl differs also from the yellow Topaz, in one important point, viz, that of not acquiring electricity by heat.



च्रथ प्रसक्तः।

मूलम्।

दाना ईवाग दवमे कलक न्यकादी

गुञ्जाञ्जनचौद्रगणालवर्णाः।

गन्धवैवज्ञिकद्लीमहशावभामः एते प्रथनाः प्लका प्रमुताः ॥ ४३० ॥

ग्रजानमञ्जाकविचित्रवर्णी

खच्छाः प्रदिष्टाः परमाः पविचाः।

माद्रस्ययुक्ता बज्जभिक्तिचित्रा टहिपदाक्ते प्रका भवन्ति ॥ ४३१ ॥

ऋथ पुलक्कावयान।

तर्जमा ।

हर्का, वग्टाद, नमीदानदीके किनारेके देशमे पगदा इत्ये ग्रन्ताके सुखके समान कालारज्ञ. मधु, कमलकी जड़, कसूरी, चाग चीर केलेके गास्टके समान रज्जदार पुलक वड़ात् चाच्हा है। ४३०।

पुलक वज्जत् आच्छा हो। ४३०। प्रञ्ज, सफेद कमल, भ्यमर चौर मूर्यके समान वर्ण-विधिष्ट चौर सूबदार पुलक यज्जत् पवित्र चौर मङ्गल करनेवाला है। ४३९।

GARNET.

TRANSLATION

430 The Garnet is produced in the country of Dásarha (Dwáraká) in Bagdad, in the shores of the Narbudda, &c Of Garnets, those which are colored like the black spot in the Gunya, like honey, the stalk of the lotus, the musk deer, fire, or the plantain-tree, are first-rate.

431. A Garnet which is colored like the conch, the lotus, the black bee, or the sun, and which is strung on a thread, is sound and auspicious, and heralds good fortune.

অথ পুলক।

অহবাদ।

দাসাই (হাবকা) বাগদব (বোগদাদ) নর্মদানদীব ভীবত্ব প্রদেশোৎপন, গুঞ্জান্ত্রন (কুঁচেব শীর্ষদেশত্ব ক্ষাবর্ণ), মধু, মুণাল, কন্তু্বীমৃগ, আনি ও কদলীর্মেব ভাষ বর্ণবিশিষ্ট পুলক রক্তই অভিপ্রশন্ত । ৪০০ ।

শন্ধ, পন্ম, ভ্রমণ ও সূর্য্যের ভাষ বর্ণশালী এবং সূত্রোপ-লক্ষিত পুলক অতিপবিত্র, মদলজনক এবং রবিপ্রদ বলিয়া নির্দ্ধিউ আছে। ৪০১। मुलम् ।

काकायरासमग्रगानवकोग्रहपै-

र्ग्धः समानक्षिराद्रमुखैकपेताः।

ख्त्यप्रदास्त विदुषा परिवर्ज्जनीया

मृत्य पत्रस्य कथितञ्ज मतानि पञ्च । ४३२ ।

तर्जमा ।

काक, घोड़ा, गाधा, श्रेयाल, लेकड् बाघा, चाड्गेझाफे सुखके मासके समान निशानयाला एलक मीत कर्ता है, इसीवास्ने परिडतसोग उचको छोड़नेको कहते हैं। श्रीर एक पल खोजनके सुलकका दाम पाच शौ रूपेयातक हो सकता है। श्रेश्र

इति भुचयका ययान।



TRANSLATION.

432. A Garnet which is colored like the crow, the horse, the ass, the jackal, the bull, or the blood-stained beak of a vulture holding a piece of flesh, brings on death; and the authorities advise us to shun it. A Garnet which weighs one pal,* is worth five hundred Rupees.

অনুবাদ।

কাক, অশ্ব, রাসভ, শৃগাল, রক এবং দ্যাংসক্রধিবার্ত্র্যুথ
গুপ্তোপলক্ষিত পুলকধাবণে মৃত্যুঘটনাব সম্ভাবনা, অতএব
পণ্ডিতেরা তাহাকে পবিত্যাণ কবিচে বিধি দেন এবং পলপরিমিত পুলকেব মূল্য পঞ্চশত মূল্যা পর্যাপ্ত হইতে
পারে। ৪৩২।

ইভি পুনক।



[•] Equal to 4 kar shas

THE GARNET:

Its Properties.

3HE Garnet belongs to the monometric or cubic system of ervstallization, and is, for the most part, found in rhombic dodecahedral crystals, also massive and in small pebbles in rivers and alluvial deposits It is 6.5 to 7.5 in the scale of hardness. It can scratch Quartz slightly and is scratched easily by Ruby or Sapphire. Its specific gravity is from 3.5 to 4.3 Its lustre is vitreous and in some cases resinous. It varies from being transparent to being nearly opaque Its fracture is uneven or sub-conchoidal. It possesses simple refraction, acquires positive electricity by friction, and has a sensible effect on the magnetic needle. It is fusible before the blow-pipe and melts down to a black enamel. The Garnet is composed of silex, alumina, and a small proportion of oxide of iron, from which it derives its beautiful color. This stone is found of many colors-red, brown, yellow, white, green, black

Its Varieties: Where found.

Perhaps there is no other stone which varies so much in color, shape, and crystallization as the Garnet. It is to be found in almost all parts of the world.

The Almandine or Precious Garnet is found in the Zillerthal and Tyrol, in parts of Norway

and Sweeden, Switzerland, and Spain, and differs from the common Garnet only in color;—that of the former having a blue tinge mixed with the red; that of the latter being blood-red, slightly tinged with brown. The name Almandine, is according to Pliny, derived from the city of Alabanda (in Carien), where this gem was cut and polished. The Garnet is also found in Greenland, United States, Mexico, Brazil, and many other places in America. Some very fine crystals have been found near Oven and the Peel River in Australia.

The Syrian or Oriental Garnet varies in color from the deepest crimson to a violet purple. It is so called, because it comes from Syrian (or Striam), the capital of Pegu. It is also found in India and Coylon.

The Pyrope or Bohemian Garnet is of a fine bright deep-red color and is found in Bohemia, Saxony, and other parts of Germany. Its specific gravity is a little lower than that of the Almandine, but it is one of the hardest stones of the Garnet family. It is called by some jewellers, the Vermillon Garnet, or the Vermeillo, on account of its unmixed red color.

The Essonite or the Cinnamon stone is, as its name indicates, of a reddish-yellow color, resembling that of the cinnamon, and comes principally from Ceylon. It melts very easily and is much softer than the other varieties—it being 6 5 to 7, in the scale of hardness.

A new variety of the Garnet has found its way into the market, from Siberia. It is very brilliant and of a heaptiful green color.

The other varieties come under the province of the mineralogist rather than that of the jeweller, and are as follows:—

The Grossularite, found in Siberia, is of a greenish, and sometimes black color.

The Succinite, found in Piedmont, is of a yellow hue, of the same composition as the above.

The Colophonite and Melanite, found in Norway and America, are Garnets of the pron-lime species, the one being brown and the other black.

The Leucite, found in Siberia and in the lava of the Vesuvius, is a silicate of alumina and potash, and is of a white color.

The Spessartine, found at Spessart in Germany, and in Sweden and Finland, is brown and is a Garnet of the alumina magnase species.

The Uwarowite, found in Siberia, is of a bright green and belongs to the lime chrome class of Garnets. The name is derived from Uwarow, the President of the Imperial Academy of St. Petersburg.

Cutting and Engraving.

Born the common Garnet and the Almandine are frequently cut in facets and polished. When the Almandine is cut en cabeclon, it is called the Carbuncle; i e, when it is cut with a convex surface,—the back being generally hollowed out in order to show off the color of the stone to advantage and also to enable the jewellers to "foil" it, for the purpose of selling it as a Ruby.

The Oriental Garnet is cut with emery or Garnetpowder, on a copper wheel and polished on lead with tripoli, when faceted. The practice is to keep it thin. It is sometimes cut into beads and strung as necklaces.

The Bohemian Garnet is cut as a Brilliant, but more frequently as a Rose, and mounted as a pave.

The Essonite or Cunnamon stone, is, according to some, "cut thin on account of the depth of color with a payilion-cut below and a broad table above, bordered with small facets."

The Garnet is easily engraved upon, on account of the small degree of hardness it possesses. Formerly, engravings on this stone were very frequently executed as evidenced by the several beautiful specimens now found in Paris, Turin, Rome, and St. Petersburg. The Greeks do not appear to have made an extensive use of the Garnet for the purpose of engraving. But the Romans have left splendid engravings on this stone. In the Marlborough Cabinet is a large Indian Garnet, upon which is engraved the head of the Dog-star Sirius, in full relief, and with open jaws, the interior of the mouth being very faithfully represented. In the possession of the same Cabinet, is a celebrated Almandiae, with the beads of Socrates and Plato

engraved upon it. Several Garnets have been found to bear the image and superscription of different Sassanian kings

Several antiques of Garnet have been seen, amongst which may be mentioned a cup, "hollowed out of a solid Garnet, as large as a half goose-egg, and which was engraved internally with the name of its ancient owner, Codrus; and a heart-shaped tablet (Hertz collection), covered with a long Gnostic formula on both sides, an Alexandrian work of the third century, is 24 by 14 inches in extent, showing the immense magnitude of the crystal from which it has been sawn" In the catalogue of the French Crown jewels, (1791) are mentioned "an oval cup of a single Garnet, rich in color, 3 x 21 inches wide, and 3 inches high, valued at 12,000 francs; and a round cup of oriental Garnet, full of flaws, 3 inches wide by 15 deep; a third is vermeille d'Allemagne, 21 deep, at 6,000 francs: besides six others of less size."

The Garnet as known to the Ancients.

ACCORDING to some conjecturers, "Garnet" is an Italian corruption of "Garamanticus," an inferior kind of the Carbunculus of Pliny; according to others, the word is derived from the German "Granat owing to the similarity of its color to the blossom and kernel of the pomegranate According to some others, the name is derived from "Granium," a grain, on account of its being often found in that

condition The name is no doubt modern, but the stone itself was well-known to the Ancients

Theophrastus and Pliny make copious mention of a stone which exactly answers to our description of the Garnet. It came under the heading of Carbunculus, which Pliny divided into male and female; the former being of a brilliant, the latter of a duller lustre. It has been supposed, from the character of the species as described by that eminent naturalist, that the male Carbuncle was our Ruby, the female, our Garnet Pliny describes "vessels of the capacity of a pint formed out of Carbuncle devoid of all lustre or beauty of color." These vessels are conjectured to have been formed out of the massive varieties of the Garnet.

Its Price: Imitations.

THE Garnet was at one time in great demand for jewelry purposes, but now its commercial value has considerably gone down, owing to its being out of fashion and abundant supply. A Carbuncle of a large size, if pure and free from flaws, will yet fetch as much as £20. One of the size of half-a-crown is said to have been lately sold for £50. The Bohemian Garnet is held in great esteem in Turkey, Austria, and Transylvania, and is sold at very high prices. 600 gulden, or £60, is known to have been asked in Vienna, for a necklace of beads. The Almandines, that come in abundance from Coylon are, if of a certain size,

of a fine rich hue and perfectly flawless, worth' from £8 to £10 cach. One Garnet of this description weighing five carats, had been put down for 1,200 francs, in the catalogue of French Jewels mentioned before. The Bohemian Garnet of the size of a hazel nut, would, according to De Boot, be worth as much as a Ruby of the same size. But in Do Laet's time, (about 50 years later), both the Indian and Bohemian varieties had diminished in value.

The Almandines set with backs and foils are often sold to the uninitiated, for Ruby. The Essonite sometimes passes for the Hyacinth or Jacinth, with which, however, it differs in essential particulars. Some jewellers frequently confound the one with the other. Then, some of the varieties of the Garnet itself are confounded with each other. The Almandine, the most valued kind, is a stone of great lustre, and, if, of the first quality, cannot easily be detected from the purple Spinel. The Visuvian Garnet is hardly distinguishable from an Essonite.

The common Garnet is exactly of the color of Burgundy wine, more or less diluted, according to its quality. The Bohemian variety differs from it in its chemical composition, but not much in appearance, except that it is brighter and clearer. The Syrian Garnet is sometimes made to compete with the Amethyst. But it can be distinguished from the latter by the disadvantage of its losing

its lustre and assuming an orange tintbycandle-light

Marvellous and Medicinal Properties

In the Middle Ages, the Garnet was a gem of great value and was considered to possess the same marvellous and medicinal virtues as the Ruby.

Celebrated Garnets.

GARNETS of extraordinary size have been found in the Cabinet of the Marquis de Drèe; amongst which, may be mentioned one Syrian Garnet, of very good quality, octagonal in shape, which measured 7½×6½, and was valued at 3,550 francs; another of a flame color, which was 10½×6½ in measurement, and valued at 1,003 francs.



श्रथ रुधिराख्यम।

सस्म।

तझेन्टगोपकलितं भयवकावणं

. सन्यानतः प्रकटपील्ममानगार्षे ।

नानाप्रकारविचितं किधरास्थरतः

मुहुत्य तस्य खलु मध्वममानमेव ॥ ४३३ ॥ मध्येन्टपार्खरमतीवविश्रहवर्ण

तद्भेन्द्रनीलम्हरं पटलादिकं स्थात । रेश्वयेत्रभ्द्रत्यजनन कथितं तदेव

पक्षस्र तत्किल भवेत् स्रवञ्जयर्षं ॥ ४३४ ॥

भ्रय **रुधिराख्यका वयान**।

तर्जमा ।

बीरवज्जदीके ऐसा चिक्कविशिष्ट, सुगेके ठीटके समान लालरङ्ग श्रीर फटन्त फलके नमान रहको क्षिरास्य

कहते हैं। ४३३। जिस क्षिराखके बीचके हिस्सेने चन्द्रमाके गमान

पाराडवर्ण, चीर आसपास वेश्वयेव इन्द्रनीलके समान तील-रज़, वही प्रकार रुधिराख पहेरनेसे एंग्यू की एति होति है। भीर रुधिराख खुव पक्तेंचे मुख्यके ममान वर्णविज्ञिष्ट घोता है। ४३४।

इति विधिरास्थवा बदान।

CARNELIAN.

TRANSLATION.

433. A GEM which is marked like the cochineal, or which is red like the beak of the parrot, and which is shaped like a blown flower is a Carnelian.

434. A Carnelian, the interior of which is purely pale like the lunar lustre, and the side of which is like the Sapphire, brings its wearer wealth. When a Carnelian attains its perfect developement, it has a color like the lightning.

অথ ক্রধিরাখ্য ৷

অভুব[দ।

ইন্দ্রগোপকীটচিহ্নে চিহ্নিত, শুক পক্ষীর ওঠের তায় রক্তবর্ণ, প্রক্ষুটিত পুষ্পের স্থায় আকারবিশিট রহুকে রুধিরাখ্য কহে। ৪৩৩।

যে কৃষিরাখ্যের মধ্যভাগ চন্দ্রের স্থায় বিহন্ত পাণ্ডুবর্ণ, তৎপার্য ইন্দ্রনীলদনৃশ বর্ণবিশিষ্ট, দেই প্রকার ক্রধিরাথ্য ধারণে ঐর্য্য-রৃদ্ধি হয়। কৃধিরাণ্য অতিপরিপক হইয়া স্কুরবজ্রের ভায় বর্ণবিশিষ্ট হইযা ধাকে। ৪৩৪।

देखि क्षिद्राश ।

THE CARNELIAN.

Its Properties

HE Carnelian belongs to the Quartz species and is a variety of the Chalcedony,-the liver colored or brownish red varieties being called the Sard, and the bright red, white and yellow ones, the Carnelian It is chiefly found in dense imper feet balls, often, however, in obtuse angled pieces It is of a cloudy, waxy and some transparent lustre Its hardness is a little less than that of the Chalcedony It is a fact that its color becomes brighter and intensified by long exposure to the sun, and that by the application of too much heat, it becomes white and pale The jewellers classify the different kinds of the Carnelian by the following names "1st, Mase, or Carnelian of old stone, dark red 2nd. Tem . male red passing into vellow 3rd Surder, brown, passing into pomeranian and sellow Sardonyx, where layers of the Sarder alternate with layers of white 5th, Carnelian Onyx, blood red stripes playing into white 6th, Carnelian Beryl, a whitish yellow '

WI ere found

The finest specimens are found in Cambay and Surat, in India and in Arabia They are also to be found in Saxony, Scotland, Ireland, New Zealand, and in the rivers of Uruguay. They are also said to be found in Egypt.

Cutting and Engraving.

This stone is cut on a leaden plate with emery and polished on a wooden one with pumice-stone. The finishing polish, is, however, given on a plate consisting of lead and tin, with water. It is generally cut into squares, hexagons or octagons; sometimes round, or by giving the upper part which is called the treppen or graduated cut.

The artists of the classical times preferred this stone for cameos, probably on account of its pleasing color and of its possessing a degree of hardness, suited for the execution. In the collection of the Emperor of Germany, is a Carnelian, one of the oldest Greek gems known, on which is engraved a winged Jupiter appearing to Semele, and another an opaque Sardonyx, with a draped figure of Venus represented on it. In the St. Petersburg collection, is a Carnelian, on which is engraved a man's head with a beard most cleverly arranged. specimen of the art of the earliest period. In the British Musuem, is a specimen of the second period. in the shape of a Carnelian butterfly, with a figure of Venus, with large wings, and wearing a beautiful In the Royal collection of Vienna is a Cornelian of the third period, representing Helena. with wings on her shoulders. A small Carnelian

has been seen in the collection at Horence, bearing a head of Apollo There is a very transpirent Indian Carnelian in the Berlin Musuem, on which is engraved the head of Sextus Pompeius There was once in the possession of Michael Angelo, a famous ancient stone, upon which was represented the birth day festival of Dionysius. In cutting a Cameo from this stone, the snow white layer is used for the figure, the red for the base work, and if it has a third layer of pure white, it serves for the hair of the figure. The natives of India cut the figure upon the hard molten mass which is produced by covering the stone with carbonate of soda, and putting it for some time to intense heat

The Carnelian as known to the Ancients

This stone was called in ancient times the Sardius or Sarda, which is derived, according to Pliny, from Sardis in Asia Vinor, the place where it was first discovered, according to others, from the Arabic word, "Sered," which means "yellow," or "yellowish red." It is said, that the name came with the thing from Persia, and that the Babylo man mines produced the sort first known nil most valued. Hence perhaps, I piphanias called this stone the Babylomian Sard. Lather translated the Hebrew word. "Olem," or "Adam" (red.), (vile Lacdus, chap xxvii, V. 17), by the term Sarda, and this fact confirms the assertion that

the Sarda was a stone of a red color. The modern name Carnelian, is, by the generality of authorities. supposed to be derived from Corneus, or raw flesh. which it resembles in color. It is also spelt Cornelian, which name, according to Lessing, is borrowed from the French term Cornaline, or the cornel cherry, to which it is similar in color. Speaking of the Sard, Pliny mentions, in one place, that, "no other stone was so great a favorite with the Greeks as this: at least the plays of Menander and of Philemon revel in allusions to it." He also remarks that this stone is capable of very high polish, which it can retain much longer than any other gem. Ben Mansur divided the Carnelian into seven classes; viz., the liver-colored, rose-red, yellow, white, black, blue, and bi-colored (evidently including some species of the Agate under this designation). He remarked, "although a hard stone, it is commonly used for the engraving of signets upon." It was found in his time at Senaa and Aden in Yemen; on the confines of India and Rum (i e. the Byzantine Empire), and in the neighbourhood of Basra.

Its Price.

THE Carnelian is not so much used in England as in Germany and Poland. The blood-red specimens are more valuable than the pale-red once. The price, however, chiefly depends upon the degree of transparency, purity, beauty and

flawlessness of the stones. The abundant supply of the Brazilian stones has sensibly affected their market value, as also the Oberstein method of coloring precious stones. The stone-cutters and polishers in Oberstein and Idar have attained signal success, in not only coloring the surface of the stones but their inner depths. It is said that the Agate merchants at Idar had learnt the use of the honey in coloring the stones from the Romans, who, again, came by the secret either by reading Pliny's works on the subject, or from tradition. The so-called "Carnelian of Brazil" is worked in large quantities in these places.

This stone is profusely used for rings, seals, watch-keys, and other objects of adornment. It is particularly suited for seals, as it can be very easily taken out of the heated scaling wax, without destroying the impression.

Marcellous and Medicinal Virtues attributed to the Carnelian.

Epiphasius speaks of the Sard as having been supposed to cure tumours and all wounds made by iron. Marbodus, in the 11th century, remarked, that the Carnehan drove away evil spirits and preserved harmony. In the Middle Ages it was supposed to give success in law suits and bring riches to the owner. Albert Magnus declared that the Sard exhibitated the soul and braished fear and enchantments. The Carnelian, made into prowder,

was supposed to be a sovereign remedy for infections, noxious vapours, hemorrhage, &c It was also an excellent dentifrice. De Laet (in 1647), has described, from personal experience, its power of stopping the bleeding from the nose, and the necessity of wearing rings, cut entirely out of the stone Some Italians still use rings like these for the same purpose



च्रय स्फटिकम l

त्रथ **स्पाटनान्**। म्लम्।

हिमालवे सिंहले च विन्ध्याटवीतटे तथा। स्फटिकं जायते रत्न नानाहप ममप्रभा ४३५॥

स्तिद्ध जावत रक्ष नानास्य ननमन । ४२५ ॥ हिमाद्री चन्द्रवद्धाग्रं स्कटिकं तहिथा भवेत् । सूर्यकान्तव तबेक चन्द्रकान्तं तथापरं ॥ ४३६ ॥ सूर्यमाग्रुस्पर्शमाचेण विद्धास्यमति यत् चणात् । सूर्यकान्तं तहाखातं स्कठिकं रस्नवेदिमि ॥ ४३७॥

पूर्णेन्दुकरसस्पर्गादस्त स्वति चणात्। चन्द्रकान्तं तदाखातं दुर्वभं तत्कनौ युगे। ४३८।

श्रथ स्फटिकका वयान ।

श्रथस्साटवावावियानः।

डिमालय पन्नेत, सिंडलटेश, विन्धायन्तेतको जबलको करिवको अमीनसे बद्धत् रौमन तरह तरहका स्कटिक पयदा होति है। ८३५।

पयदा धात ध। ४२५। धिमालय पर्व्यतमे पौर्णमासीके चादके ममान सफेदरङ, मूर्यकान्त भीर चन्द्रकान्त नामे दोकिसिमका सप्तटिक

पयदा घोता है। 8ई६। जो स्फ्रटिक सम्बेके किरणके सुर्यंते चान देता है, रत-पार्ची पण्डित उसको बूर्यकान्त चर्यात् चतसी सीसा

कहते हैं। 8ईछ।
पौर्णमासीने पांदने किरणने सार्में हो स्कटिक पायत दिता है, उदानो पन्टकाना कहते हैं, क्षित्रुगमे पन्टकाना स्कटिक बज्जत् दुर्लभ है। 8ईट।

É.

ا وي

THE QUARTZ.

TRANSLATION

435. A VERY bright Quartz is found in the Himalayas, Ceylon, and the forests in the Vindya Mountains

436 Two kinds of Quartz, respectively called Súrya kanta and Chandra kanta,* are produced in the Himalaya These are dehoiously bright as the moon.

That Quartz which flames in sunshine, the 437 authorities call Surya Lanta

That Quartz which runs nectar when the moon at its full bathes it with its balmy influ ence, is called Chandra Lanta

অথ ক্ষটিক ৷

অনুবাদ।

হিমাল্য পর্বত, দিংহল দেশ ও বিদ্যাপার্ব্বতীয় আবণ্য প্রদেশেব দর্মিহিত ভূভাগে অতিপ্রভাশালী নানাবিব স্ফটিক

উৎপন্ন হয়। ৪৩৫। हिमानय পर्वराज পূर्वठल मन्न छन्नवर्ग मूर्वाकां छ চক্ৰকান্ত নামে দ্বিবিধ স্ফটিক উৎপন্ন হয়। ৪০৬।

যে স্ফটিক সূর্য্যেব কিবণসংস্পর্ণে বহুল উদ্গীবণ করে, বহুতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতেবা তাহাকে সূৰ্য্যকান্ত কহেন। ৪৩৭।

 त्य नकन क्विक इरेटि श्र्यक्ट दिवा मःमर्टा समृद् कविठ हुए, जोहा हत्त्वकांख नाम पानिहिंठ हुईसा থাকে। ৪৩৮।

^{*} Lif , Sun like and Moon like

म्लम्।

चयाकपञ्चवस्तायं दाडिमीवीजसित्तमं।
विस्तादवीतटे देशे जायते मन्दकान्तिकं। ४२८॥
सिंघले जायते क्ष्यामाकरे गत्मनीलकं। ४३००।
पद्मरागमवे स्थाने विविधं स्क्रिटिकसमेषेत्॥ ४४०।
च्यातिव्यंतिनमाश्चिष्ट सुकत्तीव जल युचि।
च्योतिव्यंतिनमाश्चिष्ट सुकत्तीव जल युचि।
च्योतिव्यंतिनमाश्चिष्ट सुकत्तीव जल युचि।
व्योतिव्यंतिनमाश्चिष्ट सुकत्तीव जल युचि।
व्योतिव्यंतिविष्यंतिव्यंतिविष्यंतिव्यंतिविष्यंतिव्यंतिव्यंतिव्यंतिव्यंतिविष्यं

तर्जमा ।

विन्त्रपर्व्यक्ते जड़ तक बारवाडी जमीनसे जो स्कटिक पवदा होता ही, वह समीक कुनले पहाउचे समान छाया-सक और सामारदाने के ममान प्रमाविण्य होता है, लेकिन ऐसा रीसन नहिंहोता है। ४३८।

हिमालय देरके गश्मनीलक्षनामे खान्मे कृत्यारज्ञ स्क्रांटिम पयदा धोता है। धीर जिस् जगह रद्वाराग मणि पयदा होति है, जोहा स्क्रांटिकमी तरह तरहका पयदा होता है। प्रश्न

को स्प्रिटिक बज्जन् माफ, चौर जिससे माफ पाणि रिष्मे, चौर धामकी तरण रीमन, उसको सुक्रव्योतीरम करते हैं, चौर ऐसा खातका स्प्रिटिक नामरद्व होनेमें राजबन्दे बीना खाता है, नीमरद्व हानेमें उन्को राजबय करते हैं जीर जनेटके ममान नियान होनेसे उन्को सञ्चानय करते हैं 1882 1882 1

TRANSLATION.

439. Those Quartzes that are found in the wilds of the Vindya, are furnished with a shade like the leaves of the Asola* flower, and with a brightness like the seed of the pomegranate; but are not so fair.

440 A quarry named Gandha nilaka in Ceylon, produces a black Quartz Those places that bring forth the Padma-raga, also bring forth various kinds of the Quartz.

441-442. Those Quartzes that are entirely free from flaws, which exude a pure transparent water and which are glorious as the fire, go by the name of Multajyotırasa when these are red, they are called Rajavarlas, when bluish, Rajamayas, and when like the holy thread, Brahmamayas

অনুবাদ।

বিদ্যাপর্বাতের অবণ্যসন্নিকটে যে সকল স্ফটিক জন্মে, তাহাবা অশোককুস্নেব প্লবেব স্থায় ছায়াযুক্ত ও দাডিমেব বীজেব ভাষ প্রভাবিশিষ্ট হয়, কিন্তু তাদৃশ কান্তিবিশিষ্ট হ্য না। ৪৩৯ |

সিংহলদেশে গন্ধনীলকনামক আকবে কৃঞ্বৰ্ণ স্থাটিক উৎপন্ন হয় এবং যে সকল স্থানে পন্মবাণ জন্মে ততৎ-

প্রদেশে বিবিধ স্ফটিক জন্মিয়া থাকে। ৪৪০।

যে সকল স্ফটিক অত্যন্তনির্মাল, নির্মাল বিশুদ্ধ জনস্রাবী এবং অগ্নিব স্থায় তেজঃপুঞ্জ, তাহাকে মুক্তজ্যোতীবস करह। जञ्जां जीय कृष्टिक लाहिज्वर्ग हहेल वास्ववर्छ, हेमर नीलवर्ग इटेरल विकास धवः उक्तमृख्यस (१४७वि नासि চিহ্বিশিষ্ট) হইলে বুক্ষময় নামে অভিহিত হইয়া থাকে। ৪৪১। ৪৪২। + Lude antè

मशिमाचा ।

मूचम्।

चाकाणगुद्ध तैवाखं नेघान स्प्रिटमं दिन। च्यावग्रह्मधवनं किच्चिद्यगिन्तरान्वितं ॥ ४८३ ॥

न तु तुल्य हि रतानामथवा पापनाशनं । संस्कृतं शिल्पाना सद्यो मूर्ल्यं किश्विक्षमेत्रत, ॥ ४८४ ॥

तर्जमा ।

चाकायके समान निकाल स्कटिकको तैलाख्य सहते हैं। धालको सफेदो, सफेद कमल, कमलको जल, यहुके समान सफेदरङ्ग चौर कोड रज होने चौर चौर रतके समाम हज्जतके काविल, चौर पापका नाम कर्नेवाला मिं होता है, लेकिन कारियर चोसादके हातका वनाया

ज्ञया कुक किमत रख्ता है। ४८३। ४४४।

इति स्फटिकका बयान ।



TRANSLATION

443—444 A Tanlalya Quartz is pure as the Heavens When a Quartz is like the white lustre of the eye, the lotus stalk, or is white like the conch, or is colored like any other object, it is not so valu able, or for that matter, so sacred as other gems But when a Quartz is refined by a skilful lapidary, it may turn out a good gem

অমুবাদ।

আকাশেব ন্যায় নির্মাল ক্ষটিককে তৈলাখ্য করে। ক্ষটিক চকুব ক্ষেত্র, বা খেতপন্ন, বা মৃণাল, অথবা শব্যেষ হায় ধ্বলবর্ণ কিলা অন্য কোন বর্ণাহিত ইইলেও অপবাপব বিক্লেব সদৃশ গৌৰবাহিত বা পাপনাশক ইইতে পাবে না, তবে নিপুণ শিল্পী ছাবা উত্তম সংস্কৃত কবিলে ক্ষটিকেব মূল্য কিঞ্চিৎ বৃদ্ধি হয়। ৪৪০। ৪৪৪।

ইতি ফুটিক।



THE QUARTZ.

HIE Quartz belongs to the hexagonal or rhombohedral system of crystallization There are many varieties, however, which are found mas sive and compact The specific gravity of each of the varieties, is from 25 to 28, its hardness 7 in the scale In the transparent specimens, the lustre is vitreous in the opaque ones, it is rather resinous The fracture is conchoidal and the cleavage not very distinct. It possesses double refraction and acquires positive electricity by friction Quartz is formed of pure silica or silicon 48 04 and oxygen 51 96 It is not affected by any acid but hydrofluoric It is infusible before the blow pipe, but when put before the flame of the oxyhy drogen set, it melts and then can be drawn into fine threads, and at last becomes volatalized one piece of Quartz is rubbed with another, both become phosphorescent and " emit an empyreumatic odour "

Its Varieties

ALL the varieties of the Quartz are of the same composition and have the same properties. The difference of color in the specimens gives us the different names. The whole family of Quartz may be classed under three heads—

The Vitreous—or transparent The Resinous—or opaque





The Jaspery-or the specimens possessed of the dull color and opacity of the Jasper.

The following Stones come under the 1st Class:—

THE Rock Crystal, (of a white color); the Amethyst, (of a fine violet color); the Cairn-gorm, (so-called, on account of its being found in the Cairn-gorm mountains of Scotland), also called the False Topaz, (of a brown and yellow color); and the Aventurine (of a grey, brown or reddish-brown color.)

The following Stones come under the 2nd Class; (i. e., Chalcedonic Variety) :-

THE Chrysophrase (of a fine apple-green); the Onyx (with a blackish, brownish or greenish layer); the Sardonyx (having red, or brownish and white layers); the Sard (of a brownish red) and Carnelian (red, white and yellow); the Chalcedony (of a greyish, or milky-white or pinkish color); the Chalceydonyx (having alternate stripes of white and grey); the Mocha-stone (or Moko-stone, "containing infiltrated dendritic oxides of maganese and iron, which gives it the appearance of containing vegetable remains"); the Plasma (of a grass or olive-green color, with yellow and white specks); the Agate (of various colors); and the Quartz

The following belong to the 3rd Class:-Cat's-eye.

THE Jasper (yellow, red, green, black and brown);
THE Jasper (yellow, red, green, black and brown);
and the Blood-stone or Heliotrope (of a dark-green
and the Blood-stone or Heliotrope (specification)). and the Diodestale with blood-red specks). fuller notice will be taken of some of these

stones, in their proper places.

च्रय भीषम ।

स लम्।

भोषारतसमत्यत्तिसस्य चन्नणम्चते ॥ ४४५ ॥

हेमादिप्रतिवद्धं ग्रह्मपि श्रह्मया विधत्ते य । भीषामणि ग्रीवादिए स सम्पद सर्वदा लमते । 88७ ।

कलिड़े मगभे चैव मलये च विमालये।

प्रकाः प्रजासनिमाः खोणावसन्तिमाः प्रभावन्तः। प्रभवन्ति ततस्तरुणा बज्जनिमा भीषापाषाणाः ॥ ८८ ॥

चय भी मनिशाबा बयान।

ATSTAT I

कलिजुदेश, मगधदेश, मलश्गिरि और हिमालय पर्व्वतमे भीषारत पयदा होता है, तपमील वार लस्का वयान ਵੀਜਾਵੈ। ੪੪੫।

भीयामणि यञ्च, सफेट कमलके समान सफेट रञ्ज, सीणा फलके ममान जरदरज और नया छोनेसे छीरेके समान चमक दैनेवाला है। ४४६। जो चादमी वेचयेव भीषारत मोणे मे जड्कर्के गले अथवा हातके पहेरे, वह आदमी हामेमा तरह तरहके दौलतका हिसादार है। ४४५।

THE ROCK CRYSTAL.

TRANSLATION.

445. The Rock Crystal is produced in Kalinga, Magadha, and the Malaya and Himalaya Mountains Its properties I shall now describe.

446. A Rock Crystal is sometimes white like the conch or the lotus,—sometimes it is yellow like the Syonaka flower. When fresh, it is dazzling like the diamond.

447 A man who wears a sterling Rock Crystal set on gold, acquires success in life.

অথ ভীম।

षञ्चाम।

কলিন্দ ও মগধপ্রদেশে এবং মল্য ও হিমাল্য পর্বতে ভীয়রক্ল উৎপদ্ম হয়, জ্বাশাঃ তাহাব লক্ষণাদি বলা যাই-তেছে। ৪৪৫।

ভীয়মণি শহা ও পদ্মেব তায় শুরু, স্থোণাকপুলের তাঘ পীত-বর্ণবিশিউ এবং নৃতন অবস্থায় হীরকের তায় প্রভাশালী হইযা থাকে। ৪৪৬।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ভীয়রত্ন প্রবর্ণবদ্ধ কবিয়া গ্রীবাদিতে ধাবণ কবে, সে ব্যক্তি সর্ববদা নানাসম্পদ্ভাগী হয়। ৪৪৭। म्चम् ।

गुण्यकस्य तस्त्रेव घारणामुनिपृद्भव ।
विवाणि तानि नस्यन्ति सर्वाध्येव मश्रीतवि ॥ ४४८ ॥
विवाणा नावाधन्ते ये तमरखानिवासिन समीपेऽपि ।
हीपिष्टक्षम्रसमुक्त्र्यासंख्याद्यादयो हिन्सा ॥ ४४८ ॥
सार्यकारङ्गतास्यपि सपीएउजासुह विकविपाणि ।
सनिवासिनवैरितस्करभयानि भीमानि नम्हन्ति ॥ ४५० ॥
श्रीव नवाह्यकाभ पर्पं पीनप्रभ प्रभाषीन ।
सविनद्युति विवर्ण दूरात्यरिवर्ळ्येन् प्रान्त ॥ ४५१ ॥

तरजमा ।

शुण्याची भीष्मरत पहेरनेने मव किसिम्का जहेरका दोपनाज होता है, दौर खेकद वाषा, गेर, ग्ररम (ण्क किसिम्बा चाट पाद्योका हिंगक चर्चात् टारिन्टा जानवार), हात्यो, गेर वगैरह जजनके रहनेवाले रिसक जानवार उस्के पाद्यभी चा नहिं सकते। 88 टा 88 टा

भीष्मरत्न पहेरनेने वनाव. च्या, दिच्छरा जहेर सीर जन चान द्वान चीर चोरवा दर निष्ठ रहता। ४५०। वेवार, नेघके समान रज्ञदार, वर्णण, जरदरज्ञ. वेचनद, मवला चीर बदरज्ञ भीष्ममण्डियो पाएनतनीय दूरहोंचे होद नेको कहते हैं। ४५६।

TRANSLATION

448-449. A good Rock Crystal is an infallible remedy in all cases of poisoning Wild animals like the leopard, Sarava (an eight footed beast), the elephant, the lion and the tiger, cannot approach this gem.

- 450. It neutralizes snake, rat, and scorpion poisons, and the wearer need never fear drowning, fire or a thief.
- 451. A moss-colored, cloud like, rough, yellow, dull, dirty and discolored Rock Crystal the authorities shun from a distance

অহুবাদ ৷

গুণশালী ভীমবত্ন ধাৰণ কবিলে সর্ব্বপ্রকাব বিয়দোয প্রশমিত হয়, এবং দ্বীপি, শবভ (এক প্রকাব অফপাদ হিংস্ৰক জন্ত), হন্তী, সিংহ ও ব্যাত্ৰ প্ৰভৃতি অনণ্যবাসী বিষম হিংশ্ৰ জন্তুৰৰ্গ তাহাৰ সমীপেও আগমন করিতে পাবে না। ৪৪৮। ৪৪৯।

ভীয়মণি ধাৰণ কবিলে মুৰ্গ, ইন্দুৰ ও বৃশ্চিকের বিষ, এবং मनिन, অনি, শক্রু ও ভুস্বেব ভ্য প্রশমিত হয় I8৫০ I শৈবাল ও ^{নেঘের} ভায বর্ণবিশিউ, বর্ন্নশ, গীতপ্রভা-

শালী, হীনপ্রভ, মলিন ও বিবর্ণ ভীলমণিকে পণ্ডিতেরা দূব হ্ইতে পবিত্যাগ কবিবেন। ৪৫১।

महामाला । मुखं प्रकलामेषां वुधवरेदेशकालविज्ञानात्। दूरेभृतानां यञ्ज किञ्चित्रिकटमष्तानाम् । ४५२ । सर्जमा (परिदत्तलोग देश थीर समयके भेदसे भी प्रामणिका भी ल ठिक कर सकते हैं, अर्थात् मछत् दूरदेशका पयदा छया भीयामणिका च्यादा चौर नज्दिक देशमे पयदाङया भीया-मणिका कम दाम कहते हैं। ४५२। इति भीग्रमस्तिका यदाम।

TRANSLATION.

452 Rock Crystals vary in price (say the authorities) in accordance with time and place,—2 e, a Rock Crystal coming from a distant country, is more, and that produced near, 18 less precious.

অধুবাদ।

পণ্ডিতেবা দেশকালভেদে ভীমনণিব মূল্যেব তাবতমা কবিষা থাকেন, অর্থাৎ বহুদূবদেশোৎপম ভীমবত্বেব অধিক এবং নিকটস্থ প্রদেশোৎপম ভীমবত্বেব অর মূল্য নির্দেশ কবেন। ৪৫২।

ইতি ভীম।



THE ROCK CRYSTAL.

Its Properties.

pure white, to greyish white, yellow white, yellowish-brown, clove-brown and black. This stone sometimes contains a mixture of mica, ratile, tournaline, topaz, chlorite, &c., and in some specimens possesses a cavity containing water with an air-bubble in it, which moves as the stone is turned. There are some pieces of this nature coming from Madagascar, which emit a smell like that of burnt oil when subjected to friction.

Where found

Tus stone is found in numerous places, among which may be mentioned, several places in Ireland, Scotland, France, Hungary, India, Ceylon, Brazil, Canada, Australia.

Cutting and Engraving.

The Rock Crystal is cut on a copper wheel by means of emery and polished with tripoli. It is generally cut in the form of a brilliant, rose of table. Splinter of Diamond is used, in case it is required to be drilled. Diamond-powder is necessary for engraving, and sometimes a device is etched on the stone with fluoric acid. Amonget the engravings on the Rock-crystal, may be mentioned, "the contest between Hercules and Anteus,"

and an image of Arsinoe drawn by Satyreius In the British Museum may be seen a stone of $7 \times 3\frac{1}{2}$ mehes in dimension, upon which is engraved the "Crucifixion"

The Rock Crystal as known to the Ancients Its Uses

This stone was extensively known to the ancient The Egyptians used it for making cylinders, scarabæi, &c Theophrastus mentions that it was selected for sends Pliny says, that it was very largely used for house ornaments Its name (derived from the word 'Crystallus") signified " ice," and the Ancients thought it to be ice congealed by intense cold, and that it could only be found in the frozen regions Some of them would not even expose it to great heat last it should melt The Emperor Nero is said to have possessed a pair of beautiful Crystal Cups, which he broke asunder, out of jenlousy and anger, when he heard of the loss of his kingdom The Empress Livia gue to the Capitol of Rome, a piece of Crystil, weighing The Roman doctors used the Crystal balls as lenses, in order to burn out sores On account of its hardness and superiority to glass, this stone of its induced for making lenses for spectacles and is is used for the pebble. The natives of India then known as the pebble. hollow it out into cups, goblets &c., of very notion and often cover them in beautiful ornamentation The Chinese use it for the same purpose The Japanese cut it into large round balls, which are said to be used for cooling the hands The Indians believe the Crystal to be the mother or external husk of the Diamond—call ing the Diamond, the ripe, and the Crystal, the unripe Diamond

Its Price Imitations

THE price depends upon the quality and size required for particular purposes Those, for instance, that suit for lenses vary from 2s to 15s per pound avoirdupois, but those of a larger size, intended for cups, dishes, &c., and the execution of which is attended with considerable time and risk, fetch a very great price The green, pink and various other colored beads, which are sold in Switzerland and Germany, are made of crystals colored, by being exposed to heat and put to various chemical solu-The sudden change of temperature causes the Crystal to crack all over, and the solution easily enters the pores of this stone, and to the naked eye gives it the appearance of being colored through The Rocl Crystal is used for rings, pins, earrings, seals, caskets, &c , and specimens of these, found in private hands, are still highly valued, though the glass imitations and the abundant supply from Madagascar, have considerably lessened its price Strass or paste is often sold for Crystal (when

pure and free from air-bubbles,) but it can be easily made out by its greater weight and inferior hardness.

Marvellous and Medicinal Properties.

In the middle Ages, this stone was believed to be an enemy to poison and had the virtue of betraying its presence either by breaking into pieces or becoming obscured. The famous "Show Stone" of Dr. Dee, a sphere of 3 inches in diameter, was known to possess magical properties, and would show to those that consulted it future events and distant persons. This stone may still be seen in the British Museum. The Crystal, powdered and mixed with wine, was a sovereign remedy for dysentery. Orpheus recommended it as the medicine for diseases of the kidneys Crystal powdered and mixed with mulsum (wine and honey,) if used by women suckling, would give them an abundant supply of milk. Crystal were supposed to allay the thirst of fever, if held against the tongue of the patients.

Celebrated Rock Crystals.

Caystals, of various sizes and in various forms Carstals, or many he seen in private and of considerable value, may be seen in private and of consumation of the first collections and in public Museums. The finest work in Rock Crystal in existence, is said to be an urn, 91 inches in diameter, 9 inches high, and this, together with the pedestal, is made of one entire piece. The upper part contains a representation of Noah asleep, his children holding a covering, and a woman bearing in her hands a basket of finit. This urn belonged to the Trench Crown, and was, at the time of the Revolution of 1791, estimated at more than 1,000,000 frames.

